गीत-पञ्चशती



नन्दलाल बोस के एक 'एचिंग' की अनुकृति। रवीन्द्रनाथ ठाकुर शान्तिनिकेतन मे अपनी कविता 'झुलन' का पाठ करते हुए। (कलाकार के सौजन्य से।)

गीत-पञ्चशती

देवनागरी लिपि में ५०० चुने हुए गीत

रवीन्द्रनाथ ठाकुर

सम्पादिका

इन्दिरा देवी चौधुराणी

लिप्यन्तर तथा शब्दार्थ

रामपूजन तिवारी

साहित्य अकादेमी

नई दिल्ली

Gita-Panchasati—500 select songs of Rabindranath Tagore, edited with an Introduction by Indira Devi Chaudhurani. Devanagari transliteration with explanatory notes by Ram Pujan Tiwari. Frontispiece by Nandalal Bose. Sahitya Akademi, New Delhi (1960). Price: *de luxe* edition, Rs. 10; ordinary, Rs. 8.

विश्वभारती प्रकाशन विभाग के सौजन्य से
प्रस्तुत संस्करण का प्रकाशन
प्राप्तिस्थान :
पब्लिकेशन्स डिवीजन
ओल्ड सेक्रेटरियेट, दिल्ली-८
मुद्रक :
श्री शैलेन्द्रनाथ गुहराय,
श्री सरस्वती प्रेस लि०, कलकत्ता ९
मूल्य :
विशेष संस्करण १० रुपया
सामान्य संस्करण ८ रुपया

भूमिका

इस पुस्तक में रवीन्द्रनाथ के पाँच-सौ गीतों का संकलन किया गया है। कुछ वर्ष हुए बँगला मासिक पत्र 'प्रवासी' के तीन अंकों में रवीन्द्र-संगीत के अनुरागियों द्वारा चुने हुए तीन सौ गीत 'रवीन्द्र-संगीत-सार' नाम से प्रकाशित हुए थे। उन्हींको आधार मानकर उनमें दो सौ गीत और जोड़ देना बहुत कठिन नहीं था। तिस पर श्री शान्तिदेव घोष के सौजन्य से स्वयं कविगुरु द्वारा निर्वाचित तीन सौ गीतों की एक अप्रकाशित तालिका मिल गई, जिसे पाकर मैंने अपने को कृतार्थ अनुभव किया। अन्यान्य विषयों में भी यदि श्री शान्तिदेव की सङ्कोचहीन सहायता न मिलती तो पाँच सौ गीतों की वर्तमान चयनिका तैयार करना मुझ अकेली के लिए सम्भव न होता। 'संचयिता' के गीतांश से भी कुछ गीत उद्धृत किये गए हैं। साथ ही श्री सौम्येन्द्रनाथ ठाकुर और श्रीमती नन्दिता कृपालानी के द्वारा भेजी हुई दो तालिकाओं ने भी गीतों के चयन में हमारी सहायता की है।

इन गीतों का नागरी लिपि में लिप्यन्तर किया गया है और भारत में प्रचलित प्रधान-प्रधान भाषाओं में इन्हें अनूदित भी किया गया है। स्वर-लिपि के बिना गीत का परिपूर्ण रस ग्रहण करना तो असम्भव ही जान पड़ता है; आशा है शीघ्र ही यह अभाव भी दूर किया जा सकेगा। अवश्य ही कवि के गीतों को स्वर के बिना केवल कविता के रूप में ही पढ़कर आनन्द प्राप्त करने वाले रसिक भी मुझे मिले हैं। यूरोप में यह समस्या ही नहीं उठती, कारण वहाँ गीतकार आम तौर पर स्वर-लिपि के साथ ही अपने गीत प्रकाशित किया करते हैं। इसमें एक और बड़ी सुविधा यह होती है कि स्वर के सम्बन्ध में किसी प्रकार के मतभेद की कोई गुंजाइश नहीं रह जाती। गायक का अपना कृतित्व केवल सामान्य गायकी के तारतम्य में ही प्रकट होता है। पश्चिमी देशों में रचयिता प्रधान होता है, पूर्व में गायक।

इस संकलन में हमने कविगुरु के अपने श्रेणी-विभाजन की ही रक्षा की है। वैसे सम्भव है, कई बार हमें ऐसा लगे कि एक ही गीत अन्य श्रेणी में भी पड़ सकता है। और फिर भगवत्-प्रेम तथा मानवीय प्रेम के बीच सीमा-रेखा खींचना कठिन भी है।

नीचे दी हुई सूची से प्रत्येक श्रेणी के गीतों की संख्या और उनका रचना-काल स्पष्ट समझ में आ जायगा। जिन गीतों का रचना-काल निश्चित रूप से ज्ञात है, उन्हींकी तारीख़ें दी गई हैं, बाक़ी अधिकांश गीतों की तारीख़ें प्रथम प्रकाशित पुस्तक के अनुसार रखी गई हैं।

विषय	संख्या	रचना-काल (ईसवी सन् के अनुसार)
१ पूजा	१५७	१८९३ से १९३२ तक
२ प्रेम	१२७	१८८१ से १९३९ तक
३ प्रकृति	१०९	१८७७ से १९३९ तक
४ स्वदेशी	२९	१८७७ से १९३८ तक
५ विचित्र	६९	१८९५ से १९४१ तक
६ आनुष्ठानिक	९	१९३६ से १९४० तक

कवि की जीवनी से जिनका तनिक भी परिचय है, उन्हें मालूम होगा कि कवि के प्रथम संगीत-जीवन पर उनके बड़े भाई—'नतुन दादा' या नये भैया—ज्योतिरिन्द्रनाथ का प्रभाव कितनी दूर तक पहुँचा था। पियानो के सामने बैठकर ज्योतिरिन्द्रनाथ हल्की गतें रच रहे हैं और एक ओर रवीन्द्रनाथ तथा दूसरी ओर ठाकुर-परिवार के सहृदय मित्र अक्षय चौधुरी सुर पर शब्द बिठाते जा रहे हैं, यह चित्र भी रवीन्द्र-भक्तों के निकट सुपरिचित है। इन्हीं हल्की गतों का स्वर रवीन्द्रनाथ ने 'भानुसिंहेर पदावली' आदि प्रारम्भिक रचनाओं में बिठाया है और हम लोगों ने भी वही सीखा है।

इससे भी पहले अपने ही परिवार के सदस्यों के बीच जो नाट्य-संगीत रचित और अभिनीत होता था, उसकी रचना में भी रवीन्द्रनाथ का हाथ अवश्य था; अलबत्ता वह कुछ इस प्रकार मिल-जुलकर तैयार किया जाता था कि उसमें कौन-सी रचना विशेषतया कविगुरु की थी, आज यह कह सकना हमारे लिए कठिन हो पड़ा है।

कलकत्ता के जोड़ासाँको मुहल्ले में स्थित कवि के पैतृक आवास में उन दिनों और भी एक स्थायी सांगीतिक आबहवा बहती थी, जिसे याद रखना ज़रूरी है। यह था शास्त्रीय हिन्दुस्तानी संगीत का वातावरण, जिसे आजकल बंगाल में उच्चांग संगीत कहा जाता है। कवि के पिता महर्षि देवेन्द्रनाथ शास्त्रीय संगीत के बड़े भक्त थे। उनके यहाँ संगीत के बड़े-बड़े उस्तादों का आना-जाना और ठहरना बराबर लगा ही रहता था। रवीन्द्रनाथ के अग्रजगण किस प्रकार कन्धे पर तम्बूरा साध कर इन सब उस्तादों के निकट बाक़ायदा रियाज़ किया करते थे, यह वे स्वयं ही लिख गए हैं। यद्यपि रवीन्द्रनाथ ने, जिसे बँगला में 'नाड़ा बेंधे' (गण्डा-ताबीज़ बाँध कर) सीखना कहते हैं, उस प्रकार नियमित रूप से किसीकी शागिर्दी अख़्तियार नहीं की, फिर भी स्वाभाविक रूप से आस-पास के वातावरण से शास्त्रीय संगीत का रस अवश्य ग्रहण किया, जैसे पेड़ एक जगह खड़ा रहकर भी आकाश-वातास और धरती से अपने प्राणों के उपकरण संग्रह कर लेता है। उस्तादों में यदु भट्ट, मौलाबख़्श और बाद में राधिका गोसाईं का नाम लिया जा सकता है। उनके प्रारम्भिक दिनों में विष्णुराम चक्रवर्ती का नाम भी उल्लेखनीय है। बचपन में राइपुर के श्रीकण्ठ सिंह के पास भी उन्होंने कुछ संगीत सीखा था। श्रीकण्ठ बाबू गायन के पीछे पागल थे।

कवि की संगीत-कुशलता का इतना इतिहास देना शायद ज़रूरी है, कारण प्रतिभाशाली व्यक्ति भी अचानक आकाश से नहीं

टपकते और न धरती को भेदकर अकस्मात् बाहर आ निकलते हैं। वास्तव में जिस वृक्ष की जड़ें दूर-दूर तक फैली थीं, रवीन्द्रनाथ उसीकी उच्चतम शाखा में खिले हुए सर्वोत्तम फूल थे।

एक बार कवि ने बहुत बचपन में अपने मँझले भाई—मेरे पितृदेव—सत्येन्द्रनाथ के साथ कुछ दिन अहमदाबाद में बिताए। वहीं उन्होंने पहली बार स्वतन्त्र रूप से अपने गीतों में आप ही स्वर भरे। जैसे, 'क्षुधित पाषाण' कहानी के विख्यात शाहीबाग़ के प्रासाद की छत पर चाँदनी में टहलते-टहलते रचा हुआ गीत 'नीरव रजनी देखो मग्न जोछनाय' : देखो, नीरव रात चाँदनी में डूबी है—इत्यादि। बाद में सत्रह वर्ष की उम्र में मँझले भैया के साथ ही रवीन्द्रनाथ बैरिस्टरी पढ़ने के लिए विलायत गए। इसे देश का परम सौभाग्य ही कहना चाहिए कि इस उद्देश्य की साधना के पथ पर वे अधिक दूर अग्रसर नहीं हुए। वैसे अंग्रेज़ी संगीत सीखने का उन्हें वहाँ एक नया सुयोग मिला और अपने मधुर कण्ठ के बल पर उन्होंने काफ़ी प्रसिद्धि भी पाई। किन्तु आश्चर्य की बात है कि इसके बावजूद उनके सुरों में विलायती संगीत का कुछ ख़ास प्रभाव देखने में नहीं आता। यों विलायत से लौटने पर उन्होंने पहले-पहल जिन दो गीति-नाटिकाओं ('काल मृगया' और 'वाल्मीकि-प्रतिभा') की रचना की उनमें अवश्य कुछ-एक विलायती सुर बिलकुल सदेह उठाकर बिठा दिए गए हैं। पीछे भी उद्दीपना और उल्लास के कई सुरों पर विलायती संगीत का थोड़ा-बहुत प्रभाव देखने में आता है।

कवीन्द्र के लगभग दो हज़ार गीतों के सम्बन्ध में जब भी किसी प्रकार की कोई आलोचना की जाती है, तब यह ज़रूरी हो जाता है कि उन्हें अलग-अलग भागों में बाँट लिया जाय। इस तरह का विभाजन बहुत लोगों ने बहुत प्रकार से किया है। एक विभाजन मेरा अपना भी है, जिसका एक साधारण नक़्शा यहाँ दिया जाता है। मेरा विनम्र विश्वास है कि इसमें सभी पहलुओं की रक्षा की गई है और शायद कुछ अधिक संहत रूप में :

उक्ति और स्वर की दृष्टि से रवीन्द्र-संगीत का श्रेणी-विभाजन

१	२	३
सुर और शब्द दोनों अपने	शब्द अपने सुर दूसरे का	सुर अपना शब्द दूसरे के

शब्द अथवा उक्ति को भी अलग-अलग भाषा और भाव-प्रकाशन के अनुसार विभिन्न भागों में बाँटा जा सकता है। इसी प्रकार समस्त गीतों को शास्त्रीय हिन्दुस्तानी संगीत की विभिन्न श्रेणियों के अनुसार विभाजित किया जा सकता है। रचना-काल की दृष्टि से भी रवीन्द्र-संगीत का विभाजन बहुतों ने किया है, जैसे प्रारम्भिक काल, मध्य-काल और परवर्ती काल। इससे कवि के क्रमिक संगीत-विकास को समझने में भी सुविधा होती है। रवीन्द्रनाथ स्वयं ही कहते थे कि उनके शुरू के गीत 'ऍमोशनल' हैं, उनमें भाव-तत्त्व मुख्य है; उत्तरकालीन गीत 'ईस्थेटिकल' हैं, उनमें सौन्दर्य-बोध का तत्त्व प्रधान है। उनके प्रथम वयस के गीतों के अधिक लोकप्रिय होने का एक कारण शायद यह भी हो सकता है। यहाँ यदि मैं अपना एक विचार निवेदन करूँ तो आशा है उसे एकदम अप्रासंगिक न माना जायगा। मुझे लगता है कि उपनिषदों का ब्राह्म धर्म कुछ इतने उँचे स्तर पर अवस्थित है कि साधारण मनुष्य वहाँ तक पहुँचने अथवा वहाँ श्वास-प्रश्वास ग्रहण करने में कठिनाई अनुभव करता है; जीवन के दुःख-शोक के प्रसंगों में सहज शान्ति, विराम अथवा सान्त्वना नहीं पाता। इसी नेतिवाचक शून्यता में रवीन्द्रनाथ के धर्म-संगीत ने मानवीय प्रेम की उष्णता और मधुरता ला दी है। मानवीय स्नेह-प्रेम-प्रीति-भक्ति से उसने भगवान् को मानव का सुगोचर संगी बना दिया है। रवीन्द्र-संगीत में इसके अनेक उदाहरण मिलते हैं।

शुरू की उम्र के गीतों में कविगुरु ने स्वभावतः शास्त्र-सम्मत राग-ताल का ही अधिक प्रयोग किया है। विशेष रूप से ध्रुपद के सरल-गम्भीर आडम्बर-हीन चार अंगों की गति के प्रति रवीन्द्रनाथ खास तौर पर अनुरक्त थे और उसी ढाँचे का प्रयोग करना उन्हें प्रिय

था। कुछ आगे चल कर मध्य वयस में अपने पितृदेव के आदेश से वे पद्मा नदी के तीर शिलाइदह में ज़मींदारी की देख-भाल करने गए। वहाँ वे एक हाउसबोट में रहते थे। इन दिनों उन्हें बंगाल के बाउल-कीर्तन आदि प्रचलित लोक-संगीत का घनिष्ठ परिचय पाने का सुयोग मिला। बाद में अपनी गीत-रचना में उन्होंने कई प्रकार से इस लोक-संगीत के कला-कौशल का उपयोग किया। उनका प्रसिद्ध स्वदेशी गीत 'आमार सोनार बाँगला'—अथवा मेरा सोने का बंगदेश—इसीका एक उदाहरण है।

अपने जीवन के उत्तर-काल में वे स्थायी रूप से शान्तिनिकेतन में ही रहे और वहाँ उन्होंने विद्यालय के उत्सव-आयोजन के लिए बहुत से ऋतु-सम्बन्धी गीतों की रचना की। कई प्रकार के नये मिश्र-स्वरों का भी उन्होंने प्रवर्त्तन किया, जैसे, बाउल साधुओं के स्वरों के साथ शास्त्रीय रागों का मिश्रण अथवा ऐसे रागों का मेल; जो पहले कभी मिश्रण के लिए उपयोग में नहीं लाए गए। कुछ नये प्रकार के ताल भी उन्होंने निकाले, जैसे, षष्ठी या २।४ मात्रा का ताल; नवमी या ५।४ मात्रा का ताल (नौ मात्रा के ताल का और भी कई प्रकार से विभाजन किया है); झम्पक या उल्टा झपताल, जैसे ३।२।३।२; रूपकड़ा या ३।२।३ मात्रा का ताल; एकादशी अथवा ११ मात्रा का ताल, जैसे ३।२।२।४, इत्यादि।

शास्त्रीय संगीत के स्वर और छन्द को ज्यों-का-त्यों रखते हुए बँगला शब्द-प्रयोग से रचे हुए गीतों को छोड़कर रवीन्द्र-संगीत में ख़याल गायकी का प्रयोग बहुत कम ही मिलता है। इसका कारण यह है कि ख़याल में तानों का प्रयोग अधिक होता है और अपने संगीत में तानों का बहुल प्रयोग उनकी रुचि के विशेष अनुकूल न था। उनके ध्रुपदांग अथवा उच्चांग संगीत को छोड़ दें तो हल्के-फुल्के ताल में रचे हुए गीतों को आम तौर पर ठुमरी की श्रेणी में डाला जा सकता है। रवीन्द्र-संगीत में टप्पे का प्रयोग कम ही देखने में आता है; वैसे हिन्दुस्तानी टप्प की गायकी के आधार पर उन्होंने

धर्म-संगीत के अन्तर्गत कुछ सुन्दर गीत रचे हैं। उनके अपने कण्ठ से शास्त्रीय हिन्दी-संगीत के सभी अलंकार कितने सहज और स्वाभाविक रूप से प्रकाशित हुआ करते थे, सो उनके इने-गिने रेकर्डों को सुनकर आज के श्रोता भी समझ जायँगे।

मुझे लगता है, रवीन्द्रनाथ के रचे हुए संगीत में गायक द्वारा अपनी ओर से तानों का प्रयोग करने के विषय में आपत्ति का प्रधान कारण यह है कि उनके गीतों में शब्द अथवा उक्ति का महत्त्व सुर के महत्त्व से किसी तरह कम नहीं।

स्वतन्त्र तानें न होने पर भी उनके कुछ गीतों में सुर के साथ ही छोटी-छोटी तानें जुड़ी हुई हैं और विभिन्न गीतों में मीड़, आस, गिटकड़ी या खोंच आदि अलंकार अथवा कला-कौशल भी पर्याप्त हैं। अभ्यस्त अलंकारों के यत्किंचित् अभाव के कारण कुछ लोग रवीन्द्र-संगीत को एकधृष्ट या नीरस कहने लगते हैं, किन्तु तान के बिना भी रवीन्द्रनाथ ने दूसरे कितने ही उपायों से सुर में वैचित्र्य लाने का इतना प्रयास किया है और सफलता भी पाई है कि तनिक गहराई से विवेचना करने पर चकित होना पड़ता है। इस प्रसंग में उनकी कुछ विशेषताओं का यहाँ उल्लेख किया जाता है :

क—भारतवर्ष भर में जहाँ जिस कोटि का भी स्वर उन्होंने सुना या पाया, उसमें उपयुक्त शब्द-योजना की अथवा उसके आधार पर गीत रचे।

ख—अनेक नये तालों और मिश्र-सुरों का प्रवर्त्तन किया, जिसकी चर्चा हम पहले ही कर आए हैं।

ग—ताल का आड़ा या तिरछा प्रयोग अथवा एक ही गान में ताल का फेर बहुत बार देखने में आता है। यहाँ तक कि एक ही गान को बारी-बारी से अलग-अलग तालों में गाकर उन्होंने इस क्षेत्र में भी मौलिकता का परिचय दिया।

घ—केवल भिन्न ताल ही नहीं, किसी-किसी गीत को एक-के-बाद-एक भिन्न स्वर में गाकर भी उन्होंने वैचित्र्य की सृष्टि की।

ङ—पाश्चात्य सुर-सन्धि या हार्मनी की प्रथा को यद्यपि रवीन्द्रनाथ ने शास्त्रीय ढंग से पूरी तरह ग्रहण नहीं किया, तथापि परीक्षण के रूप में उसका भी कुछ आभास उनके दो-एक गानों में मिलता है। अन्यान्य क्षेत्रों के समान संगीत के क्षेत्र में भी उनके प्रदीप्त सक्रिय मन ने प्रयोग-परीक्षा करने में संकोच का अनुभव नहीं किया। अवश्य ही इस प्रयोग-परीक्षण का मूल सदा देश की मिट्टी में ही समाया हुआ था।

च—जब स्वदेशवासियों के पुराने संस्कार विपरीत थे, तब भी उन्होंने समाज में नृत्य का प्रचार किया। इस नृत्य-आन्दोलन के प्रसंग में उन्होंने जिन नृत्य-नाट्यों की रचना की थी, उनके गीतों में भी कई प्रकार की अपनी विशेषताएँ मिलती हैं।

छ—कविगुरु का संगीत-जीवन जिस तरह गीति-नाट्य से शुरू होता है, उसी प्रकार कहा जा सकता है कि नृत्य-नाट्य से उसकी परिसमाप्ति होती है। उनके लम्बे जीवन के इन दोनों छोरों के बीच जो योग-सूत्र था, उसे हम नाट्य-रस कह सकते हैं। इसी नाट्य-रस को उन्होंने नये-नये रूपों में संगीत में प्रकट किया था। उन्होंने स्वयं ही अपने किसी गीति-नाट्य को यदि गीत के सूत्र में गुँथी हुई नाटक की माला कहा है, तो किसी दूसरे को कहा है नाटक के सूत्र में गीतों की माला। वास्तव में मूल बात यह है कि दोनों में नाट्य-रस वर्तमान है और यही रस रवीन्द्र-संगीत में वैचित्र्य लाने का एक उत्तम साधन रहा है।

इसी जगह उनके संगीत की एक मुख्य विशेषता पकड़ में आती है; वह है सुर के साथ शब्द या उक्ति का अपूर्व शुभ-योग। शब्द स्वर में कहे गए हैं अथवा स्वर स्वयं ही बोल रहा है, कहना कठिन है: जान पड़ता है जैसे शब्द ही स्वर बन गए हैं अथवा स्वर ने आप ही शब्दों का बाना पहन लिया है। इसकी सर्वोत्तम अभिव्यक्ति अवश्य ही गीति-नाट्य में हुई है और स्वर में उत्तर-प्रत्युत्तर उसका प्रधान वाहन है।

अभी हमने रवीन्द्र-संगीत की जिन विशेषताओं का क्रम से उल्लेख किया है, उनमें उनके गीतों की प्रचुरता को भी जोड़ा जा सकता है। हमारा आशय केवल संख्या की ही अधिकता से नहीं है—वैसे यह संख्या भी अपने-आपमें कुछ कम नहीं—किन्तु मनुष्य के हर प्रकार के व्यष्टिगत मनोभाव और समष्टिगत समारोह की दृष्टि से इतने तरह के इतने अधिक गीत अन्य किसी देश के किसी गीतकार ने लिखे होंगे, इसमें सन्देह है।

संगीत-क्षेत्र में रवीन्द्रनाथ के अनेक कृतित्वों के विषय में मेरा यह विनम्र विचार है कि उनका एक प्रधान कृतित्व यह कहा जायगा कि उन्होंने हमारे देश के शास्त्रीय संगीत की जटिल, दीर्घ, कष्टकर साधना को किसी हद तक सहज और सरस बनाकर उसे देशवासियों के हाथों सौंप दिया है। शास्त्र-सम्मत राग और ताल सभी को यथा-स्थान रख छोड़ा है, फिर भी थोड़े-से लोगों की जीवन-भर की कठोर साधना के स्थान पर थोड़े-से वर्षों के मनोयोग से ही संगीत के सौन्दर्य और माधुर्य का आस्वाद पाने का पथ सर्वसाधारण को दिखा दिया है।

संगीत रवीन्द्रनाथ की विराट् प्रतिभा का एक अंश-मात्र है किन्तु वह उनकी बड़ी साध का—बहुत अन्तरंग—अंश है। उन्हींके शब्दों में : "मैं निश्चित जानता हूँ कि भविष्य के दरबार में मेरे कविता-कहानी-नाटक के साथ चाहे जो बीते, मेरे गीतों को बंगाली समाज को ग्रहण करना ही होगा, मेरे गीत सबको गाने ही होंगे—बंगाल के घर-घर में, तरुहीन सुदूर पथ पर, मैदानों में, नदी के तीर-तीर। मैंने देखा है.... मेरे गीत जैसे मेरे अचेतन मन से बरबस निकले हैं। इसीलिए उनमें एक सम्पूर्णता है।"

रवीन्द्रनाथ की इस प्रियतम वस्तु का समग्र भारत में प्रचार करने का भार लेकर साहित्य अकादेमी हमारी कृतज्ञता-भाजन बनी है। मेरा आन्तरिक आवेदन है कि इसी प्रकार रवीन्द्र-संगीत की स्वर-लिपि के प्रचार का प्रशंसनीय कार्य भी अकादेमी द्वारा ही

सम्पन्न हो। मैं प्रार्थना करती हूँ कि इस सुमधुर गीति-मालिका के आकर्षण से भारत के सभी प्रदेश एकता के और भी घनिष्ठ सूत्र में आबद्ध हों।

शान्तिनिकेतन
१४ अप्रैल, १९५९

इन्दिरा देवी चौधुराणी

सूचीपत्र

पूजा

१

आमारे के निबि भाइ, सँपिते चाइ आपनारे।
आमार एइ मन गलिये काज भुलिये सङ्गे तोदेर निये या रे।।
तोरा कोन् रूपेर हाटे चलेछिस भवेर बाटे,
पिछिये आछि आमि आपन भारे,
तोदेर ओइ हासिखुशि दिवानिशि देखे मन केमन करे।।
आमार एइ बाँधा टुटे निये या लुटेपुटे,
पड़े थाक् मनेर बोझा घरेर द्वारे—
येमन ओइ एक निमिषे वन्या एसे भासिये ने याय पारावारे।।
एत ये आनागोना के आछे जानाशोना,
के आछे नाम ध'रे मोर डाकते पारे।
यदि से बारेक एसे दाँड़ाय हेसे
चिनते पारि देखे तारे।।

१८९०

१. **आमारे......आपनारे**—मुझे कौन लेगा (ग्रहण करेगा) भाई, (मैं) अपने (आप) को सौंपना चाहता हूँ; **आमार.....रे**—मेरे इस मन को विगलित कर, काम-काज (को) भुला कर अपने साथ तुमलोग ले जाओ; **तोरा.....चलेछिस**—तुम सब किस रूप की हाट में चले हो; **भवेर बाटे**—संसार के रास्ते पर; **पिछिये......भारे**—अपने (ही) बोझ से मैं पीछे रह गया हूँ; **तोदेर.....करे**—रातदिन तुम सबों की वह हँसी खुशी देख मन (न-जाने) कैसा करता है; **आमार.......पुटे**—मेरे इस बन्धन को छिन्न-भिन्न कर (मुझे धूल में) लूटाते-पुटाते ले जाओ; **पड़े......द्वारे**—गृह के दरवाज़े पर मन का बोझा पड़ा रहे; **येमन......पारावारे**—जैसे उस एक क्षण में बाढ़ आ कर समुद्र में बहा ले जाती है; **एत.......आनागोना**—इतनी जो आवाजाही है; **के.......जानाशोना**—जाना-पहचाना (परिचित) कौन है; **के......पारे**—कौन है जो मेरा नाम ले कर पुकार सकता है; **यदि.......तारे**—यदि वह एकबार आ हँस कर खड़ा हो (तो) उसे देख कर पहचान सकता हूँ।

२

आनन्दलोके मङ्गलालोके बिराज' सत्यसुन्दर ।।
महिमा तव उद्भासित महागगनमाझे,
विश्वजगत मणिभूषण वेष्टित चरणे ।।
ग्रहतारक चन्द्रतपन व्याकुल द्रुत वेगे
करिछे पान, करिछे स्नान, अक्षय किरणे ।।
धरणी- 'पर झरे निर्झर, मोहन मधु शोभा
फुलपल्लव-गीतगन्ध-सुन्दर-बरने ।।
बहे जीवन रजनीदिन चिरनूतन धारा,
करुणा तव अविश्राम जनमे मरणे ।।
स्नेह प्रेम दया भक्ति कोमल करे प्राण;
कत सान्त्वन कर वर्षण सन्तापहरणे ।।
जगते तव की महोत्सव, वन्दन करे विश्व
श्रीसम्पद भूमास्पद निर्भयशरणे ।।

१८९३

३

आमारे करो तोमार वीणा, लहो गो लहो तुले।
उठिबे बाजि तन्त्रीराजि मोहन अङ्गुले ।।
कोमल तव कमलकरे परश करो परान- 'परे,
उठिबे हिया गुञ्जरिया तव श्रवणमूले ।।

२. **बिराज**—विराजते हो; **माझे**—मध्य में; **तपन**—सूर्य; **करिछे**—कर रहे हैं; **धरणी- 'पर**—धरणी के ऊपर; **झरे**—झरता है; **बरने**—वर्णों में, रंगों में; **करे**—करते हैं; **कत**—कितनी; **सान्त्वन**—सान्त्वना; **कर वर्षण**—वर्षा करते हो; **की**—क्या, कैसा; **भूमा**—सर्वव्यापी पुरुष, विराट्; **आस्पद**—आधार; **वन्दन......शरणे**—(तुम्हारी) श्री-सम्पद-भूमास्पद निर्भय शरण में विश्व वन्दना करता है।

३. **आमारे.....वीणा**—मुझे अपनी वीणा बना लो; **लहो.....तुले**—लो, मुझे उठा लो; 'गो'=सादर सम्बोधनवाचक शब्द; **उठिबे बाजि**—बज उठेगी; **परश करो**—स्पर्श करो; **परान**—प्राण; **उठिबे......गुञ्जरिया**—हृदय गूंज उठेगा;

कखनो सुखे कखनो दुखे   काँदिबे चाहि तोमार मुखे,
चरणे पड़ि रबे नीरबे रहिबे यबे भुले।
केह ना जाने की नव ताने   उठिबे गीत शून्य-पाने,
आनन्देर बारता याबे अनन्तेर कूले।।

१८९५

४

अन्धजने देहो आलो, मृतजने देहो प्राण—
तुमि करुणामृतसिन्धु करो करुणाकणा दान।।
शुष्क हृदय मम   कठिन पाषाणसम,
प्रेमसलिलधारे सिञ्चह शुष्क नयान।।
ये तोमारे डाके ना हे, तारे तुमि डाको डाको।
तोमा हते दूरे ये याय तारे तुमि राखो राखो।।
तृषित ये जन फिरे   तव सुधासागरतीरे।
जुड़ाओ ताहारे स्नेहनीरे, सुधा कराओ हे पान।।

१८९६

५

आनन्दधारा बहिछे भुवने,
दिनरजनी कत अमृतरस उथलि याय अनन्त गगने।।

कखनो—कभी; **काँदिबे.....मुखे**—तुम्हारे मुख की ओर देख कर क्रन्दन करेगी; **चरणे**—चरणों में; **पड़ि रबे**—पड़ी रहेगी; **रहिबे......भुले**—जब भूले रहेगो; **केह......जाने**—कोई नहीं जानता; **की**—किस; **शून्य-पाने**—शून्य (आकाश) को ओर; **बारता**—वार्ता, संवाद, सन्देश; **याबे**—जायगी।

४. **अन्धजने**—अन्धे को; **देहो**—दो; **आलो**—आलोक; **तुमि**—तुम; **सिञ्चह**—सींचो; **नयान**—नयन; **ये......हे**—जो तुम्हें नहीं पुकारता; **तारे**—उसे; **डाको**—पुकारो; **तोमा......याय**—तुमसे जो दूर जाय; **राखो**—रखो; जाने न दो; **ये**—जो; **फिरे**—भटकता फिरता है; **जुड़ाओ**—शीतल करो; **ताहारे**—उसे।

५. **बहिछे**—बह रही है; **कत**—कितना; **उथलि**—उफन कर, उत्तो-

पान करे रवि शशी अञ्जलि भरिया,
सदा दीप्त रहे अक्षय ज्योति,
नित्य पूर्ण धरा जीवने किरणे ।।
बसिया आछ केन आपन-मने,
स्वार्थनिमगन की कारणे ।
चारि दिके देखो चाहि हृदय प्रसारि,
क्षुद्र दुःख सब तुच्छ मानि,
प्रेम भरिया लहो शून्य जीवने ।।

१८९६

६

ओहे जीवनवल्लभ, ओहे साधन दुर्लभ,
आमि मर्मेर कथा अन्तर व्यथा किछुइ नाहि कब—
शुधु जीवन मन चरणे दिनु, बुझिया लहो सब ।
आमि की आर कब ।।
एइ संसारपथसंकट अति कंटकमय हे,
आमि नीरबे याब हृदये लये प्रेममुरति तव ।
आमि की आर कब ।।
सुख दुख सब तुच्छ करिनु, प्रिय अप्रिय हे—
तुमि निज हाते याहा सँपिबे ताहा माथाय तुलिया लब
आमि की आर कब ।।

लित हो कर; **याय**—जाता है; **भरिया**—भर कर; **बसिया....मने**—अपने आप में (रत) क्यों बैठे हुए हो; **निमगन**—निमग्न; **की**—किस; **चारि दिके**—चारों ओर; **प्रसारि**—पसार कर; **मानि**—मान कर; **भरिया लहो**—भर लो ।

६. **आमि**—मैं; **किछुइ......कब**—कुछ भी नहीं कहूँगा; **शुधु**—केवल; **चरणे दिनु**—चरणों में दिया; **बुझिया लहो**—समझ लो; **आमि......कब**—मैं और क्या कहूँगा; **एइ**—यह; **आमि......तव**—मैं तुम्हारी प्रेममूर्ति (प्रतिमा) को हृदय में ले कर चुपचाप जाऊँगा; **करिनु**—किया; **हाते**—हाथ से; **याहा......लब**—जो सौंपोगे उसे सिर पर चढ़ा लूँगा;

अपराध यदि करे थाकि पदे, ना कर यदि क्षमा,
तबे परानप्रिय, दियो हे दियो वेदना नव नव।
तबु फेलो ना दूरे, दिवसशेषे डेके नियो चरणे—
तुमि छाड़ा आर की आछे आमार, मृत्यु-आँधार भव।
आमि की आर कब ।।

१८९६

७

के याय अमृतधामयात्री !
आजि ए गहन तिमिररात्रि,
काँपे नभ जयगाने ।।
आनन्दरव श्रवणे लागे, सुप्त हृदय चमकि जागे,
चाहि देखे पथपाने ।।
ओगो रहो रहो, मोरे डाकि लहो, कहो आश्वासवाणी।
याबो अहरह साथे
सुखे दुखे शोके दिवसे राते
अपराजित प्राणे ।।

१८९६

अपराध......पदे—चरणों में यदि अपराध करूँ; **ना......क्षमा**—यदि (तुम) क्षमा न करो; **तबे**—तब; **परानप्रिय**—प्राणप्रिय; **दियो**—देना; **तबु......दूरे**—तो भी दूर न फेंक देना; **डेके......चरणे**—चरणों में बुला लेना; **तुमि......आमार**—तुम्हें छोड़ कर और मेरा क्या है; **आँधार**—अंधकार।

७. **के याय**—कौन जाता है; **आजि**—आज; **ए**—इस; **श्रवणे लागे**—सुनाई देता है; **चमकि जागे**—चौंक कर जागता है; **चाहि......पाने**—रास्ते की ओर ताकता है; **ओगो**—अजी; **मोरे......लहो**—मुझे बुला लो; **याबो**—जाऊँगा।

८

तोमारि इच्छा हउक पूर्ण, करुणामय स्वामी।
तोमारि प्रेम स्मरणे राखि, चरणे राखि आशा—
दाओ दुःख, दाओ ताप, सकलि सहिब आमि ।।
तव प्रेम-आँखि सतत जागे, जेनेओ ना जानि;
ओइ मङ्गलरूप भुलि, ताइ शोक-सागरे नामि ।।
आनन्दमय तोमार विश्व शोभासुखपूर्ण;
आमि आपन दोषे दुःख पाइ, वासना-अनुगामी ।।
मोहबन्ध छिन्न करो कठिन आघाते;
अश्रुसलिलधौत हृदये थाको दिवसयामी ।।

१८९६

९

ताँहारे आरति करे चन्द्र तपन, देव मानव वन्दे चरण—
आसीन सेइ विश्वशरण ताँर जगत-मन्दिरे ।।
अनादिकाल अनन्तगगन सेइ असीम-महिमा-मगन—
ताहे तरङ्ग उठे सघन आनन्द-नन्द-नन्द रे ।।
हाते लये छय ऋतुर डालि पाये देय धरा कुसुम ढालि—
कतइ बरन, कतइ गन्ध, कत गीत, कत छन्द रे ।।

८. **तोमारि**—तुम्हारी ही; **हउक**—हो; **राखि**—रखूँ; **दाओ**—दो; **सकलि**—सकल ही, सभी; **सहिब**—सहूँगा; **आमि**—मैं; **जेनेओ......जानि**—जान कर भी नहीं जानता; **ओइ**—वह; **भुलि**—भूल जाता हूँ; **नामि**—उतरता हूँ; भीतर प्रवेश करता हूँ; **आपन दोषे**—अपने दोष से; **पाइ**—पाता हूँ; **थाको**—रहो।

९. **ताँहारे......तपन**—चन्द्र सूर्य उनकी आरती करते हैं; **वन्दे**—वन्दना करते हैं; **सेइ**—वह; **ताँर**—अपने; **सेइ**—उसी; **ताहे**—इसीलिये; **हाते ......डालि**—हाथों में छः ऋतुओं की डलिया ले कर; **पाये**—पैरों में; **देय ढालि**—ढाल देती है; **कतइ**—कितने ही; **बरन**—वर्ण, रंग; **कत**—कितने;

विहगगीत गगन छाय— जलद गाय, जलधि गाय—
महापवन हरषे धाय, गाहे गिरिकन्दरे।
कत कत शत भकतप्राण हेरिछे पुलके, गाहिछे गान—
पुण्य किरणे फुटिछे प्रेम, टुटिछे मोहबन्ध रे।।

१८९६

१०

नयन तोमारे पाय ना देखिते, रयेछ नयने नयने।
हृदय तोमारे पाय ना जानिते, हृदये रयेछ गोपने।।
वासनार वशे मन अविरत धाय दश दिशे पागलेर मतो,
स्थिर-आँखि तुमि मरमे सतत जागिछ शयने स्वपने।।
सबाइ छेड़ेछे, नाइ यार केह, तुमि आछ तार, आछे तव स्नेह;
निराश्रय जन, पथ यार गेह, सेओ आछे तव भवने।
तुमि छाड़ा केह साथि नाइ आर, समुखे अनन्त जीवनविस्तार—
कालपारावार करितेछ पार केह नाहि जाने केमने।।

गाय—गाता है; **हरषे धाय**—हर्ष से दौड़ता है; **गाहे**—गाते हैं; **भकत**—भक्त; **हेरिछे**—निहार रहे हैं; **गाहिछे**—गा रहे हैं; **फुटिछे**—प्रस्फुटित हो रहा है; **टुटिछे**—टूट रहा है; **बन्ध**—बन्धन।

१०. **नयन......देखिते**—नयन तुम्हें देख नहीं पाते; **रयेछ......नयने**—प्रति नयन में तुम निवास करते हो; **हृदय......गोपने**—हृदय तुम्हें जान नहीं पाता, तुम गोपन भाव से हृदय में (ही) मौजूद हो; **वासनार वशे**—वासना के वश में; **धाय**—दौड़ता है; **दिशे**—दिशाओं में; **पागलेर मतो**—पागल के समान; **मरमे**—मर्म (अन्तर) में; **जागिछ**—जाग रहे हो; **स्वपने**—स्वप्न में; **सबाइ छेड़ेछे**—सभी ने छोड़ दिया है; **नाइ......केह**—जिसका कोई नहीं है; **तुमि......स्नेह**—उसके तुम हो, (उसके लिये) तुम्हारा स्नेह है; **पथ......गेह**—पथ ही जिसका घर है; **सेओ......भवने**—वह भी तुम्हारे भवन में है; **तुमि......आर**—तुम्हें छोड़ और कोई साथी नहीं है; **करितेछ**—कर रहे हो; **केह......केमने**—कोई नहीं जानता किस प्रकार;

जानि शुधु तुमि आछ ताइ आछि, तुमि प्राणमय ताइ आमि बाँचि,
यत पाइ तोमाय आरो तत याचि, यत जानि तत जानि ने।
जानि आमि तोमाय पाब निरन्तर लोकलोकान्तरे युगयुगान्तर—
तुमि आर आमि, माझे केह नाइ, कोनो बाधा नाइ भुवने ।।

१८९६

११

प्रभाते विमल आनन्दे विकशित कुसुमगन्धे
विहङ्गमगीतछन्दे तोमार आभास पाइ ।।
जागे विश्व तव भवने प्रतिदिन नव जीवने,
अगाध शून्य पूरे किरणे,
खचित निखिल विचित्र बरने—
विरल आसने बसि तुमि सब देखिछ चाहि ।।
चारि दिके करे खेला बरन-किरण-जीवन-मेला,
कोथा तुमि अन्तराले।
अन्त कोथाय, अन्त कोथाय—अन्त तोमार नाहि नाहि ।।

१८९६

जानि......आछि—केवल (इतना ही) जानता हूँ (कि) तुम हो इसीलिये (मैं) हूँ; **तुमि....बाँचि**—तुम प्राणमय हो इसीलिये जीता हूँ; **यत.....याचि**—जितना तुम्हें पाता हूँ उतना ही और याचना करता हूँ; **यत.....ने**—जितना जानता हूँ उतना (ही लगता है कि तुम्हें) नहीं जानता; **पाब**—पाऊँगा; **तोमाय**—तुम्हें; **माझे......नाइ**—बीच में कोई नहीं; **कोनो**—कोई।

११. **तोमार......पाइ**—तुम्हारा आभास पाता हूँ; **पूरे**—परिपूर्ण होता है; **बरने**—वर्ण (रंग) से; **बसि**—बैठ कर; **तुमि.....चाहि**—तुम सब कुछ दृष्टि डालकर देख रहे हो; **चारि दिके**—चारों ओर; **करे खेला**—खेल (क्रीड़ा) कर रहे हैं; **कोथा**—कहाँ; **तुमि**—तुम; **कोथाय**—कहाँ; **तोमार**—तुम्हारा; **नाहि**—नहीं है।

१२

सुधासागरतीर हे, एसेछे नरनारी सुधारस-पियासे।
शुभ विभावरी, शोभामयी धरणी,
निखिल गाहे आजि आकुल आश्वासे ।।
गगने विकाशे तव प्रेमपूर्णिमा,
मधुर बहे तव कृपासमीरण।
आनन्दरङ्ग उठे दश दिके,
मग्न मन प्राण अमृत-उच्छ्वासे ।।

१८९६

१३

हृदय वेदना बहिया प्रभु, एसेछि तव द्वारे ।।
तुमि अन्तर्यामी हृदयस्वामी, सकलइ जानिछ हे—
यत दुःख लाज दारिद्रच संकट आर जानाइब कारे ।।
अपराध कत करेछि नाथ, मोहपाशे प'ड़े;
तुमि छाड़ा प्रभु, मार्जना केह करिबेना संसारे ।।
सब वासना दिब विसर्जन तोमार प्रेमपाथारे;
सब विरह विच्छेद भुलिब तव मिलन-अमृतधारे ।।
आर आपन भावना पारि ना भाबिते, तुमि लहो मोर भार;
परिश्रान्त जने प्रभु, लये याओ संसारसागर पारे ।।

१८९६

१२. **एसेछे**—आए हैं; **पियासे**—प्यास से; **गाहे**—गाता है; **आजि**—आज।

१३. **बहिया**—वहन कर; **एसेछि**—आया हूँ; **सकलइ**—सभी कुछ; **जानिछ**—जानते हो; **यत**—जितना; **आर......कारे**—और किसे बताऊँगा; **कत**—कितना; **करेछि**—किया है; **प'ड़े**—पड़ कर; **तुमि छाड़ा**—तुम्हें छोड़; **मार्जना ....संसारे**—संसार में कोई क्षमा नहीं करेगा; **विसर्जन दिब**—विसर्जन कर दूंगा; **तोमार**—तुम्हारे; **पाथारे**—समुद्र में; **भुलिब**—भूल जाऊँगा; **आर**—और; **पारि......भाबिते**—नहीं सोच पाता; **तुमि......भार**—तुम मेरा भार ले लो; **जने**—व्यक्ति को; **लये याओ**—ले जाओ।

१४

आमि संसारे मन दियेछिनु, तुमि आपनि से मन नियेछ।
आमि सुख ब'ले दुख चेयेछिनु, तुमि दुख ब'ले सुख दियेछ।।
हृदय याहार शतखाने छिल शत स्वार्थेर साधने
ताहारे केमने कुड़ाये आनिले, बाँधिले भक्तिबाँधने।।
सुख सुख करे द्वारे द्वारे मोरे कत दिके कत खोँजाले;
तुमि ये आमार कत आपनार एबार से कथा बोझाले।।
करुणा तोमार कोन् पथ दिये कोथा निये याय काहारे—
सहसा देखिनु नयन मेलिये, एनेछ तोमारि दुयारे।।

१९००

१५

जानि हे यबे प्रभात हबे तोमार कृपा-तरणी
लइबे मोरे भवसागर-किनारे।
करि ना भय, तोमारि जय गाहिया याब चलिया,
दाँड़ाब आसि तव अमृतदुयारे।।

१४. **आमि.....दियेछिनु**—मैं संसार की ओर मन लगाए हुए था; **तुमि.....नियेछ**—तुमने स्वयं ही वह मन ले लिया है; **आमि.....चेयेछिनु**—सुख के रूप में मैंने दुःख चाहा था; **तुमि.....दियेछ**—तुमने दुःख के रूप में सुख दिया है; **हृदय......साधने**—सैकड़ों स्वार्थों की साधना में जिसका हृदय सैकड़ों जगह था; **ताहारे......बाँधने**—उसे किस प्रकार उठा लाए और भक्ति के बंधन में बाँधा; **कुड़ाये**—फेंकी हुई परित्यक्त वस्तु को उठा कर; **सुख......खोँजाले**—सुख सुख करते हुए द्वार-द्वार कितनी दिशाओं में मुझसे कितनी खोज कराई; **तुमि......बोझाले**—तुम जो मेरे कितने अपने हो इस बार यह बात समझा दी; **करुणा....काहारे**—तुम्हारी करुणा किस पथ से किसे कहाँ ले जाती है; **सहसा.....दुयारे**—सहसा आँखें खोल कर देखा, अपने ही दरवाज़े ले आए हो।

१५. **जानि**—जानता हूँ; **यबे**—जब; **हबे**—होगा; **तोमार**—तुम्हारी; **लइबे**—पहुँचा देगी; **मोरे**—मुझे; **करि ना**—नहीं करता; **तोमारि.....चलिया**—तुम्हारी ही जय गा कर चला जाऊँगा; **दाँड़ाब आसि**—आ कर खड़ा हूँगा; **दुयारे**—द्वार पर; **तुमि**—तुमने; **घेरिया**—घेर कर; **रेखेछ मोरे**—मुझे

जानि हे तुमि युगे युगे तोमार बाहु घेरिया
रेखेछ मोरे तव असीम भुवने;
जनम मोरे दियेछ तुमि आलोक हते आलोके,
जीवन हते नियेछ नव जीवने।
जानि हे नाथ, पुण्यपापे हृदय मोर सतत
शयान आछे तव नयनसमुखे।
आमार हाते तोमार हात रयेछे दिनरजनी,
सकल पथे-विपथे सुखे-असुखे।
जानि हे जानि, जीवन मम विफल कभु हबे ना,
दिबे ना फेलि विनाश-भय-पाथारे—
एमन दिन आसिबे यबे करुणा भरे आपनि
फुलेर मतो तुलिया लबे ताहारे।।

१९००

१६

अल्प लइया थाकि, ताइ मोर याहा याय ताहा याय।
कणाटुकु यदि हाराय ता लये प्राण करे 'हाय हाय'।।
नदीतटसम केवलइ वृथाइ प्रवाह आँकड़ि राखिबारे चाइ,
एके एके बुके आघात करिया ढेउगुलि कोथा याय।।

रखा है; **दियेछ**—दिया है; **हते**—से; **नियेछ**—ले गए हो; **शयान**—सोया हुआ; **आछे**—है; **नयनसमुखे**—आँखों के सम्मुख; **आमार....रयेछे**—मेरे हाथों में तुम्हारे हाथ पड़े हुए हैं; **कभु......ना**—कभी नहीं होगा; **दिबे......पाथारे**—विनाश-भय के सागर में फेंक नहीं दोगे; **एमन......ताहारे**—ऐसा दिन आएगा जब दया से भर अपने आप ही फूल के समान उसे (मेरे जीवन को) उठा लोगे।

१६. **अल्प.....थाकि**—स्वल्प को ले कर रहता हूँ; **ताइ.....याय**—इसीलिये मेरा जो कुछ जाता है वह चला ही जाता है; **कणाटुकु**—कण भर; **हाराय**—खो जाता है; **ता लये**—उसे ले कर; **करे**—करता है; **केवलइ**—केवल ही; **वृथाइ**—व्यर्थ ही; **आँकड़ि......चाइ**—जकड़ कर रखना चाहता हूँ; **एके......याय**—एक एक कर छाती पर आघात कर लहरें कहाँ चली जाती हैं;

याहा याय आर याहा किछु थाके सब यदि दिइ सँपिया तोमाके
तबे नाहि क्षय, सबइ जेगे रय तव महा महिमाय ।।
तोमाते रयेछे कत शशी भानु, हाराय ना कभु अणु परमाणु,
आमारइ क्षुद्र हाराधनगुलि रबे ना कि तव पाय ।।

१९०१

१७

तोमार असीमे प्राणमन लये यत दूरे आमि धाइ—
कोथाओ दुःख, कोथाओ मृत्यु, कोथा विच्छेद नाइ ।।
मृत्यु से धरे मृत्युर रूप, दुःख हय हे दुःखेर कूप,
तोमा हते यबे हइये विमुख आपनार पाने चाइ ।।
हे पूर्ण, तव चरणेर काछे याहा-किछु सब आछे आछे आछे—
नाइ नाइ भय, से शुधु आमारइ, निशिदिन काँदि ताइ ।
अन्तरग्लानि संसारभार पलक फेलिते कोथा एकाकार
जीवनेर माझे स्वरूप तोमार राखिबारे यदि पाइ ।।

१९०१

याहा......थाके—जो जाता है और जो-कुछ रह जाता है; **दिइ......तोमाके**—तुम्हें सौंप दूं; **तबे**—तब; **नाहि**—नहीं है; **सबइ**—सभी; **जेगे रय**—जगा (बना) रहता है; **महिमाय**—महिमा में; **तोमाते....भानु**—तुम में कितने चन्द्र-सूर्य हैं; **हाराय......कभु**—कभी नहीं खोते; **आमार......पाय**—मेरी ही खोई हुई क्षुद्र धनराशि क्या तुम्हारे चरणों में नहीं रहेगी ?

१७. **तोमार असीमे**—तुम्हारे असीम में; **लये**—ले कर; **यत दूरे**—जितने दूर दूर तक भी; **आमि धाइ**—मैं दौड़ पाता हूँ; **कोथाओ**—कहीं भी; **विच्छेद**—वियोग; **नाइ**—नहीं (दिखाई देता); **से**—वह; **हय**—हो जाता है; **तोमा.....चाइ**—तुमसे जब विमुख हो कर अपनी (ही) ओर देखता हूँ; **चरणेर काछे**—चरणों के निकट; **याहा किछु**—जो कुछ; **आछे**—है; **नाइ**—नहीं है; **से.....आमारइ**—वह केवल मुझे ही है; **काँदि ताइ**—इसीलिये क्रन्दन करता हूँ; **पलक फेलिते**—पल भर में; **कोथा**—कहाँ; **जीवनेर माझे**—जीवन में; **राखिबारे......पाइ**—यदि (सहेजकर) रख पाऊँ ।

१८

तोमार पताका यारे दाओ तारे बहिबारे दाओ शकति ।
तोमार सेवार महान दुःख सहिबारे दाओ भकति ।।
आमि ताइ चाइ भरिया परान दुःखेर साथे दुःखेर त्राण,
तोमार हातेर वेदनार दान एड़ाये चाहि ना मुकति ।
दुख हबे मम माथार भूषण साथे यदि दाओ भकति ।।
यत दिते चाओ काज दियो यदि तोमारे ना दाओ भुलिते,
अन्तर यदि जड़ाते ना दाओ जालजञ्जालगुलिते ।
बाँधियो आमाय यत खुशि डोरे मुक्त राखियो तोमा-पाने मोरे
धुलाय राखियो पवित्र क'रे तोमार चरणधूलिते;
भुलाये राखियो संसारतले, तोमारे दियो ना भुलिते ।।
ये पथे घुरिते दियेछ घुरिब, याइ येन तव चरणे;
सब श्रम येन बहि लय मोरे सकलश्रान्तिहरणे ।
दुर्गम पथ ए भवगहन— कत त्याग शोके विरहदहन—

१८. **तोमार......शकति**—जिसे (तुम) अपनी पताका देते हो उसे (उसको) वहन करने की शक्ति (भी) देते हो; **सेवार**—सेवा का; **सहिबारे......भकति**—सहन करने के लिये भक्ति देते हो; **आमि.....परान**—इसीलिये मैं प्राण भर कर चाहता हूँ; **दुःखेर......त्राण**—दुःख के साथ दुःख का त्राण; **हातेर**—हाथ का; **दान एड़ाये......मुकति**—दान से कतरा (बच निकल) कर मुक्ति नहीं चाहता; **हबे**—होगा; **यत.....भुलिते**—जितना काम (करने के लिये) देना चाहो देना, यदि (उसे करने में) तुम अपने को भूल न जाने दो; **जड़ाते......दाओ**—लिप्त न होने दो; **बाँधियो.....डोरे**—जितनी (तुम्हारी) खुशी हो मुझे बन्धन में बाँधना; **मुक्त......मोरे**—(लेकिन) अपनी ओर मुझे मुक्त रखना; **धुलाय......धूलिते**—अपनी चरण-धूलि से पवित्र कर धूल में रखना; **भुलाये......भुलिते**—संसार (के नाना कामों) में भुलाए रखना (लेकिन) अपने को न भूलने देना; **ये.....घुरिब**—जिस पथ पर (मुझे) भटकने को भेजा है (उसी में) भटकूँगा; **याइ.....चरणे**—(लेकिन) ऐसा हो कि (भटकते हुए) तुम्हारे चरणों में पहुँच जाऊँ; **सब.....श्रान्तिहरणे**—सब श्रम जिससे मुझे वहन कर सकल श्रान्तिहरण (अर्थात् तुम) तक ले जाय; **ए**—यह; **कत**—कितना;

जीवने मृत्यु करिया वहन प्राण पाइ येन मरणे—
सन्ध्यावेलाय लभि गो कुलाय निखिलशरण चरणे ।।

१९०१

१९

प्रतिदिन तव गाथा गाब आमि सुमधुर—
तुमि देहो मोरे कथा, तुमि देहो मोरे सुर ।।
तुमि यदि थाको मने   विकच कमलासने,
तुमि यदि कर प्राण तव प्रेमे परिपूर
प्रतिदिन तव गाथा गाब आमि सुमधुर ।।
तुमि शोन यदि गान आमार समुखे थाकि,
सुधा यदि करे दान तोमार उदार आँखि,
तुमि यदि दुख'परे   राख कर स्नेहभरे,
तुमि यदि सुख हते दम्भ करह दूर
प्रतिदिन तव गाथा गाब आमि सुमधुर ।।

१९०१

२०

आछे दुःख, आछे मृत्यु, विरहदहन लागे ।
तबुओ शान्ति, तबु आनन्द, तबु अनन्त जागे ।।

करिया—कर; **पाइ**—पाऊँ; **लभि**—प्राप्त करूँ; **कुलाय**—नीड़; **सन्ध्या...... चरणे**—सन्ध्या के समय समस्त को शरण देने वाले (तुम्हारे) चरण रूपी नीड़ को प्राप्त करूँ ।

१९. **गाब**—गाऊँगा; **देहो**—दो; **कथा**—शब्द, उक्ति; **थाको मने**—मन में रहो; **परिपूर**—परिपूर्ण; **शोन**—सुनो; **आमार......थाकि**—मेरे सम्मुख रह कर; **आँखि**—आँखें; **दुख'परे**—दुःख पर; **राख**—रखो; **हते**—से; **करह**—करो ।

२०. **आछे**—है; **दहन**—दाह, यन्त्रणा; **लागे**—(विरहदाह का क्लेश) बोध होता है; **तबुओ**—तो भी; **हासे**—हँसते हैं; **आसे**—आता है;

तबु प्राण नित्यधारा, हासे सूर्य चन्द्र तारा,
वसन्त निकुञ्जे आसे विचित्र रागे ।।
तरङ्ग मिलाये याय, तरङ्ग उठे ;
कुसुम झरिया पड़े, कुसुम फुटे ।
नाहि क्षय, नाहि शेष नाहि नाहि दैन्यलेश-
सेइ पूर्णतार पाये मन स्थान मागे ।।

१९०३

२१

आजि प्रणमि तोमारे चलिब, नाथ, संसारकाजे ।
तुमि आमार नयने नयन रेखो अन्तरमाझे ।।
हृदयदेवता रयेछ प्राणे मन येन ताहा नियत जाने,
पापेर चिन्ता मरे येन दहि दुःसह लाजे ।।
सब कलरवे सारा दिनमान शुनि अनादि संगीतगान,
सबार सङ्गे येन अविरत तोमार सङ्ग राजे ।
निमेषे निमेषे नयने वचने, सकल कर्मे, सकल मनने,
सकल हृदयतन्त्रे येन मङ्गल बाजे ।।

१९०३

२२

आनन्द तुमि स्वामी, मङ्गल तुमि,
तुमि हे महासुन्दर, जीवननाथ ।।

रागे—रंग में; **मिलाये याय**—मिट जाती हैं; **झरिया पड़े**—झड़ पड़ते हैं; **फुटे**—खिलते हैं; **नाहि**—नहीं है; **सेइ**—उसी; **पूर्णतार पाये**—पूर्णता के चरणों में; **मागे**—माँगता है, याचना करता है।

२१. **तोमारे**—तुम्हें; **चलिब**—चलूँगा; **रेखो**—रखो; **रयेछ**—विद्यमान हो; **ताहा**—उसे; **नियत**—स्थिर; **येन**—जिससे; **शुनि**—सुनूँ; **सबार सङ्गे**—सभी के साथ; **राजे**—विराजित हो।

शोके दुखे तोमारि वाणी जागरण दिबे आनि,
नाशिबे दारुण अवसाद ।।
चित मन अर्पिनु तव पद प्रान्ते,
शुभ्र शान्तिशतदल-पुण्यमधु-पाने
चाहि आछे सेवक, तव सुदृष्टिपाते
कबे हबे ए दुखरात प्रभात ।।

१९०३

२३

आजि मम मन चाहे जीवनबन्धुरे,
सेइ जनमे मरणे नित्यसङ्गी
निशिदिन सुखे शोके—
सेइ चिर-आनन्द, विमल चिरसुधा,
युगे युगे कत नव नव लोके नियतशरण ।
पराशान्ति, परमप्रेम, परामुक्ति, परमक्षेम,
सेइ अन्तरतम चिरसुन्दर प्रभु, चित्तसखा,
धर्म-अर्थ-काम-भरण राजा हृदयहरण ।।

१९०३

२४

तोमारि नामे नयन मेलिनु पुण्यप्रभाते आजि,
तोमारि नामे खुलिल हृदयशतदलदलराजि ।
तोमारि नामे निबिड़ तिमिरे फुटिल कनकलेखा,
तोमारि नामे उठिल गगने किरणवीणा बाजि ।।

२२. **तोमारि**—तुम्हारी ही; **दिबे आनि**—ला देगी; **नाशिबे**—नष्ट कर देगी; **चाहि आछे**—देख रहा है, टकटकी लगाए हुए है; **कबे हबे**—कब होगा ।

२३. **जीवनबन्धुरे**—जीवनबन्धु को; **सेइ**—उसी ।

२४. **तोमारि नामे**—तुम्हारे ही नाम के साथ; **मेलिनु**—खोले; **खुलिल**—खुली; **फुटिल**—खिली, प्रस्फुटित हुई; **उठिल बाजि**—बज उठी;

तोमारि नामे पूर्वतोरणे खुलिल सिंहद्वार,
बाहिरिल रवि नवीन आलोके दीप्त मुकुट माजि ।।
तोमारि नामे जीवनसागरे जागिल लहरीलीला,
तोमारि नामे निखिल भुवन बाहिरे आसिल साजि ।।

१९०३

२५

दुयारे दाओ मोरे राखिया नित्य कल्याण-काजे हे ।
फिरिब आह्वान मानिया तोमारि राज्येर माझे हे ।।
मजिया अनुखन लालसे रब ना पड़िया आलसे,
हयेछे जर्जर जीवन व्यर्थ दिवसेर लाजे हे ।।
आमारे रहे येन ना घिरि सतत बहुतर संशये,
विविध पथे येन ना फिरि बहुल-संग्रह-आशये ।
अनेक नृपतिर शासने ना रहि शंकित आसने,
फिरिब निर्भयगौरवे तोमारि भृत्येर साजे हे ।।

१९०३

२६

दाँड़ाओ आमार आँखिर आगे ।
येन तोमार दृष्टि हृदये लागे ।।

बाहिरिल—बाहर हुआ; **माजि**—माँज कर, परिष्कृत कर; **जागिल**—जागी; **आसिल**—आया; **साजि**—सज कर ।

२५. **दुयारे**—द्वार पर, दरवाजे पर; **दाओ**—दो; **मोरे**—मुझे; **राखिया**—रख; **फिरिब**—घूमूंगा; **मानिया**—मान कर, स्वीकार कर; **मजिया**—विभोर हो कर, डूब कर; **अनुखन**—निरन्तर, सर्वदा; **लालसे**—लालसा में, लिप्सा में; **रब......आलसे**—आलस्य में पड़ा नहीं रहूँगा; **हयेछे**—हो गया है; **व्यर्थ......हे**—व्यर्थ दिवसों (के बिताने) की लज्जा से; **घिरि**—घेर कर; **आशये**—अभिप्राय से; **रहि**—रहूँ; **साजे**—साज-सज्जा में ।

२६. **दाँड़ाओ**—खड़े होओ; **आमार......आगे**—मेरी आँखों के सामने;

समुख-आकाशे चराचरलोके एइ अपरूप आलोके दाँड़ाओ हे,
आमार परान पलके पलके चोखे चोखे तव दरश मागे ।।
एइ-ये धरणी चेये ब'से आछे इहार माधुरी बाड़ाओ हे ।
धुलाय-बिछानो श्याम अञ्चले दाँड़ाओ हे नाथ, दाँड़ाओ हे ।।
याहा-किछू आछे सकलइ झाँपिया, भुवन छापिया, जीवन व्यापिया
दाँड़ाओ हे ।
दाँड़ाओ येखाने विरही ए हिया तोमारि लागिया एकेला जागे ।।

१९०३

२७

निबिड़ घन आँधारे ज्वलिछे ध्रुवतारा ।
मन रे मोर, पाथारे होस ने दिशेहारा ।।
विषादे हये म्रियमाण बन्ध ना करियो गान,
सफल करि तोलो प्राण टुटिया मोहकारा ।।
राखियो बल जीवने, राखियो चिर-आशा,
शोभन एइ भुवने राखियो भालोबासा ।
संसारेर सुखे दुखे चलिया येयो हासिमुखे,
भरिया सदा रेखो बुके ताँहारि सुधाधारा ।।

१९०३

समुख—सम्मुख, प्रत्यक्ष; **एइ**—इस; **परान**—प्राण; **पलके पलके**—क्षण क्षण; **एइ-ये**—यह जो; **चेये......आछे**—(आशा से) ताकती बैठी है; **इहार**—इसकी; **बाड़ाओ**—बढ़ाओ; **धुलाय-बिछानो**—धूलि में बिछे हुए; **याहा.....झाँपिया**—जो कुछ है सब को आच्छादित कर; **छापिया**—ढक कर; **येखाने**—जहाँ; **तोमारि लागिया**—तुम्हारे ही लिये; **एकेला**—अकेला ।

२७. **आँधारे**—अंधकार में; **ज्वलिछे**—प्रज्वलित हो रहा है, चमक रहा है; **पाथारे**—सागर में; **होस ने**—मत हो; **दिशेहारा**—दिग्भ्रान्त; **हये**—हो कर; **बन्ध....गान**—गान वन्द न करना; **करि तोलो**—कर लो; **टुटिया**—तोड़ कर; **शोभन**—शोभायुक्त, सुन्दर; **भालोबासा**—प्यार; **चलिया येयो**—चले जाना; **भरिया......बुके**—हृदय में सदा भर रखो; **ताँहारि**—उन्हीं की ।

२८

बाजाओ तुमि कवि, तोमार संगीत सुमधुर
गम्भीरतर ताने प्राणे मम,
द्रव जीवन झरिबे झर झर निर्झर तव पाये ।।
बिसरिबे सब सुख-दुख, चिन्ता, अतृप्त वासना—
बिचरिबे विमुक्त हृदय विपुल विश्व-माझे
अनुखन आनन्दबाये ।।

१९०३

२९

विमल आनन्दे जागो रे ।
मगन हओ सुधासागरे ।।
हृदय-उदयाचले देखो रे चाहि
प्रथम परम ज्योतिराग रे ।।

१९०३

३०

सबार माझारे तोमारे स्वीकार करिब हे ।
सबार माझारे तोमारे हृदये बरिब हे ।।
शुधु आपनार मने नय, आपन घरेर कोणे नय,
शुधु आपनार रचनार माझे नहे; तोमार महिमा येथा उज्ज्वल रहे

२८. **पाये**—पैरों में; **बिसरिबे**—बिसर जाएंगे, भूल जाएगे; **बिचरिबे**—विचरण करेगा; **अनुखन**—निरन्तर; **बाये**—वायु में।

२९. **हओ**—होओ; **चाहि**—ताककर।

३०. **सबार......करिब**—सबके बीच तुम्हें स्वीकार करूँगा; **बरिब**—वरण करूँगा; **शुधु......नय**—केवल अपने मन में नहीं, (केवल) अपने घर के कोने में नहीं; **नहे**—नहीं; **येथा**—जहाँ; **सेइ सबा-माझे**—उसी सब के बीच;

सेइ सबा-माझे तोमारे स्वीकार करिब हे ।
द्युलोके भूलोके तोमारे हृदये बरिब हे ।।
सकलि तेयागि तोमारे स्वीकार करिब हे ।
सकलि ग्रहण करिया तोमारे बरिब हे ।।
केवलि तोमार स्तवे नय, शुधु संगीतरवे नय,
शुधु निर्जने ध्यानेर आसने नहे; तव संसार येथा जाग्रत रहे
कर्मे सेथाय तोमारे स्वीकार करिब हे ।
प्रिये अप्रिये तोमारे हृदये बरिब हे ।।
जानि ना बलिया तोमारे स्वीकार करिब हे ।
जानि ब'ले नाथ, तोमारे हृदये बरिब हे ।।
शुधु जीवनेर सुखे नय, शुधु प्रफुल्लमुखे नय,
शुधु सुदिनेर सहज सुयोगे नहे; दुखशोक येथा आँधार करिया रहे
नत हये सेथा तोमारे स्वीकार करिब हे ।
नयनेर जले तोमारे हृदये बरिब हे ।।

१९०३

३१

स्वपन यदि भाङिले रजनीप्रभाते
पूर्ण करो हिया मङ्गल किरणे ।
राखो मोरे तव काजे,
नवीन करो ए जीवन हे ।
खुलि मोर गृहद्वार डाको तोमारि भवने हे ।।

१९०३

तेयागि—त्याग कर; **सेथाय**—वहाँ; **जानि......बलिया**—जानता नहीं हूँ इसलिये; **जानि ब'ले**—जानता हूँ इसलिये; **हये**—हो कर ।

३१. **स्वपन**—स्वप्न; **भाङिले**—तोड़ दिया; **खुलि**—खोल कर ।

३२

हृदय वासना पूर्ण हल आजि मम पूर्ण हल, शुन सव जगतजने ।।
की हेरिनु शोभा, निखिल भुवननाथ
चित्त-माझे बसि स्थिर आसने ।।

१९०३

३३

ये-केह मोरे दियेछ सुख दियेछ ताँरि परिचय,
सबारे आमि नमि ।
ये-केह मोरे दियेछ दुख दियेछ ताँरि परिचय,
सबारे आमि नमि ।।
ये-केह मोरे बेसेछ भालो ज्वेलेछ घरे ताँहारि आलो,
ताँहारि माझे सबारइ आजि पेयेछि आमि परिचय,
सबारे आमि नमि ।।
या-किछु काछे एसेछे, आछे, एनेछे ताँरे प्राणे,
सबारे आमि नमि ।
या-किछु दूरे गियेछे छेड़े टेनेछे ताँरि पाने,
सबारे आमि नमि ।
जानि वा आमि नाहि वा जानि, मानि वा आमि नाहि वा मानि,

३२. **हल**—हुई; **आजि**—आज; **शुन......जने**—जगत के सब लोग सुनो; **की......शोभा**—कैसी शोभा देखी; **बसि**—बैठे हुए हैं।

३३. **ये......नमि**—तुम-जिस-किसीने मुझे सुख दिया है, उन्हींका परिचय दिया है, मैं सबको नमस्कार करता हूँ; **बेसेछ भालो**—प्यार किया है; **ज्वेलेछ**—जलाया है, प्रज्वलित किया है; **ताँहारि**—उन्हींका; **आलो**—आलोक, प्रदीप; **पेयेछि**—पाया है; **काछे**—निकट; **एसेछे**—आया है; **आछे**—विद्यमान है; **एनेछे**—ले आया है; **गियेछे छेड़े**—छोड़ कर गया है; **टेनेछे......पाने**—उन्हींकी ओर खींचा है; **जानि......मानि**—मैं जानूं या न जानूं, मानूं या न मानूं;

नयन मेलि निखिले आमि पेयेछि ताँरि परिचय,
सबारे आमि नमि ।।

१९०३

३४

आमि की ब'ले करिब निवेदन
आमार हृदय प्राण मन ।।
चित्ते आसि दया करि निजे लहो अपहरि
करो तारे आपनारि धन— आमार हृदय प्राण मन ।।
शुधु धूलि, शुधु छाइ, मूल्य यार किछु नाइ,
मूल्य तारे करो समर्पण स्पर्शे तव परशरतन !
तोमारि गौरवे यबे आमार गौरव हबे
सब तबे दिब विसर्जन—
आमार हृदय प्राण मन ।।

१९०३

३५

आमार गोधूलिलगन एल बुझि काछे गोधूलिलगन रे ।
विवाहेर रङे राङा हये आसे सोनार गगन रे ।।

मेलि—खोल कर; **निखिले**—जगत् में; **ताँरि**—उन्हींका ।

३४. **ब'ले**—कह कर; **करिब**—करूँगा; **निवेदन**—अर्पित; **चित्ते......करि**—दया करके चित्त में आ; **निजे......अपहरि**—स्वयं अपहरण करो; **करो......धन**—उसे अपना ही धन बना लो; **शुधु**—केवल; **छाइ**—राख; **यार**—जिसका; **तारे**—उसे; **स्पर्शे**—छुकर; **परशरतन**—पारस, स्पर्शमणि; **यबे**—जब; **हबे**—होगा; **तबे**—तब; **दिब**—दूंगा ।

३५. **आमार**—मेरा; **लगन**—लग्न, शुभ समय; **एल**—आ गया है; **बुझि**—लगता है, सम्भवतः; **काछे**—पास, निकट; **विवाहेर......गगन**—विवाह के रंग मे रंजित हो कर सुनहला आकाश आता है;

शेष क'रे दिल पाखि गान-गाओया, नदीर उपरे पड़े एल हाओया ;
ओ पारेर तीर, भाङा मन्दिर आँधारे मगन रे।
आसिछे मधुर झिल्लिनूपुरे गोधूलिलगन रे ।।
आमार दिन केटे गेछे कखनो खेलाय, कखनो कत की काजे।
एखन की शुनि पुरबीर सुरे कोन् दूरे बाँशि बाजे।
बुझि देरि नाइ, आसे बुझि आसे, आलोकेर आभा लेगेछे आकाशे—
वेलाशेषे मोरे के साजाबे ओरे, नवमिलनेर साजे !
सारा हल काज, मिछे केन आज डाक मोरे आर काजे ।।
आमि जानि ये आमार हये गेछे गना गोधूलिलगन रे।
धूसर आलोके मुदिबे नयन अस्तगगन रे।
तखन ए घरे के खुलिबे द्वार, के लइबे टानि बाहुटि आमार,
आमाय के जाने की मन्त्रे गाने करिबे मगन रे—
सब गान सेरे आसिबे यखन गोधूलिलगन रे ।।

१९०६

शेष......हाओया—पक्षियों ने गीत गाना समाप्त कर दिया, नदी के ऊपर हवा धीमी हो आई; **ओ**—उस; **पारेर**—पार का; **भाङा**—टूटा हुआ; **आँधारे**—अन्धकार में; **मगन**—मग्न, निमज्जित; **आसिछे**—आ रहा है; **झिल्लि**—झींगुर; **केटे गेछे**—बीत गया है; **कखनो खेलाय**—कभी खेल में; **कत...... काजे**—कितने कामों में; **एखन**—इस समय; **शुनि**—सुनता हूँ; **पुरबीर**—पूरबी (रागिनी); **कोन्**—कहीं; **आसे**—आ रहा है; **लेगेछे**—छू गई है; **सारा हल**—पूर्ण हुआ, समाप्त हुआ; **मिछे......काजे**—आज काम (करने) के लिये व्यर्थ (झूठ मूठ) अब मेरी पुकार क्यों ?; **आमि......गना**—मैं जानती हूँ कि मेरी गोधूलि-लग्न की गणना (मिलन की गणना) पूरी हो गई है; **ए**—इस; **के**—कौन; **के.....आमार**—कौन मेरी बाँहों को खींच लेगा; **आमाय**—मुझे; **के जाने**—कौन जानता है; **की**—किस; **सेरे आसिबे**—समाप्त कर आएगा; **यखन**—जब।

३६

तुमि यत भार दियेछ से भार करिया दियेछ सोजा।
आमि यत भार जमिये तुलेछि सकलइ हयेछे बोझा।
ए बोझा आमार नामाओ बन्धु, नामाओ—
भारेर वेगेते चलेछि कोथाय, ए यात्रा तुमि थामाओ ।।
आपनि ये दुख डेके आनि से-ये ज्वालाय वज्रानले—
अङ्गार क'रे रेखे याय, सेथा कोनो फल नाहि फले ।।
तुमि याहा दाओ से-ये दुःखेर दान
श्रावणधाराय वेदनार रसे सार्थक करे प्राण।
येखाने या-किछु पेयेछि केवलइ सकलइ करेछि जमा;
ये देखे से आज मागे-ये हिसाब, केह नाहि करे क्षमा ।।
ए बोझा आमार नामाओ बन्धु, नामाओ—
भारेर वेगेते ठेलिया चलेछि, ए यात्रा मोर थामाओ ।।

१९०६

३७

अन्तर मम विकशित करो, अन्तरतर हे—
निर्मल करो, उज्ज्वल करो, सुन्दर करो हे ।।

३६. **तुमि......सोजा**—तुमने जितना भार (दायित्व) दिया है उस भार (दायित्व) को सहज कर दिया है; **आमि......बोझा**—मैंने (स्वयं) जितना भार इकट्ठा कर लिया है (वह) सभी बोझ हो गया है; **ए......नामाओ**—बन्धु, मेरे इस बोझ को उतारो, उतारो; **भार......थामाओ**—भार के वेग से (न-जाने) कहाँ चला हूँ, तुम इस यात्रा को रोको; **आपनि......फले**—स्वयं जिन दुःखों को बुला लाता हूँ वे वज्रानल में जलाते हैं और कोयला बना कर छोड़ जाते हैं, वहाँ कोई फल नहीं फलता; **तुमि....प्राण**—तुम जो देते हो वह तो दुःख का दान है, (वह) श्रावण की वर्षा में वेदना के रस से प्राणों को सार्थक बना जाता है; **ये......क्षमा**—जो देखता है वही आज हिसाब माँगता है, क्षमा कोई नहीं करता; **भारेर......चलेछि**—भार के वेग से ठेलता चल रहा हूँ।

जाग्रत करो, उद्यत करो, निर्भय करो हे ।
मङ्गल करो, निरलस निःसंशय करो हे ।।
युक्त करो हे सबार सङ्गे, मुक्त करो हे बन्ध ।
सञ्चार करो सकल कर्मे शान्त तोमार छन्द ।
चरणपद्मे मम चित निस्पन्दित करो हे ।
नन्दित करो, नन्दित करो, नन्दित करो हे ।।

१९०८

३८

कत अजानारे जानाइले तुमि, कत घरे दिले ठाँइ—
दूरके करिले निकट, बन्धु, परके करिले भाइ ।।
पुरानो आवास छेड़े याइ यबे मने भेबे मरि की जानि की हबे—
नूतनेर माझे तुमि पुरातन से कथा ये भुले याइ ।।
जीवने मरणे निखिल भुवने यखनि येखाने लबे
चिरजनमेर परिचित ओहे तुमिइ चिनाबे सबे ।।
तोमारे जानिले नाहि केह पर, नाहि कोनो माना, नाइ कोनो डर—
सबारे मिलाये तुमि जागितेछ देखा येन सदा पाइ ।।

१९०८

३७. **उद्यत**—प्रवृत्त; **सबार सङ्गे**—सभी के साथ; **बन्ध**—बन्धन; **नन्दित**—आनन्दित ।

३८. **कत.....ठाँइ**—कितने अपरिचितों से तुमने परिचय कराया, कितने गृहों में आश्रय दिया; **करिले**—किया; **छेड़े**—छोड़ कर; **याइ यबे**—जब जाता हूँ; **मने......हबे**—मन में सोच सोच कर मरता हूँ कि जाने-क्या होगा; **माझे**—मध्य में; **से......याइ**—यह बात भूल जो जाता हूँ; **यखनि**—जब भी; **येखाने**—जहाँ; **लबे**—ग्रहण करोगे; **चिनाबे**—पहचनवाओगे; **तोमारे......पर**—तुम्हें जानने पर कोई पराया नहीं; **नाहि......माना**—कोई निषेध नहीं रहता; **सबारे पाइ**—सब को मिलित कर (युक्त कर) तुम जाग रहे हो; **देखा......पाइ**—ऐसा हो कि सर्वदा तुम्हारे दर्शन पाऊँ ।

३९

तुमि केमन करे गान करो हे गुणी,
आमि अवाक् हये शुनि, केवल शुनि ।।
सुरेर आलो भुवन फेले छेये,
सुरेर हाओया चले गगन बेये,
पाषण टुटे व्याकुल बेगे धेये
बहिया याय सुरेर सुरधुनी ।।
मने करि अमनि सुरे गाइ,
कण्ठे आमार सुर खुँजे ना पाइ ।
कइते की चाइ, कइते कथा बाधे;
हार मेने ये परान आमार काँदे,
आमाय तुमि फेलेछ कोन् फाँदे
चौदिके मोर सुरेर जाल बुनि ।।

१९०८

४०

तुमि नव नव रूपे एसो प्राणे ।
एसो गन्धे बरने एसो गाने ।।
एसो अङ्गे पुलकमय परशे,

---

३९. **केमन करे**—किस तरह, कैसे; **करो**—करते हो; **हये**—हो कर; **शुनि**—सुनता हूँ; **सुर......छेये**—(संगीत के) स्वर का आलोक (समस्त) भुवन को छा देता है; **हाओया**—हवा; **बेये**—हो कर, पार कर; **टुटे**—टूटता है; **बेगे**—वेग से; **धेये**—दौड़ कर; **बहिया......सुरधुनी**—सुर (स्वर) की गंगा बह जाती है; **मने......गाइ**—सोचता हूँ वैसे ही सुर में गाऊँ; **खुंजे...... पाइ**—खोज नहीं पाता; **कइते......बाधे**—क्या कहना चाहता हूँ, बात कहते अटक जाता हूँ; **हार......काँदे**—हार मान कर मेरे प्राण क्रन्दन कर उठते हैं; **आमाय......फाँदे**—मुझे किस फन्दे में तुमने डाला है; **चौदिके......बुनि**—मेरे चारों ओर स्वर का जाल बुन कर ।

४०. **एसो**—आओ; **बरने**—रंगों में; **दु' नयाने**—दो नयनों में ।

एसो चित्ते सुधामय हरषे,
एसो मुग्ध मुदित दु'नयाने ।।
एसो निर्मल उज्ज्वल कान्त,
एसो सुन्दर स्निग्ध प्रशान्त,
एसो एसो हे विचित्र विधाने ।।
एसो दुःखे सुखे, एसो मर्मे,
एसो नित्य नित्य सब कर्मे,
एसो सकल कर्म-अवसाने ।।

१९०८

४१

तिमिरदुयार खोलो—एसो, एसो नीरवचरणे ।
जननी आमार, दाँड़ाओ एइ नवीन अरुणकिरणे ।।
पुण्यपरशपुलके सब आलस याक दूरे ।
गगने बाजुक वीणा जगत-जागानो सुरे ।
जननी, जीवन जुड़ाओ तव प्रसादसुधासमीरणे ।
जननी आमार, दाँड़ाओ मम ज्योतिविभासित नयने ।।

१९०८

४२

आजि ए आनन्दसन्ध्या सुन्दर विकाशे, आहा—
मन्द पवने आजि भासे आकाशे
विधुर व्याकुल मधुमाधुरी, आहा ।।

---

४१. **दुयार**—द्वार, दरवाजा; **एसो**—आओ; **एइ**—इस; **पुण्य**—पवित्र; **परश**—स्पर्श; **याक**—जाय; **बाजुक**—बजे; **जगत-जागानो**—जगत् को जगाने वाले; **जुड़ाओ**—शीतल करो, तृप्त करो।

४२. **आजि**—आज; **ए**—यह; **विकाशे**—विकसती है; **भासे**—बहती है; **विधर**—विकल, कातर; **बरषे**—बरसती है; **प्रसाद**—आनन्द;

स्तब्ध गगने ग्रहतारा नीरवे
किरणसंगीते सुधा बरषे, आहा ।
प्राण मन मम धीरे धीरे प्रसादरसे आसे भरि,
देह पुलकित उदार हरषे, आहा ।।

१९०८

४३

विपदे मोरे रक्षा करो ए नहे मोर प्रार्थना—
विपदे आमि ना येन करि भय ।
दु:खतापे व्यथित चिते नाइ वा दिले सान्त्वना,
दु:खे येन करिते पारि जय ।।
सहाय मोर ना यदि जुटे   निजेर बल ना येन टुटे—
संसारेते घटिले क्षति, लभिले शुधु वञ्चना,
निजेर मने ना येन मानि क्षय ।।
आमारे तुमि करिबे त्राण ए नहे मोर प्रार्थना—
तरिते पारि शकति येन रय ।
आमार भार लाघव करि नाइ वा दिले सान्त्वना,
बहिते पारि एमनि येन हय ।।
नम्रशिरे सुखेर दिने   तोमारि मुख लइब चिने—
दुखेर राते निखिल धरा ये दिन करे वञ्चना
तोमारे येन ना करि संशय ।।

१९०८

आसे भरि—भर आते हैं ।

४३. **ए**—यह; **नहे**—नहीं है; **येन**—ऐसा हो कि; **नाइ.....दिले**—भले ही सान्त्वना नहीं दी; **करिते पारि**—कर सकूं; **जुटे**—मिले; **घटिले**—होने पर; **लभिले**—पाने पर; **शुधु**—केवल; **मानि**—मानूं; **क्षय**—क्षति; **तरिते पारि**—पार हो सकूं; **शकति......रय**—शक्ति जिसमें रहे; **लाघव करि**—हल्का करके; **बहिते......हय**—ऐसा हो कि (उसे) वहन कर सकूं; **लइब चिने**—पहचान लूंगा ।

४४

बल दाओ मोरे बल दाओ, प्राणे दाओ मोर शकति
सकल हृदय लुटाये तोमारे करिते प्रणति—
सरल सुपथे भ्रमिते, सब अपकार क्षमिते,
सकल गर्व दमिते, खर्ब करिते कुमति ।।
हृदये तोमारे बुझिते, जीवने तोमारे पूजिते,
तोमार माझारे खुँजिते चित्तेर चिर-बसति ।
तव काज शिरे बहिते, संसारताप सहिते,
भवकोलाहले रहिते, नीरवे करिते भकति ।।
तोमार विश्वछबिते तव प्रेमरूप लभिते,
ग्रह-तारा-शशी-रविते हेरिते तोमार आरति ।
वचनमनेर अतीते डुबिते तोमार ज्योतिते,
सुखे दुखे लाभे क्षतिते शुनिते तोमार भारती ।।

१९०८

४५

विपुल तरङ्ग रे, विपुल तरङ्ग रे ।
सब गगन उद्वेलिया, मगन करि अतीत अनागत
आलोके-उज्ज्वल जीवने चञ्चल एकि आनन्द-तरङ्ग ।।
ताइ, दुलिछे दिनकर चन्द्र तारा,
चमकि कम्पिछे चेतनाधारा,
आकुल चञ्चल नाचे संसार, कुहरे हृदयविहङ्ग।।

१९०८

४४. **दाओ**—दो; **मोरे**—मुझे; **शकति**—शक्ति; **लुटाये**—लुटा कर, लुण्ठित कर; **बसति**—बस्ती; **भारती**—वाणी, भाषा।

४५. **उद्वेलिया**—उद्वेलित करती हुई; **मगन......अनागत**—भूत और भविष्य को निमज्जित करती हुई; **ताइ**—इसीलिये; **दुलिछे**—दोलायित हो रहे हैं; **कम्पिछे**—काँप रही है; **कुहरे**—कूजता है, चहकता है।

४६

भुवनेश्वर हे,
मोचन कर' बन्धन सब मोचन कर' हे ।।
प्रभु मोचन कर' भय,
सब दैन्य करह लय,
नित्य चकित चञ्चल चित कर' निःसंशय ।
तिमिररात्रि, अन्ध यात्री,
समुखे तव दीप्त दीप तुलिया धर' हे ।।
भुवनेश्वर हे,
मोचन कर' जड़विषाद मोचन कर' हे ।
प्रभु, तव प्रसन्न मुख
सब दुःख करुक सुख,
धूलिपतित दुर्बल चित करह जागरूक ।
तिमिररात्रि, अन्ध यात्री,
समुखे तव दीप्त दीप तुलिया धर' हे ।।
भुवनेश्वर हे,
मोचन कर' स्वार्थपाश मोचन कर' हे ।
प्रभु विरस विकल प्राण,
कर' प्रेमसलिल दान,
क्षतिपीड़ित शंकित चित कर' सम्पदवान ।
तिमिररात्रि, अन्ध यात्री,
समुखे तव दीप्त दीप तुलिया धर' हे ।।

१९०८

४६. **करह**—करो; **करुक**—करे; **तुलिया धर'**—उठा कर रखो ।

४७

यदि तोमार देखा ना पाइ प्रभु, एबार ए जीवने,
तबे तोमाय आमि पाइ नि येन से कथा रय मने।
येन भुले ना याइ, वेदना पाइ शयने स्वपने।।
ए संसारेर हाटे
आमार यतइ दिवस काटे,
आमार यतइ दु हात भरे उठे धने
तबु किछुइ आमि पाइ नि येन से कथा रय मने।
येन भुले ना याइ, वेदना पाइ शयने स्वपने।।
यदि आलसभरे
आमि बसि पथेर 'परे,
यदि धुलाय शयन पाति सयतने
येन सकल पथइ बाकि आछे से कथा रय मने।
येन भुले ना याइ, वेदना पाइ शयने स्वपने।।
यतइ उठे हासि,
घरे यतइ बाजे बाँशि,
ओगो यतइ गृह साजाइ आयोजने
येन तोमाय घरे हय नि आना से कथा रय मने।
येन भुले ना याइ, वेदना पाइ शयने स्वपने।।
१९०८

४७. **देखा......पाइ**—दर्शन न पाऊँ; **एबार**—इस बार; **ए जीवने**—इस जीवन में; **तबे......मने**—तब इतना हो कि यह बात मन में बनी रहे कि मैंने तुम्हें पाया नहीं; **भुले......याइ**—भूल न जाऊँ; **यतइ**—जितने भी; **दु हात**—दोनों हाथ; **आमि......परे**—मैं रास्ते में बैठूं; **धुलाय**—धूल में; **शयन पाति**—सेज बिछाऊँ; **सयतने**—यत्न पूर्वक; **पथइ**—पथ ही; **बाकि आछे**—बाकी है; **साजाइ**—सजाऊँ; **तोमाय......आना**—तुम्हें घर में लाना जो नहीं हुआ।

४८

हेरि अहरह तोमारि विरह भुवने भुवने राजे हे,
कत रूप धरे कानने भूधरे आकाशे सागरे साजे हे ।।
सारा निशि धरि ताराय ताराय अनिमेष चोखे नीरवे दाँड़ाय,
पल्लवदले श्रावणधाराय तोमारि विरह बाजे हे ।।
घरे घरे आजि कत वेदनाय तोमारि गभीर विरह घनाय
कत प्रेमे हाय, कत वासनाय, कत सुखे दुखे काजे हे ।
सकल जीवन उदास करिया कत गाने सुरे गलिया झरिया
तोमार विरह उठिछे भरिया आमार हियार माझे हे ।।

१९०८

४९

आमार माथा नत करे दाओ हे तोमार चरणधुलार तले ।
सकल अहंकार हे आमार डुबाओ चोखेर जले ।।
निजेरे करिते गौरव दान निजेरे केवलइ करि अपमान,
आपनारे शुधु घेरिया घेरिया घुरे मरि पले पले ।
सकल अहंकार हे आमार डुबाओ चोखेर जले ।।
आमारे ना येन करि प्रचार आमार आपन काजे,
तोमारि इच्छा करो हे पूर्ण आमार जीवनमाझे ।।
याचि हे तोमार चरम शान्ति, पराने तोमार परम कान्ति—

४८. **हेरि**—देखता हूँ; **अहरह**—सर्वदा; **तोमारि**—तुम्हारा ही; **राजे**—विराजित है; **कत**—कितने; **चोखे**—दृष्टि से; **घनाय**—घनीभूत होता है।

४९. **निजेरे**—अपने को; **केवलइ**—केवल ही; **करि**—करता हूँ; **आपनारे......पले**—केवल अपने को ही घेर घेर कर चक्कर काटता हुआ क्षण-क्षण मरता हूँ; **आमारे......काजे**—ऐसा हो कि अपने कार्यों से (कार्यों के द्वारा) अपना ही प्रचार न करूँ; **तोमारि इच्छा**—अपनी ही इच्छा; **याचि**—याचना करता हूँ; **पराने**—प्राणों में; **आमारे......करिया**—मुझे ओट में करके।

आमारे आड़ाल करिया दाँड़ाओ हृदयपद्मदले।
सकल अहंकार हे आमार डुबाओ चोखेर जले ।।

१९०९

५०

आमि बहु वासनाय प्राणपणे चाइ, वञ्चित करे बाँचाले मोरे।
ए कृपा कठोर सञ्चित मोर जीवन भ'रे ।।
ना चाहिते मोरे या करेछ दान— आकाश आलोक तनु मन प्राण,
दिने दिने तुमि नितेछ आमाय से महा दानेरइ योग्य क'रे
अति-इच्छार संकट हते बाँचाये मोरे ।।
आमि कखनो वा भुलि, कखनो वा चलि, तोमार पथेर लक्ष्य ध'रे;
तुमि निष्ठुर सम्मुख हते याओ ये सरे।
ए ये तव दया, जानि जानि हाय, निते चाओ ब'ले फिराओ आमाय—
पूर्ण करिया लबे ए जीवन तव मिलनेरइ योग्य क'रे
आधा-इच्छार संकट हते बाँचाये मोरे ।।

१९०९

५०. **वासनाय**—कामनाओं को; **चाइ**—चाहता हूँ; **बाँचाले मोरे**—मुझे बचाया; **ना......दान**—बिना माँगे जो दान (तुमने) दिया है; **दिने...... क'रे**—दिन-दिन तुम मुझे उसी महादान के योग्य बना ले रहे हो; **अति......मोरे**—अति-इच्छा (इच्छाओं की अतिशयता) के संकट से मुझे बचा कर; **कखनो......भुलि**—कभी या तो भूल जाता हूँ; **चलि**—चलता हूँ; **सम्मुख हते**—सामने से; **याओ.....सरे**—हट जो जाते हो; **ए ये**—यह जो; **निते चाओ ब'ले**—लेना चाहते हो (ग्रहण करना चाहते हो) इसलिये; **फिराओ आमाय**—मुझे लौटा देते हो; **करिया लबे**—कर लोगे; **आधा-इच्छार संकट हते**—अधूरी इच्छाओं के संकट से।

५१

आमार मिलन लागि तुमि आसछ कबे थेके ।
तोमार चन्द्र सूर्य तोमाय राखबे कोथाय ढेके ? ।
कत कालेर सकाल-साँझे तोमार चरणध्वनि बाजे,
गोपने दूत हृदय-माझे गेछे आमाय डेके ।।
ओगो पथिक, आजके आमार सकल परान ब्येपे
थेके थेके हरष येन उठछे केँपे केँपे ।
येन समय एसेछे आज, फुरालो मोर या छिल काज-
बातास आसे, हे महाराज, तोमार गन्ध मेखे ।।

१९१०

५२

एबार नीरव करे दाओ हे तोमार मुखर कविरे ।
तार हृदयबाँशि आपनि केड़े बाजाओ गभीरे ।।
निशीथरातेर निबिड़ सुरे बाँशिते तान दाओ हे पूरे,
ये तान दिये अवाक् कर ग्रहशशीरे ।।

५१. **आमार......लागि**—मेरे (और अपने) मिलन के लिये; **आसछ ......थेके**—कब (किस काल) से आ रहे हो; **तोमाय**—तुम्हें; **राखबे...... ढेके**—कहाँ ढँक कर रखेंगे; **सकाल-साँझे**—प्रात: सन्ध्या; **गोपने**—गुप्त रूप से; **गेछे.....डेके**—मुझे पुकार (बुला) गया है; **ओगो**—अजी ओ; **परान ब्येपे**—प्राणों को व्याप्त कर; **थेके......केँपे**—हर्ष (आनन्द) जैसे रह रह कर काँप-काँप उठता है; **येन......आज**—जैसे आज समय आया है; **फुरालो......काज**—मेरा जो काम था (सो) चुक गया; **बातास आसे**—हवा आती है; **मेखे**—लेप कर।

५२. **एबार**—अब; **करे दाओ**—कर दो; **तोमार......कविरे**—अपने (इस) मुखर कवि को; **आपनि**—अपनेआप, स्वयं; **केड़े**—निकाल कर; **बाँशिते**—बाँसुरी में; **दाओ हे पूरे**—भर दो; **ये......दिये**—जिस तान से;

या-किछु मोर छड़िये आछे जीवन-मरणे
गानेर टाने मिलुक एसे तोमार चरणे।
बहुदिनेर वाक्यराशि एक निमेषे याबे भासि—
एकला बसे शुनब बाँशि अकूल तिमिरे।।

१९१०

५३

एइ करेछ भालो निठुर, एइ करेछ भालो।
एमनि क'रे हृदये मोर तीव्र दहन ज्वालो।।
आमार ए धूप ना पोड़ाले गन्ध किछुइ नाहि ढाले,
आमार ए दीप ना ज्वालाले देय ना किछुइ आलो।।
यखन थाके अचेतने ए चित्त आमार
आघात से ये परश तव, सेइ तो पुरस्कार।
अन्धकारे मोहे लाजे चोखे तोमाय देखि ना ये,
वज्रे तोलो आगुन क'रे आमार यत कालो।।

१९१०

५४

ओइ आसनतलेर माटिर 'परे लुटिये रब,
तोमार चरण-धुलाय धुलाय धूसर हब।।

या-किछु मोर—मेरा जो कुछ; **छड़िये आछे**—बिखरा हुआ है; **मिलुक एसे**—आ कर मिले; **बहुदिनेर...भासि**—बहुत दिनों के (संचित) वाक्यों (शब्दों आदि) का समूह एक क्षण में बह जायगा; **एकला...बाँशि**—अकेला बैठ कर बाँसुरी सुनूँगा।

५३. **एइ**—यही; **करेछ**—किया है; **एमनि क'रे**—इसी तरह से; **ए**—यह; **ना पोड़ाले**—बिना जलाए; **यखन थाके**—जब रहता है; **आघात ......तव**—वह आघात (ही तो) तुम्हारा स्पर्श है; **चोखे......ये**—आँखों से तुम्हें देख जो नहीं पाता; **तोलो......क'रे**—आग (जैसा) कर दो।

५४. **ओइ**—उस; **आसनतलेर......रब**—आसन के नीचे की मिट्टी के ऊपर लोट रहूँगा; **तोमार**—तुम्हारे; **धुलाय**—धूल में; **हब**—होऊँगा;

केन आमाय मान दिये आर दूरे राख ?
चिरजनम एमन क'रे भुलियो नाको।
असम्माने आनो टेने पाये तव।
तोमार चरण-धुलाय धुलाय धूसर हब ।।
आमि तोमार यात्रीदलेर रब पिछे,
स्थान दियो हे आमाय तुमि सबार नीचे।
प्रसाद लागि कत लोके आसे धेये,
आमि किछुइ चाइब ना तो, रइब चेये—
सबार शेषे या बाकि रय ताहाइ लब।
तोमार चरण-धुलाय धुलाय धूसर हब ।।

१९१०

५५

कोन् आलोते प्राणेर प्रदीप ज्वालिये तुमि धराय आस—
साधक ओगो, प्रेमिक ओगो, पागल ओगो, धराय आस ।।
एइ अकूल संसारे,
दुःख आघात तोमार प्राणे वीणा झंकारे।
घोर विपद-माझे
कोन जननीर मुखेर हासि देखिया हास ।।

केन...राख—क्यों मुझे सम्मान दे कर (अपने से) और दूर रखते हो; **चिरजनम**—चिर जन्म; **एमन क'रे**—इस प्रकार; **भुलियो नाको**—भूलना नहीं; **आनो...... तव**—अपने चरणों में खींच लाओ; **पिछे**—पीछे; **सबार**—सब के; **लागि**—के लिये, निमित्त; **कत......धेये**—कितने लोग दौड़े आते हैं; **किछुइ.....तो**—मैं तो कुछ भी नहीं चाहूँगा; **रइब चेये**—(केवल) देखता रहूँगा; **बाकि**—बाकी; **या......लब**—जो बच रहता है वही लूँगा।

५५. **कोन् आलोते**—किस आलोक से; **ज्वालिये**—जला कर; **धराय**—पृथ्वी पर; **आस**—आते हो; **ओगो**—अजी ओ; **एइ**—इस; **देखिया**—देख कर; **हास**—हँसते हो; **तुमि.....जाने**—कौन जानता है तुम किसकी

तुमि काहार सन्धाने
सकल सुखे आगुन ज्वेले बेड़ाओ के जाने !
एमन व्याकुल क'रे
के तोमारे काँदाय यारे भालोबास ।।
तोमार भावना किछु नाइ—
के ये तोमार साथेर साथि भाबि मने ताइ ।
तुमि मरण भुले
कोन् अनन्त प्राणसागरे आनन्दे भास ।।

१९१०

५६

गाये आमार पुलक लागे, चोखे घनाय घोर—
हृदये मोर के बेँधेछे राङा राखीर डोर ?।
आजिके एइ आकाशतले जले स्थले फुले फले
केमन करे मनोहरण, छड़ाले मन मोर ?।
केमन खेला हल आमार आजि तोमार सने !
पेयेछि कि खुंजे बेड़ाइ भेबे ना पाइ मने ।

खोजमें सभी सुखों को आग लगा कर भटकते फिरते हो; **एमन......क'रे**—ऐसा व्याकुल बना कर; **के......भालोबास**—कौन तुम्हें रुलाता है—जिसे तुम प्यार करते हो; **तोमार......नाइ**—तुम्हें कोई चिन्ता नहीं; **के......ताइ**—कौन है तुम्हारा संग-साथी यही मन में सोचता हूँ; **भुले**—भूल कर; **आनन्दे भास**—आनन्द से बहते हो ।

५६. **गाये**—शरीर में; **पुलक**—आनन्द; **चोखे......घोर**—आँखों में मोह घनीभूत हो रहा है; **के**—कौन, किसने; **के......डोर**—लाल राखी की डोर किसने बाँधी है; **आजिके**—आज; **फुले**—फूलों में; **केमन करे**—किस प्रकार से, कैसे; **छड़ाले**—बखेर दिया; **हल**—हुआ; **तोमार सने**—तुम्हारे साथ; **पेयेछि**—पाया है; **कि**—क्या; **खुंजे बेड़ाइ**—ढूंढ़ता फिरता हूँ; **भेबे......मने**—मन में सोच नहीं पाता; **किसेर छले**—किस मिस से; **काँदिते चाय**—रोना

आनन्द आज किसेर छले   काँदिते चाय नयनजले,
विरह आज मधुर हये करेछे प्राण भोर ।।

१९१०

५७

जीवन यखन शुकाये याय करुणाधाराय एसो ।
सकल माधुरी लुकाये याय,   गीतसुधारसे एसो ।।
कर्म यखन प्रबल-आकार   गरजि उठिया ढाके चारि धार
हृदयप्रान्ते हे जीवननाथ,   शान्त चरणे एसो ।।
आपनारे यबे करिया कृपण   कोणे पड़े थाके दीनहीन मन
दुयार खुलिया हे उदार नाथ,   राजसमारोहे एसो ।
वासना यखन विपुल धुलाय   अन्ध करिया अबोधे भुलाय
ओहे पवित्र, ओहे अनिद्र, रुद्र आलोके एसो

१९१०

५८

जीवने यत पूजा हल ना सारा
जानि हे जानि ताओ हय नि हारा ।
ये फुल ना फुटिते   झरेछे धरणीते
ये नदी मरुपथे हारालो धारा
जानि हे जानि ताओ हय नि हारा ।।

चाहता है; **हये**—हो कर; **करेछे**—किया है; **भोर**—विभोर ।

५७. **यखन**—जब; **शुकाये याय**—सूख जाय; **एसो**—आओ; **लुकाये याय**—छिप जाय; **ढाके**—ढक ले; **चारि धार**—चारों ओर; **आपनारे...... कृपण**—अपने को कृपण बना; **कोणे**—कोने में; **पड़े थाके**—पड़ा रहे; **दुयार खुलिया**—द्वार खोल कर; **धुलाय**—धूल से ।

५८. **यत**—जितनी; **हल......सारा**—समाप्त नहीं हुई, पूरी नहीं हुई; **जानि**—जानता हूँ; **ताओ......हारा**—वह भी खो नहीं गई; **ये......धरणीते**—

जीवने आजो याहा रयेछे पिछे
जानि हे जानि ताओ हय नि मिछे।
आमार अनागत आमार अनाहत
तोमार वीणातारे बाजिछे तारा—
जानि हे जानि ताओ हय नि हारा ।।

१९१०

५९

जानि जानि कोन् आदि काल हते
भासाले आमारे जीवनेर स्रोते—
सहसा हे प्रिय, कत गृहे पथे
रेखे गेछ प्राणे कत हरषन ।।
कतबार तुमि मेघेर आड़ाले
एमनि मधुर हासिया दाँड़ाले,
अरुणकिरणे चरण बाड़ाले,
ललाटे राखिले शुभ परशन ।।
सञ्चित हये आछे एइ चोखे
कत काले काले कत लोके लोके
कत नव नव आलोके आलोके
अरूपेर कत रूपदरशन ।।

जो फूल बिना खिले पृथ्वी पर झर पड़ा; **आजो**—आज भी; **याहा......पिछे**—जो पीछे रह गया है; **मिछे**—निष्फल, व्यर्थ; **अनाहत**—जो बजाया नहीं गया है; **तोमार......तारा**—तुम्हारी वीणा के तार में वे बज रहे हैं।

५९. **जानि**—जानता हूँ; **कोन्**—किस; **हते**—से; **भासाले**—बहा दिया; **आमारे**—मुझे; **रेखे गेछ**—रख गए हो; **हरषन**—हर्ष; **कत**—कितनी; **आड़ाले**—ओट में, अन्तराल में; **एमनि**—इस प्रकार; **हासिया दाँड़ाले**—हँसते हुए खड़े हुए; **बाड़ाले**—बढ़ाया; **राखिले**—रखा; **परशन**—स्पर्श; **हये आछे**—हो कर (रखा) है; **केह......जाने**—कोई नहीं जानता।

कत युगे युगे केह नाहि जाने
भरिया भरिया उठेछे पराने
कत सुखे दुखे कत प्रेम गाने
अमृतेर कत रसबरषन ।।

१९१०

६०

तोरा शुनिस नि कि शुनिस नि तार पायेर ध्वनि,
ओइ ये आसे, आसे, आसे ।
युगे युगे पले पले दिनरजनी
से ये आसे, आसे, आसे ।।
गेयेछि गान यखन यत आपन मने ख्यापार मतो
सकल सुरे बेजेछे तार आगमनी—
से ये आसे, आसे, आसे ।।
कत कालेर फागुनदिने बनेर पथे
से ये आसे, आसे, आसे ।
कत श्रावण-अन्धकारे मेघेर रथे
से ये आसे आसे, आसे ।।
दुखेर परे परम दुखे तारि चरण बाजे बुके ।
सुखे कखन बुलिये ये देय परशमणि ।
से ये आसे, आसे, आसे ।।

१९१०

६०. **तोरा......कि**—तुम लोगों ने क्या नहीं सुनी; **तार**—उसके; **पायेर**—पैरों की; **ओइ......आसे**—वह जो आ रही है; **गेयेछि**—गाया है; **यखन**—जब; **यत**—जितना; **ख्यापार मतो**—पागलों की तरह; **तारि...... बुके**—उसके ही चरण हृदय (के भीतर) कसकते हैं; **कखन**—कभी; **बुलिये..... परशमणि**—स्पर्शमणि (पारस) से स्पर्श कर देता है (सहला देता है) ।

६१

तव सिंहासनेर आसन हते एले तुमि नेमे—
मोर विजन घरेर द्वारेर काछे दाँड़ाले नाथ, थेमे ।।
एकला बसे आपन-मने गाइतेछिलेम गान;
तोमार काने गेल से सुर, एले तुमि नेमे—
मोर विजन घरेर द्वारेर काछे दाँड़ाले नाथ, थेमे ।।
तोमार सभाय कत-ना गान, कतइ आछेन गुणी;
गुनहीनेर गानखानि आज बाजल तोमार प्रेमे ।
लागल तानेर माझे एकटि करुण सुर;
हाते लये वरणमाला एले तुमि नेमे—
मोर विजन घरेर द्वारेर काछे दाँड़ाले नाथ, थेमे ।।

१९१०

६२

ताइ तोमार आनन्द आमार 'पर,
तुमि ताइ एसेछ नीचे ।
आमाय नइले त्रिभुवनेश्वर,
तोमार प्रेम हत ये मिछे ।।
आमाय निये मेलेछ एइ मेला,
आमार हियाय चलछे रसेर खेला,

६१. **हते**—से; **एले......नेमे**—तुम (नीचे) उतर आए; **काछे**—पास, निकट; **दाँड़ाले**—खड़े हुए; **थेमे**—रुक कर; **एकला......गान**—अकेली बैठ कर अपने आप गान गा रहा था; **गेल**—गया; **से**—वह; **कतइ......गुणी**—कितने ही गुणी हैं; **गानखानि**—गान; **बाजल**—बजा; **एकटि**—एक; **हाते**—हाथ में; **लये**—ले कर।

६२. **ताइ**—इसीलिये; **आमार 'पर**—मुझ पर; **एसेछ**—आए हो; **आमाय नइले**—मेरे नहीं होने (रहने) से; **तोमार......मिछे**—तुम्हारा प्रेम निष्फल जो होता; **आमाय निये**—मुझे ले कर; **मेलेछ**—विस्तारित, प्रसारित किया है; **एइ**—यह; **हियाय**—हृदय में; **चलछे**—चल रहा है;

मोर जीवने विचित्ररूप धरे
तोमार इच्छा तरङ्गिछे ।।
ताइ तो तुमि राजार राजा हये
तबु आमार हृदय लागि
फिरछ कत मनोहरण वेशे,
प्रभु, नित्य आछ जागि ।
ताइ तो प्रभु, येथाय एल नेमे
तोमारि प्रेम भक्तप्राणेर प्रेमे
मूर्ति तोमार युगलसम्मिलने
सेथाय पूर्ण प्रकाशिछे ।।

१९१०

६३

धाय येन मोर सकल भालोबासा
प्रभु, तोमार पाने, तोमार पाने, तोमार पाने ।।
याय येन मोर सकल गभीर आशा
प्रभु, तोमार काने, तोमार काने, तोमार काने ।।
चित्त मम यखन येथा थाके
साड़ा येन देय से तव डाके,
यत बाँधन सब टुटे गो येन
प्रभु, तोमार टाने, तोमार टाने, तोमार टाने ।।
बाहिरेर एइ भिक्षा-भरा थालि एबार येन निःशेषे हय खालि,

हये—हो कर; **तबु**—तो भी; **लागि**—के लिये; **फिरछ**—घूम रहे हो; **आछ जागि**—जगे हुए हो; **येथाय**—जहाँ; **तोमारि**—तुम्हारा ही; **सेथाय**—वहाँ ।

६३. **धाय.......भालोबासा**—ऐसा हो कि मेरा संपूर्ण प्रेम प्रधावित हो; **तोमार पाने**—तुम्हारी ओर; **याय**—जाय; **यखन**—जिस समय; **येथा**—जहाँ; **थाके**—रहे; **साड़ा.....डाके**—ऐसा हो कि तुम्हारे आह्वान का वह प्रत्युत्तर दे; **यत......येन**—सब बन्धन टूट जाएं; **टाने**—खिचाव से, आकर्षण से; **बाहिरेर......खालि**—बाहर की यह भिक्षा-पूर्ण थाली, ऐसा हो कि इस बार सम्पूर्ण

अन्तर मोर गोपने याय भरे
प्रभु, तोमार दाने, तोमार दाने, तोमार दाने।
हे बन्धु मोर, हे अन्तरतर, ए जीवने या-किछु सुन्दर
सकलइ आज बेजे उठुक सुरे
प्रभु, तोमार गाने, तोमार गाने, तोमार गाने ।।
१९१०

६४

निशार स्वपन छुटल रे एइ छुटल रे,
टुटल बाँधन टुटल रे ।।
रइल ना आर आड़ाल प्राणे, बेरिये एलेम जगत्-पाने—
हृदयशतदलेर सकल दलगुलि एइ फुटल रे एइ फुटल रे ।।
दुयार आमार भेङ्गे शेषे दाँड़ाले येइ आपनि एसे
नयनजले भेसे हृदय चरणतले लुटल रे ।।
आकाश हते प्रभात-आलो आमार पाने हात बाड़ालो,
भाङा कारार द्वारे आमार जयध्वनि उठल रे एइ उठल रे ।।
१९१०

रूप से खाली हो जाय; **अन्तर......दाने**—प्रभु, तुम्हारे ही दान से मेरा अन्तर गोपन रूप से भर जाय; **ए......सुरे**—इस जीवन में जो कुछ सुन्दर है, सभी आज सुर में बज उठे।

६४. **छुटल**—छूटा; **टुटल बाँधन**—बंधन टूटा; **रइल......पाने**—प्राण और ओट में नहीं रहे, (मैं) जगत् की ओर बाहर निकल आया; **फुटल**—प्रस्फुटित हुए; **दुयार......रे**—मेरे द्वार को तोड़ कर अन्त में जैसे ही अपने आप आ कर खड़े हुए, आँखों के जल में बह कर (मेरा) हृदय (तुम्हारे) चरणों में लोट गया; **आकाश.......बाड़ालो**—आकाश से प्रभात-कालीन प्रकाश ने मेरी ओर हाथ बढ़ाया; **भाङा......रे**—टूटे हुए कारागार के द्वार पर मेरी जयध्वनि गूँज उठी।

६५

प्रभु, आजि तोमार दक्षिण हात रेखो ना ढाकि।
एसेछि तोमारे हे नाथ, पराते राखी ।।
यदि बाँधि तोमार हाते पड़ब बाँधा सबार साथे,
येखाने ये आछे केहइ रबे ना बाकि।
आजि येन भेद नाहि रय आपना परे,
तोमाय येन एक देखि हे बाहिरे घरे।
तोमा साथे ये विच्छेदे घुरे बेड़ाइ केँदे केँदे
क्षणेकतरे घुचाते ताइ तोमारे डाकि ।।

१९१०

६६

वज्रे तोमार बाजे बाँशि, से कि सहज गान !
सेइ सुरेते जागबो आमि, दाओ मोरे सेइ कान ।।
भुलब ना आर सहजेते, सेइ प्राणे मन उठबे मेते
मृत्यु-माझे ढाका आछे ये अन्तहीन प्राण ।।
से झड़ येन सइ आनन्दे चित्तवीणार तारे
सप्तसिन्धु दशदिगन्त नाचाओ ये झंकारे।

६५. **प्रभु......ढाकि**—प्रभु, आज अपना दाहिना हाथ ढक (छुपा) कर न रखना; **एसेछि.....राखी**—हे नाथ, तुम्हें राखी पहनाने आया हूँ; **यदि......साथे**—अगर तुम्हारे हाथ में बाँधूं तो सब के साथ बंध जाऊँगा; **येखाने....बाकि**—जो जहाँ है कोई भी बाकी नहीं रहेगा; **आजि....परे**—आज ऐसा हो कि अपने-पराये में भेद नहीं रहे; **तोमाय....घरे**—तुम्हें घर और बाहर एक देखूं; **तोमार....केंदे**—तुम्हारे साथ जो विच्छेद है (इसीलिये) रोता-रोता भटकता फिरता हूँ; **क्षणेक.....डाकि**—इसीलिये क्षण भर के लिये उस (वियोग) को दूर करने के लिये, तुम्हें पुकारता हूँ।

६६. **सेइ......आमि**—उसी सुर सुन कर मैं जागूंगा; **दाओ......कान**—मुझे ऐसे ही कान दो; **भुलब.....सहजेते**—सहज ही और नहीं भूलूंगा; **सेइ..... प्राण**—मृत्यु के बीच छिपा हुआ जो अन्तहीन प्राण है उसी प्राण से (मेरा) मन मत्त हो उठेगा; **उठबे मेते**—मत्त हो उठेगा; **ढाका आछे**—ढका हुआ है; **से....आनन्दे**—ऐसा हो कि आनन्दपूर्वक उस आँधी को सहन करूँ; **तारे**—तार में;

आराम हते छिन्न क'रे   सेइ गभीरे लओ गो मोर
अशान्तिर अन्तरे येथाय शान्ति सुमहान ।।

१९१०

६७

भोर हल विभावरी, पथ हल अवसान--
शुन ओइ लोके लोके उठे आलोकेरि गान ।।
धन्य हलि ओरे पान्थ,   रजनीजागरक्लान्त,
धन्य हल मरि मरि धुलाय धूसर प्राण ।।
वनेर कोलेर काछे   समीरण जागियाछे,
मधुभिक्षु सारे सारे   आगत कुञ्जेर द्वारे ।
हल तव यात्रा सारा,   मोछो मोछो अश्रुधारा--
लज्जा भय गेल झरि,   घुचिल रे अभिमान ।।

१९१०

६८

येथाय थाके सबार अधम दीनेर हते दीन
सेइखाने ये चरण तोमार राजे
सबार पिछे, सबार नीचे, सबहारादेर माझे ।।

आराम......मोरे—आराम (की ज़िन्दगी) से विच्छिन्न कर मुझे उसी गभीर में ग्रहण करो; **अशान्तिर....सुमहान**—जहाँ अशान्ति के अन्तर में सुमहान् शान्ति है ।

६७. **हल**—हुई; **शुन......गान**—वह सुनो, लोक-लोक में आलोक का ही गान उठ रहा है; **हलि**—हुआ; **रजनीजागरक्लान्त**—रात्रि के जागरण से क्लान्त; **मरि मरि**—सौन्दर्य आदि के दर्शन से विस्मय, प्रशंसा आदि को सूचित करने के लिये इसका प्रयोग होता है; बलि जाऊँ ! **धुलाय**—धूल से; **वनेर.....जागियाछे**—वन के क्रोड़ (गोद) के पास समीरण जाग उठा है; **मधुभिक्षु....द्वारे**—झुंडके झुंड मधुभिक्षुक (भौंरे) कुंजों के द्वार पर आए हैं; **हल......सारा**—तुम्हारी यात्रा पूरी हुई; **मोछो**—पोंछो; **गेल झरि**—झड़ गए; **घुचिल**—दूर हुआ ।

६८. **येथाय......राजे**—जहाँ सबसे अधम, दीनातिदीन (व्यक्ति) रहते हैं वहीं तो तुम्हारे चरण विराजते हैं; **सबार......माझे**—सबके पीछे, सब के

यखन तोमाय प्रणाम करि आमि प्रणाम आमार कोन्‌खाने याय थामि,
तोमार चरण येथाय नामे अपमानेर तले
सेथाय आमार प्रणाम नामे ना ये
सबार पिछे, सबार नीचे, सबहारादेर माझे ।।
अहंकार तो पाय ना नागाल येथाय तुमि फेर
रिक्तभूषण दीन दरिद्र साजे
सबार पिछे, सबार नीचे, सबहारादेर माझे ।
धने माने येथाय आछे भरि सेथाय तोमार सङ्ग आशा करि,
सङ्गी हये आछ येथाय सङ्गीहीनेर घरे
सेथाय आमार हृदय नामे ना ये
सबार पिछे, सबार नीचे, सबहारादेर माझे ।।
१९१०

६९

रूपसागरे डुब दियेछि अरूपरतन आशा करि,
घाटे घाटे घुरब ना आर भासिये आमार जीर्ण तरी ।।
समय येन हय रे एबार ढेउ-खाओया सब चुकिये देबार,
सुधाय एबार तलिये गिये अमर हये रब मरि ।।

नीचे, सर्वहारा (लोगों) के बीच में; **यखन......आमि**—जब मैं तुम्हें प्रणाम करता हूँ; **प्रणाम......थामि**—मेरे प्रणाम कहाँ रुक जाते हैं; **नामे**—अवतीर्ण होते हैं; **अपमानेर तले**—अपमान के तल में; **सेथाय......ये**—वहाँ मेरे प्रणाम नहीं पहुँचते; **अहंकार......साजे**—जहाँ तुम आभूषणहीन, दीन दरिद्र वेश में फिरते हो, वहाँ तो अहंकार की पहुँच नहीं होती; **धने......भरि**—जहाँ धन-मान से (सब कुछ) भरपूर है; **सेथाय.....करि**—वहाँ तुम्हारे संग (साथ) की आशा करता हूँ; **सङ्गी......घरे**—जहाँ संगीहीनों के घर में संगी हो कर (रहते) हो।

६९. **डुब दियेछि**—डुबकी लगाई है; **अरूपरतन......करि**—अरूपरत्न की आशा से; **घाटे.....तरी**—अपनी जीर्ण तरी को बहाते हुए अब और घाट-घाट नहीं फिरूँगा; **समय......देबार**—इसबार ऐसा हो कि लहरों के थपेड़े खाने को चुका देने (समाप्त करने) का समय (अवसर) आ जाय; **सुधाय.....मरि**—इसबार अमृत में डूब, मर कर अमर हो रहूँगा; **ये......माझे**—जो गान

ये गान काने याय ना शोना से गान येथाय नित्य बाजे
प्राणेर वीणा निये याब सेइ अतलेर सभा-माझे।
चिरदिनेर सुरटि बेँधे शेष गाने तार कान्ना केँदे
नीरव यिनि ताँहार पाये नीरव वीणा दिब धरि॥
१९१०

७०

सीमार माझे, असीम, तुमि बाजाओ आपन सुर—
आमार मध्ये तोमार प्रकाश ताइ एत मधुर॥
कत वर्णे कत गन्धे कत गाने कत छन्दे
अरूप, तोमार रूपेर लीलाय जागे हृदयपुर।
आमार मध्ये तोमार शोभा एमन सुमधुर॥
तोमाय आमाय मिलन हले सकलइ याय खुले,
विश्वसागर ढेउ खेलाये उठे तखन दुले।
तोमार आलोय नाइ तो छाया, आमार माझे पाय से काया,
हय से आमार अश्रुजले सुन्दर विधुर।
आमार मध्ये तोमार शोभा एमन सुमधुर॥
१९१०

कानों से नहीं सुना जाता वह गान जहाँ नित्य बजता है उसी अतल की सभा के बीच प्राणों की वीणा ले जाऊँगा; **चिरदिनेर.....बेँधे**—चिरदिन के सुर (स्वर) को बाँध कर, मिला कर; **शेष.....केँदे**—अन्तिम गान में उसकी रुलाई रो कर; **कान्ना**—क्रन्दन; **केँदे**—रो कर; **नीरव.....धरि**—जो नीरव हैं उनके चरणों में नीरव वीणा रख दूंगा।

७०. **बाजाओ**—बजाते हो; **आपन**—अपना; **ताइ**—इसीलिये; **एत**—इतना; **कत**—कितने; **वर्णे**—रंगों में; **लीलाय**—लीला से; **पुर**—निकेतन, आवास; **एमन**—ऐसी; **तोमाय......खुले**—तुम्हारा और मेरा मिलन होने से सब खुल जाता है; **विश्वसागर.....दुले**—विश्वसागर उस समय लहरें उठा कर दोलायमान हो जाता है; **तोमार......छाया**—तुम्हारे आलोक में तो छाया नहीं है; **आमार......काया**—मेरे भीतर वह काया पाता है; **हय......विधुर**—वह मेरे अश्रुजल से सुन्दर तथा कातर होता है।

७१

कार मिलन चाओ, विरही—
ताँहारे कोथा खुँजिछ भव-अरण्ये
कुटिल जटिल गहने शान्तिसुखहीन ओरे मन ।।
देखो देखो रे चित्तकमले चरणपद्म राजे, हाय !
अमृतज्योति किवा सुन्दर ओरे मन ।।

१९१३

७२

जय तव विचित्र आनन्द हे कवि,
जय तोमार करुणा ।
जय तव भीषण सब-कलुष-नाशन रुद्रता ।
जय अमृत तव, जय मृत्यु तव,
जय शोक तव, जय सान्त्वना ।।
जय पूर्णजाग्रत ज्योति तव,
जय तिमिरनिविड़ निशीथिनी भयदायिनी ।
जय प्रेममधुमय मिलन तव, जय असह विच्छेदवेदना ।।

१९१३

७३

जागो निर्मल नेत्रे रात्रिर परपारे,
जागो अन्तरक्षेत्रे मुक्तिर अधिकारे ।।
जागो भक्तिर तीर्थे पूजापुष्पेर घ्राणे,
जागो उन्मुखचित्ते, जागो अम्लानप्राणे,

७१. **कार**—किस का; **चाओ**—चाहते हो; **ताँहारे**—उन्हें; **कोथा**—कहाँ; **खुँजिछ**—खोज रहे हो; **राजे**—शोभित होता है; **किवा**—क्या ही ।

७३. **परपारे**—दूसरे पार; **सुधासिन्धुर**—अमृतसागर के; **धारे**—किनारे;

जागो नन्दननृत्ये सुधासिन्धुर धारे,
जागो स्वार्थेर प्रान्ते प्रेममन्दिरद्वारे ।।
जागो उज्ज्वल पुण्ये, जागो निश्चल आशे,
जागो निःसीम शून्ये पूर्णेर बाहुपाशे ।
जागो निर्भयधामे जागो संग्रामसाजे,
जागो ब्रह्मेर नामे, जागो कल्याणकाजे,
जागो दुर्गमयात्री दुःखेर अभिसारे,
जागो स्वार्थेर प्रान्ते प्रेममन्दिरद्वारे ।।

१९१३

७४

प्रभु आमार, प्रिय आमार, परम धन हे ।
चिरपथेर सङ्गी आमार चिरजीवन हे ।।
तृप्ति आमार, अतृप्ति मोर, मुक्ति आमार, बन्धनडोर,
दुःखसुखेर चरम आमार जीवन मरण हे ।।
आमार सकल गतिर माझे परम गति हे,
नित्य प्रेमेर धामे आमार परम पति हे ।
ओगो सबार, ओगो आमार, विश्व हते चित्ते विहार—
अन्तविहीन लीला तोमार नूतन नूतन हे ।।

१९१३

७५

अग्निवीणा बाजाओ तुमि केमन क'रे !
आकाश काँपे तारार आलोर गानेर घोरे ।।

आशे—आशा में; **पूर्णेर बाहुपाशे**—पूर्ण के बाहुपाश में ।

७४. **प्रभु आमार**—मेरे प्रभु; **आमार......गति**—मेरी समस्त गति के बीच परम गति; **सबार**—सब के; **हते**—से; **चित्ते**—चित्त में ।

७५. **बाजाओ......क'रे**—तुम किस प्रकार बजाते हो; **आकाश......**......**घोरे**—तारागण के आलोक के गान के नशे से आकाश काँपता है;

तेमनि क'रे आपन हाते छुँले आमार वेदनाते,
नूतन सृष्टि जागल बुझि जीवन-'परे ।।
बाजे ब'लेइ बाजाओ तुमि सेइ गरबे
ओगो प्रभु, आमार प्राणे सकल सबे ।
विषम तोमार वह्निघाते बारे बारे आमार राते
ज्वालिये दिले नूतन तारा व्यथाय भ'रे ।।

१९१४

७६

आगुनेर परशमणि छोँयाओ प्राणे ।
ए जीवन पुण्य करो दहन-दाने ।।
आमार एइ देहखानि तुले धरो,
तोमार ओइ देवालयेर प्रदीप करो—
निशिदिन आलोक-शिखा ज्वलुक गाने ।।
आँधारेर गाये गाये परश तव
सारा रात फोटाक तारा नव नव ।
नयनेर दृष्टि हते घुचबे कालो,

तेमनि.....वेदनाते—वैसे ही अपने हाथों मेरी वेदना का स्पर्श किया; **नूतन...... 'परे**—लगा जैसे जीवन के ऊपर (जीवन में) नवीन सृष्टि जाग उठी; **बाजे...... सबे**—बज उठता है इसी गर्व से हे प्रभु, तुम मेरे समग्र प्राणों में सब कुछ बजाते हो; **विषम......भरे**—बार बार अपने कठिन वह्नि-प्रहार से मेरी रात में व्यथा से भरकर नवीन तारे को (तुमने) प्रज्वलित कर दिया।

७६. **आगुनेर.......प्राणे**—अग्नि का स्पर्शमणि (पारस) प्राणों में छुलाओ; **ए**—यह; **पुण्य**—पवित्र; **दहन-दाने**—जलन का दान दे कर (यन्त्रणा दे कर); **आमार......धरो**—मेरी इस देह को उठा लो; **तोमार......करो**—अपने उस देवालय का (उसे) प्रदीप बना लो; **ज्वलुक गाने**—गानों में जले; **आँधारेर ......गाये**—अंधकार के अंग-प्रत्यंग में; **परश**—स्पर्श; **फोटाक**—प्रस्फुटित करे, उदित करे; **नयनेर......कालो**—आँखों की दृष्टि से कालिमा मिट जाएगी;

येखाने पड़बे सेथाय देखबे आलो—
व्यथा मोर उठबे ज्वले ऊर्ध्व-पाने ।।

१९१४

७७

आबार यदि इच्छा कर आबार आसि फिरे
दु:खसुखेर ढेउ-खेलानो एइ सागरेर तीरे ।
आबार जले भासाइ भेला, धुलार 'परे करि खेला,
हासिर मायामृगीर पिछे भासि नयननीरे ।
काँटार पथे आँधार राते आबार यात्रा करि,
आघात खेये बाँचि नाहय आघात खेये मरि ।
आबार तुमि छद्मवेशे आमार साथे खेलाओ हेसे,
नूतन प्रेमे भालोबासि आबार धरणीरे ।

१९१४

७८

एइ लभिनु सङ्ग तव, सुन्दर हे सुन्दर !
पुण्य हल अङ्ग मम, धन्य हल अन्तर, सुन्दर हे सुन्दर ।।

येखाने......आलो—जहाँ पड़ेगी वहाँ आलोक (ही) देखेगी; **व्यथा.....पाने**—मेरी व्यथा ऊर्ध्वमुखीन हो जल उठेगी ।

७७. **आबार......तीरे**—फिर (तुम्हारी) यदि इच्छा हो (चाहो) तो दु:ख-सुख की लहरों वाले इस सागर के तीर फिर लौट आऊँ; **आबार....भेला**—फिर जल में बेड़ा बहाऊँ; **धुलार......खेला**—धूल पर खेल करूँ; **हासिर......नीरे**—हँसी की मायामृगी के पीछे आँखों के पानी में बहता रहूँ; **काँटार......करि**—कँटीले रास्ते पर अँधेरी रात में फिर-से यात्रा करूँ; **आघात.....मरि**—आघात खा कर बचूँ अथवा आघात खा कर मरूँ; **आबार......हेसे**—फिर-से तुम छद्मवेश में मेरे साथ हँसते हुए खेलो; **भालोबासि**—प्यार करूँ; **धरणीरे**—पृथ्वी को ।

७८. **एइ......तव**—यह तुम्हारा संग पा लिया; **पुण्य......अन्तर**—

आलोके मोर चक्षुदुटि मुग्ध हये उठल फुटि,
हृद्‌गगने पवन हल सौरभेते मन्थर, सुन्दर हे सुन्दर ।।
एइ तोमारि परशरागे चित्त हल रञ्जित,
एइ तोमारि मिलनसुधा रइल प्राणे सञ्चित ।
तोमार माझे एमनि क'रे नवीन करि लओ ये मोरे,
एइ जनमे घटाले मोर जन्म-जन्मान्तर, सुन्दर हे सुन्दर ।।

१९१४

७९

केन चोखेर जले भिजिये दिलेम ना शुकनो धुलो यत !
के जानित आसबे तुमि गो अनाहूतेर मतो ।।
पार हये एसेछ मरु, नाइ ये सेथाय छायातरु—
पथेर दुःख दिलेम तोमाय गो, एमन भाग्यहत ।।
आलसेते बसेछिलेम आमि आपन घरेर छाये,
जानि नाइ ये तोमाय कत व्यथा बाजबे पाये पाये ।

मेरा शरीर पवित्र हुआ, अन्तर (हृदय) धन्य हुआ; **आलोके......फुटि**—आलोक में मेरे दोनों नेत्र मुग्ध हो कर खिल उठे; **हृद्‌गगने**—हृदय रूपी आकाश में; **हल**—हुआ; **सौरभेते**—सौरभ से, सुगन्ध से; **एइ......रञ्जित**—यह तुम्हारे स्पर्श के रंग से (मेरा) चित्त रञ्जित हुआ; **एइ......सञ्चित**—यह तुम्हारी मिलन-सुधा प्राणों में सञ्चित रही; **तोमार......मोरे**—अपने भीतर इसी प्रकार (तुम) जो मुझे नूतन बना लेते हो।

७९. **केन......यत**—जितनी सूखी धूल है (उसे) आँखों के जल से (मैंने) भिगो क्यों नहीं दिया; **के......मतो**—अजी कौन जानता था कि अनिमन्त्रित के समान तुम आओगे; **पार.....मरु**—(तुम) मरु प्रदेश (मरुभूमि) पार हो कर आए हो; **नाइ.....तरु**—वहाँ वृक्षों की छाया जो नहीं है; **दिलेम तोमाय**—तुम्हें (मैंने) दिया; **एमन**—ऐसी; **भाग्यहत**—भाग्यहीन; **आलसेते.....छाये**—(उस समय) आलस्य से अपने घर की छाया में मैं बैठी थी; **जानि.....पाये**—नहीं जानती थी

ओइ वेदना आमार बुके   बेजेछिल गोपन दुखे—
दाग दियेछे मर्मे आमार गो,   गभीर हृदयक्षत ।।

१९१४

८०

गाब तोमार सुरे   दाओ से वीणायन्त्र,
शुनब तोमार वाणी   दाओ से अमर मन्त्र ।
करब तोमार सेवा   दाओ से परम शक्ति,
चाइब तोमार मुखे   दाओ से अचल भक्ति ।।
सइब तोमार आघात   दाओ से विपुल धैर्य,
बइब तोमार ध्वजा   दाओ से अटल स्थैर्य ।।
नेब सकल विश्व   दाओ से प्रबल प्राण,
करब आमाय निःस्व   दाओ से प्रेमेर दान ।।
याब तोमार साथे   दाओ से दखिन हस्त,
लड़ब तोमार रणे   दाओ से तोमार अस्त्र ।।
जागब तोमार सत्ये   दाओ सेइ आह्वान ।
छाड़ब सुखेर दास्य,   दाओ दाओ कल्याण ।।

१९१४

कि पद-पद पर तुम्हें कितनी पीड़ा होगी; **ओइ......बुखे**—वही वेदना गोपन दुःख से मेरी छाती में कसक उठी थी; **दाग**—परिचय-चिह्न; **दियेछे**—दिया है; **मर्मे आमार**—मेरे मर्म में; **क्षत**—घाव, व्रण ।

८०. **गाब......यन्त्र**—तुम्हारे सुर में गाऊँगा, वह वीणा यन्त्र दो; **शुनब**—सुनूँगा; **तोमार**—तुम्हारी; **दाओ**—दो; **से**—वह; **करब**—करूँगा; **चाइब ......मुखे**—तुम्हारे मुख को देखता रहूँगा; **सइब**—सहूँगा; **बइब**—वहन करूँगा; **स्थैर्य**—स्थिरता; **नेब**—लूँगा, ग्रहण करूँगा; **करब......निःस्व**— अपने को निःस्व (निर्धन) कर दूँगा; **याब**—जाऊँगा; **दखिन**—दाहिना; **जागब**—जागूँगा; **छाड़ब**—छोड़ूँगा ।

८१

चरण धरिते दियो गो आमारे, नियो ना, नियो ना सराये—
जीवन मरण सुख दुख दिये वक्षे धरिब जड़ाये ।।
स्खलित शिथिल कामनार भार वहिया वहिया फिरि कत आर—
निज हाते तुमि गेँथे नियो हार, फेलो ना आमारे छड़ाये ।।
चिरपिपासित वासना वेदना बाँचाओ ताहारे मारिया ।
शेष जये येन हय से विजयी तोमारि काछेते हारिया ।
बिकाये बिकाये दीन आपनारे पारि ना फिरिते दुयारे दुयारे—
तोमारि करिया नियो गो आमारे वरणेर माला पराये ।।

१९१४

८२

जानि गो, दिन याबे ए दिन याबे ।
एकदा कोन् वेलाशेषे मलिन रवि करुण हेसे
शेष बिदायेर चाओया आमार मुखेर पाने चाबे ।।

८१. **चरण......आमारे**—मुझे (अपने) चरण पकड़ने देना; **नियो......सराये**—हटा नहीं लेना, हटा नहीं लेना; **दिये**—द्वारा; **वक्षे......जड़ाये**—छाती से लगा रखूंगा; **बहिया**—ढोता हुआ; **बहिया......आर**—और कितना ढोए ढोए फिरूँ; **निज......हार**—अपने ही हाथों तुम हार गूंथ लेना; **फेलो......छड़ाये**—मुझे बिखेर न फेंकना; **बाँचाओ**—बचाओ; **ताहारे**—उसे; **मारिया**—मार कर; **येन......विजयी**—जिस में वह विजयी हो; **तोमारि......हारिया**—तुम्हारे ही निकट हार कर; **बिकाये......दुयारे**—दीन बन कर अपने को बेचता हुआ द्वार-द्वार नहीं फिर पाता; **तोमारि......पराये**—वरमाल्य पहना कर मुझे अपना ही बना लेना।

८२. **जानि......याबे**—जानता हूँ, दिन (बीत) जाएंगे, ये दिन बीत जाएंगे; **एकदा**—किसी समय; **कोन्**—किस; **बेलाशेषे**—दिन के अन्त में; **करुण हेसे**—करुण (हँसी) हँस कर; **शेष......चाबे**—अन्तिम बिदाई की दृष्टि से मेरे मुँह की ओर देखेगा; **पथेर......बेणु**—रास्ते के किनारे

पथेर धारे बाजबे वेणु, नदीर कूले चरबे धेनु,
आङिनाते खेलबे शिशु, पाखिरा गान गाबे—
तबुओ दिन याबे ए दिन याबे ।।
तोमार काछे आमार ए मिनति,
याबार आगे जानि येन आमाय डेकेछिल केन
आकाश-पाने नयन तुले श्यामल वसुमती ।।
केन निशार नीरवता शुनियेछिल तारार कथा,
पराने ढेउ तुलेछिल केन दिनेर ज्योति—
तोमार काछे आमार एइ मिनति ।।
साङ्ग यबे हबे धरार पाला
येन आमार गानेर शेषे थामते पारि शमे एसे,
छयटि ऋतुर फुले फले भरते पारि डाला ।
एइ जीवनेर आलोकेते पारि तोमाय देखे येते,
परिये येते पारि तोमाय आमार गलार माला—
साङ्ग यबे हबे धरार पाला ।।

१९१४

बाँसुरी बजेगी; **नदीर......धेनु**—नदी के किनारे गायें चरेंगी; **आङिनाते**—आँगन में; **पाखिरा**—पक्षीगण; **गाबे**—गाएंगे; **तबुओ**—तो भी; **तोमार......मिनति**—तुम्हारे निकट मेरी यह प्रार्थना है; **याबार......येन**—ऐसा हो कि जाने के पहले जान लूँ; **आमाय......केन**—मुझे क्यों बुलाया था; **आकाश......तुले**—आकाश की ओर आँखें उठा कर; **केन......कथा**—रात्रि की नीरवता ने क्यों ताराओं की बात सुनाई थी; **पराने......ज्योति**—दिन की ज्योति ने प्राणों में क्यों लहरें उठाई थीं; **साङ्ग......पाला**—पृथ्वी पर का मेरे गीत-अभिनय का विषय जब समाप्त होगा (पृथ्वी पर मेरी जीवन लीला जब समाप्त होगी); **पाला**—गीत या नाटक का विषय; **येन......एसे**—ऐसा हो कि अपने गान की समाप्ति पर सम पर आ कर रुक सकूँ; **छयटि**—छः; **भरते.....डाला**—डलिया भर सकूँ; **एइ......येते**—इसी जीवन के प्रकाश में तुम्हें देख जा सकूँ; **परिये......माला**—अपने गले की माला तुम्हें पहना कर जा सकूँ ।

८३

तुमि ये सुरेर आगुन लागिये दिले मोर प्राणे,
से आगुन छड़िये गेल सब खाने ।।
यत सब मरा गाछेर डाले डाले
नाचे आगुन ताले ताले,
आकाशे हात तोले से कार पाने ।।
आँधारेर तारा यत अवाक हये रय चेये,
कोथाकार पागल हाओया बय धेये ।
निशीथेर बुकेर माझे एइ-ये अमल
उठल फुटे स्वर्णकमल,
आगुनेर की गुण आछे के जाने ।।

१९१४

८४

तुमि ये एसेछ मोर भवने रव उठेछे भुवने ।।
नहिले फुले किसेर रङ लेगेछे, गगने कोन् गान जेगेछे,
कोन् परिमल पवने ।।

८३. **तुमि......प्राणे**—तुमने मेरे प्राणों में सुर की जो आग लगा दी; **से......खाने**—वह आग सब जगह फैल गई; **यत......डाले**—जितने सब सूखे पेड़ों की डाल-डाल पर; **ताले-ताले**—ताल-ताल पर; **आकाशे......पाने**—आकाश में वह किसकी ओर हाथ उठाती है; **आँधारेर......चेये**—अंधकार के सब तारे अवाक् हो देख रहे हैं; **कोथाकार......धेये**—जाने कहाँ की पागल हवा दौड़ती बहती है; **निशीथेर......कमल**—निशीथ के हृदय के बीच यह जो स्वर्णकमल प्रस्फुटित हो उठा; **आगुनेर......जाने**—(इस) आग के क्या गुण हैं कौन जाने ।

८४. **तुमि......भुवने**—तुम जो मेरे गृह आए हो, यह संवाद संसार भर में फैल गया है; **नहिले**—नहीं तो; **फुले......लेगेछे**—फूलों में किसका रंग लगा है; **कोन्**—कौन; **जेगेछे**—जगा है; **दिये**—दे कर;

दिये दुःखसुखेर वेदना आमाय तोमार साधना।
आमार व्यथाय व्यथाय पा फेलिया एले तोमार सुर मेलिया,
एले आमार जीवने ।।

१९१४

८५

तोमार आनन्द ओइ एल द्वारे एल एल एल गो। ओगो पुरवासी!
बुकेर आँचलखानि धुलाय पेते आङिनाते मेलो गो ।।
पथे सेचन कोरो गन्धवारि मलिन ना हय चरण तारि,
तोमार सुन्दर ओइ एल द्वारे एल एल एल गो।
आकुल हृदयखानि सम्मुखे तार छड़िये फेलो फेलो गो ।।
तोमार सकल धन ये धन्य हल हल गो ।।
विश्वजनेर कल्याणे आज घरेर दुयार खोलो गो।
हेरो राङा हल सकल गगन, चित्त हल पुलकमगन,
तोमार नित्य आलो एल द्वारे एल एल एल गो।
तोमार परानप्रदीप तुले धोरो, ओइ आलोते ज्वेलो गो ।।

१९१४

आमाय—मुझमें; **तोमार**—तुम्हारी; **आमार......मेलिया**—मेरी हर व्यथा पर चरण रखते हुए अपना सुर फैला कर तुम आए; **एले......जीवने**—मेरे जीवन में आए।

८५. **ओइ**—वह; **एल**—आया; **पुरवासी**—नगर के रहने वाले; **बुकेर ......मेलो गो**—छाती के आँचल को धूल में फैला आँगन में बिछा दो; **पथे...... वारि**—रास्ते में सुगन्धित जल छिड़को; **मलिन......तारि**—(जिससे) उसके चरण मैले न हों; **तोमार सुन्दर**—तुम्हारा (वह) सुन्दर; **आकुल......गो**— (अपने) आकुल हृदय को उसके सम्मुख फैला दो; **हल**—हुआ; **ज्वेलो**— प्रज्वलित करो।

८६

तोमार एइ माधुरी छापिये आकाश झरबे,
आमार प्राणे नइले से कि कोथाओ धरबे ?।
एइ-ये आलो सूर्ये ग्रहे ताराय झरे पड़े शतलक्ष धाराय,
पूर्ण हबे ए प्राण यखन भरबे ।।
तोमार फुले ये रङ घुमेर मतो लागल
आमार मने लेगे तबे से ये जागल ।
ये प्रेम काँपाय विश्ववीणाय पुलके संगीते से उठबे भेसे पलके
ये दिन आमार सकल हृदय हरबे ।।
१९१४

८७

दाँड़िये आछ तुमि आमार गानेर ओ पारे ।
आमार सुरगुलि पाय चरण, आमि पाइ ने तोमारे ।।
बातास बहे मरि मरि आर बेँधे रेखो ना तरी,
एसो एसो पार हये मोर हृदयमाझारे ।।

८६. **तोमार......झरबे**—तुम्हारी यह माधुरी आकाश को आच्छादित कर झड़ेगी; **आमार......धरबे**—मेरे प्राणों के सिवा वह क्या कहीं अँट सकेगी; **एइ......धाराय**—यह जो आलोक सूर्य, ग्रहों और ताराओं से करोड़ों धाराओं में झड़ पड़ता है; **पूर्ण......भरबे**—(वह) पूर्ण होगा जब ये प्राण भरेंगे; **तोमार ......जागल**—तुम्हारे फूलों में नींद की तरह जो रंग लगे हैं वे मेरे मन में लगने पर ही तो जागे; **ये प्रेम......हरबे**—जो प्रेम विश्व वीणा को पुलक से कंपित कर देता है वह जिस दिन मेरे संपूर्ण हृदय का हरण करेगा (उस दिन) क्षण भर में ही (वह) संगीत में बह चलेगा।

८७. **दाँड़िये......ओ पारे**—मेरे गान के उस पार तुम खड़े हो; **आमार ......तोमारे**—मेरे सुर (तुम्हारे) चरणों को पाते हैं (लेकिन) मैं तुम्हें नहीं पा रहा; **बातास बहे**—हवा बह रही है; **मरि मरि**—बलि जाऊँ; सौन्दर्य आदि को देख कर विस्मय अथवा प्रशंसा सूचक अव्यय; **आर......तरी**—और नौका बाँध न रखो; **एसो......माझारे**—पार हो कर मेरे हृदय के बीच आओ, आओ;

तोमार साथे गानेर खेला दूरेर खेला ये,
वेदनाते बाँशि बाजाय सकल वेला ये।
कबे निये आमार बाँशि बाजाबे गो आपनि आसि
आनन्दमय नीरव रातेर निबिड़ आँधारे ।।

१९१४

८८

दुःखेर वरषाय चक्षेर जल येइ नामल
वक्षेर दरजाय बन्धुर रथ सेइ थामल ।।
मिलनेर पात्रटि पूर्ण ये विच्छेदे वेदनाय;
अर्पिनु हाते ताँर खेद नाइ, आर मोर खेद नाइ ।।
बहुदिन-वञ्चित अन्तरे सञ्चित की आशा,
चक्षेर निमेषेइ मिटल से परशेर तियाषा।
एत दिने जानलेम ये काँदन काँदलेम से काहार जन्य।
धन्य ए जागरण, धन्य ए क्रन्दन, धन्य रे धन्य ।।

१९१४

तोमार......ये—तुम्हारे साथ गान का खेल दूर का खेल है; **वेदनाते....ये**—सब समय बाँसुरी वेदना के सुर में बजती है; **कबे......बाँशि**—कब मेरी बाँसुरी ले कर; **बाजाबे......आसि**—आप ही आ कर बजाओगे; **आँधारे**—अंधकार में।

८८. **दुःखेर......थामल**—दुःख की वर्षा में जैसे ही आँखों का जल नीचे आया वैसे ही हृदय के दरवाज़े बन्धु का रथ आ कर रुका; **मिलनेर......वेदनाय**—मिलन का पात्र विरह और वेदना से भरा हुआ है; **अर्पिनु......नाइ**—उनके हाथों अर्पित कर दिया, (अब मुझे) खेद नहीं, अब और मुझे खेद नहीं; **चक्षेर निमिषेइ**—पल भर में ही; **मिटल......तियाषा**—वह स्पर्श की तृष्णा मिट गई; **एत......जानलेम**—इतने दिनों बाद जाना; **ये**—जो; **काँदन**—क्रदन; **काँदलेम**—रोया; **से......जन्य**—वह किसके लिये; **ए**—यह।

८९

प्रभु, तोमार वीणा येमनि बाजे
आँधार-माझे
अमनि फोटे तारा ।
येन सेइ वीणाटि गभीर ताने
आमार प्राण
बाजे तेमनिधारा ।।
तखन नूतन सृष्टि प्रकाश हबे
की गौरवे
हृदय-अन्धकारे ।
तखन स्तरे स्तरे आलोकराशि
उठबे भासि
चित्तगगनपारे ।।
तखन तोमारि सौन्दर्यछवि,
ओगो कवि,
आमाय पड़बे आँका—
तखन विस्मयेर रबे ना सीमा
ऐ महिमा
आर याबे ना ढाका ।।

८९. **येमनि बाजे**—जैसे ही बजती है; **आँधार-माझे**—अन्धकार के बीच; **अमनि**—वैसे ही; **फोटे**—प्रस्फुटित होता है, उदित होता है; **येन**—ऐसा हो कि; **सेइ**—वही; **तेमनिधारा**—उसी प्रकार, उसी ढंग से; **तखन**—उस समय; **हबे**—होगी; **येन......धारा**—ऐसा हो कि वह वीणा गभीर तान से उसी प्रकार मेरे प्राणों में बजे; **तखन.....अन्धकारे**—उस समय (मेरे) हृदय के अन्धकार में कितने गौरव के साथ नवीन सृष्टि प्रकाशित होगी; **छवि**—चित्र, तस्वीर; **तखन......आँका**—हे कवि, उस समय तुम्हारे ही सौन्दर्य की तस्वीर मुझ में अंकित हो जाएगी; **रबे ना**—नहीं रहेगी; **ऐ**—वह; **आर......ढाका**—और ढकी नहीं जा सकेगी; **तोमारि**—तुम्हारी ही; **हासि**—हँसी;

तखन तोमारि प्रसन्न हासि
पड़बे आसि
नवजीवन-'परे ।
तखन आनन्द-अमृते तव
धन्य हब
चिरदिनेर तरे ।।

१९१४

९०

ओगो पथेर साथि, नमि बारम्बार ।
पथिकजनेर लहो लहो नमस्कार ।।
ओगो बिदाय, ओगो क्षति, ओगो दिनशेषेर पति,
भाङा बासार लहो नमस्कार ।।
ओगो नव प्रभातज्योति, ओगो चिरदिनेर गति,
नव आशार लहो नमस्कार ।
जीवनरथेर हे सारथि, आमि नित्य पथेर पथी,
पथे चलार लहो लहो लहो नमस्कार ।

१९१४

९१

भोरेर वेला कखन एसे
परश करे गेछ हेसे ।

पड़बे आसि—आ कर पड़ेगी; **'परे**—पर, ऊपर; **हब**—होऊँगा; **चिरदिनेर तरे**—चिरदिन के लिये ।

९०. **साथि**—साथी; **नमि**—नमस्कार करता हूँ; **लहो**—लो; **भाङा बासार**—टूटे वासस्थान का; **पथे चलार**—पथ पर चलने वाले का, पथिक का ।

९१. **भोरेर......हेसे**—भोर-वेला में जाने किस समय आ कर हँसते हुए स्पर्श कर गए हो; **आमार......ठेले**—मेरी निद्रा के दरवाज़े को ठेल कर;

आमार घुमेर दुयार ठेले के सेइ खबर दिल मेले—
जेगे देखि, आमार आँखि आँखिर जले गेछे भेसे ।।
मने हल, आकाश येन कइल कथा काने काने ।
मने हल, सकल देह पूर्ण हल गाने गाने ।
हृदय येन शिशिरनत फुटल पूजार फुलेर मतो;
जीवननदी कूल छापिये छड़िये गेल असीमदेशे ।।

१९१४

९२

भेङेछ दुयार, एसेछ ज्योतिर्मय, तोमारि हउक जय ।
तिमिरविदार उदार अभ्युदय, तोमारि हउक जय ।।
हे विजयी वीर, नव जीवनेर प्राते
नवीन आशार खड़्ग तोमार हाते—
जीर्ण आवेश काटो सुकठोर घाते, बन्धन होक क्षय ।।
एसो दुःसह, एसो एसो निर्दय, तोमारि हउक जय ।
एसो निर्मल, एसो एसो निर्भय, तोमारि हउक जय ।
प्रभातसूर्य, एसेछ रुद्रसाजे,
दुःखेर पथे तोमार तूर्य बाजे—
अरुणवह्नि ज्वालाओ चित्तमाझे, मृत्युर होक लय ।।

१९१४

के......मेले—किसने वह खबर फैला दी; **जेगे देखि**—जग कर देखती हूँ; **आमार .....भेसे**—मेरी आँखें आँखों के जल से प्लावित हो गई हैं; **मने हल**—मन में हुआ, लगा; **आकाश......काने**—जैसे आकाश ने कानों-कान बात कही; **हल**—हुई; **येन**—जैसे; **फुटल......मतो**—पूजा के फूल के समान प्रस्फुटित हुआ; **जीवननदी ......देशे**—जीवन-नदी किनारे का अतिक्रमण कर असीम देश में फैल गई ।

९२. **भेङेछ दुयार**—दरवाज़े को तोड़ा है; **एसेछ**—आए हो; **तोमारि......जय**—तुम्हारी ही जय हो; **विदार**—विदारण करने वाले, चीरने वाले; **हाते**—हाथ में; **आवेश**—मोह; **होक**—हो; **एसो**—आओ; **ज्वालाओ**—जलाओ ।

९३

ये राते मोर दुयारगुलि भाङल झड़े
जानि नाइ तो तुमि एले आमार घरे।
सब ये हये गेल कालो,   निबे गेल दीपेर आलो,
आकाश-पाने हात बाड़ालेम काहार तरे ?
अन्धकारे रइनु पड़े स्वपन मानि।
झड़ ये तोमार जयध्वजा ताइ कि जानि !
सकालवेलाय चेये देखि,   दाँड़िये आछ तुमि ए कि
घर-भरा मोर शून्यतारइ बुकेर 'परे ।।

१९१४

९४

यदि प्रेम दिले ना प्राणे
केन भोरेर आकाश भरे दिले एमन गाने गाने ?
केन तारार माला गाँथा,
केन फुलेर शयन पाता,
केन दखिन-हाओया गोपन कथा जानाय काने काने ?

९३. **ये राते......घरे**—जिस रात आँधी में मेरे दरवाज़े टूट पड़े (तब) जान न पायी कि तुम मेरे घर आए हो; **सब......कालो**—सब काला (अन्धकार) हो गया; **निबे......आलो**—दीपक का प्रकाश बुझ गया; **आकाश......तरे**—आकाश की ओर (मैंने) किसके लिये हाथ बढ़ाये; **अन्धकारे.....मानि**—स्वप्न समझ कर अन्धकार में पड़ी रही; **झड़......जानि**—आँधी जो तुम्हारी जयध्वजा है सो क्या जानती थी; **सकाल वेलाय**—सबेरे; **चेये देखि**—आँखें खोल कर देखती हूँ; **दाँड़िये......तुमि**—तुम खड़े हो; **एकि**—यह क्या! **घर......'परे**—घर को भरने वाली मेरी शून्यता की ही छाती के ऊपर।

९४. **दिले ना**—नहीं दिया; **केन**—क्यों; **एमन**—इस प्रकार; **गाने गाने**—गानों से; **तारार......गाँथा**—ताराओं की माला गूंथना; **फुलेर......पाता**—फूलों की सेज बिछाना; **हाओया**—हवा; **जानाय**—बतलाती है;

यदि प्रेम दिले ना प्राणे
केन आकाश तबे एमन चाओया चाय ए मुखेर पाने ?
तबे क्षणे क्षणे केन
आमार हृदय पागल-हेन
तरी सेइ सागरे भासाय याहार कूल से नाहि जाने ?।

१९१४

९५

येते येते एकला पथे निबेछे मोर बाति।
झड़ एसेछे, ओरे, एबार झड़के पेलेम साथि ।।
आकाशकोणे सर्वनेशे क्षणे क्षणे उठछे हेसे,
प्रलय आमार केशे वेशे करछे मातामाति ।।
ये पथ दिये येतेछिलेम भुलिये दिल तारे,
आबार कोथा चलते हबे गभीर अन्धकारे।
बुझि वा एइ वज्ररवे नूतन पथेर वार्ता कबे—
कोन् पुरीते गिये तबे प्रभात हबे राति ।।

१९१४

केन......पाने—आकाश तब ऐसी चितवन से क्यों इस मुंह की ओर निहारता है; **हेन**—जैसा; **आमार......जाने**—मेरा हृदय पागल के समान उसी समुद्र में नौका बहाता है जिसका कूल वह नहीं जानता।

९५. **येते.....बाति**—जाते-जाते सूने पथ में मेरी बत्ती बुझ गई है; **झड़......साथि**—आंधी आई है, रे, इस बार आंधी को मैं ने संगी पाया है; **कोणे**—कोने में; **सर्वनेशे**—सर्वनाश करने वाली; **उठछे हेसे**—हँस उठती है; **प्रलय.....मातामाति**—प्रलय मेरे केशों तथा सज्जा से पागलपन (छेड़खानी) कर रहा है; **ये......तारे**—जिस रास्ते (में) जा रही थी उसे भुला दिया; **आबार......अन्धकारे**—अब फिर गभीर अन्धकार में कहाँ चलना होगा; **बुझि......कबे**—अथवा शायद इस वज्र-ध्वनि में नये पथ का सँदेसा देगी; **कोन्......गिये**—किस नगरी में जा कर; **तबे**—तब; **प्रभात......राति**—रात प्रभात होगी।

९६

राजपुरीते बाजाय बाँशि वेलाशेषेर तान।
पथे चलि, शुधाय पथिक, 'की निलि तोर दान'॥
देखाब ये सबार काछे एमन आमार की-वा आछे,
सङ्गे आमार आछे शुधु एइ कखानि गान॥
घरे आमार राखते ये हय बहु लोकेर मन—
अनेक बाँशि, अनेक काँसि, अनेक आयोजन।
बँधुर काछे आसार वेलाय गानटि शुधु निलेम गलाय,
तारि गलार माल्य क'रे करब मूल्यवान॥

१९१४

९७

शुधु तोमार वाणी नय गो, हे बन्धु, हे प्रिय,
माझे माझे प्राणे तोमार परशखानि दियो॥
सारा पथेर क्लान्ति आमार, सारा दिनेर तृषा,
केमन करे मेटाब ये खुँजे ना पाइ दिशा—
ए आँधार ये पूर्ण तोमाय सेइ कथा बलियो॥

---

९६. **राजपुरीते**......**तान**—बाँसुरी राजपुरी में शेष-वेला की तान बजाती है; **पथे**......**दान**—रास्ते में चलती हूँ, पथिक पूछता है, तूने दान में क्या पाया; **देखाब**.....**काछे**—सबके निकट दिखलाऊँ ऐसा मेरा (मेरे पास) है ही क्या; **सङ्गे**......**गान**—मेरे साथ तो केवल यही कुछ गान हैं; **घरे**......**मन**—घर में मुझे बहुत लोगों का मन जो रखना पड़ता है; **काँसि**—कांसे का वाद्ययन्त्र; **बँधुर**......**वेलाय**—मीत के पास आने के समय; **गानटि**.......**गलाय**—(मैंने) केवल कण्ठ में गान लिये; **तारि**......**मूल्यवान**—उसीके (मीत के) कण्ठ की माला बना कर (उसे) मूल्यवान बनाऊँगी।

९७. **शुधु**......**नय**—केवल अपनी वाणी नहीं; **माझे**......**दियो**—बीच-बीच में प्राणों को अपना स्पर्श (भी) देना; **सारा**......**दिशा**—समस्त पथ की अपनी क्लान्ति, समस्त दिन की प्यास को कैसे मिटाऊँगी, दिशा जो नहीं खोज पाती; **ए**.....**बलियो**—यह अंधकार तुम से ही पूर्ण है यही बात कहना;

हृदय आमार चाय ये दिते, केवल निते नय,
बये बये बेड़ाय से तार या-किछु सञ्चय।
हातखानि ओइ बाड़िये आनो, दाओ गो आमार हाते—
धरब तारे, भरब तारे, राखबो तारे साथे,
एकला पथेर चला आमार करब रमणीय ।।

१९१४

९८

श्रावणेर धारार मतो पड़ुक झरे, पड़ुक झरे
तोमारि सुरटि आमार मुखेर 'परे, बुकेर 'परे ।।
पुरबेर आलोर साथे पड़ुक प्राते दुइ नयाने—
निशीथेर अन्धकारे गभीर धारे पड़ुक प्राणे।
निशिदिन एइ जीवनेर सुखेर 'परे, दुखेर 'परे
श्रावणेर धारार मतो पड़ुक झरे, पड़ुक झरे ।।
ये शाखाय फुल फोटे ना, फल धरे ना एकेबारे,
तोमार ओइ बादल-बाये दिक जागाये सेइ शाखारे।

चाय.....दिते—देना जो चाहता है; **केवल......नय**—केवल लेना नहीं; **बये...... सञ्चय**—जो-कुछ उसका सञ्चय है उसे ढोते हुए (वहन करते हुए) वह भटकता फिरता है; **हातखानि**—हाथ; **ओइ**—वह; **बाड़िये आनो**—बढ़ा कर लाओ, बढ़ाओ; **दाओ.....हाते**—मेरे हाथों में दो; **धरब तारे**—उसे पकडूंगी; **भरब**—भरूँगी; **राखबो......साथे**—उसे साथ रखूंगी; **एकला......रमणीय**—सूने पथ पर अपने गमन को रमणीय बनाऊँगी।

९८. **श्रावणेर.....मतो**—श्रावण की धारा (झड़ी) के समान; **पड़ुक झरे**—झड़ पड़े; **तोमारि**—तुम्हारा ही; **सुरटि**—सुर, स्वर; **बुकेर 'परे**—छाती पर, **पुरबेर......साथे**—पूर्व (दिशा) के आलोक के साथ; **प्राते**—प्रातःकाल; **दुइ नयाने**—दोनों आँखों पर; **ये.....एकेबारे**—जिस शाखा पर फूल नहीं खिलते, फल बिल्कुल ही नहीं लगते; **तोमार ओइ**—तुम्हारी वह; **बादल बाये**—बरसाती हवा; **दिक जागाये**—जगा दे; **सेइ**—उस; **शाखारे**—शाखा को;

या-किछु जीर्ण आमार, दीर्ण आमार, जीवनहारा,
ताहारि स्तरे स्तरे पड़ुक झरे सुरेर धारा।
निशिदिन एइ जीवनेर तृषार 'परे, भुखेर 'परे
श्रावणेर धारार मतो पड़ुक झरे, पड़ुक झरे॥

१९१४

९९

शेष नाहि ये, शेष कथा के बलबे?
आघात हये देखा दिल, आगुन हये ज्वलबे॥
साङ्ग हले मेघेर पाला शुरु हबे वृष्टि-ढाला
बरफ जमा सारा हले नदी हये गलबे॥
फुराय या ता फुराय शुधु चोखे,
अन्धकारेर पेरिये दुयार याय चले आलोके।
पुरातनेर हृदय टुटे आपनि नूतन उठबे फुटे,
जीवने फुल फोटा हले मरणे फल फलबे॥

१९१४

या-किछु—जो कुछ; **दीर्ण**—विदीर्ण, फटा; **जीवनहारा**—प्राणहीन; **ताहारि**—उसीके; **भुख**—भूख।

९९. **शेष......बलबे**—अन्त जो नहीं है, अन्तिम बात कहेगा कौन; **हये**—बन कर; **देखा दिल**—दिखाई दिया; **आघात......ज्वलबे**—आघात के रूप में दिखाई दिया, अग्नि हो कर जलेगा; **आगुन**—आग, अग्नि; **ज्वलबे**—जलेगा; **साङ्ग......पाला**—मेघों का प्रकरण समाप्त होने पर; **हबे**—होगा; **ढाला**—ढालना; **सारा हले**—समाप्त होने पर; **फुराय......चोखे**—जो निःशेष होता है सो केवल आँखों (से देखने भर) के लिये निःशेष होता है; **अन्धकारेर..... आलोके**—अन्धकार के दरवाज़े को पार कर (वह) आलोक में चला जाता है; **पुरातनेर......टुटे**—पुरातन (प्राचीन) का हृदय टूटने पर; **आपनि......फुटे**—नवीन आप ही खिल उठेगा; **जीवने......फलबे**—जीवन में फूल खिलने पर मरण में फल फलेगा।

१००

तोमार खोला हाओया लागिये पाले टुकरो करे काछि
डुबते राजि आछि आमि डुबते राजि आछि ।।
सकाल आमार गेल मिछे, बिकेल ये याय तारि पिछे गो—
रेखो ना आर, बेँधो ना आर कूलेर काछाकाछि ।।
माझिर लागि आछि जागि सकल रात्रिवेला,
ढेउगुलो ये आमाय निये करे केवल खेला ।
झड़के आमि करब मिते, डरब ना तार भ्रूकुटिते—
दाओ छेड़े दाओ, ओगो, आमि तुफान पेले बाँचि ।।

१९१४

१०१

आज आलोकेर एइ झर्नाधाराय धुइये दाओ ।
आपनाके एइ लुकिये-राखा धुलार ढाका धुइये दाओ ।।
ये जन आमार माझे जड़िये आछे घुमेर जाले
आज एइ सकाले धीरे धीरे तार कपाले
एइ अरुण-आलोर सोनार-काठि छुँइये दाओ ।

---

१००. **तोमार......काछि**—तुम्हारी खुली हुई (मुक्त) हवा पाल में भर कर मोटे रस्सों के टुकड़े टुकड़े कर के; **आमि......आछि**—मैं डूबने को राज़ी (तैयार) हूँ; **सकाल......मिछे**—मेरा प्रातःकाल व्यर्थ गया (बीता); **बिकेल......पिछे**—तीसरा पहर उसीके पीछे जाता है; **बिकेल**—विकाल, अपराह्ण; **रेखो......काछाकाछि**—किनारे के आसपास और न रखो, और न बाँधो; **माझिर......जागि**—माँझी के लिये जाग रहा हूँ; **ढेउ......खेला**—लहरें मुझे ले कर केवल खेल किए जाती हैं; **झड़के.....मिते**—आँधी को मैं मीत बनाऊँगा; **डरब......भ्रूकुटिते**—उसकी भ्रूकुटि से डरूँगा नहीं; **दाओ......ओगो**—अजी, छोड़ दो; **आमि......बाँचि**—मैं तूफ़ान पा कर बच जाऊँ (मरूँ नहीं)।

१०१. **एइ**—इस; **धाराय**—धारा में; **धुइये दाओ**—धो दो; **आपनाके.....दाओ**—अपने को इस तरह छिपा रखने वाली धूलि के आच्छादन को धो दो; **ये......जाले**—जो व्यक्ति मेरे भीतर निद्रा के जाल में जड़ित है; **आज......दाओ**—आज इस प्रभात में धीरे धीरे उसके कपाल में इस अरुण प्रकाश की

विश्वहृदय-हते-धाओया आलोय-पागल प्रभात-हाओया,
सेइ हाओयाते हृदय आमार नुइये दाओ ।।
आज निखिलेर आनन्दधाराय धुइये दाओ,
मनेर कोणेर सब दीनता मलिनता धुइये दाओ ।।
आमार परान-वीणाय घुमिये आछे अमृतगान—
तार नाइको वाणी, नाइको छन्द, नाइको तान ।
तारे आनन्देर एइ-जागरणी छुँइये दाओ ।
विश्वहृदय-हते-धाओया प्राणे-पागल गानेर हाओया,
सेइ हाओयाते हृदय आमार नुइये दाओ ।।

१९१५

१०२

तोमाय नतुन करेइ पाब ब'ले हाराइ क्षणे-क्षणे
ओ मोर भालोबासार धन ।।
देखा देबे ब'ले तुमि हओ ये अदर्शन
ओ गो भालोबासार धन ।।
ओगो, तुमि आमार नओ आड़ालेर, तुमि आमार चिरकालेर—

सोने की (जादूभरी) लकड़ी का स्पर्श करा दो; **विश्व.....हाओया**—विश्व-हृदय से (निकल कर) दौड़ती हुई प्रकाश से पागल प्रभात की हवा; **सेइ...... दाओ**—उसी हवा से मेरे हृदय को झुका दो; **मनेर कोणेर**—मन के कोने की; **आमार......अमृतगान**—मेरी प्राण-वीणा में अमर गान सोया हुआ है; **तार..... तान**—उसके न वाणी है, न छन्द है, न तान; **तारे......दाओ**—उसे इस आनन्द की प्रभाती का स्पर्श करा दो।

१०२. **तोमाय**—तुम्हें; **नतुन......क्षणे**—नये सिरे से पाऊँगा इसलिये क्षण-क्षण (तुम्हें) खोता हूँ; **ओ.....धन**—हे मेरे प्यार के धन; **देखा......अदर्शन**—दर्शन दोगे इसलिये तुम अदृश्य (अदर्शन) हो जाते हो; **आमार**—मेरे; **नओ**—नहीं हो; **आड़ालेर**—अन्तराल के; **क्षणकालेर.....निमगन**—क्षणकाल की

क्षणकालेर लीलार स्रोते हओ ये निमगन
ओ मोर भालोबासार धन ॥
आमि तोमाय यखन खुँजे फिरि भये काँपे मन—
प्रेमे आमार ढेउ लागे तखन ।
तोमार शेष नाहि, ताइ शून्य सेजे शेष करे दाओ आप्नाके ये—
ओइ हासिरे देय धुये मोर विरहेर रोदन
ओ मोर भालोबासार धन ॥
१९१५

१०३

धीरे बन्धु, धीरे धीरे
चलो तोमार विजन मन्दिरे ।
जानि ने पथ, नाइ ये आलो, भितर बाहिर कालोय कालो,
तोमार चरणशब्द वरण करेछि
आज एइ अरण्यगभीरे ॥
धीरे बन्धु, धीरे धीरे
चलो अन्धकारेर तीरे तीरे ।
चलब आमि निशीथराते तोमार हाओयार इशाराते,
तोमार वसनगन्ध वरण करेछि
आज एइ वसन्तसमीरे ॥
१९१५

लीला के स्रोत में निमग्न जो हो जाते हो; **आमि....मन**—मैं तुम्हें जब खोजता फिरता हूँ, (मेरा) मन भय से काँपता रहता है; **प्रेमे.....तखन**—उस समय मेरे प्रेम में लहरें उठती हैं; **तोमार.....नाहि**—तुम्हारी समाप्ति नहीं है; **ताइ.....ये**—इसीलिये शून्य का वेश धर कर अपने को समाप्त कर देते हो; **ओइ.....रोदन**—मेरे विरह का रोदन उस हँसी को धो देता है ।

१०३. **जानि ने**—नहीं जानता; **नाइ......आलो**—प्रकाश जो नहीं है; **भितर**—भीतर; **कालोय कालो**—काला ही काला; **करेछि**—किया है; **चलब**—चलूंगा; **हाओयार इशाराते**—हवा के इशारे से ।

१०४

सबाइ यारे सब दितेछे तार काछे सब दिये फेलि।
क'बार आगे चाबार आगे आपनि आमाय देब मेलि ।।
नेबार वेला हलेम ऋणी, भिड़ करेछि भय करि नि—
एखनो भय करबो ना रे, देबार खेला एबार खेलि ।।
प्रभात तारि सोना निये बेरिये पड़े नेचेकुँदे।
सन्ध्या तारे प्रणाम क'रे सब सोना तार देय रे शुधे।
फोटा फुलेर आनन्द रे झरा फुलेइ फले धरे—
आपनाके भाइ, फुरिये-देओया चुकिये दे तुइ बेलाबेलि ।।

१९१५

१०५

चलि गो, चलि गो, याइ गो चले।
पथेर प्रदीप ज्वले गो गगनतले ।।
बाजिये चलि पथेर बाँशि, छड़िये चलि चलार हासि,
रङिन वसन उड़िये चलि जले स्थले ।।

१०४. **सबाइ......फेलि**—सभी जिसे सब (कुछ) दे रहे हैं उसके निकट सब कुछ दे डालूं; **क'बार.....मेलि**—कहने के पहले, चाहने के पहले स्वयं ही अपने आप को (उसके निकट) फैला (बिखरा) दूंगा; **नेबार.....ऋणी**—लेने के समय ऋणी हुआ; **भिड़.....नि**—भीड़ की है लेकिन भय नहीं किया; **एखनो.....खेलि**—अब इस समय भी भय नहीं करूँगा, इसबार देने का खेल खेलूं; **प्रभात......कुँदे**—प्रभात उसी का सोना ले कर नाचता-कूदता निकल पड़ता है; **सन्ध्या......शुधे**—सन्ध्या उसे प्रणाम करके उसका सब सोना परिशोध कर देती है; **फोटा ......रे**—खिले हुए फूल का आनन्द; **झरा......धरे**—झड़े हुए फूल में ही फल बनता है; **आपनाके......बेलि**—अपने को, भाई, समय रहते-रहते सम्पूर्ण रूप मे नि:शेष करने (का ऋण) चुका दे।

१०५. **चलि**—चलूं; **याइ......चले**—चला जाऊँ; **ज्वले**—जलता है; **गो**—मधुर संबोधन के लिये प्रयुक्त होता है; **बाजिये......बाँशि**—पथ की बाँसुरी बजा कर चलूं; **छड़िये......हासि**—चलने की हँसी (आनंद) को बिखेरता चलूं; **रङिन......स्थले**—जल-स्थल पर रंगीन वस्त्र उड़ाता हुआ चलूं;

पथिक भुवन भालोबासे पथिकजने रे।
एमन सुरे ताइ से डाके क्षणे क्षणे रे।।
चलार पथेर आगे आगे ऋतुर ऋतुर सोहाग जागे,
चरणघाये मरण मरे पले पले।।

१९१५

१०६

आमार सकल दुखेर प्रदीप ज्वेले दिवस गेले करब निवेदन—
आमार व्यथार पूजा हय नि समापन।
यखन वेला-शेषेर छायाय पाखिरा याय आपन कुलाय-माझे,
सन्ध्यापूजार घण्टा यखन बाजे,
तखन आपन शेष शिखाटि ज्वालबे ए जीवन—
आमार व्यथार पूजा हबे समापन।।
अनेक दिनेर अनेक कथा, व्याकुलता, बाँधा वेदन-डोरे,
मनेर माझे उठेछे आज भ'रे।

पथिक......पथिकजने रे—भुवन रूपी पथिक पथिकों को प्यार करता है; **एमन...... क्षणे रे**—इसीलिये ऐसे सुर में वह क्षण-क्षण पुकारता है; **चलार......जागे**—चलने की राह के आगे-आगे ऋतु-ऋतु का दुलार जागता है (अर्थात् गमन पथ पर पहले से ही विभिन्न ऋतुओं की श्री पथिक के स्वागत के लिये अपने को बिखेरे हुए रहती है); **चरणघाये......पले**—चरणों के आघात से प्रत्येक क्षण मरण की मृत्यु होती रहती है।

१०६. **ज्वेले**—जला कर; **दिवस गेले**—दिन बीतने पर; **करब**—करूँगा; **आमार......समापन**—मेरी व्यथा की पूजा समाप्त नहीं हुई है; **यखन .....माझे**—जब दिनान्त की छाया में पक्षी अपने नीड़ में चले जाते हैं; **बाजे**—बजता है; **तखन......जीवन**—तब यह जीवन अपनी अन्तिम लौ जलाएगा; **व्यथार पूजा**—व्यथा की पूजा; **हबे**—होगी; **अनेक......भरे**—वेदना की डोर में बँधी हुई अनेक दिनों की अनेक बातें तथा व्याकुलता आज मन के भीतर भर उठी हैं; **यखन.....हारा**—जब पूजा की होमाग्नि में वे एक-एक कर जल

यखन पूजार होमानले उठबे ज्वले एके एके तारा,
आकाश-पाने छुटबे बाँधन-हारा,
अस्तरविर छबिर साथे मिलबे आयोजन—
आमार व्यथार पूजा हबे समापन ।।

१९१६

१०७

निशिदिन मोर पराने प्रियतम मम
कत-ना वेदना दिये बारता पाठाले ।
भरिले चित्त मम नित्य तुमि प्रेमे प्राणे गाने हाय
थाकि आड़ाले ।।

१९१६

१०८

कान्नाहासिर दोल-दोलानो पौष-फागुनेर पाला,
तारि मध्ये चिरजीवन बइब गानेर डाला—
एइ कि तोमार खुशि, आमाय ताइ पराले माला
सुरेर-गन्ध-ढाला ?

उठेंगी, बंधन-मुक्त हो आकाश की ओर दौड़ पड़ेंगी; **अस्तरविर......आयोजन**—डूबे हुए सूर्य के सौन्दर्य के साथ (यह) आयोजन मिल जायगा ।

१०७. **मोर पराने**—मेरे प्राणों में; **कत......पाठाले**—(न जाने) कितनी ममता के साथ सन्देसा भेजा; **भरिले**—भर दिया; **थाकि आड़ाले**—अन्तराल (ओट) में रह कर ।

१०८. **कान्ना......दोलानो**—क्रन्दन और हँसी के झूले पर झुलाए हुए; **पाला**—प्रसंग, गीत या नाटक का विषय; **तारि.....डाला**—उसीके बीच चिर-जीवन गान की डलिया वहन करूँ; **एइ......खुशि**—यही क्या तुम्हारी इच्छा है; **आमाय......ढाला**—इसीलिये तुमने मुझे सुर-सौरभ से भीनी माला पहनाई;

ताइ कि आमार घुम छुटेछे, बाँध टुटेछे मने,
खेपा हाओयार ढेउ उठेछे चिरव्यथार वने,
काँपे आमार दिवानिशार सकल आँधार आला !
एइ कि तोमार खुशि, आमाय ताइ पराले माला
सुरेर-गन्ध-ढाला ?
रातेर बासा हय नि बाँधा, दिनेर काजे त्रुटि,
बिना काजेर सेवार माझे पाइ ने आमि छुटि ।
शान्ति कोथाय मोर तरे हाय विश्वभुवन-माझे,
अशान्ति ये आघात करे ताइ तो वीणा बाजे ।
नित्य रबे प्राण-पोड़ानो गानेर आगुन ज्वाला—
एइ कि तोमार खुशि, आमाय ताइ पराले माला
सुरेर-गन्ध-ढाला ?

१९१६

१०९

केन रे एइ दुयारटुकु पार हते संशय ?
जय अजानार जय ।।
एइ दिके तोर भरसा यत, ओइ दिके तोर भय !
जय अजानार जय ।।

ताइ......मने—इसीलिये क्या मेरी निद्रा लुप्त हो गई है, मन का बाँध टूट गया है; **खेपा......वने**—चिर व्यथा के वन में पागल हवा की लहरें उठी हैं; **काँपे**—काँपता है; **आँधार**—अन्धकार; **आला**—आलोक; **.रातेर.....बाँधा**—रात्रि के निवास स्थान का निर्माण नहीं हुआ है; **दिनेर......त्रुटि**—दिन के कार्य में त्रुटि रह गई है; **बिना......छुटि**—बिना काम की सेवा के बीच मैंने छुट्टी नहीं पाई; **शान्ति......माझे**—हाय इस विश्व-भुवन में मेरे लिये शान्ति कहाँ है; **अशान्ति......बाजे**—अशान्ति जो आघात करती है इसीलिये तो वीणा बजती है; **नित्य......ज्वाला**—प्राणों को जलाने वाली गानों की आग नित्य जलती रहेगी; **रबे**—रहेगी; **-पोड़ानो**—जलाने वाली ।

१०९. **केन......संशय**—क्यों रे, इस द्वार भर को पार करने में संशय है ? **अजाना**—अज्ञात; **एइ......भय**—तेरा सारा विश्वास इसी ओर है, उस

जानाशोनार बासा बेँधे   काटल तो दिन हेसे केँदे,
एइ कोणेतेइ आनागोना नय किछुतेइ नय।
जय अजानार जय॥
मरणके तुइ पर करेछिस भाइ,
जीवन ये तोर तुच्छ हल ताइ।
दु:दिन दिये घेरा घरे   ताइते यदि एतइ धरे
चिरदिनेर आवासखाना सेइ कि शून्यमय ?
जय अजानार जय॥

१९१८

११०

गानेर सुरेर आसनखानि पाति पथेर धारे।
ओगो पथिक, तुमि एसे बसबे बारे बारे॥
ऐ ये तोमार भोरेर पाखि   नित्य करे डाकाडाकि,
अरुण-आलोर खेयाय यखन एस घाटेर पारे,
मोर प्रभातीर गानखानिते दाँड़ाओ आमार द्वारे॥

ओर केवल तुझे भय है; **जानाशोनार**—जाने-पहचाने का; **बासा बेँधे**—आवास निर्माण कर; **काटल.....केँदे**—हँस रो कर दिन तो कट गए; **एइ.....नय**—इसी कोने में ही (तुम्हारी) आवाजाही नहीं है, किसी भी तरह नहीं; **मरण......भाइ**—भाई, तूने मरण को पराया बना रखा है; **जीवन......ताइ**—इसीलिये तो तेरा जीवन तुच्छ हो गया; **दु.....घरे**—दो दिनों के घेरे (बनाये) हुए (इस) घर में; **ताइते......धरे**—उसीमें यदि इतना अँटता है; **चिरदिनेर...... शून्यमय**—(तो) चिरदिन का जो आवास (निवासस्थान) है क्या वही शून्य से भरा है ?

११०. **गानेर......धारे**—गान के सुर का आसन रास्ते के किनारे बिछाता हूँ; **तुमि......बारे**—तुम आ कर बार-बार बैठोगे; **ऐ ये......डाकाडाकि**—तुम्हारे भोर के वे पक्षी जो नित्य टेर-पुकार करते हैं; **अरुण......पारे**—सूर्य के आलोक की खेवेवाली नाव पर जब तुम घाट के पार आते हो; **मोर...... द्वारे**—मेरे प्रभाती-गान में मेरे दरवाज़े पर खड़े होते हो; **सकाले**—भोर में;

आज सकाले मेघेर छाया लुटिये पड़े वने,
जल भरेछे ऐ गगनेर नील नयनेर कोणे।
आजके एले नतुन वेशे   तालेर वने माठेर शेषे,
अमनि चले येयो नाको गोपन सञ्चारे।
दाँड़ियो आमार मेघला गानेर बादल-अन्धकारे ।।

१९१८

१११

तुमि   एकला घरे बसे बसे की सुर बाजाले
प्रभु, आमार जीवने !
तोमार   परशरतन गेँथे गेँथे आमाय साजाले
प्रभु, गभीर गोपने ।।
दिनेर आलोर आड़ाल टानि   कोथाय छिले नाहि जानि,
अस्तरविर तोरण हते चरण बाड़ाले
आमार रातेर स्वपने ।।
आमार   हियाय हियाय बाजे आकुल आँधार यामिनी,
से ये   तोमार बाँशरि।

लुटिये पड़े—लोट पड़ती है; **भरेछे**—भरा है; **ऐ**—वह; **कोणे**—कोने में; **आजके......वेशे**—आज नवीन वेश में आए; **तालेर वने**—ताड़ के वन में; **माठेर शेषे**—फैले हुए मैदान के अन्त में (सीमा पर); **अमनि**—वैसे ही; **चले.....नाको**—चले नहीं जाना; **दाँड़ियो**—खड़े रहना; **मेघला.....अन्धकारे**—मेघाच्छन्न गान के बरसाती अन्धकार में।

१११. **तुमि......जीवने**—प्रभु, सूने घर में बैठे-बैठे मेरे जीवन में तुमने कौन-सा सुर बजाया; **तोमार......साजाले**—अपने पारसमणि को गूँथ-गूँथ मुझे सजाया; **दिनेर......जानि**—दिन के आलोक का पर्दा खींच कर (तुम) कहाँ थे, नहीं जानती; **अस्तरविर......स्वपने**—अस्त रवि के तोरण से रात के मेरे स्वप्नों में (तुमने) चरण बढ़ाए; **हियाय**—हृदय में; **बाजे**—बजती है; **से.....बाँशरि**—वह तो तुम्हारी बाँसुरी है; **आमि.....रागिणी**—

आमि शुनि तोमार आकाशपारेर तारार रागिणी,
आमार सकल पाशरि।
काने आसे आशार वाणी— खोला पाब दुयारखानि
रातेर शेषे शिशिर-धोओया प्रथम सकाले
तोमार करुण किरणे ।।

१९१८

११२

तोमार भुवनजोड़ा आसनखानि
हृदय-माझे बिछाओ आनि ।।
रातेर तारा, दिनेर रवि, आँधार-आलोर सकल छवि,
तोमार आकाश-भरा सकल वाणी हृदय-माझे बिछाओ आनि ।।
तोमार भुवनवीणार सकल सुरे
हृदय परान दाओ-ना पुरे।
दुःखसुखेर सकल हरष, फुलेर परश, झड़ेर परश
तोमार करुण शुभ उदार पाणि हृदय-माझे दिक्-ना आनि ।।

१९१८

आकाश पार के ताराओं की तुम्हारी रागिणी को सुनती हूँ; **आमार.....पाशरि**—अपने सब कुछ को भूल कर; **काने......वाणी**—कानों में आशा की वाणी आती है; **खोला......दुयारखानि**—द्वार खुला पाऊँगी; **शिशिर-धोओया**—ओसकणों से धुले हुए।

११२. **तोमार.....आनि**—(समस्त) भुवन को परिव्याप्त किए हुए अपने आसन को ला कर (मेरे) हृदय में बिछाओ; **आकाश-भरा**—आकाश को पूर्ण करती हुई; **सकल सुरे**—सभी सुरों से; **हृदय.....पुरे**—हृदय, प्राण को भर दो ना; **हरष**—हर्ष; **फुलेर परश**—फूलों का स्पर्श; **झड़ेर परश**—आँधी का स्पर्श; **तोमार......आनि**—तुम्हारे करुण, मंगलमय और उदार हाथ (मेरे) हृदय के भीतर ला दें ना।

११३

भेङे मोर घरेर चाबि निये याबि के आमारे,
बन्धु आमार !
ना पेये तोमार देखा, एका एका दिन ये आमार काटे ना रे ।।
बुझि गो रात पोहालो,
बुझि ओइ रविर आलो
आभासे देखा दिल गगन-पारे,
समुखे ओइ हेरि पथ, तोमार कि रथ पौँछबे ना मोर दुयारे ।।
आकाशेर यत तारा
चेये रय निमेषहारा,
वसे रय रात-प्रभातेर पथेर धारे ।
तोमारि देखा पेले सकल फेले डुबबे आलोक-पारावारे ।
प्रभातेर पथिक सबे
एल कि कलरवे—
गेल कि गान गेये ओइ सारे सारे !
बुझि-वा फुल फुटेछे, सुर उठेछे अरुणवीणार तारे तारे ।।
१९१८

११३. **भेङे......आमारे**—मेरे घर की चाबी (ताली) को तोड़ कर मुझे कौन ले जायगा; **ना.....ना रे**—तुम्हारे दर्शन बिना अकेले-अकेले मेरे दिन जो नहीं कटते; **बुझि......पोहालो**—लगता है रात बीत गई; **बुझि ओइ**—लगता है वह; **रविर आलो**—सूर्य का आलोक; **देखा......पारे**—आकाश के (उस) पार दिखलाई पड़ रहा है; **समुखे**—सामने; **ओइ**—वह; **हेरि**—निहारती हूँ; **तोमार......दुयारे**—क्या तुम्हारा रथ मेरे दरवाज़े तक नहीं पहुँचेगा; **यत**—समस्त; **चेये......हारा**—निष्पलक देखते रहते हैं; **बसे......धारे**—रात्रि और प्रभात के रास्ते के किनारे बैठे रहते हैं; **तोमारि......पारावारे**—तुम्हारे दर्शन पाते ही सब कुछ फेंक ज्योति-समुद्र में डूब जाएंगे; **एल**—आए; **गेल......सारे**—झुंड के झुंड वह कैसा गान गाते हुए चले गए; **फुल फुटेछे**—फूल खिले हैं; **सुर उठछे**—स्वर उठ रहें हैं; **तारे तारे**—तार-तार से ।

११४

आमि ज्वालब ना मोर वातायने प्रदीप आनि,
आमि शुनब बसे आँधार-भरा गभीर वाणी ।।
आमार ए देह मन मिलाये याक निशीथराते,
आमार लुकिये-फोटा एइ हृदयेर पुष्पपाते
थाक्-ना ढाका मोर वेदनार गन्धखानि ।।
आमार सकल हृदय उधाओ हबे तारार माझे
येखाने ओइ आँधारवीणाय आलो बाजे ।
आमार सकल दिनेर पथ-खोँजा एइ हल सारा,
एखन दिक्-विदिकेर शेषे एसे दिशाहारा
किसेर आशाय बसे आछि अभय मानि ।।

१९११

११५

एखनो गेल ना आँधार, एखनो रहिल बाधा ।
एखनो मरणव्रत जीवने हल ना साधा ।।
कबे ये दुःखज्वाला हबे रे विजयमाला,
झलिबे अरुणरागे निशीथरातेर काँदा ।।

---

११४. **आमि......आनि**—प्रदीप ला कर मैं अपने वातायन पर नहीं जलाऊँगी; **शुनब बसे**—बैठ कर सुनूँगी; **आँधार-भरा**—अंधकार को पूर्ण करती हुई; **आमार.....राते**—मेरी यह देह और मन अर्धरात्रि में लीन हो जाँय; **आमार ......खानि**—मेरे छिप कर प्रस्फुटित होने वाले इस हृदय के पुष्प की पँखुड़ियों में मेरी वेदना की सुरभि ढकी रहे ना; **उधाओ.....माझे**—ताराओं के बीच ऊपर की ओर धावित होगा (ताराओं के बीच खो जाएगा); **येखाने......बाजे**—जहाँ उस अंधकार-वीणा में आलोक बजता है; **आमार......सारा**—मेरे समस्त दिन का पथ खोजना यह समाप्त हुआ; **एखन......मानि**—अब दिक्-विदिक् के अन्त में आ कर मैं –दिग्भ्रान्त– किस आशा से निर्भय बैठी हूँ ।

११५. **एखनो......बाधा**—अभी भी अंधकार नहीं गया (दूर नहीं हुआ), अभी भी बाधा रह गई है; **एखनो......साधा**—अभी भी जीवन में मरणव्रत की साधना नहीं हुई; **कबे**—कब; **हबे**—होगी; **झलिबे......काँदा**—गभीर रात्रि

एखनो निजेरइ छाया रचिछे कत ये माया।
एखनो मन ये मिछे चाहिछे केवलइ पिछे,
चकिते बिजलि-आलो चोखेते लागालो धाँदा ॥

१९१९

११६

एबार रङिये गेल हृदयगगन साँझेर रङे ।
आमार सकल वाणी हल मगन साँझेर रङे ॥
मने लागे दिनेर परे पथिक एबार आसबे घरे,
आमार पूर्ण हबे पुण्य लगन साँझेर रङे ॥
अस्ताचलेर सागरकूलेर एइ बातासे
क्षणे क्षणे चक्षे आमार तन्द्रा आसे।
सन्ध्यायूथीर गन्धभारे पान्थ यखन आसबे द्वारे
आमार आपनि हबे निद्राभगन साँझेर रङे ॥

१९१९

११७

जीवनमरणेर सीमाना छाड़ाये
बन्धु हे आमार, रयेछ दाँड़ाये ॥

का क्रन्दन सूर्य की अरुणिमा में झलमल करेगा; **एखनो......माया**—अभी भी अपनी ही छाया (न-जाने) कितनी माया की सृष्टि कर रही है; **एखनो......पिछे**—अब भी मन व्यर्थ ही केवल पीछे की ओर ताक रहा है; **चकिते.....धाँदा**—क्षण मात्र में बिजली के प्रकाश ने आँखों में चकाचौंध लगा दी।

११६. **एबार......रङे**—इस बार संध्या के रंग में हृदय-गगन रंग गया; **हल**—हुई; **मगन**—मग्न, निमज्जित; **मने......घरे**—मन को लगता है कि दिन के बाद अब पथिक घर आएगा; **हबे**—होगा; **पुण्य लगन**—पवित्र लग्न; **एइ बातासे**—इस हवा से; **क्षणे......आसे**—पल-पल मेरी आँखों में तन्द्रा आती है; **पान्थ......द्वारे**—पथिक जब दरवाज़े पर आएगा; **आमार......रङे**—(तब) सन्ध्या के रंग में अपने आप ही मेरी निद्रा भंग होगी।

११७. **जीवन......दाँड़ाये**—जीवन-मरण की सीमा से परे, हे मेरे बन्धु,

ए मोर हृदयेर विजन आकाशे
तोमार महासन आलोते ढाका से,
गभीर की आशाय निबिड़ पुलके
ताहार पाने चाइ दु बाहु बाड़ाये ।।
नीरव निशि तव चरण निछाये
आँधार-केशभार दियेछे बिछाये ।
आजि ए कोन् गान निखिल प्लाविया
तोमार वीणा हते आसिल नाबिया ।
भुवन मिले याय सुरेर रणने,
गानेर वेदनाय याइ ये हाराये ।।

१९१९

११८

तोमाय किछु देब ब'ले चाय ये आमार मन,
नाइवा तोमार थाकल प्रयोजन ।।
यखन तोमार पेलेम देखा, अन्धकारे एका एका
फिरतेछिले विजन गभीर वन ।

तुम खड़े हो; **ए......हृदयेर**—इस मेरे हृदय के; **तोमार......से**—तुम्हारा महा-आसन प्रकाश से ढँका हुआ है; **गभीर......बाड़ाये**—किस गभीर आशा से निविड़ पुलक से (भर) दोनों बाँहें बढ़ा कर (फैलाए हुए) उसकी ओर देखता हूँ; **निछाये**—ढँक कर; **आँधार.....बिछाये**—अंधकार रूपी केशराशि को बिछा दिया है; **आजि......नाबिया**—आज यह कौनसा गान समस्त विश्व को प्लावित कर तुम्हारी वीणा से उतर आया (निःसृत हो रहा) है; **भुवन......हाराये**—सुर (स्वर) की झंकार में भुवन विलीन हो जाता है (और मैं) गान की वेदना में खो जाता हूँ।

-११८. **तोमाय......मन**—मेरा मन चाहता है कि तुम्हें कुछ दूँ; **नाइ......प्रयोजन**—भले ही, तुम्हें कोई प्रयोजन न हो; **यखन......देखा**—जब तुम्हारे दर्शन पाए; **अन्धकारे......वन**—(तुम) अंधकार में अकेले-अकेले निर्जन गभीर वन में घूम रहे थे; **इच्छा......पथ**—इच्छा थी,

इच्छा छिल एकटि बाति ज्वालाइ तोमार पथे,
नाइ-वा तोमार थाकल प्रयोजन ।।
देखेछिलेम हाटेर लोके तोमारे देय गालि,
गाये तोमार छड़ाय धुलाबालि ।
अपमानेर पथेर माझे तोमार वीणा नित्य बाजे
आपन-सुरे-आपनि-निमगन ।
इच्छा छिल वरणमाला पराइ तोमार गले,
नाइवा तोमार थाकल प्रयोजन ।।
दले दले आसे लोके, रचे तोमार स्तव—
नाना भाषाय नानान कलरव ।
भिक्षा लागि तोमार द्वारे आघात करे बारे बारे
कत-ये शाप, कत-ये क्रन्दन ।
इच्छा छिल बिना पणे आपनाके दिइ पाये
नाइ-वा तोमार थाकल प्रयोजन ।।

१९१९

तुम्हारे पथ में एक दीप जलाऊँ; **देखेछिलेम......धुला-बालि**—देखा था हाट (बाजार) के लोग तुम्हें गाली दे रहे हैं (और) तुम्हारे शरीर पर धूल-बालू फेंक रहे हैं; **अपमानेर......निमगन**—अपमान के पथ के बीच तुम्हारी वीणा अपने सुर में आपन ही निमग्न नित्य बज रही है; **वरणमाला..... गले**—तुम्हारे गले में वरण माला पहनाऊँ; **दले.....कलरव**—दल के दल लोग आते हैं (और) नाना भाषाओं में नाना प्रकार की कलध्वनि से तुम्हारे स्तव की रचना (तुम्हारा गुणानुवाद) करते हैं; **लागि**—के लिये; **भिक्षा......क्रन्दन**—भिक्षा के लिये तुम्हारे दरवाज़े पर कितने अभिशाप और कितने क्रन्दन बार बार प्रहार करते हैं; **इच्छा......पाये**—इच्छा थी, बिना (किसी) शर्त के (बिना मूल्य) अपने को (तुम्हारे) चरणों में दे दूँ ।

११९

बाहिरे भुल हानबे यखन अन्तरे भुल भाङ्बे कि ?
विषादविषे ज्वले शेषे तोमार प्रसाद माङ्बे कि ?
रौद्रदाह हले सारा नामबे कि ओर वर्षाधारा ?
लाजेर राङा मिटले हृदय प्रेमेर रङे राङ्बे कि ?
यतइ याबे दूरेर पाने
बाँधन ततइ कठिन हये टानबे ना कि व्यथार टाने !
अभिमानेर कालो मेघे बादल-हाओया लागबे वेगे,
नयनजलेर आवेग तखन कोनोइ बाधा मानबे कि ?

१९११

१२०

दुःख ये तोर नय रे चिरन्तन—
पार आछे रे एइ सागरेर विपुल क्रन्दन ।।
एइ जीवनेर व्यथा यत एइखाने सब हबे गत,
चिरप्राणेर आलय-माझे अनन्त सान्त्वन ।।
मरण ये तोर नय रे चिरन्तन—

११९. **बाहिरे......भाङ्बे कि**—बाहर जब भूल प्रहार करेगी (तब) अन्तर की भूल दूर होगी क्या ? **विषाद......कि**—विषाद के विष में जल कर अन्त में तुम्हारा अनुग्रह माँगेगा क्या? **रौद्रदाह......धारा**—सूर्य के ताप से झुलसना समाप्त होने पर क्या उसकी वर्षा-धारा उतरेगी (वर्षा होगी) ? **लाजेर......कि**—लज्जा की अरुणिमा मिटने पर हृदय प्रेम के रंग में रंगेगा (रंग जाएगा) क्या? **यतइ......टाने**—जितना ही दूर की ओर जाएगा बन्धन उतना ही कठिन हो कर व्यथा के खिंचाव (पीड़ादायक खिंचाव) से खिंचेगा नहीं क्या? **अभिमानेर......मानबे कि**—अभिमान (प्रियजन के त्रुटिपूर्ण व्यवहार से होनेवाली मनोव्यथा) के काले मेघ में वर्षावाली हवा वेग से लगेगी, उस समय आँखों के आँसुओं का आवेग क्या कोई भी बाधा मानेगा ?

१२०. **दुःख......चिरन्तन**—तेरा दुःख चिरन्तन जो नहीं है; **एइ...... गत**—इस जीवन की जितनी भी व्यथाएँ हैं वे सभी यहीं समाप्त हो जाएँगी; **सान्त्वन**—सान्त्वना; **दुयार.....बन्धन**—(तू) उसका द्वार पार कर जाएगा, बंधन

दुयार ताहार पेरिये याबि, छिँड़बे रे बन्धन।
ए वेला तोर यदि झड़े पूजार कुसुम झ'रे पड़े,
याबार वेलाय भरबे थालाय माला ओ चन्दन।।

१९१९

१२१

आमार अभिमानेर बदले आज नेब तोमार माला।
आज निशिशेषे शेष करे दिइ चोखेर जलेर पाला।।
आमार कठिन हृदयटारे फेले दिलेम पथेर धारे,
तोमार चरण देबे तारे मधुर परश पाषाण-गाला।।
छिल आमार आँधारखानि, तारे तुमिइ निले टानि,
तोमार प्रेम एल ये आगुन हये— करल तारे आला।
सेइ ये आमार काछे आमि छिल सबार चेये दामि,
तारे उजाड़ करे साजिये दिलेम तोमार वरणडाला।।

१९१९

टूट जाएँगे; **ए......चन्दन**—इस समय अगर आँधी में तेरी पूजा के कुसुम झड़ पड़ें तो जाने के समय (तुम्हारी पूजा की) थाली माला और चंदन से भर जाएगी।

१२१. **आमार......माला**—अपने मान के बदले आज (मैं) तुम्हारी माला लूँगी; **आज......पाला**—आज रात्रि के अन्त में आँखों के आँसुओं का अध्याय समाप्त कर दूँ; **पाला**—गान या नाटक का विषय; **हृदयटारे**—हृदय को; **फेले......धारे**—रास्ते के किनारे फेंक दिया; **तोमार......गाला**—तुम्हारे चरण उसे पाषाण पिघलाने वाला मधुर स्पर्श देंगे (अर्थात् पाषाण को भी पिघला देने वाला तुम्हारे चरणों का जो मधुर स्पर्श है वह हृदय की कठिनता को दूर कर देगा); **छिल......टानि**—मेरा (जो) अन्धकार था उसे तुमने ही खींच लिया (दूर कर दिया); **तोमार......आला**—तुम्हारा प्रेम आग बन कर जो आया, उसे आलोकित कर गया; **सेइ-ये**—वह जो; **आमार......दामि**—मेरे निकट 'मैं' (मेरा अहं भाव) सबसे अधिक मूल्यवान था; **तारे.....करे**—उसे निःशेष कर; **साजिये दिलेम**—सजा दी; **तोमार**—तुम्हारी; **वरण डाला**—वह डाली जिसमें कन्यादान के समय वर की अभ्यर्थना के लिये विविध सामग्रियाँ रखी जाती हैं।

१२२

आजि विजन घरे निशीथराते आसबे यदि शून्य हाते
आमि ताइते कि भय मानि!
जानि जानि, बन्धु, जानि—
तोमार आछे तो हातखानि।।
चाओया-पाओयार पथे पथे दिन केटेछे कोनोमते,
एखन समय हल तोमार काछे आपनाके दिइ आनि।।
आँधार थाकुक दिके दिके आकाश-अन्ध-करा,
तोमार परश थाकुक आमार-हृदय-भरा।
जीवनदोलाय दुले दुले आपनारे छिलेम भुले,
एखन जीवन मरण दु दिक दिये नेबे आमाय टानि।।

१९२२

१२३

आमार वेला ये याय साँझ-वेलाते
तोमार सुरे सुरे सुर मेलाते।।
एकताराटिर एकटि तारे गानेर वेदन बइते नारे,

१२२. **आजि......मानि**—आज निर्जन घर में अर्धरात्रि को अगर (तुम) खाली हाथ आओगे तो क्या मैं उसके लिये भय करूँ; **जानि**—जानती हूँ; **तोमार......हातखानि**—तुम्हारे हाथ तो हैं; **चाओया......कोनोमते**—चाहने और पाने के रास्ते-रास्ते किसी प्रकार दिन कटे हैं; **एखन......आनि**—अब समय हुआ कि अपने को तुम्हारे निकट ला दूँ; **आँधार......भरा**—दिशाओं-दिशाओं में आकाश को अन्ध करनेवाला अन्धकार बना रहे, (लेकिन) तुम्हारा स्पर्श मेरे हृदय को पूर्ण किए रहे; **जीवन......भुले**—जीवन के झूले पर झूलता हुआ मैं अपने को भूला हुआ था; **एखन......टानि**—अब जीवन-मरण दोनों ओर से तुम मुझे खींच लोगे।

१२३. **आमार......मेलाते**—साँझ की वेला में तुम्हारे सुर में सुर मिलाते मेरी वेला बीत जाती है; **एकतारा......नारे**—एकतारे का एक तार गान को

तोमार साथे बारे बारे हार मेनेछि एइ खेलाते,
तोमार सुरे सुरे सुर मेलाते ।।
आमार ए तार बाँधा काछेर सुरे,
ऐ बाँशि ये बाजे दूरे ।
गानेर लीलार सेइ किनारे योग दिते कि सबाइ पारे,
विश्वहृदयपारावारे रागरागिनीर जाल फेलाते,
तोमार सुरे सुरे सुर मेलाते ?

१९२२

१२४

आमि कान पेते रइ आमार आपन हृदय गहन-द्वारे
कोन् गोपनवासीर कान्नाहासिर गोपन कथा शुनिबारे ।।
भ्रमर सेथा हय विवागि निभृत नील पद्म लागि रे,
कोन् रातेर पाखि गाय एकाकी सङ्गीविहीन अन्धकारे ।।
के से मोर केइ वा जाने, किछु तार देखि आभा ।
किछु पाइ अनुमाने, किछु तार बुझि ना वा ।

अनुभूति को वहन नहीं कर पा रहा; **तोमार......खेलाते**—इस खेल में तुम्हारे साथ (मैंने) बार-बार हार मानी है; **आमार......दूरे**—मेरा यह तार निकट के सुर में बंधा हुआ है (और) वह बाँसुरी दूर बजती है; **गानेर......पारे**—गान की लीला के उस किनारे क्या सभी योग दे सकते हैं; **राग......फेलाते**—रागरागिनी का जाल फेंकने में ।

१२४. **आमि......द्वारे**—मैं अपने हृदय की गहराई के दरवाजे पर कान लगाए रहता हूँ; **कोन्......शुनिबारे**—किस गोपन में रहने वाले के क्रन्दन और हास्य की गोपन बात सुनने के लिये; **भ्रमर......लागिरे**—भ्रमर अन्तरालवर्ती नील पद्म के लिये वहाँ प्रवासी वन हो जाता है; **रातेर पाखि**—रात का पक्षी; **गाय**—गाता है; **के......जाने**—वह मेरा कौन है (यह) कौन जानता है; **किछु......वा**—कुछ उसकी आभा देखता हूँ, कुछ अनुमान से (ग्रहण कर) पाता हूँ अथवा कुछ उसका समझ ही नहीं पाता; **माझे......बारता**—बीच-

माझे माझे तार बारता आमार भाषाय पाय की कथा रे,
ओ से आमाय जानि पाठाय वाणी गानेर ताने लुकिये तारे ।।
१९२२

१२५

आमि तारेइ खुँजे बेड़ाइ ये रय मने आमार मने ।
से आछ ब'ल
आमार आकाश जुड़े फोटे तारा राते,
प्राते फुल फुटे रय वने आमार वने ।।
से आछे ब'ले चोखेर तारार आलोय
एत रूपेर खेला रङ्गेर मेला असीम सादाय कालोय ।
से मोर सङ्गे थाके ब'ले
आमार अङ्गे अङ्गे हरष जागाय दखिन-समीरणे ।।
तारि वाणी हठात् उठे पूरे
आन्‌मना कोन् तानेर माझे आमार गानेर सुरे ।
दुखेर दोले हठात् मोरे दोलाय,
काजेर माझे लुकिये थेके आमारे काज भोलाय ।

बीच में उसका सँदेसा; **आमार.....कथा रे**—मेरी भाषा में कैसी वाणी पाता है; **ओ से......वाणी**—जानता हूँ वह मुझे सन्देश भेजता है; **गानेर......तारे**—गान की तान में उसे छिपा कर।

१२५. **आमि......मने**—मैं उसे ही खोजता फिरता हूँ जो मन में, मेरे मन में रहता है; **से......राते**—वह है इसलिये मेरे आकाश को व्याप्त कर रात में तारे प्रस्फुटित होते हैं; **प्राते......वने**—भोर में फूल खिलते हैं, वन में—मेरे वन में; **से......कालोय**—वह है इसलिये आँखों की पुतलियों के प्रकाश में इतने रूपों का खेल, असीम उजले और काले रंगों का मेला (लगा रहता) है; **से ......समीरणे**—वह मेरे साथ रहता है इसलिये दक्षिण पवन मेरे अंग-प्रत्यंग में हर्ष जगाता है; **तारि......पूरे**—उसीकी वाणी हठात् भर उठती है; **आन्‌मना**—अन्य-मनस्क; **कोन्......माझे**—किस तान के बीच; **दुखेर......दोलाय**—दुःख के झूले में हठात् मुझे झुलाता है; **काजेर......भोलाय**—काम-काज के बीच छिप कर मेरे काम-काज को भुला देता है;

से मोर चिरदिनेर ब'ले
तारि पुलके मोर पलकगुलि भरे क्षणे क्षणे ।।
१९२२

१२६

आमि तोमाय यत शुनियेछिलेम गान
तार बदले आमि चाइ ने कोनो दान ।।
भुलबे से गान यदि ना हय येयो भुले
उठबे यखन तारा सन्ध्यासागरकूले,
तोमार सभाय यबे करब अवसान
एइ क'दिनेर शुधु एइ क'टि मोर तान ।।
तोमार गान ये कत शुनियेछिले मोरे
सेइ कथाटि तुमि भुलबे केमन करे ?
सेइ कथाटि कवि, पड़बे तोमार मने
वर्षामुखर राते, फागुनसमीरणे—
एइटुकु मोर शुधु रइल अभिमान,
भुलते से कि पार भुलियेछ मोर प्राण ।।
१९२२

से......क्षणे—वह मेरा चिरदिन का है इसलिये उसीके पुलक से मेरे पल (क्षण) क्षण-क्षण भरते रहते हैं।

१२६. **आमि......दान**—मैंने तुम्हें जितने गान सुनाए थे उसके बदले में कोई दान नहीं चाहता; **भुलबे......यदि**—अगर (तुम) उस गान को भूल जाओ; **ना......भुले**—तो भले ही भूल जाना; **उठबे**—उदय होगा; **यखन**—जब; **तोमार सभाय**—तुम्हारी सभा में; **यबे**—जब; **एइ.....शुधु**—यही केवल कुछ-एक दिनों की; **एइ.....तान**—यही मेरी कुछ-एक तानें; **तोमार......मोरे**—अपने कितने गान (तुमने) मुझे सुनाए थे; **सेइ......करे**—वह बात तुम क्योंकर भूलोगे? **पड़बे......मने**—तुम्हें याद आएगी; **एइटुकु......अभिमान**—बस केवल इतना ही मेरा अभिमान रहा; **भुलते......पार**—उसे क्या भूल सकते हो; **भुलियेछ**—भुलाया है।

१२७

आसा-याओयार माझखाने
एकला आछ चेये काहार पथ-पाने।
आकाशे ओइ कालोय सोनाय श्रावणमेघेर कोणाय कोणाय
आँधार-आलोय कोन् खेला ये के जाने
आसा-याओयार माझखाने ।।
शुकनो पाता धुलाय झरे, नवीन पाताय शाखा भरे।
माझे तुमि आपनहारा, पायेर काछे जलेर धारा
याय चले ओइ अश्रु-भरा कोन् गाने
आसा-याओयार माझखाने ।।

१९२२

१२८

तोमार सुरेर धारा झरे येथाय तारि पारे
देबे कि गो बासा आमाय एकटि धारे?
आमि शुनब ध्वनि काने,
आमि भरब ध्वनि प्राणे,
सेइ ध्वनिते चित्तवीणाय तार बाँधिब बारे बारे ।।

१२७. **आसा.......पाने**—आने-जाने (के क्रम) के बीच अकेले किसका पंथ निहार रहे हो; **आकाशे.....जाने**—आकाश में वह काले और सुनहले (रंग) में, सावन के मेघों के कोने-कोने में, अंधकार और आलोक में कौन-सा खेल चल रहा है यह कौन जानता है; **शुकनो......भरे**—सूखे पत्ते धूल में झड़ते हैं, नये पत्तों से शाखाएँ भर उठती हैं; **माझे......हारा**—बीच में तुम अपने को खोए हो; **पायेर......धारा**—पैरों के पास जलकी धारा; **याय चले**—चली जाती है; **ओइ**—वह; **अश्रुभरा**—आँसुओं से भरे; **कोन्**—किस।

१२८. **तोमार......धारे**—तुम्हारे सुर की धारा जहाँ झड़ती (बहती) है उसीके पार एक किनारे क्या मुझे वास करने दोगे? **बासा**—निवास स्थान; **शुनब**—सुनूंगा; **सेइ......बारे**—उसी ध्वनि से चित्तकी वीणा के तार बार-बार (स्वर में) बाँधूंगा; **आमार......पूरे**—मेरी नीरव

आमार नीरव वेला सेइ तोमारि सुरे सुरे
फुलेर भितर मधुर मतो उठबे पूरे।
आमार दिन फुराबे यबे,
यखन रात्रि आँधार हबे,
हृदये मोर गानेर तारा उठबे फुटे सारे सारे ।।

१९२२

१२९

बारे बारे पेयेछि ये तारे
चेनाय चेनाय अचेनारे ।।
यारे देखा गेल तारि माझे ना-देखारइ कोन् बाँशि बाजे,
ये आछे बुकेर काछे काछे चलेछि ताहारि अभिसारे ।।
अपरूप से ये रूपे रूपे की खेला खेलिछे चुपे चुपे।
काने काने कथा उठे पूरे कोन् सुदूरेर सुरे सुरे,
चोखे-चोखे-चाओया निये चले कोन् अजानारइ पथपारे ।।

१९२२

वेला तुम्हारे उन्हीं सुरों से फूल के भीतर मधु के समान भर उठेगी; **आमार......यबे**—मेरा समय जब चुक जायगा; **यखन......हबे**—जब रात्रि अन्धकार पूर्ण होगी; **हृदये.......सारे**—मेरे हृदय में गानों के तारे राशि-राशि खिल उठेंगे।

१२९. **बारे......तारे**—उसे बार-बार पाया है; **चेनाय......अचेनारे**—जो पहचाना-पहचाना है, उसीमें उस अपरिचित को; **यारे......बाजे**—जिसके दर्शन हुए उसीके बीच अनदेखे की ही कोई बाँसुरी बजती है; **ये......अभिसारे**—जो हृदय के पास-पास है उसीके अभिसार के लिये चला हूँ; **की......खेलिछे**—कैसा खेल खेल रहा है; **काने......सुरे**—किस सुदूर के सुरों से कानों-कान बातें भर उठती हैं; **चोखे......पारे**—आँखों-आँखों का देखना किस अज्ञात के पथ-पार लिये जाता है।

१३०

जय होक, जय होक नव अरुणोदय।
पूर्वदिगञ्चल होक ज्योतिर्मय।
एसो अपराजित वाणी, असत्य हानि—
अपहृत शंका, अपगत संशय।
एसो नव जाग्रत प्राण, चिरयौवनजयगान।
एसो मृत्युञ्जय आशा जड़त्वनाशा—
क्रन्दन दूर होक, बन्धन होक क्षय॥

१९२२

१३१

एखन आमार समय हल,
याबार दुयार खोलो खोलो॥
हल देखा, हल मेला, आलोछायाय हल खेला—
स्वपन ये से भोलो भोलो॥
आकाश भरे दूरेर गाने,
अलख देशे हृदय टाने।
ओगो सुदूर, ओगो मधुर, पथ बले दाओ परानबँधुर—
सब आवरण तोलो तोलो॥

१९२३

१३०. **होक**—हो; **एसो**—आओ; **हानि**—विनष्ट कर; **अपहृत**—विनष्ट; **अपगत**—विगत; **जड़त्वनाशा**—जड़ता का नाश करने वाली।

१३१. **एखन......खोलो**—अब मेरा समय हुआ, जाने का द्वार खोलो; **हल......खेला**—दर्शन हुए, मिलन हुआ, प्रकाश और छाया में खेलना हुआ; **स्वपन......भोलो**—वह स्वप्न है (उसे) भूलो, भूलो; **आकाश......गाने**—आकाश सुदूर के गान से भरता है; **अलख......टाने**—अलख देश की ओर हृदय को खींचता है; **पथ......बँधुर**—प्राणबन्धु का रास्ता बतला दो; **सब......तोलो**—सब आवरण उठा दो, उठा दो।

१३२

अरूप, तोमार वाणी
अङ्गे आमार चित्ते आमार मुक्ति दिक् से आनि ।।
नित्यकालेर उत्सव तव विश्वेर दीपालिका—
आमि शुधु तारि माटिर प्रदीप, ज्वालाओ ताहार शिखा
निर्वाणहीन आलोकदीप्त तोमार इच्छाखानि ।।
येमन तोमार वसन्तबाय गीतलेखा याय लिखे
वर्णे वर्णे पुष्पे पर्णे वने वने दिके दिके
तेमनि आमार प्राणेर केन्द्रे निश्वास दाओ पूरे,
शून्य ताहार पूर्ण करिया धन्य करुक सुरे,
विघ्न ताहार पुण्य करुक तव दक्षिणपाणि ।।

१९२४

१३३

आजि मर्मरध्वनि केन जागिल रे !
मम पल्लवे पल्लवे हिल्लोले हिल्लोले
थरथर कम्पन लागिल रे ।।
कोन् भिखारि हाय रे एल आमारि ए अङ्गनद्वारे,
बुझि सब मन धन मम मागिल रे ।।

---

१३२. **मुक्ति......आनि**—वह मुक्ति ला दे; **आमि......प्रदीप**—मैं केवल उस (दीपावली) का मिट्टी का प्रदीप हूँ; **ज्वालाओ......शिखा**—उसकी शिखा को जलाओ; **तोमार इच्छाखानि**—तुम्हारी इच्छा; **येमन.....पूरे**—जिस प्रकार तुम्हारा वसन्त-पवन वर्णों-वर्णों में, पुष्पों में, पत्तियों में, वनों में तथा दिशाओंमें गीत-लिपि अंकित कर जाता है उसी प्रकार मेरे प्राणों के केन्द्र में साँस भर दो; **शून्य......सुरे**—उसके (प्राणों के) शून्य को पूर्ण कर सुर से (उसे) धन्य करे; **विघ्न......पाणि**—तुम्हारा दाहिना हाथ उसके विघ्न को पवित्र करे।

१३३. **आजि**—आज; **केन**—क्यों; **जागिल**—जगी; **लागिल**—लगा; **कोन्**—कौन ; **भिखारि**—भिखारी ; **एल......द्वारे**—मेरे ही इस आँगन के द्वार पर आया; **बुझि**—लगता है; **मागिल**—माँगा ; **तारे जाने**—उसे

हृदय बुझि तारे जाने,
कुसुम फोटाय तारि गाने।
आजि मम अन्तरमाझे सेइ पथिकेरइ पदध्वनि बाजे,
ताइ चकिते चकिते घुम भाङ्गिल रे।।

१९२५-२६

१३४

आमार प्राणे गभीर गोपन महा-आपन से कि,
अन्धकारे हठात् तारे देखि।।
यबे दुर्दम झड़े आगल खुले पड़े,
कार से नयन-'परे नयन याय गो ठेकि।।
यखन आसे परम लगन तखन गगन-माझे
ताहारि भेरी बाजे।।
विद्युत-उद्भास वेदनारइ दूत आसे,
आमन्त्रणेर वाणी याय हृदये लेखि।।

१९२५-२६

जानता है; **कुसुम.....गाने**—उसीके गान से फूल खिलाता है; **आजि......बाजे**—आज मेरे अन्तर में उसी पथिक की ही पदध्वनि बजती है; **ताइ......रे**—इसीलिये चौंककर नींद खुल गई।

१३४. **आमार......कि**—मेरे प्राणों में गभीर गोपन (मेरा) अत्यन्त अपना वह कौन है; **अन्धकारे......देखि**—अन्धकार में हठात् उसे देखता हूँ; **यबे.....पड़े**—जब दुर्दमनीय आँधी में अर्गला खुल पड़ती है; **कार......ठेकि**—किसकी आँखों पर आँखें जा कर अटक जाती हैं; **यखन......बाजे**—जब परम लग्न (का मुहूर्त) आता है तब गगन के मध्य उसीकी भेरी बजती है; **विद्युत......आसे**—बिजली की कौंध में वेदना का ही दूत आता है; **आमन्त्रणेर......लेखि**—आमन्त्रण का सँदेसा हृदय में अंकित कर जाता है।

१३५

तोर भितरे जागिया के ये,
तारे बाँधने राखिलि बाँधि ।
हाय आलोर पियासि से ये
ताइ गुमरि उठिछे काँदि ।।
यदि बातासे बहिल प्राण
केन वीणाय बाजे ना गान,
यदि गगने जागिल आलो
केन नयने लागिल आँधि ?
पाखि नव प्रभातेर वाणी
दिल कानने कानने आनि,
फुले नवजीवनेर आशा
कत रङ रङ पाय भाषा ।
होथा फुराये गियेछे राति
हेथा ज्वले निशीथेर बाति,
तोर भवने भुवने केन
हेन हये गेल आधा-आधि ?

१९२५-२६

१३५. **तोर......ये**—तेरे भीतर जगा हुआ कौन (है); **तारे...... बाँधि**—उसे बन्धन में (तूने) बाँध रखा (है); **हाय......काँदि**—हाय, वह आलोक का प्यासा है इसीलिये घुमड़ कर क्रन्दन कर उठता है; **यदि...... गान**—अगर हवा में प्राण का संचार हुआ (तो) वीणा में गान क्यों नहीं बजता; **जागिल आलो**—प्रकाश जगा; **केन......आँधि**—(तब) आँखों में आँधी क्यों? **पाखि**—पक्षी; **दिल......आनि**—वन-वन में ला दी; **फुले**—फूलों में; **कत......भाषा**—कितने रंगों में भाषा पाती है; **होथा......राति**—वहाँ रात समाप्त हो गई है; **हेथा......बाति**—यहाँ अर्धरात्रि की बत्ती जल रही है; **तोर.....आधि**—तेरे भवन में, भुवन में क्यों ऐसा बँटवारा हो गया ?

१३६

दिनेर वेलाय बाँशि तोमार बाजियेछिले अनेक सुरे—
गानेर परश प्राणे एल, आपनि तुमि रइले दूरे ।।
शुधाइ यत पथेर लोके 'एइ बाँशिटि बाजालो के'—
नानान नामे भोलाय तारा, नानान द्वारे बेड़ाइ घुरे ।।
एखन आकाश म्लान हल, क्लान्त दिवा चक्षु बोजे—
पथे पथे फेराओ यदि मरब तबे मिथ्या खोँजे ।
बाहिर छेड़े भितरेते आपनि लहो आसन पेते—
तोमार बाँशि बाजाओ आसि ।
आमार प्राणेर अन्त:पुरे ।।

१९२५-२६

१३७

लहो लहो, तुले लहो नीरव वीणाखानि ।
तोमार नन्दननिकुञ्ज हते सुर देहो ताय आनि,
ओहे सुन्दर हे सुन्दर ।।
आमि आँधार बिछाये आछि रातेर आकाशे
तोमारि आश्वासे ।

१३६. **दिनेर......सुरे**—दिन के समय (तुमने) अपनी बाँसुरी अनेक सुरों में बजाई थी; **गानेर......दूरे**—प्राणों में गान का स्पर्श आया (लेकिन) स्वयं (तुम) दूर रहे; **शुधाइ......के**—रास्ते के सभी लोगों से पूछता हूँ, 'यह बाँसुरी बजाई किसने'; **नानान......घुरे**—नाना नामों से वे भुलाते हैं, नाना द्वारों पर भटकता फिरता हूँ; **एखन**—इस समय; **हल**—हुआ; **क्लान्त.....बोजे**—क्लान्त दिवा (थका हुआ दिवस) आँखें बन्द करता है; **पथे......खोँजे**—रास्ते-रास्ते यदि भटकाओ तब व्यर्थ की खोज में मरूँगा; **बाहिर.....पेते**—बाहर को छोड़ कर भीतर आप ही आसन बिछा लो; **तोमार......अन्त:पुरे**—मेरे प्राणों के अन्त:पुर में आकर अपनी बाँसुरी बजाओ ।

१३७. **लहो......वीणाखानि**—नीरव वीणा को उठा लो, उठा लो; **तोमार......आनि**—अपने नन्दन निकुञ्ज से उसमें सुर ला दो; **आमि...... आश्वासे**—तुम्हारे ही भरोसे रात्रि के आकाश में मैं अंधकार बिछाए हुए हूँ;

तारार तारार जागाओ तोमार आलोक-भरा वाणी,
ओहे सुन्दर हे सुन्दर ।।
पाषाण आमार कठिन दुःखे तोमाय केँदे बले,
'परश दिये सरस करो, भासाओ अश्रुजले,
ओहे सुन्दर हे सुन्दर ।'
शुष्क ये एइ नग्न मरु नित्य मरे लाजे
आमार चित्त माझे,
श्यामल रसेर आँचल ताहार वक्षे देहो टानि,
ओहे सुन्दर हे सुन्दर ।।

१९२५-२६

१३८

प्रथम आलोर चरणध्वनि उठल बेजे येइ
नीड़विरागी हृदय आमार उधाओ हल सेइ ।
नील अतलेर कोथा थेके उदास तारे करल ये के !
गोपनवासी सेइ उदासीर ठिक-ठिकाना नेइ ।।
'सुप्तिशयन आय छेड़े आय' जागे ये तार भाषा,
से बले 'चल् आछे येथाय सागरपारेर वासा' ।

ताराय......वाणी—प्रकाश से भरी अपनी वाणी ताराओं-ताराओं में जगाओ; **पाषाण......बले**—मेरा पाषाण (हृदय) कठिन दुःख से रो कर तुम से कहता है; **परश......करो**—(अपने) स्पर्श से सरस करो; **भासाओ**—बहाओ; **शुष्क......माझे**—मेरे चित्त के भीतर यह जो शुष्क नग्न मरुभूमि नित्य लज्जा से मरती है; **श्यामल......टानि**—श्यामल रस का अंचल उसके वक्ष पर खींच दो।

१३८. **आलोर**—आलोक की; **उठल.....येइ**—जैसे ही बज उठी; **उधाओ......सेइ**—वैसे ही ऊपर की ओर उड़ा; **नील......के**—नील अतल के (न-जाने) कहाँ से (पता नहीं) किसने उसे उदास कर दिया; **गोपन......नेइ**—गोपन में रहने वाले उस उदासी का पता-ठिकाना नहीं है; **सुप्ति......आय**—सुप्ति का शयन छोड़ कर आ; **से......वासा**—वह कहता है (वहाँ) चल जहाँ सागर पार का निवास-स्थान है;

देश-विदेशेर सकल धारा सेइखाने हय बाँधनहारा,
कोणेर प्रदीप मिलाय शिखा ज्योतिसमुद्रेइ ॥
१९२५-२६

१३९

हे चिरनूतन, आजि ए दिनेर प्रथम गाने
जीवन आमार उठुक विकाशि तोमारि पाने ॥
तोमार वाणीते सीमाहीन आशा, चिरदिवसेर प्राणमयी भाषा—
क्षयहीन धन भरि देय मन तोमार हातेर दाने ॥
ए शुभलगने जागुक गगने अमृतवायु,
आनुक जीवने नवजनमेर अमल आयु ।
जीर्ण या-किछु, याहा-किछु क्षीण नवीनेर माझे होक ता विलीन
धुये याक यत पुरानो मलिन नव-आलोकेर स्नाने ॥
१९२५-२६

१४०

हार मानाले, भाङिले अभिमान ।
क्षीण हाते ज्वाला म्लान दीपेर थाला
हल खान्‌खान्‌ ।

देश......बाँधनहारा—देश-विदेशकी सभी धाराएँ वहीं बंधनविहीन होती हैं; **कोणेर......समुद्रेइ**—कोनेका प्रदीप ज्योतिःसमुद्र में ही (अपनी) शिखा को विलीन कर देता है।

१३९. **आजि......पाने**—आज इस दिन के प्रथम गान में मेरा जीवन तुम्हारी ओर ही विकसित हो उठे; **तोमार वाणीते**—तुम्हारी वाणी में; **दाय...... दाने**—तुम्हारे हाथों के दान से मन को अक्षय धन से भर देती है; **ए.....जागुक**—इस शुभ लग्न में जागे; **आनुक**—लाए; **या-किछु**—जो कुछ; **याहा-किछु**—जो कुछ; **नवीनेर......विलीन**—नवीन के भीतर वह विलीन हो; **धुये......स्नाने**—जो कुछ पुराना (और) मलिन (है), नव-आलोक के स्नान से धुल जाय।

१४०. **हार.....अभिमान**—(तुमने) हार मनवायी, अभिमान चूर कर दिया; **क्षीण......खान्‌-खान्‌**—दुर्बल हाथों से जलाए हुए म्लान दीप का थाल

एबार तबे ज्वालो आपन तारार आलो,
रङिन छायार एइ गोधूलि होक अवसान ।।
एसो पारेर साथि—
बइल पथेर हाओया, निबल घरेर बाति ।
आजि विजन बाटे अन्धकारेर घाटे
सब-हारानो नाटे एनेछि एइ गान ।।

१९२५-२६

१४१

हे महाजीवन, हे महामरण, लइनु शरण, लइनु शरण ।।
आँधार प्रदीपे ज्वालाओ शिखा,
पराओ पराओ ज्योतिर टिका—करो हे आमार लज्जाहरण ।
परशरतन तोमारि चरण—लइनु शरण, लइनु शरण ।
या-किछु मलिन, या-किछु कालो,
या-किछु विरूप होक ता भालो—घुचाओ घुचाओ सब आवरण ।।

१९२५-२६

टुकड़े-टुकड़े हो गया; **खान्-खान्**—खण्ड-खण्ड; **एबार......आलो**—अब इस बार अपने तारों के दीप जलाओ; **रङिन......अवसान**—रंगीन छायावाली इस गोधूलि का अवसान हो; **एसो......साथि**—(उस) पार के साथी आओ; **बइल......हाओया**—पथ की हवा बही; **निबल......बाति**—घर की बत्ती (दीप) बुझ गई; **आजि......गान**—आज निर्जन रास्ते में, अंधकार के घाट पर सब-कुछ खो देने वाले अभिनय में यह गान ले आयी हूँ ।

१४१. **लइनु शरण**—शरण ली, शरण में आई हूँ; **आँधार......शिखा**—अँधियारे प्रदीप की शिखा को प्रज्वलित करो; **पराओ......टिका**—ज्योति का टीका लगाओ; **करो......हरण**—मेरी लज्जा हरण करो; **परश......चरण**—तुम्हारे चरण ही पारस-मणि हैं; **या-किछु**—जो कुछ; **कालो**—काला; **होक**—हो; **ता**—वह; **घुचाओ**—नष्ट करो ।

१४२

गानेर झरनातलाय तुमि साँझेर वेलाय एले ।
दाओ आमारे सोनार-बरन सुरेर धारा ढेले ।।
ये सुर गोपन गुहा हते छुटे आसे आकुल स्रोते,
कान्नासागर-पाने ये याय बुकेर पाथर ठेले ।।
ये सुर उषार वाणी बये आकाशे याय भेसे,
रातेर कोले याय गो चले सोनार हासि हेसे ।
ये सुर चाँपार पेयाला भ'रे देय आपनाय उजाड़ क'रे,
याय चले याय चैत्रदिनेर मधुर खेला खेले ।।

१९२५-२६

१४३

आर रेखो ना आँधारे, आमाय देखते दाओ ।
तोमार माझे आमार आपनारे देखते दाओ ।।
काँदाओ यदि काँदाओ एबार, सुखेर ग्लानि सय ना ये आर,
नयन आमार याक-ना धुये अश्रुधारे—
आमाय देखते दाओ ।।

१४२. **गानेर**......**एले**—गीति-निर्झर के तले तुम संध्या के समय आए; **दाओ**......**ढेले**—मेरे लिये सुर की स्वर्ण-रंगी धारा ढाल दो; **ये**......**स्रोते**—जो सुर गोपन गुहा से आकुल स्रोत में दौड़ा आता है; **कान्ना**......**ठेले**—जो हृदय के पत्थर को ठेल कर क्रन्दन के सागर की ओर जाता है; **ये**......**भेसे**—जो सुर उषा की वाणी को वहन कर आकाश में बह जाता है; **रातेर**......**हेसे**—अजी, सुनहली हँसी हँस कर जो रात की गोद में चला जाता है; **ये**......**क'रे**—जो सुर अपने (आप) को रीता करके चम्पा के प्याले को भर देता है; **याय**......**खेले**—चैत्र के दिनों का मधु का खेल खेल कर चला जाता है ।

१४३. **आर**.....**दाओ**—और अन्धकार में न रखो, मुझे देखने दो; **तोमार**......**आपनारे**—तुम अपने भीतर मुझे अपने आप को; **काँदाओ**......**एबार**—यदि रुलाते हो तो इसबार रुलाओ; **सुखेर**......**आर**—सुख का अवसाद (सुख-जनित अवसाद) अब और सहन नहीं होता; **नयन**......**धारे**—मेरी आँखें

जानि ना तो कोन् कालो एइ छाया,
आपन बले भुलाय यखन घनाय विषम माया।
स्वप्नभारे जमल बोझा, चिरजीवन शून्य खोँजा—
ये मोर आलो लुकिये आछे रातेर पारे
आमाय देखते दाओ॥

१९२५-२६

१४४

अनेक दिनेर शून्यता मोर भरते हबे—
मौन वीणार तन्त्र आमार जागाओ सुधारवे॥
वसन्त समीरे तोमार फुल-फोटानो वाणी
दिक पराने आनि—
डाको तोमार निखिल-उत्सवे॥
मिलनशतदले
तोमार प्रेमेर अरूप मूर्ति देखाओ भुवनतले।
सबार साथे मिलाओ आमाय, भुलाओ अहंकार,
खुलाओ रुद्धद्वार—
पूर्ण करो प्रणतिगौरवे॥

१९२७

आँसुओं की धारा से धुल जायँ ना; **जानि......छाया**—नहीं जानती यह कैसी काली छाया; **आपन.....माया**—अपनी शक्ति से जब भुलाती है तब कठिन माया घनीभूत हो उठती है; **जमल**—इकट्ठा हुआ, संचित हुआ; **खोँजा**—खोज, खोजना; **ये......दाओ**—रात्रि के पार मेरा जो आलोक छिपा हुआ है (उसे) मुझे देखने दो।

१४४. **अनेक......हबे**—अनेक दिनों की मेरी शून्यता को भरना होगा; **आमार**—मेरी; **जागाओ**—जगाओ; **वसन्त......आनि**—वसन्त समीर तुम्हारी फूल खिलाने वाली वाणी प्राणों में ला दे; **डाको**—पुकारो; **देखाओ**—दिखाओ; **सबार......आमाय**—सबके साथ मुझे मिलाओ; **भुलाओ अहंकार**—(मेरा) अहंकार भुला दो; **खुलाओ**—खुलवाओ; **पूर्ण......गौरवे**—प्रणति के गौरव से पूर्ण करो।

१४५

आमार ना-बला वाणीर घन यामिनीर माझे
तोमार भावना तारार मतन राजे ।।
निभृत मनेर वनेर छायाटि घिरे
ना-देखा फुलेर गोपन गन्ध फिरे,
लुकाय वेदना अझरा अश्रुनीरे—
अश्रुत बाँशि हृदयगहने बाजे ।।
खने खने आमि ना जेने करेछि दान
तोमाय आमार गान ।
परानेर साजि साजाइ खेलार फुले,
जानि ना कखन निजे बेछे लओ तुले—
अलख आलोके नीरवे दुयार खुले
प्राणेर परश दिये याओ मोर काजे ।।

१९२७

१४६

तोमार आमार एइ विरहेर अन्तराले
कत आर सेतु बाँधि सुरे सुरे ताले ताले ।।

१४५. **आमार.....राजे**—मेरी अन-बोली वाणी की सघन रात्रि के बीच तुम्हारी भावना (चिन्तन) ताराओं के समान विराजती है; **छायाटि घिरे**—छाया को घेर कर; **ना-देखा......फिरे**—अन-देखे फूल का गोपन गन्ध घूमता फिरता है; **लुकाय**—छिपती है; **अझरा**—अन-बहे; **बाँशि**—बाँसुरी; **बाजे**—बजती है; **खने......गान**—क्षण-क्षण बिना जाने ही मैंने तुम्हें अपने गीत भेंट किए हैं; **परानेर......फुले**—प्राणों की फूल चुनने की डलिया खेल-खेल के फूलों से सजाता हूँ; **जानि.....तुले**—नहीं जानता कब तुम स्वयं चुनकर उठा लेते हो; **दुयार खुले**—द्वार खोल; **प्राणेर.....काजे**—मेरे कामों में (तुम) प्राणों का स्पर्श दे जाते हो।

१४६. **तोमार......ताले**—तुम्हारे और मेरे इस विरह के अन्तराल (व्यवधान) में सुर-सुर में, ताल-ताल में कितने और सेतु बाँधूं;

तबु ये परानमाझे गोपने वेदना बाजे—
एबार सेवार काजे डेके लओ सन्ध्याकाले ।।
विश्व हते थाकि दूरे अन्तरेर अन्तःपुरे,
चेतना जड़ाये रहे भावनार स्वप्नजाले ।
दुःख सुख आपनारइ से बोझा हयेछे भारी,
येन से सँपिते पारि चरम पूजार थाले ।।

१९२७

१४७

तोमार प्रेमे धन्य कर यारे
सत्य क'रे पाय से आपनारे ।।
दुःखे शोके निन्दा-परिवादे
चित्त तार डोबे ना अवसादे,
टुटे ना बल संसारेर भारे ।।
पथे ये तार गृहेर वाणी बाजे,
विराम जागे कठिन तार काजे

तबु......बाजे—तोभी प्राणों के भीतर वेदना कसकती है; **एबार.....सन्ध्या-काले**—अब सन्ध्या समय सेवा-कार्य के लिये बुला लो; **विश्व.....अन्तःपुरे**—संसार से दूर अन्तर के अन्तःपुर में रहती हूँ; **चेतना......स्वप्नजाले**—भावनाओं (चिन्ताओं) के स्वप्न-जाल में चेतना उलझी हुई रहती है; **आपनारइ**—अपना ही; **से......भारी**—वह भारी बोझ बन गया है; **येन......थाले**—ऐसा हो कि उसे चरम पूजा की थाली में अर्पित कर सकूँ।

१४७. **तोमार......आपनारे**—जिसे तुम अपने प्रेम से धन्य करते हो वह अपने आपको सचमुच ही पाता है; **परिवादे**—अपवाद में; कुत्सा में; **चित्त.....अवसादे**—उसका चित्त अवसाद (चरम क्लान्ति) में नहीं डूबता; **टुटे.....भारे**—संसार के भार से (उसका) बल नहीं टूटता; **पथे......काजे**—उसके पथ में गृह की वाणी बजती है (अर्थात् पथ भी उसके लिये गृह है और) उसके कठिन काम-

निजेरे से ये तोमारि माझे देखे,
जीवन तार बाधाय नाहि ठेके,
दृष्टि तार आँधार-परपारे ।।

१९२७

१४८

दिन यदि हल अवसान
निखिलेर अन्तरमन्दिरप्राङ्गणे
ओइ तव एल आह्वान ।।
चेये देखो मङ्गलराते ज्वालि दिल उत्सव-बाति,
स्तब्ध ए संसारप्रान्ते धरो तव वन्दनगान ।।
कमर-कलरव-क्लान्त,
करो तव अन्तर शान्त ।
चित्त-आसन दाओ मेले, नाइ यदि दर्शन पेले
आँधारे मिलिबे ताँर स्पर्श—
हर्षे जागाये दिबे प्राण ।।

१९२७

काज में ही (उसे) विराम है; **निजेरे......देखे**—अपने को वह तुममें ही देखता है; **जीवन......ठेके**—उसका जीवन बाधाओं से रुद्ध नहीं होता; **दृष्टि..... परपारे**—उसकी दृष्टि अंधकार के उस पार रहती है।

१४८. **हल**—हुआ; **निखिलेर**—समस्त जगत् के; **ओइ......आह्वान**—वह तुम्हारा आह्वान आया; **चेये......बाति**—देखो, मंगलमयी रात्रि ने उत्सव के दीप जला दिए; **ए**—इस; **धरो**—शुरू करो; **चित्त......मेले**—चित्त रूपी आसन को बिछा दो; **नाइ......पेले**—भले ही दर्शन नहीं पाया; **आँधारे......स्पर्श**—अन्धकार में उनका स्पर्श मिलेगा; **हर्षे......प्राण**—हर्ष से (उनका स्पर्श) प्राणों को जगा देगा।

१४९

ये ध्रुवपद दियेछ बाँधि विश्वताने
मिलाब ताइ जीवनगाने ।
गगने तव विमल नीलहृदये लब ताहारि मिल—
शान्तिमयी गभीर वाणी नीरव प्राणे ।।
बाजाय उषा निशीथकूले ये गीतभाषा
से ध्वनि निये जागिबे मोर नवीन आशा ।
फुलेर मतो सहज सुरे प्रभात मम उठिबे पूरे,
सन्ध्या मम से सुरे येन भरिते जाने ।।

१९२७

१५०

हिंसाय उन्मत्त पृथ्वि, नित्य निठुर द्वन्द्व;
घोर कुटिल पन्थ तार, लोभजटिल बन्ध ।।
नूतन तव जन्म लागि कातर यत प्राणी;
कर' त्राण महाप्राण, आन' अमृतवाणी,
विकशित कर' प्रेमपद्म चिरमधुनिष्यन्द ।
शान्त हे, मुक्त हे, हे अनन्तपुण्य,
करुणाघन, धरणीतल कर' कलङ्कशून्य ।।

---

१४९. **ध्रुवपद**—ध्रुपद, स्थिर पद; **ये......गाने**—जो ध्रुपद (तुमने) विश्व की तान में गूँथ दिया है उसे ही जीवन के गान में मिलाऊँगा; **हृदये**—हृदय में; **लब**—पाऊँगा; **ताहारि**—उसीका; **मिल**—सादृश्य, संगति; **बाजाय**—ध्वनित करती है; **से**—उस; **निये**—ले कर; **जागिबे**—जागेगी; **फुलेर मतो**—फूल के समान; **उठिबे पूरे**—पूर्ण हो उठेगा; **सन्ध्या......जाने**—ऐसा हो कि मेरी सन्ध्या उस सुर मे अपने को भरना जाने ।

१५०. **हिंसाय......पृथ्वि**—हिंसा से पृथ्वी उन्मत्त (है); **तार**—उसका; **बन्ध**—बन्धन; **नूतन......प्राणी**—जितने प्राणी हैं सब तुम्हारे नवीन जन्म के लिये कातर हैं; **कर'**—करो; **आन'**—लाओ; **निष्यन्द**—क्षरण; स्राव; **चिरमधु निष्यन्द**—चिरन्तन मधुका झरना; **एस'**—आओ;

एस' दानवीर, दाओ त्यागकठिन दीक्षा।
महाभिक्षु, लओ सबार अहंकारभिक्षा।
लोक लोक भुलुक शोक, खण्डन कर' मोह,
उज्ज्वल होक ज्ञानसूर्य-उदयसमारोह—
प्राण लभुक सकल भुवन, नयन लभुक अन्ध।
शान्त हे, मुक्त हे, हे अनन्तपुण्य,
करुणाघन, धरणीतल कर' कलङ्कशून्य॥
क्रन्दनमय निखिलहृदय तापदहनदीप्त
विषयविषविकारजीर्ण खिन्न अपरितृप्त।
देश देश परिल तिलक रक्तकलुषग्लानि,
तव मङ्गलशङ्ख आन' तव दक्षिणपाणि—
तव शुभसंगीतराग, तव सुन्दर छन्द।
शान्त हे, मुक्त हे, हे अनन्तपुण्य,
करुणाघन, धरणीतल कर' कलङ्कशून्य॥

१९२७

१५१

छिन्न पातार साजाइ तरणी, एका एका करि खेला—
आनमना येन दिक्‌बालिकार भासानो मेघेर भेला॥

दाओ—दो; **लओ.....भिक्षा**—सबके अहंकार को भिक्षा-स्वरूप ग्रहण करो; **लोक.......शोक**—सभी लोग (अथवा समस्त लोक) शोक भूल जायँ; **खण्डन.....मोह**—मोह को तोड़ो; **होक**—हो; **लभुक**—लाभ करे, प्राप्त करे; **परिल तिलक**—तिलक लगाया।

१५१. **छिन्न......खेला**—टूटे हुए पत्तों की नौका बनाकर अकेले अकेले खेलता हूँ; **आन्‌मना.....भेला**—जैसे दिक्‌बालिका का अनमने भाव से बहाया हुआ मेघों का बेड़ा हो; **भेला**—केले के थंभ, बांस आदि से बनाया हुआ पानी पर बहने वाला पदार्थ, बेड़ा; **येमन......छन्दे**—जैसे अलस

येमन हेलाय अलस छन्दे   कोन् खेयालीर कोन् आनन्दे
सकाले-धरानो आमेर मुकुल झरानो विकालवेला ।।
ये बातास नेय फुलेर गन्ध, भुले याय दिनशेषे,
तार हाते दिइ आमार छन्द—कोथा याय के जाने से ।
लक्ष्यविहीन स्रोतेर धाराय   जेनो जेनो मोर सकलइ हाराय,
चिरदिन आमि पथेर नेशाय पाथेय करेछि हेला ।।

१९२७

१५२

तोमार सुर शुनाये ये घुम भाङाओ से घुम आमार रमणीय—
जागरणेर सङ्गिनी से, तारे तोमार परश दियो ।।
अन्तरे तार गभीर क्षुधा,   गोपने चाय आलोकसुधा,
आमार रातेर बुके से ये तोमार प्रातेर आपन प्रिय ।।
तारि लागि आकाश राङा आँधार-भाङा अरुणरागे,
तारि लागि पाखिर गाने नवीन आशार आलाप जागे ।

छन्द में अवहेला के साथ; **कोन्......आनन्दे**—किसी मनमौजी के किसी आनन्द से; **सकाले......बेला**—आम वृक्ष की भोर में लगी मंजरियों को तीसरे पहर झरा देना है; **ये......से**—जो हवा फूलों का गन्ध लेती है और दिनके अन्त में (उसे) भूल जाती है, उसके हाथों (में) अपना छन्द सौंपता हूँ, वह कहाँ जाती है कौन जानता है; **जेनो**—जानो; **मोर......हाराय**—मेरा सभी कुछ खो जाता है; **चिरदिन......हेला**—मैंने पथ के नशे में सदा ही पाथेय की अवहेलना की है।

१५२. **तोमार......रमणीय**—अपना सुर सुनाकर जिस निद्रा को भंग करते हो, वह मेरी रमणीय निद्रा है; **जागरणेर......दियो**—वह जागरण की संगिनी है, उसे अपना स्पर्श देना (उसे स्पर्श करना); **अन्तरे तार**—उसके अन्तर में; **चाय**—चाहती है; **आमार......प्रिय**—मेरी रात्रि के हृदय में वह है तुम्हारे प्रभात की अपनी, प्रिय; **तारि लागि**—उसीके लिये; **राङा**—लाल होना; **आँधार-भाङा**—अंधकार का दूर होना; **पाखिर......जागे**—पक्षियों के गान में नवीन आशा का आलाप जाग उठता है; **शुनाय......आगमनी**—उसे

नीरव तोमार चरणध्वनि शुनाय तारे आगमनी,
सन्ध्यावेलार कुँड़ि तारे सकालवेलाय तुले नियो ।।

१९२९

१५३

आमार मुक्ति आलोय आलोय एइ आकाशे,
आमार मुक्ति धुलाय धुलाय घासे घासे ।।
देहमनेर सुदूर पारे हारिये फेलि आपनारे,
गानेर सुरे आमार मुक्ति ऊर्ध्वे भासे ।।
आमार मुक्ति सर्वजनेर मनेर माझे,
दुःखविपद-तुच्छ-करा कठिन काजे ।
विश्वधातार यज्ञशाला, आत्महोमेर वह्नि ज्वाला—
जीवन येन दिइ आहुति मुक्ति-आशे ।।

१९३२

१५४

मधुर, तोमार शेष ये ना पाइ, प्रहर हल शेष—
भुवन जुड़े रइल लेगे आनन्द-आवेश ।।

आगमन संबंधी गान सुनाता है; आगमनी—शिव की पत्नी उमा के पितृगृह में आगमन संबंधी गान; **कुँड़ि**—कली; **तारे**—उसे; **सकाल वेलाय......नियो**—भोर के समय चुन लेना।

१५३. **आमार**—मेरी; **आलोय आलोय**—आलोक-आलोक में; **एइ**—इसी; **धुलाय धुलाय**—धूलि में (धूलि के प्रत्येक कण में); **घासे घासे**—तृण-तृण में; **हारिये......आपनारे**—अपने आप को खो देता हूँ; **भासे**—बहती है; **माझे**—बीच में; **तुच्छ-करा**—तुच्छ करने वाले; **धातार**—विधाता, निर्माता की; **येन**—ऐसा हो कि; **दिइ**—दूँ; **आशे**—आशा में।

१५४. **तोमार......पाइ**—तुम्हारा अन्त जो नहीं पाता; **हल**—हुआ; **भुवन जुड़े**—विश्व-भर में; **रइल लेगे**—व्याप्त रहा; **आवेश**—विह्वलता, मोह;

दिनान्तेर एइ एक कोणाते   सन्ध्यामेघेर शेष सोनाते
मन ये आमार गुञ्जरिछे कोथाय निरुद्देश ।।
सायन्तनेर क्लान्त फुलेर गन्ध हाओयार 'परे
अङ्गविहीन आलिङ्गने सकल अङ्ग भरे ।।
एइ गोधूलिर धूसरिमाय   श्यामल धरार सीमाय सीमाय
शुनि वने वनान्तरे असीम गानेर रेश ।।

१९३२

१५५

सकल-कलुष-तामस-हर,   जय होक तव जय—
अमृतवारि सिञ्चन कर' निखिल भुवनमय ।
महाशान्ति, महाक्षेम, महापुण्य, महाप्रेम ।।
ज्ञानसूर्य-उदय-भाति ध्वंस करुक तिमिररात‍ि ।
दुःसह दुःस्वप्न घाति अपगत कर' भय ।।
मोहमलिन अति-दुर्दिन-शंकित-चित पान्थ
जटिल-गहन-पथसंकट-संशय-उद्भ्रान्त ।
करुणामय, मागि शरण—दुर्गतिभय करह हरण,
दाओ दुःखबन्धतरण मुक्तिर परिचय ।।

१९३२

एइ—इस; **कोणाते**—कोने में; **सोनाते**—सोने में; **गुञ्जरिछे**—गुञ्जार कर रहा है; **सायन्तनेर**—सन्ध्याकालीन; **हाओयार 'परे**—हवा के ऊपर; **भरे**—ओतप्रोत करता है; **धूसरिमाय**—धूसर वर्ण में; **शुनि**—सुनता हूँ; **रेश**—शब्द या सुर समाप्त होने पर भी मन के भीतर जो अनुरण (गूँज) बना रहता है।

१५५. **हर**—हरण करनेवाले; **होक**—हो; **कर'**—करो; **भुवनमय**—भुवन-भर में; **भाति**—दीप्ति, आलोक; **करुक**—करे; **राति**—रात्रि; **घाति**—विनष्ट करके; **अपगत कर'**—दूर करो; **मागि**—माँगता हूँ; याचना करता हूँ; **करह**—करो; **दाओ**—दो।

१५६

आमि यखन छिलेम अन्ध,
सुखेर खेलाय वेला गेछे, पाइ नि तो आनन्द।
खेलाघरेर देयाल गेँथे खेयाल निये छिलेम मेते,
भित भेङे येइ एले घरे घुचल आमार बन्ध।
सुखेर खेला आर रोचे ना, पेयेछि आनन्द॥
भीषण आमार, रुद्र आमार, निद्रा गेल क्षुद्र आमार—
उग्र व्यथाय नूतन करे बाँधले आमार छन्द।
ये दिन तुमि अग्निवेशे सब-किछु मोर निले एसे
से दिन आमि पूर्ण ह्लेम, घुचल आमार द्वन्द्व।
दुःखसुखेर पारे तोमाय पेयेछि आनन्द।

१९३३

१५७

दुःखेर तिमिरे यदि ज्वले तव मङ्गल-आलोक
तबे ताइ होक।
मृत्यु यदि काछे आने तोमार अमृतमय लोक
तबे ताइ होक॥

---

१५६. **आमि......अन्ध**—मैं जब अन्ध था; **सुखेर......आनन्द**—सुख के खेल में समय बीत गया (लेकिन मैंने) आनन्द तो नहीं पाया; **खेला......गेँथे**—खेल-घर की दीवारें चुन कर; **खेयाल......मेते**—सपने लेकर मैं मत्त था; **भित......बन्ध**—दीवार तोड़ कर जैसे ही तुम घर में आए, मेरा बन्धन दूर हो गया; **आमार**—मेरे; **गेल**—चली गई; **उग्र......छन्द**—तीव्र व्यथा द्वारा नये सिरे से मेरे छन्द की रचना की; **ये......एसे**—जिस दिन अग्निवेश में आ कर तुमने मेरा सब कुछ ग्रहण कर लिया; **से.....ह्लेम**—उस दिन मैं पूर्ण हुआ; **घुचल.....द्वन्द्व**—मेरा द्वन्द्व मिट गया; **दुःख.....आनन्द**—हे आनन्द, दुःखसुख के पार तुम्हें पाया है।

१५७. **दुःखेर......होक**—दुःख के अंधकार में ही अगर तुम्हारी मंगल-ज्योति जलती है, तब वही हो; **मृत्यु......लोक**—मृत्यु अगर तुम्हारे अमृतपूर्ण

पूजार प्रदीपे तव ज्वले यदि मम दीप्त शोक
तबे ताइ होक।
अश्रु-आँखि-'परे यदि फुटे ओठे तव स्नेहचोख
तबे ताइ होक॥

१९३६

लोक को पास लाती है; **ज्वले**—जलता हो; **अश्रु......चोख**—आँसू भरी आँखों पर अगर तुम्हारी स्नेह से भरी आँखें (दृष्टि) खिल उठती है।

प्रेम

१

मरण रे, तुँहुँ मम श्यामसमान।
मेघवरण तुझ मेघजटाजुट,
रक्तकमलकर, रक्त-अधरपुट,
तापविमोचन करुण कोर तव
मृत्यु-अमृत करे दान।।
आकुल राधा-रिझ अति जरजर,
झरइ नयनदउ अनुखन झरझर—
तुँहुँ मम माधव, तुँहुँ मम दोसर,
तुँहुँ मम ताप घुचाओ।
मरण तु आओ रे आओ।।
भुजपाशे तव लह सम्बोधयि,
आँखिपात मझु देह तु रोधयि,
कोर-उपर तुझ रोदयि रोदयि
नीद भरब सब देह।।
तुँहुँ नहि विसरबि, तुँहुँ नहि छोड़बि,
राधाहृदय तु कबहुँ न तोड़बि,

१. यह गान 'भानुसिंहेर पदावली' से लिया गया है। रवीन्द्रनाथ ने 'भानुसिंह' के नाम से पदावलियों की रचना की थी। बंगाल के मध्ययुगीन वैष्णव भक्त कवियों की नाईं इन पदावलियों की रचना 'ब्रजबुलि' में हुई है।

तुंहुँ—तुम; **तुझ**—तुम्हारा; **जटाजुट**—जटाजूट, जटाजाल; **कोर**—क्रोड़, गोद; **मृत्यु.....दान**—मृत्यु रूपी अमृत का दान करती है; **जरजर**—जर्जर; **झरइ......झरझर**—दोनों आँखें सब समय झरझर बरसती रहती हैं; **दोसर**—सहाय; **घुचाओ**—दूर करो; **तु**—तू; **भुजपाशे.....सम्बोधयि**—अपने भुज पाश में मुझे बाँध कर सान्त्वना, चैतन्य दो; **आँखिपात......रोधयि**—मेरे नेत्रपात (दृष्टि विक्षेप) को तुम अवरुद्ध कर दो; **कोर......देह**—तुम्हारी गोद में रोते-रोते समस्त शरीर में नींद भर लूंगी; **तुंहुँ......तोड़बि**—तुम

हिय-हिय राखबि अनुदिन अनुखन—
अतुलन तोँहार लेह ।।
गगन सघन अब, तिमिरमगन भव,
तड़ितचकित अति, घोर, मेघरव,
शालतालतरु सभय-तबध सब—
पन्थ विजन अति घोर ।।
एकलि याओब तुझ अभिसारे,
तुँहुँ मम प्रियतम, कि फल विचारे—
भय-बाधा सब अभय मूर्ति धरि
पन्थ देखायब मोर ।।
भानु भने, 'अयि राधा, छिये छिये
चञ्चल चित्त तोहारि।
जीवनवल्लभ मरण-अधिक सो,
अब तुँहुँ देख विचारि।'

१८८१

२

आमार प्राणेर 'परे चले गेल के
वसन्तेर बातासटुकुर मतो।

नहीं भूलना, तुम नहीं छोड़ना, राधा के हृदय को तुम कभी न तोड़ना; **हिय....लेइ**—सब दिन सब समय हृदय में रखना अपना अतुलनीय लेहन; **तिमिर मगन**—अंधकार में लीन; **सभय-तबध**—भय-भीत और स्तब्ध; **एकलि......अभिसारे**—तुम्हारे अभिसार के लिये अकेली जाऊँगी; **तुहुँ...... विचारे**—तुम मेरे प्रियतम हो, (मुझे) फल का क्या विचार करना है; **भय......मोर**—भय, बाधा सभी अभय मूर्ति धारण कर मुझे रास्ता दिखाएँगे; **भानु.......तोहारि**—भानु (सिंह) कहते हैं, अयि राधे, छिः छिः तुम्हारा चित्त बहुत चञ्चल है'; **जीवन वल्लभ.....विचारि**—जीवन वल्लभ, मरण से भी अधिक है, अब तू विचार कर देख।

२. **आमार......मतो**—वसन्त की (हल्की सी) हवा के समान मेरे प्राणों

से ये छुँये गेल, नुये गेल रे—
फुल फुटिये गेल शत शत ।।
से चले गेल बले गेल ना—से कोथाय गेल फिरे एल ना ।
से येते येते चेये गेल, की येन गेये गेल—
ताइ आपन-मने बसे आछि कुसुमवनेते ।।
से ढेउयेर मतो भेसे गेछे, चाँदेर आलोर देशे गेछे,
येखान दिये हेसे गेछे हासि तार रेखे गेछे रे—
मने हल, आँखिर कोणे आमाय येन डेके गेछे से ।
आमि कोथाय याब, कोथाय याब, भाबतेछि ताइ एकला बसे ।।
से चाँदेर चोखे बुलिये गेल घुमेर घोर ।
से प्राणेर कोथाय दुलिये गेल फुलेर डोर ।
कुसुमवनेर उपर दिये की कथा से बले गेल,
फुलेर गन्ध पागल हये सङ्गे तारि चले गेल ।

के ऊपर से कौन चला गया; **से......रे**—वह छू गया, झुका गया; **फुल......शत**—सैकड़ों फूल प्रस्फुटित कर गया; **से......ना**—वह चला गया, (कुछ) कह नहीं गया; **से......एल ना**—वह कहाँ चला गया, लौट कर नहीं आया; **से.....गेल**—वह जाते-जाते (मेरी ओर) ताक गया, क्या-कुछ गा गया; **ताइ......कुसुमवनेते**—इसीलिये अपने आप में खोई कुसुमवन में बैठी हूँ; **से.......गेछे**—वह लहरों के समान बह गया है, (वह) चाँद की चाँदनी के देश में चला गया है; **येखान......गेछे रे**—जहाँ से होकर वह हँसता (हुआ) गया है (वहीं) अपनी हँसी रखता गया है;
मने......गेछे से—ऐसा लगा जैसे आँखों के कोने से (वह) मुझे बुला गया है; **आमि......बसे**—इसीलिये अकेली बैठी सोच रही हूँ, मैं कहाँ जाऊँ, कहाँ जाऊँ; **से.....घोर**—वह चाँद की आँखों पर नींद का नशा सहला गया; **से......डोर**—वह कहीं प्राणों की फूल की डोर झुला गया; **कुसुम......गेल**—कुसुमवन के ऊपर से हो कर जाने क्या-कुछ वह कह गया; **फुलेर.....गेल**—फूलों की सुगन्ध पागल हो कर उसीके साथ चली गयी; **हृदय......हल**—मेरा हृदय व्याकुल हुआ;

हृदय आमार आकुल हल, नयन आमार मुदे एल रे—
कोथा दिये कोथाय गेल से ।।

१८८३

३

मरि लो मरि, आमाय बाँशिते डेकेछे के ।
भेबेछिलेम घरे रब, कोथाओ याब ना—
ओइ-ये बाहिरे बाजिल बाँशि, बलो की करि ।।
शुनेछि कोन् कुञ्जवने यमुनातीरे
साँझेर वेला बाजे बाँशि धीर समीरे—
ओगो तोरा जानिस यदि आमाय पथ बले दे ।।
देखि गो तार मुखेर हासि,
तारे फुलेर माला परिये आसि,
तारे बले आसि, 'तोमार बाँशि,
आमार प्राणे बेजेछे' ।।

१८८४

नयन.....**एल**—मेरी आँखें मुंद आई; **कोथा**.....**से**—कहाँ से हो कर वह कहाँ चला गया ।

३. **मरि**......**के**—बलि जाऊँ (सखि) बलि जाऊँ, मुझे बाँसुरी (के सुर) में किसने पुकारा है; **भेबेछिलेम**......**ना**—सोचा था घर में रहूँगी, कहीं भी नहीं जाऊँगी; **ओइ**......**करि**—वह लो, बाहर बाँसुरी बजी, बोलो क्या करूँ; **शुनेछि**......**समीरे**—सुना है यमुना किनारे जाने-किस कुञ्जवन में धीर समीर वाली संध्यावेला में बाँसुरी बजती है; **ओगो**......**बले दे**—अजी, तुमलोग अगर जानती हो तो मुझे रास्ता बतला दो; **देखिगो**......**हासि**—(जाकर) उसके मुख की हँसी देखूं; **तारे**......**आसि**—उसे फूलों की माला पहना आऊँ; **तारे**......**बेजेछे**—उससे कह आऊँ 'तुम्हारी बाँसुरी मेरे प्राणों में बजी है' (अथवा कसक उठी है) ।

४

आजि शरत-तपने प्रभातस्वपने की जानि परान की ये चाय।
ओइ शेफालिर शाखे की बलिया डाके, विहग विहगी की ये गाय।।
आजि मधुर बातासे हृदय उदासे, रहे ना आवासे मन हाय—
कोन् कुसुमेर आशे कोन् फुलबासे सुनील आकाशे मन धाय।।

आजि के येन गो नाइ, ए प्रभाते ताइ जीवन विफल हय गो—
ताइ चारि दिके चाय, मन केँदे गाय 'ए नहे, ए नहे, नय गो'।
कोन् स्वपनेर देशे आछे एलोकेशे कोन् छायामयी अमराय।
आजि कोन् उपवने, विरहवेदने आमारि कारणे केँदे याय।।

आमि यदि गाँथि गान अथिरपरान से गान शुनाब कारे आर।
आमि यदि गाँथि माला लये फुलडाला, काहारे पराब फुलहार।।
आमि आमार ए प्राण यदि करि दान, दिब प्राण तबे कार पाय।
सदा भय हय मने, पाछे अयतने मने मने केह व्यथा पाय।।
१८८६

४. **तपने**—धूप में; **की......चाय**—क्या जानूं प्राण क्या चाहते हैं; **ओइ......शाखे**—उस शेफाली की शाखा पर; **की......डाके**—क्या कह कर पुकारते हैं; **की......गाय**—क्या गाते हैं; **रहे......हाय**—हाय, मन घर में नहीं ठहरता; **कोन्......धाय**—किस कुसुम की आशा में, किस फूल के गन्ध से (आकर्षित हो) मन, नील आकाश की ओर दौड़ता है; **आजि......नाइ**—(पता नहीं) आज जैसे कौन नहीं है; **ए......गो**—इसीलिये इस प्रभात में जीवन विफल हो रहा है; **ताइ......चाय**—इसीलिए चारों ओर देखता है; **मन.....नय गो**—मन क्रन्दन करता हुआ गाता है 'यह नहीं, यह नहीं हैं'; **कोन्......देशे**—किस सपनों के देश में; **आछे एलोकेशे**—आलुलायित केशों वाली है; **कोन्...... अमराय**—किस छायामयी अमरावती में; **आमारि.....याय**—मेरे ही कारण रोती जा रही है; **आमि....गान**—मैं यदि गान गूँथूं; **अथिर परान**—अस्थिर प्राण; **से.....आर**—वह गान और किसे सुनाऊँगी; **लये**—ले कर; **फुलडाला**—फूलों की डलिया; **काहारे......हार**—किसे फूल का हार पहनाऊँगी; **आमि.....पाय**—मैं

५

हेलाफेला सारा वेला ए की खेला आपन-सने।
एइ बातासे फुलेर वासे मुखखानि कार पड़े मने।।
आँखिर काछे बेड़ाय भासि के जाने गो काहार हासि,
दुटि फोँटा नयनसलिल रेखे याय एइ नयनकोणे।।
कोन् छायाते कोन् उदासी दूरे बाजाय अलस बाँशि,
मने हय कार मनेर वेदन केँदे बेड़ाय बाँशिर गाने।।
सारा दिन गाँथि गान कारे चाहे, गाहे प्राण—
तरुतलेर छायार मतन बसे आछि फुलवने।।

१८८६

६

अलि बार बार फिरे याय, अलि बारबार फिरे आसे—
तबे तो फुल विकाशे।।
कलि फुटिते चाहे, फोटे ना, मरे लाजे, मरे त्रासे।।

अपने इस प्राण को यदि अर्पित करूँ, तब किस के पैरों प्राण दूँगी; **सदा......मने**—सदा मन में भय होता है; **पाछे......पाय**—कहीं अयत्न (अवहेलना) से कोई मन ही मन कष्ट न पाए।

५. **हेलाफेला**—अवज्ञा, अवहेलना; **ए......सने**—अपने साथ यह कैसा खेल है; **एइ......मने**—इस हवा में फूल के गन्ध से किसका मुख याद हो आता है; **आँखिर......हासि**—कौन जाने (पता नहीं) किसकी हँसी आँखों के पास तिरती फिरती है; **दुटि......कोणे**—इन आँखों के कोनों में दो बूँद आँखों का पानी रख जाती है; **कोन्......बाँशि**—कौन उदासीन किस छाया में दूर अलस (भाव से) बाँसुरी बजा रहा है; **मने......गाने**—लगता है किसीके मन की वेदना बाँसुरी के गान में क्रन्दन करती फिर रही है; **सारा......गान**—समस्त दिन गान गूँथ कर; **कारे......प्राण**—किसे चाहता है, प्राण गाता है; **तरु तलेर......फुलवने**—पेड़ों के नीचे की छाया के समान फूलों के वन में बैठी हुई हूँ।

६. **अलि......विकाशे**—भौंरा बार बार लौट जाता है, बार बार लौट आता है, तभी तो फूल विकसित होता है; **कलि......त्रासे**—कली खिलना चाह कर भी नहीं खिलती, लाज से मरती है, शंका से मरती है; **भुलि**—भूल कर;

भुलि मान अपमान दाओ मन प्राण, निशिदिन रहो पाशे।
ओगो, आशा छेड़े तबु आशा रेखे दाओ हृदयरतन-आशे।
फिरे एसो, फिरे एसो— वन मोदित फुलवासे।
आज विरहरजनी, फुल्ल कुसुम शिशिरसलिले भासे ।।

१८८८

७

आमार परान याहा चाय तुमि ताइ, तुमि ताइ गो।
तोमा छाड़ा आर ए जगते मोर केह नाइ, किछु नाइ गो ।।
तुमि सुख यदि नाहि पाओ याओ सुखेर सन्धाने याओ—
आमि तोमारे पेयेछि हृदय-माझे, आर किछु नाहि चाइ गो।
आमि तोमारि विरहे रहिब विलीन, तोमाते करिब वास—
दीर्घ दिवस, दीर्घ रजनी, दीर्घ वरष-मास।
यदि आर-कारे भालोबास, यदि आर फिरे नाहि आस,
तबे तुमि याहा चाओ ताइ येन पाओ, आमि यत दुख पाइ गो।

१८८८

दाओ—दो; **पाशे**—बगल में; **आशा.......दाओ**—आशा छोड़ कर भी आशा रख छोड़ो; **हृदयरतन......आशे**—हृदयरत्न की आशा में; **फिरे एसो**—लौट आओ।

७. **आमार......गो**—मेरे प्राण जो चाहते हैं तुम वही हो, अजी, तुम वही हो; **तोमा.....गो**—इस संसार में तुम्हें छोड़ कर मेरा और कोई नहीं है, कुछ नहीं है; **तुमि......याओ**—अगर तुम सुख नहीं पाओ (तो) जाओ, सुख की खोज में जाओ; **आमि......गो**—मैंने तुम्हें हृदय के भीतर पाया है, (अब) और कुछ नहीं चाहती; **आमि......वास**—मैं तुम्हारे ही विरह में विलीन रहूँगी, तुम्हीं में वास करूँगी; **यदि......आस**—यदि और किसी को प्यार करो यदि लौटकर न आओ; **तबे.....पाइगो**—ऐसा हो कि तब तुम जो चाहते है वही पाओ, मैं (चाहे) जितना दुःख पाऊँ।

८

बिदाय करेछ यारे नयनजले,
एखन फिराबे तारे किसेर छले गो ।।
आजि मधु समीरणे निशीथे कुसुमवने
तारे कि पड़ेछे मने बकुलतले ।।
से दिनओ तो मधुनिशि प्राणे गियेछिल मिशि,
मुकुलित दश दिशि कुसुमदले ।
दुटि सोहागेर वाणी यदि हत कानाकानि,
यदि ओइ मालाखानि पराते गले ।
एखन फिराबे तारे किसेर छले गो ।।
मधुराति पूर्णिमार फिरे आसे बार बार,
से जन फिरे ना आर ये गेछे चले ।।
छिल तिथि अनुकूल, शुधु निमेषेर भुल—
चिरदिन तृषाकुल परान ज्वले ।
एखन फिराबे तारे किसेर छले गो ।।

१८८८

९

ओइ मधुर मुख जागे मने ।
भुलिब ना ए जीवने, की स्वपने की जागरणे ।।

८. **बिदाय.....नयन जले**—नयनों के जल से जिसे (तुमने) विदा दी है; **एखन...छले**—अब उसे किस बहाने लौटाओगी; **आजि...समीरणे**—आज वसन्त की हवा में; **तारे....मने**—वह क्या याद आया है; **से...मिशि**—उस दिन भी तो वसन्त की रात्रि प्राणों में घुल मिल गई थी; **दुटि...कानाकानि**—कानों-कानों में अगर दो दुलार की बातें होतीं; **यदि...गले**—अगर वह माला गले में पहनातीं; **मधु.....बार-बार**—वसन्त की पूर्णिमा की मधुर रात्रि बारबार लौट आती है; **से.....चले**—जो जन चला गया, और नहीं लौटता; **छिल......ज्वले**—तिथि (घड़ी) अनुकूल थी, केवल क्षण भर की भूल के लिये प्राण तृषा से व्याकुल जलते रहते हैं ।

९. **ओइ......मने**—वह मधुर मुख मन में जागता रहता है; **भुलिब......**

तुमि जान वा ना जान,
मने सदा येन मधुर बाँशरि बाजे—
हृदये सदा आछ ब'ले।
आमि प्रकाशिते पारि ना, शुधु चाहि कातरनयने।

१८८८

१०

प्रेमेर फाँद पाता भुवने।
के कोथा धरा पड़े के जाने—
गरब सब हाय कखन् टुटे याय, सलिल बहे याय नयने।
ए सुखधरणीते केवलइ चाह निते, जान ना हबे दिते आपना—
सुखेर छाया फेलि कखन याबे चलि, बरिबे साध करि वेदना।
कखन बाजे बाँशि, गरब याय भासि, परान पड़े आसि बाँधने।।

१८८८

जागरणे—(उसे) इस जीवन में नहीं भूलूँगा, क्या स्वप्न में, क्या जागरण में; **तुमि......जान**—तुम जानो या न जानो; **मने......बाजे**—मन में जैसे सर्वदा मधुर बाँसुरी बजती रहती है; **हृदये......ब'ले**—(तुम) सदा हृदय में हो इसलिये; **आमि......नयने**—मैं प्रकट नहीं कर पाता, केवल कातर दृष्टि से देखता रहता हूँ।

१०. **प्रेमेर......भुवने**—जगत् में प्रेम का जाल बिछा हुआ है; **के...... जाने**—कौन कहाँ पकड़ाई दे जाता है, कौन जाने; **ए......निते**—इस आनन्ददायक पृथ्वी में केवल (तुम) लेना ही चाहते हो; **जान......आपना**—(यह) नहीं जानते कि अपने को देना होगा; **सुखेर......चलि**—सुख की छाया को छोड़कर कब चले जाओगे; **बरिबे......वेदना**—(और) बरबस वेदना को वरण करोगे; **कखन......बाँधने**—कब बाँसुरी बजती है; गर्व बह जाता है, प्राण बन्धन में आ पड़ते हैं।

११

यदि आसे तबे केन येते चाय।
देखा दिये तबे केन गो लुकाय।।
चेये थाके फुल, हृदय आकुल—
वायु बले एसे 'भेसे याइ'।
धरे राखो, धरे राखो—
सुखपाखि फाँकि दिये उड़े याय।।
पथिकेर वेशे सुखनिशि एसे
बले हेसे हेसे 'मिशे याइ'।
जेगे थाको, जेगे थाको—
वरषेर साध निमेषे मिलाय।।

१८८९

१२

एमन दिने तारे बला याय,
एमन घनघोर वरिषाय।
एमन दिने मन खोला याय—
एमन मेघस्वरे बादल-झरझरे
तपनहीन घन तमसाय।।

---

११. **यदि......चाय**—यदि आता ही है तब क्यों चला जाना चाहता है; **देखा......लुकाय**—दिखलाई दे कर फिर क्यों छिप जाता है; **चेये थाके**—देखता रहता है; **वायु......याइ**—वायु आ कर कहती है 'बह चलें'; **धरे राखो**—पकड़ रखो; **सुखपाखि......याय**—सुख रूपी पक्षी छल कर उड़ा जाता है; **पथिकेर......याइ**—पथिक के वेश में सुख की रात्रि आ कर हँस हँस कर कहती है 'विलीन हो जाँय'; **जेगे......मिलाय**—जागे रहो, जागे रहो, वर्षों की साध क्षण भर में विलीन हो जाती है।

१२. **एमन......वरिषाय**—ऐसे दिन, ऐसी घनघोर वर्षा में उससे कहा जा सकता है; **एमन......याय**—ऐसे दिन मन खोला जा सकता है (मन की बात कही जा सकती है); **तपनहीन**—सूर्यविहीन; **घन तमसाय**—घन अंधकार में;

से कथा शुनिबे ना केह् आर,
निभृत निर्जन चारि धार।
दुजने मुखोमुखि, गभीर दुखे दुखि;
आकाशे जल झरे अनिवार--
जगते केह् येन नाहि आर ।।
समाज संसार मिछे सब,
मिछे ए जीवनेर कलरव।
केवल आँखि दिये आँखिर सुधा पिये
हृदय दिये हृदि अनुभव--
आँधारे मिशे गेछे आर सब ।।
ताहाते ए जगते क्षति कार,
नामाते पारि यदि मनोभार।
श्रावणवरिषने एकदा गृह्कोणे
दु कथा बलि यदि काछे तार,
ताहाते आसे याबे किवा कार ।।
व्याकुल वेगे आजि बहे बाय,
बिजलि थेके थेके चमकाय।

से......आर—वह बात और कोई नहीं सुनेगा; **चारि धार**—चारों ओर; **दुजने मुखोमुखि**—दोनों आमने सामने हैं; **दुखि**—दुखी; **आकाशे......अनिवार**—आकाश से निरंतर वर्षा हो रही है; **जगते......आर**—संसार में जैसे और कोई नहीं है; **मिछे सब**—सब मिथ्या हैं; **केवल......सब**—केवल आँखों से आँखों का अमृत पीकर, हृदय से हृदय का अनुभव करना है, और सब अंधकार में घुलमिल गया है; **ताहाते......मनोभार**—यदि मन के भार को उतार सकूँ (हल्का कर सकूँ) तो उससे इस संसार में किसकी क्षति होगी; **श्रावणवरिषने......कार**—श्रावण की वर्षा में किसी समय घर के कोने में यदि उससे दो बातें कहूँ तो उससे किसीका क्या आता जाता है; **व्याकुल......चमकाय**—आज व्याकुल वेग से हवा बहती है, बिजली रह रह कर चमकती है; **ये कथा......वरिषाय**—जो

ये कथा ए जीवने रहिया गेल मने
से कथा आजि येन बला याय—
एमन घनघोर वरिषाय ।।

१८९०

१३

आमार परान लये की खेला खेलाबे, ओगो
परानप्रिय ।
कोथा हते भेसे कूले लेगेछे चरणमूले
तुले देखियो ।।
ए नहे गो तृणदल, भेसे आसा फुलफल—
ए ये व्यथाभरा मन, मने राखियो ।।
केन आसे केन याय केह ना जाने ।।
के आसे काहार पाशे किसेर टाने ।
राख यदि भालोबेसे चिरप्राण पाइबे से,
फेले यदि याओ तबे बाँचिबे कि ओ ।।

१८९४

बात इस जीवन में मन में ही रह गई वह बात आज जैसे इस घनघोर वर्षा में कही जा सकती है ।

१३. **आमार......परानप्रिय**—मेरे प्राणों को ले कर, हे प्राणप्रिय, कौन सा खेल खिलाओगे; **कोथा.....भेसे**—कहाँ से बह कर; **लेगेछे**—लगा है; **तुले देखियो**—उठा कर देखना; **ए नहे**—यह नहीं हैं; **भेसे आसा**—बह कर आए हुए; **ए......मन**—यह तो व्यथा से भरा हुआ मन है; **मने राखियो**—याद रखना; **केन......जाने**—क्यों आता है, क्यों जाता है, कोई नहीं जानता; **के......टाने**—कौन किस के पास किस आकर्षण से आता है; **राख......से**—अगर प्यार से (इसे) रखो (तो) वह चिरप्राण पाएगा; **फेले......ओ**—अगर (दूर) फेंक जाओ तब क्या वह बचेगा ।

१४

के दिल आबार आघात आमार दुयारे ।

ए निशीथकाले के आसि दाँड़ाले, खुँजिते आसिले काहारे ।।

बहुकाल हल वसन्तदिन एसेछिल एक अतिथि नवीन

आकुल जीवन करिल मगन अकूल पुलकपाथारे ।।

आजि ए वरषा निविड़तिमिर, झरो झरो जल, जीर्ण कुटीर—

बादलेर बाये प्रदीप निबाये जेगे बसे आछि एका रे ।

अतिथि अजाना, तव गीतसुर लागितेछे काने भीषणमधुर—

भाबितेछि मने याब तव सने अचेना असीम आँधारे ।।

१८९५

१५

बाजिल काहार वीणा मधुर स्वरे

आमार निभृत नव जीवन-'परे ।

प्रभातकमलसम फुटिल हृदय मम

कार दुटि निरुपम चरण-तरे ।।

जेगे उठे सब शोभा, सब माधुरी ।

पलके पलके हिया पुलके पूरि ।

---

१४. **के......दुयारे**—मेरे दरवाज़े पर किसने फिर आघात किया ; **ए......काहारे**—इस अर्धरात्रि में कौन आ कर खड़ा हुआ, किसे खोजता आया; **हल**—हुआ; **एसेछिल**—आया था; **करिल**—किया; **पुलक पाथारे**—पुलक के समुद्र में; **ए**—यह; **बादलेर....एका रे**—बरसात की हवा से दीप बुझा कर अकेली जगी हुई बैठी हूँ; **अजाना**—अज्ञात; **अतिथि......मधुर**—हे अनजाने अतिथि, तुम्हारे गीत का सुर कानों को भीषण-मधुर लग रहा है; **भाबितेछि.....आँधारे**—मन में सोच रही हूँ कि तुम्हारे साथ अपरिचित असीम अंधकार में जाऊँगी ।

१५. **बाजिल.....स्वरे**—किसकी वीणा मधुर स्वर में बजी; **आमार**—मेरे; **नव जीवन-'परे**—तरुण जीवन पर; **सम**—समान; **फुटिल**—खिला; **कार......तरे**—किसके दो निरुपम चरणों के निमित्त; **जेगे उठे**—जाग उठती है; **पलके......पूरि**—क्षण-क्षण हृदय पुलक से भर उठता है; **कोथा......जागरण**—

कोथा हते समीरण आने नव जागरण,
परानेर आवरण मोचन करे ।।
लागे बुके सुखे दुखे कत ये व्यथा,
केमने बुझाये कब ना जानि कथा ।
आमार वासना आजि त्रिभुवने उठे बाजि,
काँपे नदी वनराजि वेदनाभरे ।।

१८९५

१६

बड़ो विस्मय लागे हेरि तोमारे ।
कोथा हते एले तुमि हृदिमाझारे ।
ओइ मुख ओइ हासि केन एत भालोबासि,
केन गो नीरवे भासि अश्रुधारे ।।
तोमारे हेरिया येन जागे स्मरणे
तुमि चिरपुरातन चिरजीवने ।
तुमि ना दाँड़ाले आसि हृदये बाजे ना बाँशि—
यत आलो यत हासि डुबे आँधारे ।।

१८९५

कहाँ से हवा नव जागरण लाती है; **परानेर......करे**—प्राणों के आवरण को दूर करती है; **लागे......व्यथा**—सुख-दुख में हृदय में कितनी व्यथा होती है; **केमने......कथा**—कैसे समझा कर कहूँ, कहना नहीं जानता; **आमार...... बाजि**—आज मेरी वासना त्रिभुवन में बज उठती है; **काँपे**—काँपती है; **वेदनाभरे**—वेदना से भर कर।

१६. **बड़ो......तोमारे**—तुम्हें देखकर अत्यन्त विस्मय होता है; **कोथा...... माझारे**—कहाँ से तुम हृदय के बीच आए; **ओइ......भालोबासि**—उस मुख, उस हँसी को क्यों इतना प्यार करता हूँ; **केन.....अश्रुधारे**—अजी क्यों आँसुओं की धारा में चुपचाप बहता हूँ; **तोमारे......स्मरणे**—तुम्हें देख कर जैसे स्मृति में जाग उठता है; **तुमि......आँधारे**—सामने आ कर तुम्हारे खड़े हुए बिना हृदय में बाँसुरी नहीं बजती (और) जितना आलोक, जितनी हँसी है (सब) अन्धकार में डूब जाती है।

१७

आमार मन माने ना—दिनरजनी ।
आमि की कथा स्मरिया ए तनु भरिया पुलक राखिते नारि ।
ओगो की भाबिया मने ए दुटि नयने उथले नयनवारि—
ओगो सजनि ।।
से सुधावचन, से सुखपरश, अङ्गे बाजिछे बाँशि ।
ताइ शुनिया शुनिया आपनार मने हृदय हय उदासी—
केन ना जानि ।।
ओगो, बातासे की कथा भेसे चले आसे, आकाशे की मुख जागे ।
ओगो, वनमर्मरे नदीनिर्झरे की मधुर सुर लागे ।
फुलेर गन्ध वन्धुर मतो जड़ाये धरिछे गले—
आमि ए कथा, ए व्यथा, सुख-व्याकुलता काहार चरणतले
दिब निछनि ।।

१८९६

१८

आमि चिनि गो चिनि तोमारे ओगो विदेशिनी ।
तुमि थाक सिन्धुपारे ओगो विदेशिनी ।।

१७. **आमार......ना**—मेरा मन नहीं मानता; **आमि....नारि**—मैं कौन-सी बात याद कर इस शरीर में पुलक भर कर रख नहीं पाती (आनन्द अँट नहीं पाता, उद्वेलित हो उठता है); **ओगो......वारि**—मन में क्या सोच कर इन दोनों आँखों में आँसू उमड़ उठते हैं; **से....बाँशि**—वह अमृत (के समान मीठी) वाणी, वह आनन्द (देने वाला) स्पर्श—(मेरे) अंग (प्रत्यंग) में बाँसुरी ध्वनित हो रही है; **ताइ....जानि**—उसे सुन सुन कर अपने आप हृदय उदास हो उठता है, क्यों (ऐसा होता है) नहीं जानती; **ओगो....आसे**—हवा में कौन सी बात बह कर चली आती है; **आकाशे......जागे**—आकाश में कौन सा मुख जागता है (उदित होता है); **की....लागे**—कैसा मधुर सुर लगता है; **फुलेर....गले**—फूलों का गन्ध बन्धु के समान आ गले से लग रहा है; **आमि....निछनि**—मैं (अपनी) यह बात, यह व्यथा, आनन्द की व्याकुलता किसके चरणों में न्योछावर करूँगी।

१८. **आमि.....विदेशिनी**—अजी ओ विदेशिनी, मैं तुम्हें पहचानता हूँ, पह-

तोमाय देखेछि शारदप्राते, तोमाय देखेछि माधवी राते,
तोमाय देखेछि हृदि-माझारे ओगो विदेशिनी ।।
आमि आकाशे पातिया कान शुनेछि शुनेछि तोमारि गान,
आमि तोमारे सँपेछि प्राण ओगो विदेशिनी ।
भुवन भ्रमिया शेषे आमि एसेछि नूतन देशे,
आमि अतिथि तोमारि द्वारे ओगो विदेशिनी ।।

१८९६

१९

आहा, जागि पोहालो विभावरी ।
क्लान्त नयन तव सुन्दरी ।।
म्लान प्रदीप उषानिलचञ्चल, पाण्डुर शशधर गत-अस्ताचल,
मुछ आँखिजल, चल' सखि चल' अङ्गे नीलाञ्चल सम्वरि ।।
शरत-प्रभात निरामय निर्मल, शान्त समीरे कोमल परिमल,
निर्जन वनतल शिशिरसुशीतल, पुलकाकुल तरुवल्लरी ।
विरहशयने फेलि मलिन मालिका एस नव भुवने एस गो बालिका;
गाँथि लह अञ्चले नव शेफालिका, अलके नवीन फुलमञ्जरी ।।

१८९६

चानता हूँ; **तुमि......पारे**—तुम समुद्र-पार रहती हो; **तोमाय......राते**—तुम्हें शरद् के प्रात (और) वसन्त की रात में देखा है; **तोमाय......माझारे**—तुम्हें हृदय के भीतर देखा है; **आमि......गान**—मैंने आकाश में कान लगा कर तुम्हारा ही गान सुना है; **आमि....प्राण**—मैंने अपने प्राण तुम्हें सौंप दिए हैं; **भुवने......देशे**—(समस्त) भुवन का भ्रमण कर अन्त में मैं नवीन देश में आया हूँ; **आमि......द्वारे**—मैं तुम्हारे ही द्वार पर अतिथि हूँ।

१९. **जागि......विभावरी**—जाग कर रात्रि बीती; **मुछ......सम्वरि**—आँखों के जल को पोंछ कर, अंगों पर नील अञ्चल को संभाल कर चलो, सखि, चलो; **फेलि**—फेंक कर; **एस**—आओ; **गाँथि लह**—गूँथ लो।

२०

ओहे सुन्दर, मरि मरि,
तोमाय की दिये वरण करि ।।
तव फाल्गुन येन आसे
आजि मोर परानेर पाशे,
देय सुधारसधारे-धारे
मम अञ्जलि भरि भरि ।।
मधु समीर दिगञ्चले--
आने पुलकपूजाञ्जलि;
मम हृदयेर पथतले
येन चञ्चल आसे चलि ।
मम मनेर वनेर शाखे
येन निखिल कोकिल डाके,
येन मञ्जरीदीपशिखा
नील अम्बरे राखे धरि ।।

१८९६

२१

की रागिणी बाजाले हृदये मोहन, मनोमोहन,
ताहा तुमि जान हे, तुमि जान ।।

२०. **मरि मरि**—सौन्दर्य आदि को देख विस्मय, प्रशंसा आदि को सूचित करने वाला अव्यय; बलि जाऊँ, बलि जाऊँ; **तोमाय......करि**—क्या दे कर तुम्हें वरण करूँ; **तव......पाशे**—आज जैसे तुम्हारा फाल्गुन मेरे प्राणों के पास आता है; **पाशे**—पार्श्व में; **देय**—देता है; **भरि-भरि**—भर भर कर; **मधु...... पूजाञ्जलि**—मादक (वसन्त की) हवा दिशाओं के अञ्चल में पुलक रूपी पूजा की अञ्जलि लाती है; **येन......चलि**—जैसे चञ्चल चला आता है; **येन..... धरि**—जैसे नील आकाश मञ्जरी की दीपशिखा को सँजोए है।

२१. **की.....मोहन**—मनोमोहन, हृदय में कौन-सी मोहक रागिणी (तुमने) बजाई; **ताहा......जान**—वह तुम जानते हो; **चाहिले.....प्राण**—(मेरे) मुख

चाहिले मुखपाने, की गाहिले नीरवे,
किसे मोहिले मन प्राण,
ताहा तुमि जान हे, तुमि जान ।।
आमि शुनि दिवारजनी
तारि ध्वनि, तारि प्रतिध्वनि ।
तुमि केमने मरम परशिले मम,
कोथा हते प्राण केड़े आन,
ताहा तुमि जान हे, तुमि जान ।।

१८९६

२२

चित्त पिपासित रे
गीतसुधार तरे ।।
तापित शुष्कलता वर्षण याचे यथा
कातर अन्तर मोर लुण्ठित धूलि-'परे
गीतसुधार तरे ।।
आजि वसन्तनिशा, आजि अनन्त तृषा,
आजि ए जाग्रत प्राण तृषित चकोर-समान
गीतसुधार तरे ।।

की ओर देखा, नीरव कौन-सा गान गाया, (न-जाने) किस (मंत्र) से मन-प्राण को मोह लिया; **आमि....ध्वनि**—मैं रात दिन उसीकी ध्वनि सुनती हूँ; **तुमि......मम**—तुमने कैसे (मेरे) मर्म का स्पर्श किया; **कोथा......आन**—कहाँ से तुम प्राणों को छीन कर ले आते हो।

२२. **तरे**—के लिये; **तापित......तरे**—झुलसी हुई शुष्कलता जैसे वर्षा की याचना करती है, (उसी प्रकार) मेरा कातर हृदय गीतरूपी सुधा के लिये धूलि के ऊपर लुण्ठित है; **चन्द्र.....भवे**—चन्द्रमा, निद्राविहीन आकाश में—

चन्द्र अतन्द्र नभे जागिछे सुप्त भवे,
अन्तर बाहिर आजि काँदे उदास स्वरे
गीतसुधार तरे ।।

१८९६

२३

तोमार गोपन कथाटि सखी, रेखो ना मने ।
शुधु आमाय, बोलो आमाय गोपने ।।
ओगो धीरमधुरहासिनी, बोलो धीरमधुर भाषे—
आमि काने ना शुनिब गो, शुनिब प्राणेर श्रवणे ।।
यबे गभीर यामिनी, यबे नीरव मेदिनी,
यबे सुप्तिमगन विहगनीड़ कुसुमकानने,
बोलो अश्रुजड़ित कण्ठे, बोलो कम्पित स्मित हासे—
बोलो मधुरवेदनविधुर हृदये शरमनमित नयने ।।

१८९६

२४

तबु मने रेखो यदि दूरे याइ चले ।
यदि पुरातन प्रेम ढाका पड़े याय नवप्रेमजाले ।

सुप्त संसार में—जाग रहा है; **अन्तर......स्वरे**—आज अन्तर और बाहर उदास स्वर में रो रहे हैं।

२३. **तोमार......मने**—सखी, अपनी गोपन बात मन में न रखो; **शुधु...... गोपने**—केवल मुझसे, गुपचुप मुझसे कहो; **आमि......श्रवणे**—मैं कानों से नहीं सुनूँगा, अजी, प्राणों के श्रवण (कानों) से सुनूँगा; **यबे**—जब; **विधुर**—कातर; **शरमनमित नयने**—लज्जा से झुकी हुई आँखों से।

२४. **तबु......चले**—अगर दूर चला जाऊं तोभी याद रखना; **यदि...... जाले**—अगर पुराना प्रेम नये प्रेम के जाल से ढँक जाय; **यदि.....काछाकाछि**—

यदि थाकि काछाकाछि,
देखिते ना पाओ छायार मतन आछि ना आछि—
तबु मने रेखो।
यदि जल आसे आँखिपाते,
एक दिन यदि खेला थेमे याय मधुराते,
एक दिन यदि बाधा पड़े काजे शारद प्राते—
तबु मने रेखो।
यदि पड़िया मने
छलछलो जल नाइ देखा देय नयनकोणे—
तबु मने रेखो॥

१८९६

२५

तुमि येयो ना एखनि।
एखनो आछे रजनी॥
पथ विजन तिमिरसघन,
कानन कण्टकतरुगहन— आँधारा धरणी॥
बड़ो साधे ज्वालिनु दीप, गाँथिनु माला—
चिरदिने बँधु, पाइनु हे तव दरशन।

यदि निकट रहूँ; **देखिते......आछि**—छाया के समान हूँ या नहीं, यदि न देख पाओ; **यदि......पाते**—यदि नयन-पल्लवों में आँसू आएं; **थेमे याय**—थम जाय, रुक जाय; **यदि......कोणे**—याद आने पर (भी) अगर आँखों के कोने में छलछलाते हुए आँसू दिखाई न पड़ें।

२५. **तुमि......एखनि**—तुम अभी न जाना; **एखनो......रजनी**—अबी भी रात्रि (बाक़ी) है; **आँधारा**—अन्धकार पूर्ण; **बड़ो......दीप**—बड़ी साध से दीप जलाया था; **गाँथिनु माला**—माला गूँथी थी; **चिरदिने......दरशन**— हे बन्धु, बहुत दिनों में तुम्हारे दर्शन पाए; **आजि......पारे**—आज अकूल के पार

आजि याब अकूलेर पारे,
भासाब प्रेमपारावारे जीवनतरणी ।।

१८९६

२६

तुमि रबे नीरवे हृदये मम
निविड़ निभृत पूर्णिमानिशीथिनी-सम ।।
मम जीवन यौवन मम अखिल भुवन
तुमि भरिबे गौरवे निशीथिनी-सम ।।
जागिबे एकाकी तव करुण आँखि,
तव अञ्चलछाया मोरे रहिबे ढाकि ।
मम दुःखवेदन मम सफल स्वपन
तुमि भरिबे सौरभे निशीथिनी-सम ।।

१८९६

२७

बड़ो वेदनार मतो बेजेछ तुमि हे आमार प्राणे;
मन ये केमन करे मने मने ताहा मनइ जाने ।।
तोमारे हृदये क'रे आछि निशिदिन ध'रे;
चेये थाकि आँखि भ'रे मुखेर पाने ।।

जाऊँगी; **भासाब......तरणी**—जीवन की नौका प्रेम के समुद्र में बहा दूँगी ।

२६. **तुमि......मम**—नीरव तुम मेरे हृदय में रहोगी; **तुमि भरिबे**—तुम भरोगी; **जागिबे**—जागेगी; **तव......ढाकि**—तुम्हारे अञ्चल की छाया मुझे ढँके हुए रहेगी; **स्वपन**—स्वप्न ।

२७. **बड़ो......प्राणे**—बड़ी व्यथा के समान तुम मेरे प्राणों में कसक उठे हो; **मन......जाने**—मन कैसा करता है मन ही मन, इसे मन ही जानता है; **तोमारे......ध'रे**—रात दिन तुम्हें हृदय में रखे हुए हूँ; **चेये......पाने**—भर-

बड़ो आशा, बड़ो तृषा, बड़ो आकिञ्चन तोमारि लागि।
बड़ो सुखे, बड़ो दुखे, बड़ो अनुरागे रयेछि जागि।
ए जन्मेर मतो आर हये गेछे या हबार,
भेसे गेछे मन प्राण मरण-टाने ।।

१८९६

२८

से आसे धीरे
याय लाजे फिरे।
रिनिकि रिनिकि रिनिझिनि मञ्जु मञ्जु मञ्जीरे
रिनिझिनि-झिन्नीरे।
विकच नीपकुञ्जे निविड़ तिमिरपुञ्जे
कुन्तलफुलगन्ध आसे अन्तरमन्दिरे
उन्मद समीरे
शङ्कित चित कम्पित अति, अञ्चल उड़े चञ्चल।
पुष्पित तृणवीथि, झंकृत वनगीति—
कोमलपदपल्लवतलचुम्बित धरणीरे
निकुञ्जकुटीरे ।।

१८९६

आँख (तुम्हारे) मुख की ओर निहारता रहता हूँ; **बड़ो**—बड़ी; **बड़ो...... लागि**—तुम्हारे लिये बड़ी दयनीय (विनीत) कामना है; **बड़ो......जागि**—बड़े सुख, बड़े दुःख, बड़े अनुराग से (तुम्हारे लिये) जागा हुआ हूँ; **ए जन्मेर...... हबार**—जो कुछ होना था वह इस जन्म भर के लिये हो गया; **भेसे......टाने**—मृत्यु के खिंचाव से मन-प्राण बह गए हैं।

२८. **से......फिरे**—वह धीरे आती है और लज्जा से फिर जाती है; **मञ्जीर**—नूपुर; **कुन्तल......मन्दिरे**—कुन्तल (केश राशि) रूपी फूल का गन्ध हृदय रूपी मन्दिर में आता है।

२९

सखी, आमारि दुयारे केन आसिल
निशिभोरे योगी भिखारि।
केन करुणस्वरे वीणा बाजिल ।।
आमि आसि याइ यतबार चोखे पड़े मुख तार,
तारे डाकिब कि फिराइब ताइ भाबि लो ।।
श्रावणे आँधार दिशि, शरते विमल निशि,
वसन्ते दक्षिण वायु, विकशित उपवन—
कत भावे कत गीति गाहितेछे निति निति—
मन नाहि लागे काजे, आँखिजले भासि लो ।।

१८९६

३०

के उठे डाकि मम वक्षोनीड़े थाकि
करुण मधुर अधीर ताने विरहविधुर पाखि ।।
निविड़ छाया, गहन माया, पल्लवघन निर्जन वन—
शान्त पवने कुञ्जभवने के जागे एकाकी ।।
यामिनी विभोरा निद्राघनघोरा—
घन तमालशाखा निद्राञ्जन-माखा।

२९. **सखी......भिखारि**—सखी, योगी भिखारी (आज) प्रातः क्यों मेरे ही दरवाज़े पर आया; **केन......बाजिल**—क्यों करुणस्वर में वीणा बजी; **आमि ......तार**—मैं जितनी बार आती जाती हूँ उसका मुख दृष्टि में पड़ता है; **तारे...... लो**—सखि, उसको पुकारूँ या लौटाऊँ यही सोचती हूँ; **श्रावणे......दिशि**—सावन में दिशाएँ अँधेरी रहती हैं; **कत**—कितने; **गाहितेछे.....निति**—बराबर गा रहा है; **मन......काजे**—काम काज में मन नहीं लगता; **आँखि......लो**—सखि, आँखों के आँसुओं में बही जाती हूँ।

३०. **के......डाकि**—कौन पुकार उठता है; **थाकि**—रह कर; **पाखि**—पक्षी; **के जागे**—कौन जाग रहा है; **विभोरा**—विभोर, विह्वल; **निद्राञ्जन-**

स्तिमित तारा चेतनहारा, पाण्डु गगन तन्द्रामगन—
चन्द्र श्रान्त दिकभ्रान्त निद्रालस-आँखि ।।

१८९६

३१

केन नयन आपनि भेसे याय जले ।
केन मन केन एमन करे ।।
येन सहसा की कथा मने पड़े—
मने पड़े ना गो, तबु मने पड़े ।।
चारि दिके सब मधुर नीरव,
केन आमारि परान केँदे मरे ।
केन मन केन एमन केन रे ।।
येन काहार वचन दियेछे वेदन,
येन के फिरे गियेछे अनादरे—
बाजे तारि अयतन प्राणेर 'परे ।
येन सहसा की कथा मने पड़े—
मने पड़े ना गो, तबु मने पड़े ।।

१८९६

माखा—निद्रा का अञ्जन लेप किए हुए है; **स्तिमित**—निश्चल, जड़; **चेतनहारा**—संज्ञाहीन; **पाण्डु**—पीलापन मिला हुआ सफेद वर्ण ।

३१. **केन......जले**—आँखें क्यों अपने आप ही जल में बह जाती हैं; **केन.....करे**—क्यों, मन क्यों ऐसा करता है; **येन......पड़े**—जैसे सहसा जाने कौन-सी बात याद आती है; **मने......पड़े**—याद नहीं आती, तो भी याद आती है; **चारि दिके**—चारों ओर; **केन......मरे**—क्यों मेरे ही प्राण रो रो कर मरते हैं; **येन......वेदन**—जैसे किसी की बातों ने व्यथा दी है (व्यथा पहुँचाई है); **येन......अनादरे**—जैसे कोई अनादर के कारण लौट गया है; **बाजे......परे**—प्राणों में उसके प्रति की गई अवहेलना कसकती है ।

३२

आमि चाहिते एसेछि शुधु एकखानि माला
तव नव प्रभातेर नवीन शिशिर-ढाला ।।
हेरो शरमे-जड़ित कत-ना गोलाप कत-ना गरबि करबी,
ओगो, कत-ना कुसुम फुटेछे तोमार मालञ्च करि आला ।।
ओगो, अमल शरत-शीतल-समीर बहिछे तोमारि केशे,
ओगो किशोर अरुण-किरण तोमार अधरे पड़ेछे एसे ।
तव अञ्चल हते वनपथे फुल येतेछे पड़िया झरिया—
ओगो, अनेक कुन्द अनेक शेफालि भरेछे तोमार डाला ।।

१९००

३३

ओगो काङाल, आमारे काङाल करेछ, आरो की तोमार चाइ ।
ओगो भिखारि, आमार भिखारि, चलेछ की कातर गान गाइ' ।।
प्रतिदिन प्राते नव नव धने तुषिब तोमारे साध छिल मने—

३२. **आमि......ढाला**—मैं तुम्हारे नव प्रभात के नवीन ओस कणों से भीगी हुई केवल एक माला माँगने आया हूँ; **शरमे.....आला**—शरमाए हुए कितने गुलाब, कितने गरवीले कनेर के फूल और न-जाने कितने (प्रकार के) पुष्प तुम्हारी फुलवाड़ी को आलोकित किए हुए खिले हुए हैं; **बहिछे......केशे**—तुम्हारे केशों में बह रहा है; **तोमार......एसे**—तुम्हारे अधरों पर आ कर पड़ी है; **अञ्चल......झरिया**—वन के रास्ते में आँचल से फूल झड़कर गिरते जा रहे हैं; **अनेक......डाला**—अनेक कुन्द, अनेक शेफाली ने तुम्हारे फूलों की डलिया को भरा है।

३३. **काङाल**—कंगाल (नि:स्व); **ओगो......चाइ**—अजी ओ कंगाल, (तुमने) मुझे कंगाल बनाया है, और तुम्हें क्या चाहिए; **आमार भिखारि**—मेरे भिखारी; **चलेछ......गाइ**—कैसा कातर गान गाते हुए चले हो; **प्रतिदिन......मने**—मन में साध थी कि प्रतिदिन प्रात: नये नये धन से तुम्हें तुष्ट करूँगी; **पलके......नाइ**—पल भर में सभी कुछ चरणों में सौंप दिया

भिखारि आमार भिखारि,
हाय, पलके सकलइ सँपेछि चरणे, आर तो किछुइ नाइ ।।
आमि आमार बुकेर आँचल घेरिया तोमारे परानु बास ।
आमि आमार भुवन शून्य करेछि तोमार पुराते आशा ।
हेरो मम प्राण मन यौवन नव करपुटतले पड़े आछे तव—
भिखारि आमार भिखारि,
हाय, आरो यदि चाओ मोरे किछु दाओ, फिरे आमि दिब ताइ ।।
१९००

३४

केन बाजाओ काँकन कनकन कत छलभरे ।
ओगो घरे फिरे चलो कनककलसे जल भरे ।।
केन जले ढेउ तुलि छलकि छलकि कर खेला ।
केन चाह खने खने चकित नयने कार तरे कत छलभरे ।।
हेरो यमुना-वेलाय आलसे हेलाय गेल वेला,
यत हासिभरा ढेउ करे कानाकानि कलस्वरे कत छलभरे ।

है, अब और तो कुछ नहीं है; **आमि......बास**—अपनी छाती के आँचल से घेर कर मैंने तुम्हें वस्त्र पहनाया है; **आमि......आशा**—तुम्हारी आस पूरी करने के लिये मैंने अपने समस्त संसार को शून्य (रिक्त) कर दिया है; **करपुटतले...... तव**—तुम्हारे दोनों हाथों (मुट्ठी) में पड़ा हुआ है; **आरो......ताइ**—यदि और भी चाहते हो तो मुझे कुछ दो, मैं उसे ही लौटा दूँगी ।

३४. **केन......कनकन**—क्यों कंकण खनखन बजाती हो; **कत**—कितना; **छलभरे**—भान करती हुई; **ओगो......भरे**—अजी, सोने की कलशी जल से भर घर लौट चलो; **केन......खेला**—क्यों जल में लहरें उठा कर छल छल करती हुई क्रीड़ा कर रही हो; **केन......तरे**—क्षण-क्षण क्यों चौंकी हुई दृष्टि से किसकी बाट जोहती हुई देख रही हो; **हेरो......वेला**—देखो, यमुना के किनारे आलस और अवहेला से कितनी वेला गई (कितना समय बीत गया); **यत......कलस्वरे**—हँसी भरी जितनी लहरें हैं, कलकल स्वर में कानों-कान छल से बातें कर रही हैं; **हेरो......मेघमेला**—देखो, नदी के उस पार आकाश की

हेरो नदीपरपारे गगनकिनारे मेघमेला,
तारा हासिया हासिया चाहिछे तोमारि मुख'परे कत छलभरे ।।
१९००

३५

तुमि सन्ध्यार मेघमाला, तुमि आमार साधेर साधना,
मम शून्यगगनविहारी ।
आमि आपन मनेर माधुरी मिशाये तोमारे करेछि रचना—
तुमि आमारि, तुमि आमारि,
मम असीमगगनविहारी ।।

मम हृदयरक्तरागे तव चरण दियेछि राङिया,
अयि सन्ध्यास्वपनविहारी ।
तव अधर एँकेछि सुधाविषे मिशे मम सुखदुख भाङिया-
तुमि आमारि, तुमि आमारि,
मम विजनजीवनविहारी ।।

मम मोहेर स्वपन-अञ्जन तव नयने दियेछि पराये,
अयि मुग्धनयनविहारी ।

सीमा पर (क्षितिज में) मेघों का मेला लगा है; **तारा......'परे**—वे हँस हँस कर तुम्हारे ही मुख को निहार रहे हैं ।

३५. **तुमि......साधना**—तुम सन्ध्या की मेघमाला हो, तुम मेरी (एकान्त) साध की साधना हो; **आमि.....रचना**—अपने मन की मधुरिमा को मिला कर मैंने तुम्हारी रचना की है; **तुमि आमारि**—तुम मेरी ही हो; **रागे**—रंग से; **तव......राङिया**—तुम्हारे चरणों को रंग दिया है; **तव......भाङिया**—अपने सुख-दुःख को चूर्ण-विचूर्ण कर सुधा और विष मिला कर तुम्हारे अधरों का चित्रण किया है; **मम......पराये**—अपने मोह के सपनों का अञ्जन तुम्हारे नयनों में

मम संगीत तव अङ्गे अङ्गे दियेछि जड़ाये जड़ाये—
तुमि आमारि, तुमि आमारि,
मम जीवन-मरण-विहारी।

१९००

३६

भालोबेसे सखी, निभृते यतने
आमार नामटि लिखो—तोमार
मनेर मन्दिरे।
आमार पराने ये गान बाजिछे
ताहारि तालटि शिखो—तोमार
चरणमञ्जीरे॥
धरिया राखियो सोहागे आदरे
आमार मुखर पाखि—तोमार
प्रासादप्राङ्गणे।
मने क'रे सखी, बाँधिया राखियो
आमार हातेर राखि—तोमार
कनककङ्कणे॥
आमार लतार एकटि मुकुल
भुलिया तुलिया रेखो—तोमार
अलकबन्धने।

लगा दिया है; **मम......जड़ाये**—अपने संगीत से तुम्हारे अंग-अंग को आवृत कर दिया है।

३६. **भालोबेसे......मन्दिरे**—सखी, एकान्त में यत्न (सानुराग मनोयोग) से दुलार के साथ मेरा नाम अपने मन के मन्दिर में अंकित करना; **आमार...... मञ्जिरे**—मेरे प्राणों में जो गान ध्वनित हो रहा है उसी का ताल अपने चरण-नूपुरों में सीखना; **धरिया.....प्राङ्गणे**—अत्यन्त आदर और दुलार के साथ अपने प्रासाद-प्राङ्गण में मेरे मुखर पक्षी को पकड़ रखना; **मने......कङ्कणे**—याद कर के सखी, मेरे हाथ की राखी अपने सोने के कंकण में बाँध रखना; **आमार......बन्धने**—मेरी

आमार स्मरण-शुभ-सिन्दूरे
एकटि विन्दु एँको—तोमार
ललाटचन्दने।
आमार मनेर मोहेर माधुरी
माखिया राखिया दियो—तोमार
अङ्गसौरभे।
आमार आकुल जीवनमरण
टुटिया लुटिया नियो—तोमार
अतुल गौरवे ।।

१९००

३७

सखी, प्रतिदिन हाय एसे फिरे याय के।
तारे आमार माथार एकटि कुसुम दे ।।
यदि शुधाय के दिल, कोन् फुलकानने,
मोर शपथ, आमार नामटि बलिस ने ।।
सखी, से आसि धुलाय बसे ये तरुर तले
सेथा आसन बिछाये राखिस बकुलदले।

लता की एक कली को भूल से चुन कर अपनी अलकों के बन्धन (कवरी) में रखना; **आमार.....एँको**—मेरे स्मरण के शुभ सिन्दूर से एक बिन्दी अपने ललाट के चंदन पर अंकित करना; **आमार......सौरभे**—मेरे मन के मोह की माधुरी को अपने अङ्ग के सौरभ में प्रलेप कर रख देना; **टुटिया**—चूर्ण कर; **लुटिया नियो**—लूट लेना।

३७. **सखी......के**—सखी, हाय प्रतिदिन आ कर कौन लौट जाता है; **तारे......दे**—उसे मेरे सिर का एक फूल देना; **यदि......ने**—अगर पूछे कि किसने दिया, किस फूल-वन में, (तो) मेरी सौगंध, मेरा नाम न बतलाना; **सखी...... बकुलदले**—वह आ कर पेड़ के नीचे धूल में बैठता है, सखी, वहाँ बकुलदल का

से ये करुणा जागाय सकरुण नयने —
येन की बलिते चाय, ना बलिया याय से ।।

१९००

३८

आजि ये रजनी याय फिराइब ताय केमने ।
केन नयनेर जल झरिछे विफल नयने ।।
ए वेशभूषण लहो सखी, लहो, ए कुसुममाला हयेछे असह—
एमन यामिनी काटिल विरहशयने ।।
आमि वृथा अभिसारे ए यमुनापारे एसेछि,
बहि वृथा मन-आशा एत भालोबासा बेसेछि ।
शेषे निशिशेषे वदन मलिन, क्लान्तचरण, मन उदासीन,
फिरिया चलेछि कोन् सुखहीन भवने ।।
ओगो, भोला भालो तबे, काँदिया की हबे मिछे आर ।
यदि येते हल हाय प्राण केन चाय पिछे आर ।

आसन बिछा रखना; **से ये......नयने**—करुण नयनों से वह (हृदय में) करुणा जगाता है; **येन......से**—जैसे कुछ कहना चाहता है (लेकिन) बिना कहे वह चला जाता है।

३८. **आजि......केमने**—आज जो रजनी जा रही (समाप्त हो रही) है, उसे कैसे लौटाऊँगी; **केन......नयने**—आँखों का जल (अश्रु) क्यों विफल नयनों से बह रहा है; **ए.....असह**—सखी, यह वेशभूषा, यह अलंकार लो, यह कुसुम माला असह्य हो गई है; **एमन.....शयने**—ऐसी रात्रि विरह-शय्या पर कटी; **आमि......एसेछि**—मैं व्यर्थ के अभिसार के लिये इस यमुना के किनारे आई हूँ; **बहि......बेसेछि**—मन की वृथा आशा को वहन कर इतना अधिक प्यार किया है; **शेषे**—अन्त में; **निशिशेषे**—रात्रि के शेष में; **फिरिया......भवने**—किस आनन्द-हीन भवन की ओर लौट चली हूँ; **ओगो......आर**—अजी, (अगर) भूल जाना अच्छा है तब और व्यर्थ रोने से क्या होगा; **यदि......आर**—हाय, अगर जाना (ही) हुआ (लौटना ही पड़ा) तब प्राण पीछे की ओर और क्यों

कुञ्जदुयारे अबोधेर मतो रजनीप्रभाते बसे रब कत—
एबारेर मतो वसन्त गत जीवने ।।

१९०३

३९

केन सारा दिन धीरे धीरे
बालु निये शुधु खेल तीरे ।।
चले गेल वेला, रेखे मिछे खेला
झाँप दिये पड़ो कालो नीरे।
अकूल छानिये या पाओ ता निये
हेसे केँदे चलो घरे फिरे ।।
नाहि जानि मने की बासिया
पथे बसे आछे के आसिया।
की कुसुमवासे फागुनबातासे
हृदय दितेछे उदासिया।
चल् ओरे एइ ख्यापा बातासेइ
साथे निये सेइ उदासीरे ।।

१९०३

ताक रहे हैं; **अबोधेर मतो**—नासमझ की तरह; **रजनी......कत**—रात बीतने पर प्रभातकाल में और कितना बैठी रहूँगी; **एबारेर......जीवने**—इस बार के लिये जीवन से वसन्त चला गया।

३९. **केन**—क्यों; **बालु......तीरे**—बालू ले कर तीर पर केवल खेले ही जा रही हो; **चले......नीरे**—वेला ढल गई, व्यर्थ के खेल को रख (छोड़) काले जल में कूद पड़ो; **अकूल......फिरे**—अकूल को छान जो पाओ उसे ले कर हँसती-रोती घर लौट चलो; **नाहि......आसिया**—नहीं जानती, मन में क्या कामना ले कर रास्ते में कौन आ कर बैठा हुआ है; **की......उदासिया**—किन फूलों के गन्ध (तथा) फागुन की हवा से हृदय को उदास बना रहा है; **चल्....उदासिरे**—अरी, इसी पागल हवा में उस उदासीन को साथ ले कर चल पड़।

४०

मम यौवननिकुञ्जे गाहे पाखि—
सखि, जाग' जाग'।
मेलि राग-अलस आँखि—
अनु राग-अलस आँखि सखि, जाग' जाग'॥
आजि चञ्चल ए निशीथे
जाग' फागुनगुणगीते
अयि प्रथमप्रणयभीते,
मम नन्दन-अटवीते
पिक मुहु मुहु उठे डाकि—सखि, जाग' जाग'॥
जाग' नवीन गौरवे,
नव बकुलसौरभे,
मृदु मलयवीजने
जाग' निभृत निर्जने।
आजि आकुल फुलसाजे
जाग' मृदुकम्पित लाजे,
मम हृदयशयन-माझे
शुन मधुर मुरली बाजे
मम अन्तरे थाकि थाकि—सखि, जाग' जाग'॥

१९०३

४०. **गाहे पाखि**—पक्षी गाता है; **जाग'**—जागो; **मेलि**—खोल; **पिक......डाकि**—कोकिल बारबार पुकार उठता है; **फुलसाजे**—फूलों की सज्जा, फूलों का आभरण; **शुन**—सुनो; **शुन......जाग'**—सुनो, मेरे अन्तर में रह रह कर मधुर मुरली बजती है, सखी जागो, जागो।

४१

अलके कुसुम ना दियो, शुधु शिथिल कबरी बाँधियो।
काजलविहीन सजल नयने हृदयदुयारे घा दियो ।।
आकुल आँचले पथिकचरणे मरणेर फाँद फाँदियो—
ना करिया वाद मने याहा साध, निदया, नीरवे साधियो ।।
एसो एसो विना भूषणेइ, दोष नेइ ताहे दोष नेइ;
ये आसे आसुक ओइ तव रूप अयतन-छाँदे छाँदियो।
शुधु हासिखानि आँखिकोणे हानि उतला हृदय धाँदियो ।।

१९०४

४२

निशि ना पोहाते जीवनप्रदीप ज्वालाइया याओ प्रिया,
तोमार अनल दिया ।।
कबे याबे तुमि समुखेर पथे दीप्त शिखाटि बाहि
आछि ताइ पथ चाहि ।।

४१. **अलके....बाँधियो**—अलकों में कुसुम न देना, केवल कवरी को ढीला बाँधना; **काजल......दियो**—काजल-विहीन सजल आँखों से (मेरे) हृदय-द्वार पर थपकी देना; **आकुल......फाँदिये**—आकुल अंचल से पथिक के चरणों में मरण की फाँस लगाना; **ना.....साधियो**—बिना वाद-विवाद जो मन की साध हो (उसे) हे निठुरा, चुपचाप पूरी करना; **एसो......नेइ**—बिना भूषण के ही आओ, आओ, उस में दोष नहीं, (कोई) दोष नहीं; **ये......छाँदियो**—जो आवे, आवे, अपना वह रूप किसी प्रकार का प्रयास किये बिना (अयत्नज अलंकार से) ही सजाना; **शुधु......धाँदियो**—केवल आँखों के कोनों से हँसी का आघात कर आकुल हृदय को विमूढ़ करना।

४२. **निशि......दिया**—रात्रि समाप्त होने के पहले हे प्रिये, अपनी अग्नि द्वारा (मेरा) जीवन प्रदीप जलाती जाओ; **कबे......चाहि**—(न जाने) कब तुम सामने के पथ से जलती हुई शिखा ले कर जाओगी, इसीलिये रास्ता देख रहा हूँ;

पुड़िबे बलिया रयेछे आशाय आमार नीरव हिया
आपन आँधार निया ।।

१९०४

४३

आर नाइ रे वेला, नामल छाया धरणीते ।
एखन चल् रे घाटे कलसखानि भरे निते ।।
जलधारार कलस्वरे सन्ध्यागगन आकुल करे;
ओरे डाके आमाय पथेर 'परे सेइ ध्वनिते ।।
एखन विजन पथे करे ना केउ आसा याओया ।
ओरे, प्रेमनदीते उठेछे ढेउ, उतल हाओया ।
जानि ने आर फिरब किना, कार साथे आज हबे चिना—
घाटे सेइ अजाना बाजाय वीणा तरणीते ।।

१९०८

पुड़िबे......निया—जल जाएगा इसी आशा में मेरा नीरव हृदय अपने अंधकार को लिए हुए है ।

४३. **आर......वेला**—अब और वेला (समय) नहीं है; **नामल**—उतरी, झुकी; **एखन......निते**—अरी, अब कलशी भर लेने के लिये घाट पर चल; **जलधारा......करे**—जल की धारा का कल कल स्वर सन्ध्या के आकाश को आकुल करता है; **ओरे......ध्वनिते**—अरी, उसी ध्वनि से (वह) मुझे पथ पर बुलाता है ; **एखन......याओया**—इस समय एकान्त पथ पर कोई भी आता-जाता नहीं; **प्रेम......ढेउ**—प्रेमनदी में लहरें उठ रही हैं; **उतल हाओया**—हवा चंचल (है); **जानि......किना**—नहीं जानती और लौटूंगी या नहीं; **कार......चिना**—किसके साथ आज पहचान होगी; **घाटे......तरणीते**—घाट पर वही अपरिचित नौका में वीणा बजा रहा है ।

४४

आमि रूपे तोमाय भोलाब ना, भालोबासाय भोलाब;
आमि हात दिये द्वार खुलब ना गो, गान दिये द्वार खोलाब।
भराब ना भूषणभारे, साजाब ना फुलेर हारे;
सोहाग आमार माला क'रे गलाय तोमार दोलाब॥
जानबे ना केउ कोन् तुफाने तरङ्गदल नाचबे प्राणे;
चाँदेर मतन अलख टाने जोयारे ढेउ तोलाब॥

१९१०

४५

कोथा बाइरे दूरे याय रे उड़े हाय रे हाय,
तोमार चपल आँखि वनेर पाखि वने पालाय।
ओगो हृदये यबे मोहन रवे बाजबे बाँशि
तखन आपनि सेधे फिरबे केँदे, परबे फाँसि,
तखन घुचबे त्वरा घुरिया मरा हेथा होथाय—
आहा, आजि से आँखि वनेर पाखि वने पालाय॥

---

४४. **आमि......भोलाब**—मैं रूप से तुम्हें नहीं भुलाऊँगा, (अपने) प्यार से भुलाऊँगा; **आमि......खोलाब**—मैं हाथ से द्वार नहीं खोलूंगा, गान से द्वार खुलवाऊँगा; **भराब......भारे**—गहनों के भार से (तुम्हें) बोझिल नहीं करूंगा; **साजाब......हारे**—फूलों के हार से (तुम्हें) नहीं सजाऊँगा; **सोहाग......दोलाब**—अपने दुलार की माला बना कर तुम्हारे गले में झुलाऊँगा; **जानबे.....प्राणे**—कोई नहीं जानेगा कि किस तूफ़ान में प्राणों में तरंगें नाचेंगी; **चाँदेर......तोलाब**—चाँद के समान अलख आकर्षण से ज्वार की लहरें उठाऊँगा।

४५. **कोथा......उड़े**—कहाँ, बाहर दूर उड़ी जा रही हैं; **तोमार......पालाय**—तुम्हारी चंचल आँखों (रूपी) वन के पक्षी वन की ओर भागते हैं; **हृदये......बाँशि**—जब मोहने वाली आवाज़ में हृदय में बाँसुरी बजेगी; **तखन......फाँसि**—उस समय अपनी ही साध से (स्वयंप्रवृत्त हो कर) रोते लौटेंगे और फाँसी (का फंदा) पहन लेंगे; **तखन.....होथाय**—उस समय उतावली, अधीरता समाप्त हो जायगी, यहाँ वहाँ भटकते मरना बन्द हो जायगा;

चेये देखिस ना रे हृदयद्वारे के आसे याय,
तोरा शुनिस काने बारता आने दखिनबाय।
आजि फुलेर वासे सुखेर हासे आकुल गाने
चिर- वसन्त ये तोमारि खोँजे एसेछे प्राणे,
तारे बाहिरे खुँजि फिरिछ बुझि पागलप्राय—
तोमार चपल आँखि वनेर पाखि वने पालाय।।
१९१०

४६

खोलो खोलो द्वार, राखियो ना आर
बाहिरे आमाय दाँड़ाये।
दाओ साड़ा दाओ, एइ दिके चाओ,
एसो दुइ बाहु बाड़ाये।।
काज हये गेछे सारा, उठेछे सन्ध्यातारा।
आलोकेर खेया हये गेल दे'या
अस्तसागर पाराये।।
भरि लये झारि एनेछ कि वारि,
सेजेछ कि शुचि दुकूले।

चेये......याय—ताक कर देख ना, हृदय के द्वार पर कौन आता-जाता है; **तोरा......बाय**—तुम सुनना, दक्षिण पवन संदेश लाता है; **आजि......प्राणे**—आज फूल के गंध में, सुख की हँसी में, व्याकुल गान में चिरवसन्त तुम्हारी ही खोज में प्राणों में आया है; **तारे......प्राय**—लगता है, उसे पागल के समान बाहर खोजती फिर रही हो।

४६. **राखियो......दाँड़ाये**—मुझे और बाहर खड़ा कर न रखना; **दाओ**—दो; **साड़ा दाओ**—आह्वान का उत्तर दो; **एइ......चाओ**—इस ओर निहारो; **एसो......बाड़ाये**—दोनों बाँहें बढ़ा (फैला) कर आओ; **काज......तारा**—कामकाज समाप्त हो गया है, सन्ध्या का तारा उदित हुआ है; **आलोकेर......पाराये**—अस्तसागर को पार करके आलोक का खेवा देना समाप्त हो गया है; **भरि......वारि**—झारी भर कर क्या पानी लाई हो; **सेजेछ......दुकूले**—क्या पावन दुकूल से सज लिया है; **बेँधेछ......चुल**—केशों को क्या बाँधा है;

बेँधेछ कि चुल, तुलेछ कि फुल,
गेँथेछ कि माला मुकुले।
धेनु एल गोठे फिरे, पाखिरा एसेछे नीड़े,
पथ छिल यत जुड़िया जगत
आँधारे गियेछे हाराये।।

१९१०

४७

घरेते भ्रमर एल गुन्‌गुनिये।
आमारे कार कथा से याय शुनिये।।
आलोते कोन् गगने माधवी जागल वने
एल सेइ फुल-जागानोर खबर निये।
सारा दिन सेइ कथा से याय शुनिये।।
केमने रहि घरे, मन ये केमन करे,
केमने काटे ये दिन दिन गुनिये।
की माया देय बुलाये, दिल सब काज भुलाये,
वेला याय गानेर सुरे जाल बुनिये।
आमारे कार कथा से याय शुनिये।।

१९११

तुलेछ......फुल—क्या फूल चुने हैं; **गेँथेछ.....मुकुल**—कलियों की माला गूँथी है क्या; **धेनु.....नीड़े**—गायें गोष्ठ में लौट आईं, पक्षी नीड़ में आए; **पथ...... हाराये**—संसार-भर के जितने पथ थे (सब) अंधकार में खो गए हैं।

४७. **घरेते......शुनिये**—घर में गुनगुनाता भ्रमर आया, मुझे वह किसकी बात सुना जाता है; **आलोते**—आलोक से; **कोन्**—किस; **जागल**—जागी; **एल......निये**—वही फूलों को जगाने की खबर ले कर आया है; **सारा......शुनिये**—समस्त दिन वही बात वह सुना जाता है; **केमने......करे**—घर में कैसे रहूँ, मन जाने कैसा-कैसा करता है; **केमने......गुनिये**—दिन गिनते, दिन कैसे कटें; **की......बुलाये**—कैसा जादू का स्पर्श करा जाता है (कौन-सा जादू कर जाता है); **दिल......भुलाये**—(उसने) सभी कामकाज भुला दिए; **वेला......बुनिये**—गान के सुर का जाल बुनते वेला ढल जाती है।

४८

तुमि एकटु केवल बसते दियो काछे
आमाय शुधु क्षणेक-तरे।
आजि हाते आमार या-किछु काज आछे
आमि साङ्ग करब परे।।
ना चाहिले तोमार मुखपाने
हृदय आमार विराम नाहि जाने,
काजेर माझे घुरे बेड़ाइ यत
फिरि कूलहारा सागरे।।
वसन्त आज उच्छ्वासे निश्वासे
एल आमार वातायने।
अलस भ्रमर गुञ्जरिया आसे,
फेरे कुञ्जेर जागरणे।
आजके शुधु एकान्ते आसीन
चोखे चोखे चेये थाकार दिन;
आजके जीवन-समर्पणेर गान
गाब नीरव अवसरे।।

१९१४

४८. **तुमि.....तरे**—टुक क्षण भर के लिये केवल (अपने) पास मुझे बैठने देना; **आजि.....परे**—आज मेरे हाथों में जो कुछ भी कामकाज है उसे मैं बाद में पूरा करूँगा; **ना......जाने**—बिना तुम्हारे मुख की ओर देखे मेरा हृदय विश्राम नहीं जानता; **काजेर......सागरे**—कामकाज के भीतर जितना भटकता फिरता हूँ, (लगता है जैसे) कूल-हीन सागर में फिर रहा हूँ; **एल**—आया; **आमार**—मेरे; **गुञ्जरिया आसे**—गुञ्जार करता हुआ आता है; **फेरे**—फिरता है; **शुधु**—केवल; **आजके......दिन**—आज केवल एकान्त में बैठ आँखों में आँखें डाले रहने का दिन है; **गाब**—गाऊँगा; **अवसरे**—अवकाश में।

४९

अनेक पाओयार माझे माझे कबे कखन एकटुखानि पाओया,
सेइटुकुतेइ जागाय दखिन हाओया ।।
दिनेर परे दिन चले याय येन तारा पथेर स्रोतेइ भासा,
बाहिर हतेइ तादेर याओया आसा ।
कखन् आसे एकटि सकाल से येन मोर घरेइ बाँधे बासा,
से येन मोर चिरदिनेर चाओया ।।
हारिये-याओया आलोर माझे कणा कणा कुड़िये पेलेम यारे
रइल गाँथा मोर जीवनेर हारे ।
सेइ-ये आमार जोड़ा-देओया छिन्न दिनेर खण्ड आलोर माला
सेइ निये आज साजाइ आमार थाला—
एक पलकेर पुलक यत, एक निमेषेर प्रदीपखानि ज्वाला,
एकताराते आधखाना गान गाओया ।।

१९१८

४९. **अनेक......पाओया**—अनेक (कुछ) पाने के बीच-बीच में कब, किस समय थोड़ा-सा पाना (प्राप्ति); **सेइटुकुतेइ.....हाओया**—वही थोड़ा-सा (पाना) दक्षिण पवन को जगाता है; **दिनेर......भासा**—दिन पर दिन चले जाते हैं, जैसे वे (दिन) पथ के स्रोत में ही बह रहे हों; **बाहिर.....आसा**—बाहर से ही उन का आना-जाना (होता है); **कखन्......बासा**—किसी समय एक भोर वेला आती है वह जैसे मेरे घर में ही रहने का स्थान बनाती है; **से......चाओया**—वह जैसे मेरी चिरदिन की चाह (काम्य) हो; **हारिये......हारे**—खो जाने वाले प्रकाश के बीच कण-कण चुन कर जिसे पाया है वह मेरे जीवन के हार में गुँथा हुआ रह गया; **सेइ-ये**—वह जो; **जोड़ा-देओया**—जुड़े हुए (पैबन्द लगाए हुए); **छिन्न**—फटे हुए; **सेइ......थाला**—उसी को ले कर आज अपनी (पूजा की) थाली को सजाऊँ; **एक......यत**—एक क्षण का सारा पुलक; **एक...... ज्वाला**—एक निमेष के लिये दीपक जलाना; **एकताराते.....गाओया**—एकतारे में आधा गीत गाना ।

५०

आमार एकटि कथा बाँशि जाने, बाँशिइ जाने ।।
भरे रइल बुकेर तला, कारो काछे हय नि बला,
केवल बले गेलेम बाँशिर काने काने ।।
आमार चोखे घुम छिल ना गभीर राते,
चेये छिलेम चेये-थाका तारार साथे ।
एमनि गेल सारा राति, पाइ नि आमार जागार साथि—
बाँशिटिरे जागिये गेलेम गाने गाने ।।

१९१८

५१

एकदा तुमि, प्रिये, आमारि ए तरुमूले
बसेछ फुलसाजे से कथा ये गेछ भुले ।।
सेथा ये बहे नदी निरवधि से भोले नि,
तारि ये स्रोते आँका बाँका बाँका तव वेणी,
तोमारि पदरेखा आछे लेखा तारि कूले ।
आजि कि सबइ फाँकि—से कथा कि गेछ भुले ।।

---

५०. **आमार......जाने**—मेरी एक बात बाँसुरी जानती है, बाँसुरी ही जानती है; **भरे......बला**—हृदय के भीतर (अन्तस्तल में) भरी रही, किसीके निकट कही नहीं गई है; **केवल......काने**—केवल बाँसुरी के कानों में कह गया; **आमार......राते**—गभीर रात्रि में मेरी आँखों में नींद न थी; **चेये......साथे**—निहारने वाले तारे के साथ (मैं भी) निहार रहा था; **एमनि......साथि**—इसी प्रकार सारी रात (बीत) गई, (मैंने) अपने जागरण का साथी नहीं पाया; **बाँशिटिरे......गाने**—बाँसुरी को गानोंगानों में जगा गया ।

५१. **एकदा......भुले**—प्रिये, मेरे ही इस वृक्ष के नीचे फूलों का श्रृंगार किए कभी तुम बैठी हो, वह बात भूल ही गई हो; **सेथा......नि**—वहाँ निरन्तर जो नदी बहती है, वह नहीं भूली; **तारि......वेणी**—उसीके बाँके स्रोत में तुम्हारी वंकिम वेणी है; **तोमारि......कूले**—उसके किनारों में तुम्हारी ही पद-रेखा अंकित है; **आजि......फाँकि**—आज क्या सभी छलना है; **से......भुले**—यह बात

गेँथेछ ये रागिणी एकाकिनी दिने दिने
आजिओ याय व्येपे केँपे केँपे तृणे तृणे।
गाँथिते ये आँचले छायातले फुलमाला
ताहारि परशन हरषन- सुधा-ढाला
फागुन आजो ये रे खुँजे फेरे चाँपाफुले।
आजि कि सबइ फाँकि—से कथा कि गेछ भुले।।

१९१८

५२

कबे तुमि आसबे ब'ले रइब ना बसे, आमि चलब बाहिरे।
शुकनो फुलेर पातागुलि पड़तेछे खसे, आर समय नाहि रे।।
ओरे बातास दिल दोल, दिल दोल;
एबार घाटेर बाँधन खोल्, ओ तुइ खोल्।
माझ-नदीते भासिये दिये तरी बाहि रे।।
आज शुक्ला एकादशी, हेरो निद्राहारा शशी
ओइ स्वप्नपारावारेर खेया एकला चालाय बसि।
तोर पथ जाना नाइ, नाइवा जाना नाइ—

क्या भूल गई हो; **गेँथेछ......रागिणी**—जिस रागिणी को गूँथा है; **आजिओ ......तृणे**—आज भी (वह) काँप काँप कर तृण-तृण में व्याप्त हो जाती है; **गाँथिते......चाँपाफुले**—छाया तले जिस अंचल में (तुम) फूलों की माला गूँथतीं, हर्ष की सुधा से सिक्त उसी का स्पर्श फाल्गुन आज भी चम्पा के फूलों में खोजता फिर रहा है।

५२. **कबे......बाहिरे**—कब तुम आओगे (इसी आसरे) बैठा नहीं रहूँगा, मैं बाहर जाऊँगा; **शुकनो......नाहि रे**—सूखे फूलों की पखड़ियाँ झड़ कर गिर रही हैं, (अब) और समय नहीं है; **ओरे......दोल**—हवा आन्दोलित हुई है; **एबार......खोल्**—अब घाट का बंधन खोल, ओ तू खोल; **माझ......रे**—बीच नदी में नौका बहा कर खेऊँ; **हेरो.....शशी**—देखो, निद्रा-हीन चाँद; **ओइ......बसि**—उस स्वप्न-सागर का खेना अकेले बैठा चलाता है; **तोर......नाइ**—पथ तेरा जाना; आ नहीं है; **नाइवा......नाइ**—भले ही जाना नहीं है;

तोर नाइ माना नाइ, मनेर माना नाइ—
सबार साथे चलबि राते सामने चाहि रे ।।

१९१८

५३

धरा दियेछि गो आमि आकाशेर पाखि,
नयने देखिछि तव नूतन आकाश ।
दुखानि आँखिर पाते की रेखेछ ढाकि,
हासिले फुटिया पड़े उषार आभास ।।
हृदय उड़िते चाय होथाय एकाकी—
आँखितारकार देशे करिबारे वास ।
ओइ गगनेते चेये उठियाछे डाकि—
होथाय हाराते चाय ए गीत-उच्छ्वास ।।

१९१९

तोर.....नाइ—तेरे लिये मनाही नहीं है; **मनेर......नाइ**—मन की मनाही नहीं है; **सबार......चाहि रे**—सामने (की ओर) देखते हुए रात में सबके साथ चलना।

५३. **धरा....पाखि**—मैं आकाश का पक्षी, मैं पकड़ाई दे गया हूँ (पकड़ में आ गया हूँ); **नयने......आकाश**—तुम्हारे नयनों में मैंने नया आकाश देखा है; **दुखानि......ढाकि**—दो आँखों की पलकों में (तुमने) क्या ढक (छिपा) रखा है; **हासिले......आभास**—हँसने पर उषा का आभास प्रस्फुटित हो उठता है (खिल उठता है); **हृदय......एकाकी**—हृदय वहाँ एकाकी (अकेला) उड़ना चाहता है; **आँखि......वास**—आँखों के तारों के देश में वास करना (चाहता है); **ओइ......उच्छ्वास**—यह गीत-उच्छ्वास उस गगन को देखता हुआ पुकार उठा है (और) वहाँ खो जाना चाहता है।

५४

आज सबार रङे रङ मिशाते हबे।
ओगो आमार प्रिय, तोमार रङिन उत्तरीय
परो परो परो तबे ।।
मेघ रङे रङे बोना, आज रविर रङे सोना,
आज आलोर रङ ये बाजल पाखिर रवे ।।
आज रङ-सागरे तुफान ओठे मेते।
यखन तारि हाओया लागे तखन रङेर मातन जागे
काँचा सबुज धानेर खेते।
सेइ रातेर स्वपन-भाङा आमार हृदय होक-ना राङा
तोमार रङेरइ गौरवे ।।

१९१९

५५

के आमारे येन एनेछे डाकिया, एसेछि भुले।
तबु एकबार चाओ मुख-पाने नयन तुले ।।
देखि ओ नयने निमेषेर तरे से दिनेर छाया पड़े कि ना पड़े,

५४. **आज......हबे**—आज सभी के रंग में रंग मिलाना होगा; **ओगो......तबे**—अजी ओ मेरे प्रियतम, तब अपने रंगीन उत्तरीय को धारण करो; **मेघ.....बोना**—मेघ नाना रंगों से बुना हुआ है; **आज.....सोना**—आज सूर्य के रंग में सोना है; **आज......रवे**—आज प्रकाश का रंग पक्षियों के कलरव में ध्वनित हुआ है; **आज......मेते**—आज रंग-सागर में तूफ़ान मत्त हो उठा है; **यखन......लागे**—जब उसीकी हवा लगती है; **तखन......खेते**—तब रंग की मस्ती कच्चे हरे धान के खेत में जाग उठती है; **सेइ......भाङा**—वह (मेरा हृदय) जिसके रात के सपने टूट गए हैं; **आमार......राङा**—मेरा हृदय रंग जाय ना; **तोमार......गौरवे**—तुम्हारे ही रंग के गौरव में।

५५. **के.....भुले**—कौन जैसे मुझे पुकार कर लाया है, (मैं) भूल कर आया हूँ; **तबु......तुले**—तो भी एक बार आँखें उठा कर मेरे मुख की ओर देखो; **देखिओ......पड़े**—देखूं, उन आँखों में क्षण भर के लिये उस दिन की छाया पड़ती

सजल आवेगे आँखिपाता-दुटि पड़े कि ढुले।
क्षणेकेर तरे भुल भाङायोना, एसेछि भुले।।
व्यथा दिये कबे कथा कयेछिले पड़े ना मने,
दूरे थेके कबे फिरे गियेछिले नाइ स्मरणे।
शुधु मने पड़े हासिमुखखानि, लाजे बाधो-बाधो सोहागेर वाणी,
मने पड़े सेइ हृदय-उछ्वास नयनकूले।
तुमि ये भुलेछ भुले गेछि, ताइ एसेछि भुले।।
काननेर फुल एरा तो भोले नि, आमरा भुलि।
एइ तो फुटेछे पाताय पाताय कामिनीगुलि।
चाँपा कोथा हते एनेछे धरिया अरुणकिरण कोमल करिया,
बकुल झरिया मरिबारे चाय काहार चुले।
केह भोले केउ भोले ना ये, ताइ एसेछि भुले।।
एमन करिया केमने काटिबे माधवीराति।
दखिनबातासे केह नाहि पाशे साथेर साथि।
चारि दिक हते बाँशि शोना याय, सुखे आछे यारा तारा गान गाय—

है या नहीं; **सजल......ढुले**—सजल व्याकुलता से दोनों आखों की पलकें क्या ढुलक पड़ती हैं; **क्षणेकेर......भुले**—क्षण भर के लिये (मेरी) भूल न तुड़ाना, भूल कर (ही) आया हूँ; **व्यथा.....मने**—व्यथा पहुँचाने वाली बात (तुमने) कब कही थी, याद नहीं आता; **दूरे......स्मरणे**—दूर से (ही) कब लौट गई थीं स्मरण नहीं आता; **शुधु......वाणी**—केवल हँसी से भरा मुख, लज्जा से अटकी-अटकी प्यार-दुलार भरी बातें याद आती हैं; **मने पड़े**—याद आता है; **सेइ**—वह; **उछ्वास**—उच्छ्वास; **तुमि......भुले**—(यह) भूल गया हूँ कि तुम (मुझे) भूल गई हो, इसलिये भूल कर आया हूँ; **काननेर.....गुलि**—कानन के फूल—ये तो भूले नहीं, हमलोग (ही) भूल जाते हैं, यही तो पत्तों-पत्तों में कामिनी खिली हुई है; **चाँपा......करिया**—चम्पा कहाँ से सूर्य की अरुणिम किरणों को कोमल बना कर पकड़ लाया है; **बकुल.....चुले**—बकुल झड़ कर किसकी केशराशि में मर मिटना चाहता है; **केह.....भुले**—कोई भूल जाता है, कोई भूलता जो नहीं, इसीलिये भूल कर आया हूँ; **एमन......राति**—इस प्रकार वसन्त की रात कैसे कटेगी; **दखिन......साथि**—दक्षिण-वायु में बगल में कोई साथ का संगी नहीं है; **चारि ......याय**—चारों ओर से बाँसुरी सुन पड़ती है; **सुखे......गाय**—जो सुख में हैं

आकुल बातासे, मदिर सुबासे, विकच फुले,
एखनो कि केँदे चाहिबे ना केउ आसिले भुले ।।

१९१९

५६

से ये बाहिर हल आमि जानि,
वक्षे आमार बाजे ताहार पथेर वाणी ।।
कोथाय कबे एसेछे से सागरतीरे, वनेर शेषे,
आकाश करे सेइ कथारइ कानाकानि ।।
हाय रे, आमि घर बेँधेछि एतइ दूरे,
ना जानि तार आसते हबे कबे कत घुरे ।
हिया आमार पेते रेखे साराटि पथ दिलेम ढेके,
आमार व्यथाय पड़ुक ताहार चरणखानि ।।

१९१९

५७

आकाशे आज कोन् चरणेर आसा-याओया ।
बातासे आज कोन् परशेर लागे हाओया ।।

वे गान गाते हैं; **आकुल......भुले**—आकुल हवा, मदिर सुगंध, खिले हुए फूलों में भूल कर आने पर अब भी क्या कोई आँसू भरकर नहीं निहारेगा ?

५६. **से.....जानि**—वह जो बाहर हुआ (निकला) सो मैं जानती हूँ; **वक्षे......वाणी**—मेरे वक्ष में उसके पथ की वाणी ध्वनित होती है; **कोथाय......शेषे**—सागर के तट पर, वन के छोर पर कब, कहाँ वह आया; **आकाश......कानाकानि**—आकाश इसी बात की कानाफूसी कर रहा है; **आमि.....दूरे**—मैंने इतनी दूर घर बाँधा है; **ना......घुरे**—न जाने कब कितना घूम कर उसे आना होगा; **हिया......ढेके**—अपने हृदय को बिछा कर (मैंने) सारा पथ ढँक दिया है; **आमार......खानि**—मेरी व्यथा पर उसके चरण पड़ें।

५७. **आकाशे......याओया**—आकाश में आज किन चरणों की आवाजाही है; **बातासे......हाओया**—वातास में आज किस स्पर्श की हवा लग रही है;

अनेक दिनेर बिदायवेलार व्याकुल वाणी
आज उदासीर बाँशिर सुरे के देय आनि—
 वनेर छायाय तरुण चोखेर करुण चाओया ।।
कोन् फागुने ये फुल फोटा हल सारा
मौमाछिदेर पाखाय पाखाय काँदे तारा ।
 बकुलतलाय काज-भोला सेइ कोन् दुपुरे
 से-सब कथा भासिये दिलेम गानेर सुरे
 व्यथाय भरे फिरे आसे से गान-गाओया ।।

१९२२

५८

आसा-याओयार पथेर धारे गान गेये मोर केटेछे दिन ।
याबार वेलाय देब कारे बुकेर काछे बाजल ये वीण ।।
 सुरगुलि तार नाना भागे रेखे याब पुष्परागे,
 मीड़गुलि तार मेघेर रेखाय स्वर्णलेखाय करब विलीन ।।
किछु वा से मिलनमालाय युगलगलाय रइबे गाँथा,
किछु वा से भिजिये देबे दुइ चाहनिर चोखेर पाता ।

बिदायवेलार—बिदाई के समय की; **उदासीर......सुरे**—उदासीन की बाँसुरी के सुर में; **के......आनि**—कौन ला देता है; **वनेर छायाय**—वन की छाया में; **चाओया**—देखना, दृष्टि; **कोन्......सारा**—किस फाल्गुन में फूलों का खिलना समाप्त हुआ; **मौमाछिदेर......तारा**—मधुमक्खियों के पंखों में वे क्रन्दन कर रहे हैं; **बकुल......दुपुरे**—बकुल वृक्ष के नीचे कामकाज को भुला देने वाली उस कौन-सी दुपहरिया में; **से......सुरे**—गानों के सुर में वे सभी बातें बहा दीं; **व्यथाय......गाओया**—वह गीत गाना व्यथा से भर कर लौट आता है ।

५८. **आसा......दिन**—आने जाने के रास्ते के किनारे गान गा कर मेरे दिन कटे हैं; **याबार......वीण**—हृदय के पास जो बीन (वीणा) बजी, जाने के समय (उसे) किसे दूंगा; **सुरगुलि......रागे**—उसके सुरों को नाना खंडों में पुष्पों के रंगों में रख जाऊँगा; **मीड़......विलीन**—उसकी मीड़ों को मेघों की रेखाओं में स्वर्णांकित कर विलीन करूँगा; **किछु......गाँथा**—कुछ तो मिलन की माला में दो (प्रेमियों के) गले में गुँथी रहेगी; **किछु......पाता**—कुछ दो

किछु वा कोन् चैत्रमासे बकुल-ढाका वनेर घासे
मनेर कथार टुकरो आमार कुड़िये पावे कोन् उदासीन ।।

१९२२

५९

एइ कथाटि मने रेखो, तोमादेर एइ हासिखेलाय
आमि ये गान गेयेछिलेम जीर्ण पाता झरार वेलाय ।।
शुकनो घासे शून्य वने आपन-मने
अनादरे अवहेलाय
आमि ये गान गेयेछिलेम जीर्ण पाता झरार वेलाय ।।
दिनेर पथिक मने रेखो, आमि चलेछिलेम राते
सन्ध्याप्रदीप निये हाते ।
यखन आमाय ओ पार थेके गेल डेके भेसेछिलेम भाङा भेलाय ।
आमि ये गान गेयेछिलेम जीर्ण पाता झरार वेलाय ।।

१९२२

६०

फिरबे ना ता जानि,
आहा, तबु तोमार पथ चेये ज्वलुक प्रदीपखानि ।

चितवनों की पलकों को भिगो जायगी; **किछु वा**—अथवा कुछ; **कोन् चैत्रमासे**—किस चैत्र मास में; **बकुल......घासे**—बकुल (के फूलों) से ढँकी वन की घास में; **मनेर......आमार**—मेरे मन की बातों के टुकड़े; **कुड़िये पाबे**—चुन पाएगा; **कोन् उदासीन**—कोई उदासीन।

५९. **एइ.....वेलाय**—यह बात याद रखना कि जीर्ण पत्तों के झड़ने के समय तुमलोगों के इस हँसी-खेल में मैंने गान गाए थे; **शुकनो घासे**—सूखी हुई घास पर; **आमि......हाते**—मैं सन्ध्याप्रदीप हाथ में ले कर रात्रि में चला था; **यखन ......भेलाय**—जब वह उस पार से मुझे पुकार गया (जब उसने मुझे उस पार से पुकारा), मैं टूटे हुए भेलक (बेड़े) पर (जल में) बह चला था।

६०. **फिरबे......जानि**—लौटोगे नहीं यह जानती हूँ; **तबु......खानि**—

गाँथबे ना माला जानि मने,
आहा, तबु धरुक मुकुल आमार बकुलवने
प्राणे ओइ परशेर पियास आनि ।।
कोथाय तुमि पथभोला,
तबु थाक्-ना आमार दुयार खोला ।
रात्रि आमार गीतहीना,
आहा, तबु बाँधुक सुरे बाँधुक तोमार वीणा—
तारे घिरे फिरुक काङाल वाणी ।।

१९२२

६१

दीप निबे गेछे मम निशीथसमीरे,
धीरे धीरे एसे तुमि येयो ना गो फिरे ।।
ए पथे यखन याबे आँधारे चिनिते पाबे—
रजनीगन्धार गन्ध भरेछे मन्दिरे ।।
आमारे पड़िबे मने कखन से लागि
प्रहरे प्रहरे आमि गान गेये जागि ।

तो भी तुम्हारा पंथ निहारते प्रदीप जलता रहे; **गाँथबे......मने**—माला नहीं गूँथोगे, मन ही मन जानती हूँ; **तबु......आनि**—तो भी प्राणों में उस स्पर्श की प्यास ला मेरे बकुल वन में कलियाँ लगती रहें; **कोथाय......भोला**—रास्ता भूले हुए तुम (न-जाने) कहाँ (हो); **तबु......खोला**—तो भी मेरा द्वार खुला रहे ना; **तबु......वीणा**—तो भी तुम्हारी वीणा सुर मिलाए रहे; **तारे...... वाणी**—उसे घेर कर निःस्व-याचक वाणी घूमती फिरे ।

६१. **दीप......गेछे**—दीप बुझ गया है; **धीरे.....फिरे**—धीरे धीरे आ कर अजी, तुम लौट न जाना; **ए....पाबे**—इस रास्ते जब जाओगे, अंधकार में पहचान पाओगे; **रजनी......मन्दिरे**—रजनीगन्धा का गन्ध मंदिर (कक्ष) में भरा है; **आमारे......जागि**—जाने किस समय मुझे याद कर बैठो, इसीलिये मैं प्रहर-प्रहर गान गाती हुई जागती रहती हूँ; **भय......पाते**—भय होता है कि कहीं रात्रि के

भय पाछे शेष राते घुम आसे आँखिपाते,
क्लान्त कण्ठे मोर सुर फुराय यदि रे ।।

१९२२

६२

राते राते आलोर शिखा राखि ज्वेले
घरेर कोणे आसन मेले ।।
बुझि समय हल एबार आमार प्रदीप निबिये देबार—
पूर्णिमाचाँद, तुमि एले ।।
एत दिन से छिल तोमार पथेर पाशे
तोमार दरशनेर आशे ।
आज तारे येइ परशिबे याक से निबे, याक से निबे—
या आछे सब दिक से ढेले ।।

१९२२

६३

तार बिदायवेलार मालाखानि आमार गले रे
दोले दोले बुकेर काछे पले पले रे ।।
गन्ध ताहार क्षणे क्षणे जागे फागुनसमीरणे
गुञ्जरित कुञ्जतले रे ।।

अन्त में आँखों की पलकों में नींद न आ जाय; **क्लान्त.....यदि**—क्लान्त कण्ठ में मेरा सुर कहीं समाप्त न हो जाय।

६२. **राते.....मेले**—घर के कोने में आसन बिछा कर रात-रात भर दीप-शिखा जलाए रखती हूँ; **बुझि....एले**—पूर्णिमा के चाँद, तुम आए, लगता है अपना प्रदीप बुझा देने का अब समय हो गया; **एत.....आशे**—तुम्हारे दर्शन की आशा में तुम्हारे रास्ते के किनारे इतने दिनों से वह था; **आज.....निबे**—आज जैसे ही उसका स्पर्श करोगे (आज तुम्हारे स्पर्श करते ही) वह बुझ जाय; **या......ढेले**—जो कुछ है सब वह ढाल दे।

६३. **तार......पले रे**—मेरे गले में उसकी बिदाई के समय की माला पल-पल (मेरे) हृदय के पास डोलती है; **ताहार**—उसका; **बिनेर......वनान्तरे**

दिनेर शेषे येते येते पथेर 'परे
छायाखानि मिलिये दिल वनान्तरे।
सेइ छाया एइ आमार मने, सेइ छाया ओइ काँपे वने,
काँपे सुनील दिगञ्चले रे ।।

१९२२

६४

आमार मन चेये रय मने मने हेरे माधुरी।
नयन आमार काङाल हये मरे ना घुरि ।।
चेये चेये बुकेर माझे गुञ्जरिल एकतारा ये—
मनोरथेर पथे पथे बाजल बाँशुरि।
रूपेर कोले ओइ-ये दोले अरूप माधुरी ।।
कूलहारा कोन् रसेर सरोवरे मूलहारा फुल भासे जलेर 'परे।
हातेर धरा धरते गेले ढेउ दिये ताय दिइ ये ठेले—
आपन-मने स्थिर हये रइ, करि ने चुरि ।।
धरा देओयार धन से तो नय, अरूप माधुरी ।।

१९२५

—दिन की समाप्ति पर पथ पर जाते-जाते (दूर) अन्य वन में (उसने अपनी) छाया विलीन कर दी; **सेइ......रे**—वही छाया मेरे मन में है, वही छाया उस वन में, नील वर्ण के दिगञ्चल में काँप रही है।

६४. **आमार.....मने**—मेरा मन मन-ही-मन निहारता रहता है; **हेरे**—देखता है; **नयन......घुरि**—मेरी आँखें याचक हो भटकती हुई मरती नहीं; **चेये.....माझे**—हृदय के भीतर देखते देखते; **गुञ्जरिल**—गुञ्जरित हुआ; **बाजल**—बजी; **बाँशुरि**—बाँसुरी; **रूपेर......माधुरी**—रूप की गोद में वह अरूप माधुरी डोल रही है; **कूलहारा......परे**—तट-हीन किस रस के सरोवर में जड़-हीन फूल जल के ऊपर बह रहा है; **हातेर......ठेले**—इसीलिये हाथों से पकड़ने जा कर उसे लहरों से और भी ठेल देता हूँ; **आपन.....चुरि**—अपने आप में स्थिर हो कर रहता हूँ, चोरी नहीं करता; **धरा......माधुरी**—वह पकड़ाई देने वाला धन तो नहीं है, अरूप माधुरी है।

६५

एबार उजाड़ करे लओ हे आमार या-किछु सम्बल।
फिरे चाओ, फिरे चाओ, फिरे चाओ ओगो चञ्चल॥
चैत्ररातेर वेलाय नाहय एक प्रहरेर खेलाय
आमार स्वपनस्वरूपिणी प्राणे दाओ पेते अञ्चल॥
यदि एइ छिल गो मने,
यदि परम दिनेर स्मरण घुचाओ चरम अयतने,
तबे भाङा खेलार घरे नाहय दाँड़ाओ क्षणेक-तरे—
सेथा धुलाय धुलाय छड़ाओ हेलाय छिन्न फुलेर दल॥

१९२५

६६

केन आमाय पागल करे यास ओरे चले-याओयार दल।
आकाशे बय बातास उदास, परान टलोमल।
प्रभाततारा दिशाहारा, शरतमेघेर क्षणिक धारा—
सभा-भाङार शेष वीणाते तान लागे चञ्चल

६५. **एबार......सम्बल**—मेरा जो कुछ सम्बल है (उसे) इस बार निःशेष कर लो; **फिरे चाओ**—फिर कर ताको; **ना हय**—न हो; **एक......खेलाय**—पहर भर के खेल में; **दाओ......अञ्चल**—अञ्चल बिछा (फैला) दो; **यदि......मने**—अजी, अगर यही तुम्हारे मन में था; **यदि......अयतने**—यदि परम दिवस की स्मृति को अत्यन्त अवहेलना से मिटाती हो; **तबे......तरे**—तब टूटे हुए खेल-घर (क्रीड़ा गृह) में ही न हो टुक क्षण भर के लिये ठहरो; **सेथा......दल**—वहाँ धूलि में छिन्न फूलों की पंखुड़ियों को अवहेलना के साथ बिखराओ।

६६. **केन......दल**—अरे, ओ चले जाने वालों के दल, क्यों (तू) मुझे पागल कर जाता है; **आकाशे.....टलोमल**—उदास हवा आकाश में बहती है, प्राण चंचल, डगमग हैं; **दिशाहारा**—दिगभ्रान्त; **सभा-भाङार**—सभा भंग होने की;

नागकेशरेर झरा केशर धुलार साथे मिता।
गोधूलि से रक्त-आलोय ज्वाले आपन चिता।
शीतेर हाओयाय झराय पाता, आम्‌लकि-वन मरण-माता,
विदायबाँशिर सुरे विधुर साँझेर दिगञ्चल।।

१९२५

६७

दिनशेषेर राङा मुकुल जागल चिते।
संगोपने फुटबे प्रेमेर मञ्जरीते।।
मन्दबाये अन्धकारे दुलबे तोमार पथेर धारे,
गन्ध ताहार लागबे तोमार आगमनीते—
फुटबे यखन मुकुल प्रेमेर मञ्जरीते।।
रात येन ना वृथा काटे प्रियतम हे—
एसो एसो प्राणे मम, गाने मम हे।
एसो निविड़ मिलनक्षणे रजनीगन्धार कानने,
स्वपन हये एसो आमार निशीथिनीते—
फुटबे यखन मुकुल प्रेमेर मञ्जरीते।।

१९२५

धुलार साथे—धूल के साथ; **धुलार.....मिता**—धूल के साथ मिताई जोड़ी है; **गोधूलि......चिता**—गोधूलि उस रक्त-आलोक में अपनी चिता जलाती है; **शीतेर......माता**—शीत (काल) की हवा पत्ते झराती है, आँवले का वन मरण (के लिये) मत्त है; **विदाय......दिगञ्चल**—संध्या का दिगञ्चल बिदाई की बाँसुरी के स्वर से विकल है।

६७. **दिन......चिते**—दिन की समाप्ति का लाल मुकुल (कली) चित्त में जागा; **संगोपने......मञ्जरीते**—गोपन रूप से प्रेम की मञ्जरी में खिलेगा; **बाये**—वायु में; **दुलबे......धारे**—तुम्हारे पथ के किनारे झूमेगा; **गन्ध...... आगमनीते**—तुम्हारी अगवानी में उसका गन्ध लगेगा; **यखन**—जब; **रात...... हे**—हे प्रियतम, ऐसा हो कि रात व्यर्थ न कटे; **एसो**—आओ; **स्वपन...... निशीथिनीते**—मेरी गहन रात्रि में स्वप्न हो कर आओ।

६८

वेदनाय भरे गियेछे पेयाला, नियो हे नियो ।
हृदय बिदारि हये गेल ढाला, पियो हे पियो ।।
भरा से पात्र तारे बुके क'रे बेड़ानु बहिया सारा राति धरे,
लओ तुले लओ आजि निशिभोरे, प्रिय हे प्रिय ।।
वासनार रङे लहरे लहरे रङिन हल ।
करुण तोमार अरुण अधरे तोलो हे तोलो ।
ए रसे मिशाक तव निश्वास नवीन उषार पुष्पसुवास—
एरि 'परे तव आँखिर आभास दियो हे दियो ।।

१९२५

६९

द्वारे केन दिले नाड़ा ओगो मालिनी ।
कार काछे पाबे साड़ा ओगो मालिनी ।।
तुमि तो तुलेछ फुल, गेँथेछ माला, आमार आँधार घरे लेगेछे ताला ।
खुँजे तो पाइ नि पथ, दीप ज्वालि नि ।।

६८. **वेदनाय......नियो**—वेदना से प्याला भर गया है, लेना, हे, लेना; **हृदय......पियो**—हृदय को विदीर्ण कर ढालना हो गया, पियो, हे, पियो; **भरा..... धरे**—उस भरे हुए पात्र को छाती से लगाए सारी रात वहन किए घूमता रहा; **लओ......लओ**—लो, उठा लो; **आजि**—आज; **वासनार......हल**—वासना के रंग से लहर-लहर रंगीन हो गई; **तोलो**—उठाओ; **अधरे तोलो**—अधरो से लगाओ; **ए......मिशाक**—इस रस में घुल जाय; **एरि......दियो**—इसी के ऊपर अपनी आँखों की आभा डालना, हे, डालना; **आभास**—क्षीण अथवा अस्पष्ट प्रकाश ।

६९. **द्वारे......नाड़ा**—द्वार पर (तुमने) क्यों धक्का दिया; **कार...... साड़ा**—किसके पास अपनी पुकार का प्रत्युत्तर पाओगी; **तुमि......ताला**— तुमने तो फूल चुने हैं, माला गूँथी है, मेरे अंधेरे घर में ताला लगा है; **खुंजे......नि**—खोजने पर तो रास्ता नहीं पाया, (मैंने) दीपक नहीं जलाया;

ओइ देखो गोधूलिर क्षीण आलोते
दिनेर शेषेर सोना डोबे कालोते।
आँधार निविड़ हले आसियो पाशे, यखन दूरेर आलो ज्वाले आकाशे
असीम पथेर राति दीपशालिनी ॥

१९२५

७०

ना, ना गो ना,
कोरो ना भावना—
यदि वा निशि याय याब ना, याब ना ॥
यखनि चले याइ आसिब ब'ले याइ;
आलोछायार पथे करि आनागोना ॥
दोलाते दोले मन मिलने विरहे ॥
बारे बारेइ जानि, तुमि तो चिर हे।
क्षणिक आड़ाले बारेक दाँड़ाले
मरि भये भये पाब कि पाब ना ॥

१९२५

ओइ......कालोते—वह देखो, गोधूलि के क्षीण आलोक में दिन के अंत का सोना (सुनहला रंग) कालिमा में डूबता है; **आँधार......पाशे**—अन्धकार गहन होने पर पास आना; **यखन......आकाशे**—जब दूर का आलोक आकाश में जलाती है।

७०. **कोरो......भावना**—चिन्ता न करना (उद्विग्न न होना); **यदि ......याय**—अगर रात्रि बीत ही जाय; **याब ना**—जाऊँगा नहीं; **यखनि...... याइ**—जब भी चला जाता हूँ; **आसिब......याइ**—आऊँगा इसीलिये जाता हूँ; **आलोछायार......आनागोना**—प्रकाश और छाया के पथ में आवाजाही करता हूँ; **दोलाते......मन**—झूले पर मन झूलता है; **बारे......चिर हे**—बार बार (यही) जानता हूँ, तुम तो चिर (नित्य) हो; **क्षणिक......पाबना**—क्षण भर के लिये ओट में एक बार (भी) खड़े होते हो तो भय से मरता रहता हूँ कि पाऊँगा या नहीं।

७१

भरा थाक् स्मृतिसुधाय विदायेर पात्रखानि।
मिलनेर उत्सवे ताय फिराये दियो आनि।।
विषादेर अश्रुजले नीरवेर मर्मतले
गोपने उठुक फ'ले हृदयेर नूतन वाणी।।
ये पथे येते हबे से पथे तुमि एका—
नयने आँधार रबे, धेयाने आलोकरेखा।
सारा दिन संगोपने सुधारस ढालबे मने
परानेर पद्मवने विरहेर वीणापाणि।।

१९२५

७२

ये दिन सकल मुकुल गेल झरे
आमाय डाकले केन गो, एमन करे।।
येते हबे ये पथ बेये शुकनो पाता आछे छेये,
हाते आमार शून्य डाला की फुल दिये देब 'भरे।।
गानहारा मोर हृदयतले
तोमार व्याकुल बाँशि की ये बले।

७१. **भरा......पात्रखानि**—बिदाई का पात्र स्मृति की सुधा से भरा रहे; **मिलनेर......आनि**—मिलन के उत्सव में उसे ला कर लौटा देना; **उठुक फ'ले**—फल उठे; **ये......एका**—जिस पथ से जाना होगा उस पथ में तुम अकेले हो; **नयने......रेखा**—आँखों में अन्धकार रहेगा, ध्यान में प्रकाश की रेखा; **ढालबे मने**—मन में ढालेगी; **परानेर**—प्राणों के।

७२. **ये.....झरे**—जिस दिन सभी कलियाँ झर गईं; **आमाय......करे**—मुझे इस प्रकार (तुमने) क्यों पुकारा; **येते......छेये**—जिस पथ से हो कर जाना होगा (उसपर) सूखी पत्तियाँ छाई हुई हैं; **हाते......भरे**—मेरे हाथों में शून्य डलिया है, किस फूल से (उसे) भर दूँगा; **गानहारा**—गानहीन; **गानहारा..... बले**—संगीत विहीन मेरे अन्तस्तल में तुम्हारी व्याकुल बाँसुरी (न-जाने) क्या

नेइ आयोजन, नेइ मम धन, नेइ आभरण, नेइ आवरण—
रिक्त बाहु एइ तो आमार बाँधबे तोमाय बाहुडोरे ।।

१९२५

७३

यखन भाङल मिलन-मेला
भेबेछिलेम भुलब ना आर चक्षेर जल फेला ।।
दिने दिने पथेर धुलाय माला हते फुल झरे याय—
जानि ने तो कखन एल विस्मरणेर वेला ।।
दिने दिने कठिन हल कखन् बुकेर तल ।
भेबेछिलेम, झरबे ना आर आमार चोखेर जल ।
हठात् देखा पथेर माझे, कान्ना तखन थामे ना ये—
भोलार तले तले छिल अश्रुजलेर खेला ।।

१९२५

७४

यदि हल याबार क्षण
तबे याओ दिये याओ शेषेर परशन ।।

कहती है; **नेइ**—नहीं है; **रिक्त.....डोरे**—मेरी ये सूनी भुजाएँ तुम्हें भुजाओं की डोरी में बाँधेंगी ।

७३. **यखन.....मेला**—जब मिलन-मेला समाप्त हुआ; **भेबेछिलेम.....फेला**—सोचा था (अब) और आँखों से आँसू बहाना नहीं भूलूंगा; **दिने......याय** दिन-दिन पथ की धूल में माला से फूल झरते जाते हैं; **जानि......वेला**—नहीं जानता, कब विस्मृति की वेला आई; **दिने......तल**—दिन-दिन कब हृदयतल कठिन (कठोर) हुआ; **भेबेछिलेम......जल**—सोचा था (अब) और मेरी आँखों से आँसू नहीं बहेंगे; **हठात्.....ना ये**—अकस्मात् पथ के बीच दर्शन हुए, उस समय रुलाई रोके नहीं रुकी; **भोलार......खेला**—भूलने के नीचे अश्रुजल का खेल (चल रहा) था ।

७४. **यदि......परशन**—यदि जाने का समय हो गया हो तो जाओ (किंतु)

बारे बारे येथाय आपन गाने स्वपन भासाइ दूरेर पाने,
माझे माझे देखे येयो शून्य वातायन—
से मोर शून्य वातायन ।।
वनेर प्रान्ते ओइ मालतीलता
करुण गन्धे कय की गोपन कथा ।
ओरइ डाले आर श्रावणेर पाखि स्मरणखानि आनबे ना कि,
आज—श्रावणेर सजल छायाय विरह मिलन—
आमादेर विरह मिलन ।।

१९२५

७५

हे क्षणिकेर अतिथि,
एले प्रभाते कारे चाहिया
झरा शेफालिर पथ बाहिया ।
कोन् अमरार विरहिणीरे चाह नि फिरे,
कार विषादेर शिशिरनीरे एले नाहिया ।।
ओगो अकरुण, की माया जान,
मिलनछले विरह आन ।

अन्तिम स्पर्श देते जाओ; **बारे......पाने**—बार-बार जहाँ अपने गान में दूर की ओर स्वप्न तिराता हूँ; **माझे......वातायन**—बीच-बीच में (उस) सूने वातायन को देख जाना; **प्रान्त**—सीमा; **ओइ**—वह; **करुण......कथा**—करुण गन्ध से कौन सी गोपन बात कहती है; **ओरइ......ना कि**—उसीकी डाल पर फिर श्रावण का पक्षी स्मृति को नहीं लाएगा क्या; **छायाय**—छाया में; **आमादेर**—हम-लोगों का ।

७५. **क्षणिकेर**—क्षण भर के; **एले......बाहिया**—किसे देख झरी हुई शेफालिका के रास्ते हो कर प्रभात में आए; **कोन्.....फिरे**—किस अमरावती की विरहिणी को फिर कर नहीं देखा; **कार.....नाहिया**—किसके विषाद के ओसकणों में नहा कर आए; **की......जान**—कौन-सा जादू जानते हो; **मिलन......आन**—

चलेछ पथिक आलोकयाने आँधार-पाने
मनभुलानो मोहन-ताने गान गाहिया ।।

१९२५

७६

तोमाय गान शोनाब ताइ तो आमाय जागिये राख
ओगो घुम-भाङानिया ।
बुके चमक दिये ताइ तो डाक
ओगो दुख-जागानिया ।।
एल आँधार घिरे, पाखि एल नीड़े,
तरी एल तीरे--
शुधु आमार हिया विराम पाय नाको
ओगो दुख-जागानिया ।।
आमार काजेर माझे माझे
कान्नाधारार दोला तुमि थामते दिले ना ये ।
आमाय परश क'रे प्राण सुधाय भ'रे
तुमि याओ ये सरे--
बुझि आमार व्यथार आड़ालेते दाँड़िये थाक
ओगो दुख-जागानिया ।।

१९२६

मिलन के मिस विरह लाते हो; **आँधार पाने**—अन्धकार की ओर; **मन-भुलानो**—मन को मुग्ध करने वाली; **गाहिया**—गाते हुए ।

७६. **तोमाय......राख**—तुम्हें गान सुनाऊँगा, इसीलिये तो मुझे जगा रखती हो; **ओगो**—अजी ओ; **घुम-भाङानिया**—निद्रा भंग करने वाली (नींद उचाटने वाली); **बुके......डाक**—हृदय को चौंका कर इसीलिये तो तुम पुकारती हो; **दुख-जागानिया**—दु:ख जगाने वाली; **आमार.......ना ये**—मेरे कामकाज के बीच-बीच में क्रन्दन की वर्षा के हिल्लोल को तुमने थमने जो नहीं दिया; **आमार......सरे**—मुझे स्पर्श कर प्राणों में सुधा भर तुम अलग चली जाती हो; **बुझि......थाक**—लगता है, मेरी व्यथा की ओट में (तुम) खड़ी रहती हो ।

७७

निशीथे की कये गेल मने की जानि, की जानि ।
से कि घुमे, से कि जागरणे की जानि, की जानि ।।
नाना काजे नाना मते फिरि घरे, फिरि पथे--
से कथा कि अगोचरे बाजे क्षणे क्षणे । की जानि, की जानि ।।
से कथा कि अकारणे व्यथिछे हृदय, एकि भय, एकि जय ।
से कथा कि काने काने बारे बारे कय 'आर नय' 'आर नय' ।
से कथा कि नाना सुरे बले मोरे 'चलो दूरे'--
से कि बाजे बुके मम, बाजे कि गगने । की जानि, की जानि ।।
१९२६

७८

यखन एसेछिले अन्धकारे
चाँद ओठे नि सिन्धुपारे ।।
हे अजाना, तोमाय तबे जेनेछिलेम अनुभवे--
गाने तोमार परशखानि बेजेछिल प्राणेर तारे ।।

७७. **निशीथे......जानि**—अर्धरात्रि को मन में क्या कह गया, क्या जानूं, क्या जानूं; **से......जानि**—वह नींद में (कह गया) या जागरण में, क्या जानूं, क्या जानूं; **नाना......क्षणे**—नाना कामकाज में, नाना प्रकार से घर में, (बाहर) रास्ते में फिरता हूँ, वह बात क्या अगोचर में क्षण-क्षण ध्वनित होती है; **से...... हृदय**—वह बात क्या बिना कारण हृदय को व्यथा पहुँचा रही है; **एकि**—यह क्या; **से कथा......नय**—वह बात क्या बार बार कानों में कहती है 'और नहीं' 'और नहीं'; **से......दूरे**—वह बात क्या नाना सुरों में मुझसे कहती है 'दूर चलो'; **से......गगने**—वह क्या मेरी छाती में कसक रही है, या आकाश में ध्वनित हो रही है।

७८. **यखन.....पारे**—जब तुम अन्धकार में आए थे, (तब) सागर-पार चाँद नहीं निकला था; **हे अजाना......अनुभवे**—हे अपरिचित, तब तुम्हें अनुभव से जाना था; **गाने......तारे**—गानों में तुम्हारा स्पर्श प्राणों के तारों में बजा था;

तुमि गेले यखन एकला चले
चाँद उठेछे रातेर कोले।
तखन देखि, पथेर काछे माला तोमार पड़े आछे—
बुझेछिलेम अनुमाने ए कण्ठहार दिले कारे।।

१९२६

७९

भालोबासि, भालोबासि—
एइ सुरे काछे दूरे जले स्थले बाजाय बाँशि।
आकाशे कार बुकेर माझे व्यथा बाजे,
दिगन्ते कार कालो आँखि आँखिर जले याय गो भासि।।
सेइ सुरे सागरकूले बाँधन खुले
अतल रोदन उठे दुले।
सेइ सुरे बाजे मने अकारणे
भुले-याओया गानेर वाणी, भोला दिनेर काँदन-हासि।।

१९२६

तुमि......कोले—तुम जब अकेले चले गए, (तब) रात्रि की गोद में चाँद निकल आया था; **तखन......आछे**—तब देखती हूँ, रास्ते के पास तुम्हारी माला पड़ी हुई है; **बुझेछिलेम......कारे**—अनुमान से समझा था, यह कण्ठहार (तुम) किसे दे गए।

७९. **भालोबासि......बाँशि**—प्यार करता हूँ, प्यार करता हूँ, इसी सुर में पास, दूर, जल में, स्थल में (कोई) बाँसुरी बजाता है; **आकाशे......बाजे**—आकाश में किसके हृदय में व्यथा कसक रही है; **दिगन्ते......भासि**—दिगन्त में किसकी काली आँखें आँखों के जल में बह जा रही हैं; **सेइ......दुले**—उसी सुर में सागर के किनारे बन्धन खोल अतल रोदन दोलायित होता है; **सेइ......हासि**—उसी सुर में भूले हुए गान की वाणी, भूले हुए दिनों के क्रन्दन और हास्य अकारण मन में बज उठते हैं।

८०

जानि तुमि फिरे आसिबे आबार, जानि ।
तबु मने मने प्रबोध नाहि ये मानि ।।
बिदायलगने धरिया दुयार ताइ तो तोमाय बलि बारबार
'फिरे एसो, एसो, बन्धु आमार,' वाष्पविभल वाणी ।।
याबार वेलाय किछु मोरे दियो दियो
गानेर सुरेते तव आश्वास, प्रिय ।
वनपथे यबे याबे से क्षणेर हयतो वा किछु रबे स्मरणेर,
तुलि लब सेइ तव चरणेर दलित कुसुमखानि ।।

१९२८

८१

दिये गेनु वसन्तेर एइ गानखानि—
वरष फुराये याबे, भुले याबे जानि ।।
तबु तो फाल्गुनराते ए गानेर वेदनाते
आँखि तव छलोछलो, एइ बहु मानि ।।

८०. **जानि......जानि**—जानता हूँ तुम फिर लौट कर आओगे, जानता हूँ; **तबु......मानि**—तौभी मन में सान्त्वना नहीं पाता; **बिदायलगने...... बारबार**—बिदाई की वेला में दरवाजा पकड़े हुए इसीलिये तो तुमसे बारबार कहता हूँ; **'फिरे......आमार'**—लौट आओ, लौट आओ, ओ मीत मेरे; **वाष्पविभल**—वाष्प-गद्‌गद, वाष्पविह्वल; **याबार......दियो**—जाने के समय मुझे कुछ देना, देना; **गानेर......आश्वास**—गान के सुर में अपना आश्वास; **वनपथे......स्मरणेर**—वनपथ से जब जाओगे, उस क्षण की याद के रूप में हो सकता है कि कुछ रह जाय; **तुलि......कुसुमखानि**—तुम्हारे चरणों से दलित उस फूल को उठा लूंगी।

८१. **दिये......गानखानि**—वसन्त का यह गान (मैं) दे गया; **वरष**—वर्ष; **फुराये याबे**—समाप्त हो जायगा; **भुले......जानि**—जानता हूँ भूल जाओगे; **तबु......मानि**—तौभी तो फाल्गुन की रात में इस गान की व्यथा से तुम्हारी

चाहि ना रहिते बसे फुराइले वेला,
तखनि चलिया याब शेष हले खेला।
आसिबे फाल्गुन पुन, तखन आबार शुनो
नव पथिकेरइ गाने नूतनेर वाणी ।।

१९२८

८२

मने रबे कि ना रबे आमारे से आमार मने नाइ।
क्षणे क्षणे आसि तव दुयारे, अकारणे गान गाइ ।।
चले याय दिन, यतखन आछि पथे येते यदि आसि काछाकाछि
तोमार मुखेर चकित सुखेर हासि देखिते ये चाइ—
ताइ अकारणे गान गाइ ।।
फागुनेर फुल याय झरिया फागुनेर अवसाने—
क्षणिकेर मुठि देय भरिया, आर किछु नाहि जाने।
फुराइबे दिन, आलो हबे क्षीण, गान सारा हबे, थेमे याबे वीणा,

आँखें छलछलाई हुई हैं, इसे ही बहुत (यथेष्ट) मानता हूँ; **चाहि......वेला**—समय चुक जाने पर बैठा नहीं रहना चाहता; **तखनि......खेला**—खेल समाप्त होने पर उसी समय चला जाऊँगा; **आसिबे**—आएगा; **पुन**—पुनः, फिर; **तखन.....शुनो**—तब फिर सुनना; **नव पथिकेरइ**—नव पथिक के ही; **गाने**—गान में।

८२. **मने......आमारे**—मेरी याद रहेगी या नहीं रहेगी; **से......नाइ**—यह मुझे याद नहीं; **क्षणे......गाइ**—क्षण-क्षण तुम्हारे द्वार पर आता हूँ (और) अकारण गान गाता हूँ; **चले......दिन**—दिन बीत जाते हैं; **यतखन आछि**—जितने समय हूँ; **पथे......काछाकाछि**—राह चलते यदि पास आऊँ; **तोमार......चाइ**—तुम्हारे मुख की विस्मित सुख की हँसी को देखना जो चाहता हूँ; **ताइ**—इसीलिये; **फागुनेर......अवसाने**—फाल्गुन की समाप्ति पर फाल्गुन के फूल झर जाते हैं; **मुठि......भरिया**—मुट्ठी भर देते हैं; **आर......जाने**—और कुछ नहीं जानते; **फुराइबे**—समाप्त होगा; **आलो**—आलोक; **हबे**—होगा; **गान......वीणा**—गान पूरा होगा, वीणा थम जायगी;

यतखन थाकि भरे दिबे ना कि ए खेलारइ भेलाटाइ—
ताइ अकारणे गान गाइ ।।

१९२८

८३

याबार वेला शेष कथाटि याओ बले,
कोन्खाने ये मन लुकानो दाओ बले ।।
चपल लीला छलनाभरे वेदनखानि आड़ाल करे,
ये वाणी तव हय नि बला नाओ बले ।।
हासिर बाणे हेनेछ कत श्लेषकथा,
नयनजले भरो गो आजि शेष कथा ।
हाय रे अभिमानिनी नारी, विरह हल द्विगुण भारि
दानेर डालि फिराये निते चाओ ब'ले ।।

१९२८

८४

सकरुण वेणु बाजाये के याय विदेशी नाये,
ताहारि रागिणी लागिल गाये ।।

यतखन......भेलाटाइ—जितने दिन हूँ, इस खेल-खेल के बेड़े को ही सही, भर नहीं दोगे क्या ।

८३. **याबार......बले**—जाने के समय अन्तिम बात कह जाओ; **कोन्-खाने......बले**—कहाँ (तुम्हारा) मन छिपा हुआ है, कह दो; **वेदन......करे**—वेदना को ओट बना कर; **ये......बले**—तुम्हारी जो बात कही नहीं गई, (उसे) कह लो; **हासिर......कथा**—कितनी श्लेष भरी बातें (तुमने) हँसी के बाण से निक्षिप्त की हैं; **नयन......कथा**—आज (अपनी) अन्तिम बात नयनों के जल से पूर्ण करो; **हल**—हुआ; **भारि**—भारी; **दानेर.....ब'ले**—दान की डलिया लौटा लेना चाहती हो, इसलिये ।

८४. **सकरुण......नाये**—करुण बाँसुरी बजाता कौन विदेशी, नौका पर जा रहा है; **ताहारि......गाये**—उसीकी रागिणी देह में लगी;

से सुर बाहिया भेसे आसे कार सुदूर विरहविधुर हियार
अजाना वेदना, सागरवेलार अधीर बाये
वनेर छाये ।।

ताइ शुने आजि विजन प्रवासे हृदय-माझे
शरत्‌शिशिरे भिजे भैरवी नीरवे बाजे ।
छवि मने आने आलोते ओ गीते— येन जनहीन नदीपथटिते
के चलेछे जले कलस भरिते अलस पाये
वनेर छाये ।।

११२८

८५

केन रे एतइ याबार त्वरा—
वसन्त, तोर हयेछे कि भोर गानेर भरा ।।
एखनि माधवी फुरालो कि सबइ,
वनछाया गाय शेष भैरवी—
निल कि विदाय शिथिल करवी वृन्तझरा ।।

से......वेदना—उस सुर में बहती किसके सुदूर विरह-कातर हिया की अज्ञात वेदना तिर आती है; **सागर......बाये**—सागर-तट की अधीर वायु में; **वनेर छाये**—वनकी छाया में; **ताइ.....बाजे**—उसीको सुन कर आज जनशून्य प्रवास में शरद् के ओसकणों से भीगी हुई भैरवी हृदय में नीरव बज रही है; **छवि......गीते**—आलोक और गीत से मन में (यह) चित्र ला देती है; **येन...... छाये**—जैसे जनहीन नदी की ओर जाने वाले पथ पर वन की छाया में कौन मन्थर गति से कलशी भरने चली है।

८५. **केन......त्वरा**—अरे, जाने की इतनी उतावली ही क्यों; **तोर...... भरा**—गीतों की तेरी भारवाही नौका क्या भर चुकी है; **एखनि......सबइ**—अभी ही क्या माधवी के सभी फूल चुक गए; **वनछाया.....भैरवी**—वनछाया अन्तिम भैरवी गाती है; **निल......झरा**—वृन्तच्युत शिथिल करवी (कनेर) ने

एखनि तोमार पीत उत्तरी दिबे कि फेले
तप्त दिनेर शुष्क तृणेर आसन मेले।
विदायेर पथे हताश बकुल
कपोतकूजने हल ये आकुल,
चरणपूजने झराइछे फुल वसुन्धरा ।।

१९२९-३२

८६

कार चोखेर चाओयार हाओयाय दोलाय मन,
ताइ केमन हये आछिस साराक्षण।
हासि ये ताइ अश्रुभारे नोओया,
भावना ये ताइ मौन दिये छोँओया,
भाषाय ये तोर सुरेर आवरण ।।
तोर पराने कोन् परशमणिर खेला,
ताइ हृद्गगने सोनार मेघेर मेला।

क्या विदा ले ली; **एखनि......मेले**—गर्म दिनों की सूखी घास का आसन फैला कर क्या अभी ही अपने पीले उत्तरीय को उतार फेंकोगे; **बिदायेर ......आकुल**—विदाई के पथ पर निराश बकुल कपोतकूजन से आकुल है; **चरण.......वसुन्धरा**—चरणों की पूजा के लिये वसुन्धरा फूल झिरा रही है।

८६. **कार......मन**—किसकी आँखों की चितवन रूपी हवा मन को दोलायमान कर रही है; **ताइ......क्षण**—इसीलिये सब समय कैसे-कैसे हो रहे हो; **हासि......नोओया**—इसीलिये तो हँसी आँसुओं के भार से झुकी हुई है; **भावना......छोँओया**—इसीलिये चिन्ता को मौन का स्पर्श लगा है; **भाषाय......आवरण**—तेरी भाषा पर सुर का आवरण (छाया) है; **तोर..... खेला**—तेरे प्राणों में किस पारस-मणि का खेल (चल रहा) है; **ताइ...... मेला**—जिस कारण हृदय के आकाश में सुनहले मेघों का मेला लगा है;

दिनेर स्रोते ताइ तो पलकगुलि
ढेउ खेले याय सोनार झलक तुलि,
कालोय आलोय काँपे आँखिर कोण ।।

१९२९-३२

८७

दिन परे याय दिन, बसि पथपाशे
गान परे गाइ गान वसन्तवातासे ।।
फुराते चाय ना बेला, ताइ सुर गेँथे खेला—
रागिणीर मरीचिका स्वप्नेर आभासे ।।
दिन परे याय दिन, नाइ तव देखा ।
गान परे गाइ गान, रइ बसे एका ।
सुर थेमे याय पाछे ताइ नाहि आस काछे—
भालोबासा व्यथा देय यारे भालोबासे ।।

१९२९-३२

८८

दे पड़े दे आमाय तोरा की कथा आज लिखेछे से ।
तार दूरेर वाणीर परशमानिक लागुक आमार प्राणे एसे ।।

दिनेर.....तुलि—इसीलिये तो जितने भी क्षण हैं वे दिन के स्रोत में सुनहली आभा झलका कर लहरें उठा रहे हैं; **कालोय**—कालिमा में; **आलोय**—आलोक में; **काँपे**—काँपते हैं; **आँखिर कोण**—आँखों के कोने।

८७. **दिन......दिन**—दिन पर दिन जाते हैं; **बसि......बातासे**—वसन्त की हवा में रास्ते के किनारे बैठ कर गान पर गान गाए जाता हूँ; **फुराते...... बेला**—समय बीतना नहीं चाहता; **ताइ......खेला**—इसीलिये सुर गूँथ कर खेल (चल रहा है); **नाइ......देखा**—तुम्हारे दर्शन नहीं; **रइ......एका**—अकेला बैठा रहता हूँ; **सुर......काछे**—कहीं सुर न थम जाय इसीलिये (तुम) पास नहीं आते; **भालोबासा.....भालोबासे**—प्यार (उसे ही) व्यथा देता है जिसे प्यार करता है।

८८. **दे......से**—तुमलोग पढ़ दो (मुझे पढ़ कर सुना दो), आज उसने कौनसी बात लिखी है; **तार......एसे**—दूर से उसकी वाणी की पारस-मणि

शस्यखेतेर गन्धखानि एकला घरे दिक से आनि,
क्लान्तगमन पान्थ हाओया लागुक आमार मुक्तकेशे ।।
नील आकाशेर सुरटि निये बाजाक आमार विजन मने,
धूसर पथेर उदास वरन मेलुक आमार वातायने ।
सूर्य डोबार राङा वेलाय छड़ाब प्राण रङेर खेलाय,
आपन-मने चोखेर कोणे अश्रु-आभास उठबे भेसे ।।

१९२९-३२

८९

आमाय याबार वेलाय पिछु डाके
भोरेर आलो मेघेर फाँके फाँके ।।
  बादलप्रातेर उदास पाखि ओठे डाकि
  वनेर गोपन शाखे शाखे, पिछु डाके ।।
भरा नदी छायार तले छुटे चले—
खोँजे काके, पिछु डाके ।

मेरे प्राणों को आ कर छुए; **शस्य......आनि**—अन्न वाले खेत का गन्ध वह (मेरे इस) एकान्त घर में ला दे; **क्लान्त......केशे**—थकित गति से चलने वाली बटोही-हवा मेरे खुले केशों में लगे; **नील......मने**—नीले आकाश के सुर को ले कर मेरे एकान्त मन में बजावे; **बरन**—वर्ण, रंग; **मेलुक**—प्रसारित कर दे; **डोबार**—डूबने की; **राङा**—लाल; **वेलाय**—वेला में; **छड़ाब......खेलाय**—रंगों के खेल में प्राणों को बिखेर दूंगा; **आपन......कोणे**—अपने-आप आँखों के कोनों में; **अश्रु......भेसे**—आँसुओं की झलक तिर उठेगी।

८९. **आमाय**—मुझे; **याबार वेलाय**—जाने के समय; **पिछु**—पीछे से; **डाके**—पुकारता है ('पिछु डाका'—आगे जाते हुए व्यक्ति को पीछे से बुलाना); **आलो**—आलोक; **फाँक**—व्यवधान, संधि; **पाखि**—पक्षी; **ओठे डाकि**—पुकार उठता है; **भरा......डाके**—भरी हुई नदी (वन की) छाया-तले दौड़ी जाती है, (पता नहीं) किसे खोजती है, (किसे) पीछे से पुकारती है;

आमार प्राणेर भितर से के थेके थेके
विदायप्रातेर उतलाके पिछु डाके ।।

१९२९-३२

९०

नूपुर बेजे याय रिनिरिनि ।
आमार मन कय, चिनि चिनि ।।
गन्ध रेखे याय मधुबाये माधवीवितानेर छाये छाये,
धरणी शिहराय पाये पाये, कलसे कङ्कणे किनिकिनि ।
पारुल शुधाइल, के तुमि गो, अजाना काननेर मायामृग ।
कामिनी फुलकुल बरषिछे, पवन एलोचुल परशिछे,–
आँधारे तारागुलि हरषिछे, झिल्लि झनकिछे झिनिझिनि ।।

१९२९-३२

९१

वने यदि फुटल कुसुम नेइ केन सेइ पाखि ।
कोन् सुदूरेर आकाश हते आनब तारे डाकि ।।

आमार......के—मेरे प्राणों के भीतर वह कौन; **थेके थेके**—रह-रह कर; **उतलाके**—चंचल, भावावेग से आकुल को ।

९०. **बेजे याय**—बज जाता है; **आमार......चिनि**—मेरा मन कहता है, (उसे) पहचानता हूँ, पहचानता हूँ; **मधुबाये**—वसन्तकालीन वायु में, मदिर वायु में; **छाये**—छाया में; **शिहराय**—सिहरती है; **पाये पाये**—(उसके) प्रतिचरणनिक्षेप पर; **कलसे**—कलश में; **पारुल**—एक पुष्प विशेष, पाटली; **शुधाइल**—पूछा; **के......गो**—अजी, तुम कौन हो; **अजाना**—अज्ञात; **फुलकुल**—पुष्पसमूह; **बरषिछे**—बरसा रही है; **पवन......परशिछे**—पवन (उसके) आलुलायित केशों को स्पर्श कर रहा है; **आँधारे......हरषिछे**—अन्धकार में तारे हर्षित हो रहे हैं; **झिल्ली**—झिल्ली, झींगुर; **झनकिछे**—झनकार कर रहे हैं।

९१. **वने......पाखि**—वन में यदि फूल खिला तो वह पक्षी क्यों नहीं है; **कोन्......डाकि**—किस सुदूर आकाश से उसे बुला लाऊँगा; **हाओयाय......**

हाओयाय हाओयाय मातन जागे, पाताय पाताय नाचन लागे गो—
एमन मधुर गानेर वेलाय सेइ शुधु रय बाकि ।।
उदास-करा हृदय-हरा ना जानि कोन् डाके
सागर-पारेर वनेर धारे के भुलालो ताके ।
आमार हेथाय फागुन वृथाय बारे बारे डाके ये ताय गो—
एमन रातेर व्याकुल व्यथाय केन से देय फाँकि ।।
१९२९-३२

९२

लिखन तोमार धुलाय हयेछे धूलि,
हारिये गियेछे तोमार आखरगुलि ।
चैत्ररजनी आज बसे आछि एका ; पुन बुझि दिल देखा—
वने वने तव लेखनीलीलार रेखा,
नवकिशलये गो कोन् भुले एल भुलि, तोमार पुरानो आखरगुलि ।।
मल्लिका आजि कानने कानने कत
सौरभे-भरा तोमारि नामेर मतो ।

जागे—हवा-हवा में मत्तता जग रही है (हवा में मस्ती है); **पाताय......गो**—पत्ते-पत्ते में नाचने की प्रवृत्ति है (पत्तियां नाच रही हैं); **एमन......बाकि**—ऐसी मधुर गान की वेला में वही केवल बाकी है; **उदास......ताके**—उदासीन करने वाली, हृदय को हरने वाली न-जाने किस पुकार से सागर-पार वन के किनारे उसे किसने भुला रखा है; **आमार......फाँकि**—यहाँ मेरा फाल्गुन बार-बार उसे वृथा पुकारता है, ऐसी रात की व्याकुल व्यथा में वह क्यों छल करता है ।

९२. **लिखन......धूलि**—तुम्हारी लिपि धूल में धूल (एकाकार) हो गई है; **हारिये......आखरगुलि**—तुम्हारे अक्षर खो गए हैं; **चैत्र......एका**—चैत्र की रात्रि में आज अकेला बैठा हुआ हूँ; **पुन**—पुनः; **बुझि......देखा**—लगता है जैसे दिखाई दी; **कोन्......भुलि**—किस भूल से भूल कर आए; **पुरानो**—पुराने; **कत**—कितने; **तोमारि......मतो**—तुम्हारे ही नाम के समान;

कोमल तोमार अङ्गुलि–छोँओया वाणी मने दिल आजि आनि
विरहेर कोन् व्यथाभरा लिपिखानि।
माधावीशाखाय उठितेछे दुलि दुलि तोमार पुरानो आखरगुलि ।।
१९२९-३२

९३

आजि साँझेर यमुनाय गो
तरुण चाँदेर किरणतरी कोथाय भेसे याय गो ।।
तारि सुदूर सारिगाने विदायस्मृति जागाय प्राणे
सेइ-ये दुटि उतल आँखि उछल करुणाय गो ।।
आज मने मोर ये सुर बाजे केउ ता शोने नाइ कि।
एकला प्राणेर कथा निये एकला ए दिन याय कि।
याय याबे, से फिरे फिरे लुकिये तुले नेय नि कि करे
आमार परम वेदनखानि आपन वेदनाय गो ।।
१९२९-३२

अङ्गुलि-छोँओया—उंगली से स्पर्श की हुई; **मने......आनि**—आज याद करा दी; **विरहेर......खानि**—व्यथा से भरी हुई कौनसी विरह की लिपि; **माधवी...... आखरगुलि**—माधवी की शाखाओं पर तुम्हारे पुराने अक्षर झूम-झूम उठते हैं।

९३. **आजि......गो**—अजी, आज साँझ की यमुना में; **कोथाय.....याय**—कहाँ बहती जा रही है; **तारि.....प्राणे**—उसके सुदूर मल्लाहों के गान प्राणों में विदा की स्मृति जगाते हैं; **सारिगान**—मल्लाहों के गान; **सेइ......गो**—वही करुणा से उच्छलित, भावावेग से आकुल दोनों आँखें; **आज......कि**—आज मेरे मन में जो सुर बज रहा है, उसे क्या किसीने नहीं सुना; **एकला......कि**—एकाकी प्राणों की बात ले कर अकेले ये दिन बीतेंगे क्या; **याय याबे**—जाते हैं, तो जाँय; **से......गो**—अजी, क्या उसने लौट-लौट कर अपनी वेदना में मेरी परम वेदना को गुपचुप अपने हाथों नहीं उठा लिया।

९४

एकला ब'से, हेरो, तोमार छवि   एँकेछि आज वासन्ती रङ दिया ।
खोँपार फुले एकटि मधुलोभी   मौमाछि ओइ गुञ्जरे वन्दिया ।।
समुख-पाने बालुतटेर तले   शीर्ण नदी श्रान्तधाराय चले,
वेनुच्छाया तोमार चेलाञ्चले   उठिछे स्पन्दिया ।।
मग्न तोमार स्निग्ध नयन दुटि   छायाय छन्न अरण्य-अङ्गने
प्रजापतिर दल येखाने जुटि   रङ छड़ालो प्रफुल्ल रङ्गने ।
तप्त हाओयाय शिथिलमञ्जरी   गोलकचाँपा एकटि दुटि करि
पायेर काछे पड़छे झरि झरि   तोमारे नन्दिया ।।
घाटेर धारे कम्पित झाउशाखे   दोयेल दोले संगीते चञ्चलि,
आकाश ढाले पातार फाँके फाँके तोमार कोले सुवर्ण-अञ्जलि ।
वनेर पथे के याय चलि दूरे— बाँशिर व्यथा पिछन-फेरा सुरे
तोमाय घिरे हाओयाय घुरेघुरे   फिरिछे क्रन्दिया ।।

१९२९-३२

९४. **एकला......दिया**—देखो, आज अकेले बैठ कर वासन्ती रंग से तुम्हारी तस्वीर आँकी है; **खोँपार......वन्दिया**—जूड़े के फूल में मधु का लोभी एक भ्रमर स्तुति करता हुआ गुञ्जार कर रहा है; **समुख-पाने**—सामने की ओर; **चेलाञ्चले**—पट्टवस्त्र के अञ्चल से; **उठिछे स्पन्दिया**—स्पन्दित हो रही है; **दुटि**—दो; **छन्न**—आच्छन्न; **प्रजापतिर......जुटि**—जहाँ तितलियों के दल ने मिल कर; **रङ छड़ालो**—रंग बिखेर दिये हैं; **रङ्गने**—रंगन (पुष्प विशेष) में; **तप्त......नन्दिया**—तपी हवा में शिथिल मंजरी वाला गोलकचम्पा एक-दो करके तुम्हारा अभिनन्दन करता हुआ (तुम्हारे) चरणों के निकट झर-झर पड़ता है; **दोयेल**—एक पक्षी विशेष; **आकाश......अञ्जलि**—आकाश पत्तियों की हर सन्धि से तुम्हारी गोद में स्वर्ण-अञ्जलि ढाल रहा है; **वनेर......दूरे**—वन पथ से कौन दूर चला जा रहा है; **पिछन-फेरा**—पीछे लौटाने वाले; **तोमाय......क्रन्दिया**—तुम्हें घेर कर हवा में क्रन्दन करती हुई फिर रही है (चक्कर काट रही है) ।

९५

ए पारे मुखर हल केका ओइ, ओ पारे नीरव केन कुहु हाय।
एक कहे, 'आर-एकटि एका कइ, शुभयोगे कबे हब दुँहु हाय।'
अधीर समीर पुरवैयाँ निविड़ विरह व्यथा बइया
निश्वास फेले मुहु मुहु हाय।
आषाढ़ सजलघन आँधारे भावे बसि दुराशार धेयाने,—
'आमि केन तिथिडोरे बाँधा रे, फागुनेरे मोर पाशे के आने।'
ऋतुर दु धारे थाके दुजने, मेले ना ये काकली ओ कूजने,
आकाशेर प्राण करे हूहु हाय॥

१९२९-३२

९६

चाँदेर हासिर बाँध भेङेछे, उछले पड़े आलो।
ओ रजनीगन्धा, तोमार गन्धसुधा ढालो॥
पागल हाओया बुझते नारे डाक पड़ेछे कोथाय तारे—
फुलेर वने यार पाशे याय तारेइ लागे भालो॥

९५. **ए......हाय**—इस पार वह मयूर-ध्वनि मुखर हुई, उस पार, हाय, कोयल की कुहू नीरव क्यों है; **एक......हाय**—एक (ध्वनि) कहती है 'और एक एकाकिनी कहाँ है, कब (किस) शुभयोग में हाय, (हम) दो होंगे'; **पुरवैयाँ**—पुरवा, पुरवैया, पूरब से झूम-झूम कर बहने वाली हवा; **बइया**—वहन करती हुई; **निश्वास फेले**—लंबी सांसें लेती है; **मुहु मुहु**—बार-बार; **भावे.....धेयाने**—दुराकांक्षा का ध्यान करता हुआ बैठा सोचता है; **'आमि......आने'**—में तिथि की डोरी में क्यों बँधा हुआ हूँ, फागुन को मेरे निकट कौन लाता है (लाएगा); **ऋतुर......कूजने**—दोनों ऋतु के दो तटों पर रहते हैं, काकली और कूजन मिलते जो नहीं।

९६. **चाँदेर.......आलो**—चाँद की हँसी का बाँध टूट गया है, आलोक उद्वेलित हो उठा है; **तोमार......ढालो**—अपने गन्ध रूपी अमृत को ढालो; **पागल......तारे**—पागल हवा समझ नहीं पाती, कहाँ उसकी पुकार हुई है; **फुलेर......भालो**—फूलों के वन में जिसके निकट जाती है, उसे ही भला लगता है;

नील गगनेर ललाटखानि चन्दने आज माखा,
वाणीवनेर हंसमिथुन मेलेछे आज पाखा।
पारिजातेर केशर निये धराय शशी, छड़ाओ की ए।
इन्द्रपुरीर कोन् रमणी वासर प्रदीप ज्वाल।

१९२९-३२

९७

चैत्र पवने मम चित्तवने वाणीमञ्जरी सञ्चलिता
ओगो ललिता।
यदि विजने दिन बहे याय खर तपने झरे पड़े हाय
अनादरे हबे धूलिदलिता
ओगो ललिता।।
तोमार लागिया आछि पथ चाहि– बुझि वेला आर नाहि नाहि।
वनछायाते तारे देखा दाओ, करुण हाते तुले निये याओ—
कण्ठहारे करो संकलिता
ओगो ललिता।।

१९२९-३२

नील......माखा—नील आकाश का ललाट आज चंदन से चर्चित है; **वाणी....... पाखा**—वाणी-वन के हंस-मिथुन (हंसों के जोड़े) ने आज पंख पसारे हैं; **पारिजातेर......ए**—चन्द्रमा, पारिजात का केशर ले कर पृथ्वी पर यह क्या बिखेर रहे हो; **कोन्**—कौन; **वासर**—वह कक्ष जिस में वर-कन्या विवाह की रात बिताते हैं; **ज्वाल**—जलाती हो।

९७. **सञ्चलिता**—दोलायित (है); **ललिता**—सुन्दरी; **यदि......याय**—यदि एकान्त में दिन बीत जाय; **खर......हाय**—हाय, प्रखर धूप में (यदि) झर कर गिर पड़े; **अनादरे**—अनादर से; **हबे**—होगी; **तोमार......चाहि**—तुम्हारे लिये पंथ निहार रहा हूँ; **बुझि......नाहि**—लगता है, अब और समय नहीं है; **वनछायाते......दाओ**—वनछाया में उसे दर्शन दो; **करुण......याओ**—करुण हाथों से (उसे) चून कर लेती जाओ; **करो संकलिता**—एकत्र करो, जोड़ लो।

९८

जानि, हल याबार आयोजन––
तबु पथिक, थामो किछुक्षण ।।
श्रावण गगन वारि-झरा, काननवीथि छायाय भरा,
शुनि जलेर झरोझरे यूथीवनेर फुल-झरा क्रन्दन ।।
येयो– यखन बादलशेषेर पाखि
पथे पथे उठबे डाकि ।
शिउलिवनेर मधुर स्तवे जागबे शरत्लक्ष्मी यबे,
शुभ्र आलोर शङ्खरवे परबे भाले मङ्गलचन्दन ।।

१९२९-३२

९९

नीलाञ्जनछाया, प्रफुल्ल कदम्बवन,
जम्बुपुञ्जे श्याम वनान्त, वनवीथिका घनसुगन्ध ।
मन्थर नव नीलनीरद– परिकीर्ण दिगन्त ।
चित्त मोर पन्थहारा कान्तविरहकान्तारे ।

१९२९-३२

९८. **जानि......क्षण**––जानता हूँ, जाने का आयोजन हो गया है, तौभी पथिक, थोड़ी देर ठहरो; **छायाय**––छाया से; **शुनि......झरोझरे**––जल की झर-झर ध्वनि में सुनता हूँ; **येयो**––जाना; **यखन......डाकि**––जब वर्षा के अन्त (में आने वाला) पक्षी रास्ते-रास्ते पुकार उठेगा; **शिउलि**––शेफाली; **जागबे**––जागेगी; **यबे**––जब; **शुभ्र......चन्दन**––शुभ्र आलोक के शंख की ध्वनि में ललाट पर मंगल-चन्दन धारण करेगी।

९९. **परिकीर्ण**––समान रूप से व्याप्त; **चित्त......हारा**––मेरा चित्त पथ-खोए हुए है; **कान्तविरहकान्तारे**––प्रिय-वियोग के सघन वन में ।

१००

बाजे करुण सुरे हाय दूरे
तव चरणतल-चुम्बित पन्थवीणा।
ए मम पान्थचित चञ्चल हाय
जानि ना की उद्देशे॥
यूथीगन्ध अशान्त समीरे
धाय उतला उच्छ्वासे,
तेमनि चित्त उदासी हे हाय
निदारुण विच्छेदेर निशीथे॥

१९२९-३२

१०१

सखी, आँधारे एकेला घरे मन माने ना।
किसेरइ पियासे कोथा ये याबे से, पथ जाने ना॥
झरोझरो नीरे, निविड़ तिमिरे, सजल समीरे गो
येन कार वाणी कभु काने आने— कभु आने ना॥

१९२९-३२

१०२

सुनील सागरेर श्यामल किनारे
देखेछि पथे येते तुलनाहीनारे॥

---

१००. **बाजे**—बजती है; **ए**—यह; **जानि......उद्देशे**—न जाने किस कारण; **धाय**—दौड़ता है; **उतला**—उतावला; **तेमनि**—वैसे ही; **निदारुण**—अत्यन्त असह्य।

१०१. **आँधारे......ना**—अन्धकार में सूने घर में मन नहीं मानता; **किसेरइ......ना**—किस (वस्तु) की तृष्णा में वह कहाँ जायगा, पथ नहीं जानता; **झरोझरो**—झर-झर; **येन......ना**—जैसे किसी की वाणी कभी कानों में लाते है; कभी नहीं लाते।

१०२. **देखेछि......हीनारे**—तुलनाहीना (अतुलनीया) को पथ में जाते हुए

ए कथा कभु आर पारे ना घुचिते,
आछे से निखिलेर माधुरीरुचिते।
ए कथा शिखानु ये आमार वीणारे,
गानेते चिनालेम से चिर-चिनारे ।।
से कथा सुरे सुरे छड़ाब पिछने
स्वपनफसलेर बिछने बिछने।
मधुपगुञ्जे से लहरी तुलिबे,
कुसुमपुञ्जे से पवने दुलिबे,
झरिबे श्रावणेर बादलसिचने ।।
शरते क्षीण मेघे भासिबे आकाशे
स्मरणवेदनार बरने आँका से।
चकिते क्षणे क्षणे पाब ये ताहारे
इमने केदाराय बेहागे बाहारे ।।

१९२९-३२

१०३

स्वपने दोँहे छिनु की मोहे, जागार वेला हल—
याबार आगे शेष कथाटि बोलो।

(मैंने) देखा है; **ए......रुचिते**—यह बात कभी और मिट नहीं सकती कि वह विश्व की मधुर शोभा में (वर्तमान) है; **ए......वीणारे**—यह बात मैंने अपनी वीणा को सिखाई; **गानेते......चिनारे**—गान में उस चिरपरिचित को पहचनवाया (चिरपरिचित से परिचित कराया); **से......पिछने**—उसी बात को प्रति सुर में (बीज की भाँति) पीछे बिखेरता जाऊँगा; **स्वपनफसलेर......बिछने**—सपनों की फ़सल के हर बिछाव में; **मधुप......तुलिबे**—भौरों की गुञ्जार में वह लहरियाँ उठाएगी; **दुलिबे**—झूमेगी; **झरिबे**—झरेगी; **बादलसिचने**—वर्षा के सिंचन में; **बरने**—रंग में; **आँका**—अंकित; **चकिते**—विस्मय से; **पाब......ताहारे**—उसे पाऊँगा; **इमने......बाहारे**—ईमन, केदारा, विहाग और बहार (राग-रागिनियों) में।

१०३. **स्वपने......मोहे**—स्वप्न में (हम) दोनों कैसे बेसुध थे; **जागार......हल**—जागने का समय हुआ; **याबार....बोलो**—जाने के पहले अन्तिम बात कहो;

फिरिया चेये एमन किछु दियो
वेदना हबे परम रमणीय—
आमार मने रहिबे निरवधि
विदायखने खनेक-तरे यदि सजल आँखि तोलो ।।
निमेषहारा ए शुकतारा एमनि उषाकाले
उठिबे दूरे विरहाकाशभाले ।
रजनीशेषे एइ-ये शेष-काँदा
वीणार तारे पड़िल ताहा बाँधा,
हारानो मणि स्वपने गाँथा रबे—
हे विरहिणी, आपन हाते तबे विदायद्वार खोलो ।।

१९२९-३२

१०४

आमार जीवनपात्र उच्छलिया माधुरी करेछ दान—
तुमि जान नाइ, तुमि जान नाइ,
तुमि जान नाइ तार मूल्येर परिमाण ।।
रजनीगन्धा अगोचरे
येमन रजनी स्वपने भरे सौरभे,

फिरिया......रमणीय—फिर कर देख, कुछ ऐसा देना (कि जिससे) वेदना अत्यन्त रमणीय हो जाएगी; **आमार.....तोलो**—(वह 'कुछ') बराबर मेरे मन में रहेगा—यदि विदाई के क्षण में क्षण भर के लिये सजल आँखें उठाओ; **निमेषहारा**—पलक-हीन; **ए**—यह; **एमनि**—इसी प्रकार; **उठिबे.....भाले**—विरहाकाश के ललाट पर दूर उदित होगा; **रजनी......बाँधा**—रात्रि के अन्त में यह जो अन्तिम क्रन्दन (है), वह वीणा के तारों में बँध गया; **हारानो......रबे**—खोई हुई मणि स्वप्नों में गुँथी रहेगी; **आपन......खोलो**—अपने हाथों तब बिदाई का द्वार खोलो।

१०४. **आमार......दान**—मेरे जीवनपात्र को उद्वेलित कर (तुमने) माधुरी (मधुरता) दान की है; **तुमि.....नाइ**—तुम नहीं जानते; **तार**—उसके; **रजनीगन्धा......सौरभे**—जैसे रजनीगन्धा आँखों की ओट रात्रि को सपनों मे

तुमि जान नाइ, तुमि जान नाइ,
तुमि जान नाइ, मरमे आमार ढेलेछ तोमार गान ।।
बिदाय नेबार समय एबार हल——
प्रसन्न मुख तोलो, मुख तोलो, मुख तोलो;
मधुर मरणे पूर्ण करिया सँपिया याव प्राण चरणे ।
यारे जान नाइ, यारे जान नाइ, यारे जान नाइ
तार गोपन व्यथार नीरव रात्रि होक आजि अवसान ।।

१९३३-३६

१०५

आमार नयन तव नयनेर निविड़ छायाय
मनेर कथार कुसुमकोरक खोँजे ।
सेथाय कखन अगम गोपन गहन मायाय
पथ हाराइल ओ ये ।।
आतुर दिठिते शुधाय से नीरवेरे——
निभृत वाणीर सन्धान नाइ ये रे;
अजानार माझे अबूझेर मतो फेरे
अश्रुधाराय मजे ।।

सुगन्धि से भर देती है; **मरमे......गान**——(वैसे ही) मेरे मर्म (हृदय) में (तुमने) अपने गान ढाले हैं; **बिदाय......तोलो**——विदा लेने का अब समय हुआ, प्रसन्न मुख उठाओ; **मधुर.......चरणे**——मधुर मरण से प्राणों को पूर्ण कर (तुम्हारे) चरणों में सौंप जाऊँगा; **यारे......अवसान**——जिसे नहीं जानतीं, उसकी गोपन व्यथा की नीरव रात्रि का आज अवसान हो ।

१०५. **आमार......खोँजे**——मेरी आँखें तुम्हारी आँखों की निविड़ छाया में मन की बात (रूपी) कुसुम-कलिका खोजती हैं; **सेथाय......ये**——वहाँ कब अगम, गोपन, गहन माया में उन (आँखों) ने पथ खो दिया; **दिठिते**——दृष्टि से; **शुधाय ......नीरवेरे**——वे (आँखें) नीरव से पूछती हैं; **नाइ**——नहीं है; **अजानार......मजे** ——अज्ञात के बीच अबोध की नाईं अश्रुधारा में निमज्जित भटकती फिरती हैं;

आमार हृदये ये कथा लुकानो तार आभाषण
फेले कभु छाया तोमार हृदयतले ?
दुयारे एँकेछि रक्तरेखाय पद्म-आसन,
से तोमारे किछु बले ?
तव कुञ्जेर पथ दिये येते येते
वातासे वातासे व्यथा दिइ मोर पेते—
बाँशि की आशाय भाषा देय आकाशेते
से कि केह नाहि बोझे ।।

१९३३-३६

१०६

ना ना ना, डाकब ना, डाकब ना अमन करे बाइरे थेके ।
पारि यदि अन्तरे तार डाक पाठाब, आनब डेके ।।
देबार व्यथा बाजे आमार बुकेर तले,
नेबार मानुष जानि ने तो कोथाय चले—
एइ देओया-नेओयार मिलन आमार घटाबे के ।।

आमार......लुकानो—मेरे हृदय में जो बात छिपी हुई है; **तार**—उसके; **आभाषण**—बोल; **फेले......हृदयतले**—तुम्हारे हृदय-पट पर कभी (क्या अपनी) छाया डालते हैं; **दुयारे......बले**—द्वार पर रक्त की रेखाओं से (मैंने) पद्म-आसन आँका है, वह (क्या कभी) तुम से कुछ कहता है; **तव......पेते**—तुम्हारे कुञ्ज के रास्ते से जाते-जाते हवा में (मैं) अपनी व्यथा बिछा देता हूँ; **बाँशि ......बोझे**—बाँसुरी किस आशा से आकाश को भाषा प्रदान करती है, यह क्या कोई नहीं समझता ।

१०६. **डाकब......थेके**—इस प्रकार बाहर से नहीं पुकारूँगी, नहीं पुकारूँगी; **पारि.....डेके**—अगर (पुकार) सकूँ तो उसके अन्तर में (अपनी) पुकार पहुँचाऊँगी (और उसे) बुला लाऊँगी; **देबार......तुले**—देने (सौंपने) की व्यथा मेरे हृदय-तल में कसकती है; **नेबार......चले**—(उस व्यथा को) लेने वाला व्यक्ति, नहीं जानती, कहाँ विचरण करता है; **एइ.....के**—मेरे इस देने और लेने

मिलबे ना कि मोर वेदना तार वेदनाते—
गङ्गाधारा मिशबे नाकि कालो यमुनाते।
आपनि की सुर उठल बेजे
आपना हते एसेछे ये—
गेल यखन आशार वचन गेछे रेखे ।।

१९३३-३६

१०७

ना चाहिले यारे पाओया याय, तेयागिले आसे हाते,
दिवसे से धन हारियेछि आमि, पेयेछि आँधार राते।
ना देखिबे तारे, परशिबे ना गो; तारि पाने प्राण मेले दिये जागो—
ताराय ताराय रबे तारि वाणी, कुसुमे फुटिबे प्राते ।।
तारि लागि यत फेलेछि अश्रुजल
वीणावादिनीर शतदलदले करिछे ता टलोमल।
मोर गाने गाने पलके पलके झलसि उठिछे झलके झलके,
शान्त हासिर करुण आलोके भातिछे नयनपाते ।।

१९३३-३६

का मिलन कौन घटित कराएगा; **मिलबे......यमुनाते**—मेरी वेदना, उसकी वेदना के साथ क्या नहीं मिलेगी, गंगा की धारा क्या काली यमुना में नहीं घुलेगी; **आपनि......बेजे**—अपने-आप ही कौन-सा सुर बज उठा; **आपना...... ये**—(जो) अपने-आप ही आया था; **गेल......रेखे**—जब गया, आशा की वाणी रख गया।

१०७. **ना......हाते**—जो बिना माँगे मिलता है (और) त्यागने पर हाथ आता है; **दिवसे......राते**—उस धन को मैंने दिन में गँवाया (और) अँधेरी रात्रि में पाया है; **ना......ना**—उसे देख न पाओगे, छू न सकोगे; **तारि...... जागो**—उसी की ओर प्राणों को प्रसारित कर जागो; **रबे**—रहेगी; **तारि...... टलोमल**—उसके लिये जितने आँसू बहाए हैं, वीणावादिनी (सरस्वती) के शतदल (कमल) की पंखुड़ियों में वे ढुलक रहे हैं; **मोर......झलके**—मेरे गान-गान में प्रतिपल हर कौंध में चकाचौंध लगा रहा है; **शान्त......पाते**—शान्त हँसी के करुण आलोक में नयन-पल्लवों में दीप्त हो रहे हैं।

१०८

रोदनभरा ए वसन्त कखनो आसे नि बुझि आगे ।
मोर विरहवेदना राङालो किंशुकरक्तिमरागे ।।
कुञ्जद्वारे वनमल्लिका सेजेछे परिया नव पत्रालिका,
सारा दिन-रजनी अनिमिखा कार पथ चेये जागे ।।
दक्षिणसमीरे दूर गगने एकेला विरही गाहे बुझि गो ।
कुञ्जवने मोर मुकुल यत आवरणबन्धन छिँड़िते चाहे ।
आमि ए प्राणेर रुद्ध द्वारे व्याकुल कर हानि बारे बारे—
देओया हल ना ये आपनारे एइ व्यथा मने लागे ।।

१९३३-३६

१०९

शुनि क्षणे क्षणे मने मने अतल जलेर आह्वान ।
मन रय ना, रय ना, रय ना घरे, चञ्चल प्राण ।।
भासाये दिब आपनारे भरा जोयारे,
सकल-भावना-डुबानो धाराय करिब स्नान—
व्यर्थ वासनार दाह हबे निर्वाण ।।

१०८. **रोदन......आगे**—रुदन से भरा यह वसन्त (इसके) पहले शायद कभी नहीं आया; **मोर......रागे**—मेरी विरह वेदना किंशुक (पलास) के रक्तिम (लाल) रंग में रँग गई; **कुञ्जद्वारे......पत्रालिका**—कुञ्जद्वार पर वनमल्लिका नवीन पत्रालिका (कपोलों पर चित्ररचना अथवा किसलय-समष्टि) धारण कर सजी है; **सारा......जागे**—समस्त दिन-रात अनिमेष दृष्टि से वह (वनमल्लिका) किसकी बाट जोहती जाग रही है; **एकेला**—अकेला; **गाहे**—गाता है; **बुझि**—ऐसा लगता है जैसे; **कुञ्ज......चाहे**—कुञ्जवन की मेरी सभी कलियाँ आवरण के बन्धन को छिन्न करना चाहती हैं; **आमि......बारे**—मैं इन प्राणों के रुद्ध द्वार पर बार-बार व्याकुल हाथों से आघात करती हूँ; **देओया......लागे**—मन में यही व्यथा होती है कि अपने-आपको देना जो नहीं हुआ ।

१०९. **शुनि**—सुनता हूँ; **रय......घरे**—घर में नहीं रहता; **भासाये......जोयारे**—भरे ज्वार में अपने को बहा दूंगा; **सकल...... स्नान**—सभी चिन्ताओं को डुबाने वाली धारा में स्नान करूँगा; **वासनार दाह**—वासना का दाह; **हबे निर्वाण**—बुझ जाएगा;

ढेउ दियेछे जले।
ढेउ दिल आमार मर्मतले।
एकि व्याकुलता आजि आकाशे, एइ वातासे,
येन उतला अप्सरीर उत्तरीय करे रोमाञ्चदान—
दूर सिन्धुतीरे कार मञ्जीरे गुञ्जरतान।।

१९३३-३६

११०

हे निरुपमा,
गाने यदि लागे विह्वल तान करियो क्षमा।।
झरोझरो धारा आजि उतरोल, नदीकूले-कूले उठे कल्लोल,
वने वने गाहे मर्मरस्वरे नवीन पाता।
सजल पवन दिशे दिशे तोले बादलगाथा।।
हे निरुपमा,
चपलता आजि यदि घटे तबे करियो क्षमा।
तोमार दुखानि कालो आँखि-'परे बरषार कालो छायाखानि पड़े,
घन कालो तव कुञ्चित केशे यूथीर माला।।
तोमारि चरणे नवबरषार वरणडाला।।

ढेउ.....जले—जल में तरंगें उठी हैं; **ढेउ......मर्मतले**—मेरा अन्तस्तल तरंगायित हुआ है; **एकि.......बातासे**—आज आकाश में, इस हवा में यह कैसी व्याकुलता है; **येन.....दान**—जैसे अधीर अप्सरी का उत्तरीय रोमांचित कर रहा है; **कार**—किसके; **मञ्जीरे**—नूपुरों में।

११०. **गाने......क्षमा**—यदि गान की तान में विह्वलता हो तो क्षमा करना; **झरोझरो.......उतरोल**—झर-झर वर्षा आज उद्विग्न है; **वने......पाता**—वन-वन में नवीन पत्ते मर्मर ध्वनि में गा रहे हैं; **सजल......गाथा**—सजल पवन दिशा-दिशा में वर्षा की गाथा छेड़ रहा है; **चपलता......क्षमा**—आज यदि किसी प्रकार की प्रगल्भता बन पड़े तो क्षमा करना; **तोमार......पड़े**—तुम्हारी दो काली आँखों पर वर्षा की काली छाया पड़ती है; **तोमारि......डाला**—तुम्हारे

हे निरुपमा,
चपलता आजि यदि घटे तबे करियो क्षमा ।
एल बरषार सघन दिवस, वनराजि आजि व्याकुल विवश,
बकुलवीथिका मुकुले मत्त कानन-'परे ।
नवकदम्ब मदिर गन्धे आकुल करे ।।
हे निरुपमा,
आँखि यदि आज करे अपराध, करियो क्षमा ।
हेरो आकाशेर दूर कोणे कोणे बिजुलि चमकि ओठे खने खने,
द्रुत कौतुके तव वातायने की देखे चेये ।
अधीर पवन किसेर लागिया आसिछे धेये ।।

१९३३-३६

१११

अशान्ति आज हानल ए की दहनज्वाला ।
बिँधल हृदय निदय बाणे वेदनढाला ।।
वक्षे ज्वालाय अग्निशिखा, चक्षे काँपाय मरीचिका—
मरणसुतोय गाँथल के मोर वरणमाला ।।

ही चरणों में नव वर्षा की वरण-डाली (निवेदित) है; **एल**—आया; **बरषार**—वर्षा का; **मुकुले मत्त**—कलियों से मत्त; **नव......करे**—नव कदम्ब (अपने) मदिर गन्ध से आकुल करता है; **आँखि......अपराध**—आँखें यदि आज अपराध करें (आँखों से यदि अपराध हो जाय); **हेरो......खने**—देखो, दूर आकाश के कोने-कोने में क्षण-क्षण बिजली चमक उठती है; **कौतुके**—कुतूहल से; **की......चेये**—क्या देखती है; **अधीर......धेये**—अधीर पवन किसलिये दौड़ा आ रहा है।

१११. **अशान्ति......ज्वाला**—अशान्ति ने आज यह कैसी दहन-ज्वाला निक्षिप्त की है; **बिँधल......ढाला**—वेदना-ढले निर्दय बाणों से हृदय बिँध गया; **ज्वालाय**—जलाती है; **काँपाय**—कँपाती है; **मरण......माला**—मृत्यु के

चेना भुवन हारिये गेल स्वपनछायाते,
फागुनदिनेर पलाशरङेर रङीन मायाते।
यात्रा आमार निरुद्देशा, पथ-हारानोर लागल नेशा—
अचिन देशे एबार आमार याबार पाला ।।

१९३३-३६

११२

आमरा दुजना स्वर्ग-खेलना गड़िब ना धरणीते
मुग्ध ललित अश्रुगलित गीते ।।
पञ्चशरेर वेदनामाधुरी दिये
वासररात्रि रचिब ना मोरा प्रिये—
भाग्येर पाये दुर्बल प्राणे भिक्षा ना येन याचि।
किछु नाइ भय, जानि निश्चय, तुमि आछ आमि आछि ।।
उड़ाब ऊर्ध्वे प्रेमेर निशान दुर्गम पथ-माझे
दुर्दम वेगे दुःसहतम काजे।
रुक्ष दिनेर दुःख पाइ तो पाब—
चाइ ना शान्ति, सान्त्वना नाहि चाब।

धागे में किसने मेरी वरमाला गूँथी है; **चेना......छायाते**—जाना-पहचाना जगत् स्वप्न की छाया में खो गया; **फागुन......मायाते**—फाल्गुन के पलाश के रंग की रंगीन माया में (खो गया); **पथ.......नेशा**—राह भूलने का नशा चढ़ गया है; **अचिन......पाला**—अपरिचित देश में इस बार मेरे जाने की बारी है।

११२. **आमरा......गीते**—मुग्ध, ललित, अश्रुविगलित गीतों से हम दोनों पृथ्वी पर खेल-खेल का स्वर्ग नहीं गढ़ेंगे (निर्माण करेंगे); **पञ्चशरेर......प्रिये**—पञ्चशर (कामदेव) की वेदना-माधुरी के द्वारा, प्रिये, हमलोग वासर-रात्रि (विवाह-रजनी) की रचना नहीं करेंगे; **भाग्येर......याचि**—ऐसा हो कि भाग्य के चरणों में दुर्बल प्राणों से भिक्षा न माँगें; **किछु......आछि**—कुछ भय नहीं, निश्चय पूर्वक जानता हूँ (कि) तुम हो (और) मैं हूँ; **उड़ाब......माझे**—प्रेम की ध्वजा दुर्गम पथ में ऊपर की ओर उड़ाएँगे; **रुक्ष......पाब**—कठिन दिनों का दुःख पाएँगे तो पाएँगे; **चाइ.....चाब**—(हम) शान्ति नहीं चाहते, सान्त्वना नहीं माँगेंगे;

पाड़ि दिते नदी हाल भाङ्गे यदि, छिन्न पालेर काछि,
मृत्युर मुखे दाँड़ाये जानिब, तुमि आछ आमि आछि ।।
दुजनेर चोखे देखेछि जगत्, दोँहारे देखेछि दोँहे—
मरुपथताप दुजने नियेछि सहे ।
छुटि नि मोहन मरीचिका-पिछे-पिछे,
भुलाइ नि मन सत्येरे करि मिछे—
एइ गौरवे चलिब ए भवे यत दिन दोँहे बाँचि ।
ए वाणी प्रेयसी, होक महीयसी, 'तुमि आछ आमि आछि' ।।
१९३३-३६

११३

प्रेमेर जोयारे भासाबे दोँहारे— बाँधन खुले दाओ, दाओ दाओ ।
भुलिब भावना, पिछने चाब ना— पाल तुले दाओ, दाओ दाओ ।।
प्रबल पवने तरङ्ग तुलिल, हृदय दुलिल, दुलिल दुलिल—
पागल हे नाविक, भुलाओ दिग्विदिक— पाल तुले दाओ, दाओ दाओ ।।
१९३३-३६

पाड़ि......यदि—नदी पार होने में यदि पतवार टूट जाय; **छिन्न......काछि**—पाल की रस्सी टूटी हो; **मृत्युर.....आछि**—मृत्यु के मुँह में खड़े हो कर जानेंगे, तुम हो, मैं हूँ; **दुजनेर......दोँहे**—दोनों की आँखों में हमने जगत् को देखा है, (तथा) दोनों ने दोनों को देखा है; **मरु......सहे**—मरु-पथ का उत्ताप हम दोनों ने सहन कर लिया है; **छुटि......पिछे**—मोहने वाली मरीचिका के पीछे-पीछे (हम) नहीं दौड़े; **भुलाइ......मिछे**—सत्य को मिथ्या कर (हम ने अपने) मन को नहीं भुलाया; **एइ......बाँचि**—इस संसार में हम दोनों जितने दिन जिएँगे, इसी गौरव के साथ चलेंगे; **ए**—यह; **होक**—हो।

११३. **प्रेमेर......दाओ**—प्रेम का ज्वार (हम) दोनों को बहाएगा, बंधन खोल दो, खोल दो; **भुलिब......दाओ**—चिन्ता भूल जाऊँगा, पीछे नहीं ताकूँगा, पाल चढ़ा दो, चढ़ा दो; **प्रबल......दुलिल**—प्रबल पवन ने तरंगें उठाई हैं, हृदय झूम उठा; **भुलाओ**—भुला दो।

११४

आजि गोधूलिलगने एइ बादलगगने
तार चरणध्वनि आमि हृदये गणि—
'से आसिबे' आमार मन बले सारावेला,
अकारण पुलके आँखि भासे जले ।।
अधीर पवने तार उत्तरीय दूरेर परशन दिल कि ओ—
रजनीगन्धार परिमले 'से आसिबे' आमार मन बले ।।
उतला हयेछे मालतीर लता, फुरालो ना ताहार मनेर कथा ।
वने वने आजि ए की कानाकानि,
किसेर बारता ओरा पेयेछे ना जानि,
काँपन लागे दिगङ्गनार बुकेर आँचले—
'से आसिबे' आमार मन बले ।।

१९३७-३९

११५

आजि दक्षिणपवने
दोला लागिल वने वने ।।
दिक्‌ललनार नृत्यचञ्चल मञ्जीरध्वनि अन्तरे ओठे रनरनि
विरहविह्वल हृत्स्पन्दने ।।

११४. **एइ**—इस; **बादलगगने**—वर्षा के आकाश में; **तार......गणि**—उसकी चरणध्वनि को मैं (अपने) हृदय में गिनता हूँ; **से.....बेला**—मेरा मन सब समय कहता रहता है 'वह आयगा'; **अकारण......जले**—अकारण पुलक से आँखें आँसुओं में तिरती हैं; **अधीर......ओ**—उसके उत्तरीय ने अधीर पवन में यह कैसा दूर का स्पर्श दिया; **उतला......कथा**—मालती की लता आकुल हुई है, उसके मन की बात चुकी नहीं; **वने......कानि**—वन-वन में आज यह कैसी कानोंकान बतकही (चल रही) है; **किसेर......जानि**—उन सबों ने न-जाने किसका संवाद पाया है; **काँपन.....आँचले**—दिग्वधुओं की छाती के अंचल में कंपन का संचार होता है।

११५. **दोला.....वने**—समस्त वन झूम उठा; **मञ्जीर**—नूपुर; **अन्तरे.....**

माधवीलताय भाषाहारा व्याकुलता
पल्लवे पल्लवे प्रलपित कलरवे ।
प्रजापतिर पाखाय दिके दिके लिपि निये याय
उत्सव-आमन्त्रणे ।।

१९३७-३९

११६

आमार प्राणेर माझे सुधा आछे, चाओ कि--
हाय बुझि तार खबर पेले ना ।
पारिजातेर मधुर गन्ध पाओ कि--
हाय बुझि तार नागाल मेले ना ।।
प्रेमेर बादल नामल, तुमि जानो ना हाय ताओ कि ।
मेघेर डाके तोमार मनेर मयूरके नाचाओ कि ।
आमि सेतारेते तार बेँधेछि, आमि सुरलोकेर सुर सेधेछि,
तारि ताने ताने मने प्राणे मिलिये गला गाओ कि--
हाय आसरेते बुझि एले ना ।

रनरनि—अन्तर में अनुरणित हो उठती है; **माधवीलताय**—माधवी लता में; **भाषाहारा**—भाषाहीन; **प्रजापतिर.....याय**—तितलियों के पर दिशाओं-दिशाओं में पत्र ले जाते हैं।

११६. **आमार......कि**—मेरे प्राणों के भीतर अमृत है, (उसे) चाहते हो क्या; **हाय......ना**—हाय, लगता है (तुमने) उस की खबर नहीं पाई; **पाओ कि**—पाते हो क्या; **हाय......ना**—हाय, लगता है वहाँ तक पहुँच नहीं है; **प्रेमेर......कि**—प्रेम की वर्षा उतरी है, हाय, तुम क्या इतना भी नहीं जानते; **मेघेर......कि**—मेघ के गर्जन पर अपने मन के मयूर को नचाते हो क्या; **आमि ......बेँधेछि**—मैंने सितार में तार बाँधा है; **सुरलोकेर......सेधेछि**—सुरलोक का सुर साधा है; **तारि......कि**—उसकी तान-तान में मन-प्राण से कण्ठ मिला कर गाते हो क्या; **हाय......ना**—हाय, लगता है, संगीत की सभा में नहीं आए;

डाक उठेछे बारे बारे, तुमि साड़ा दाओ कि।
आज झुलनदिने दोलन लागे, तोमार परान हेले ना ।।
१९३७-३९

११७

आमि तोमार सङ्गे बेँधेछि आमार प्राण सुरेर बाँधने—
तुमि जान ना, आमि तोमारे पेयेछि अजाना साधने ।।
से साधनाय मिशिया याय बकुल गन्ध,
से साधनाय मिलिया याय कविर छन्द—
तुमि जान ना, ढेके रेखेछि तोमार नाम
रङिन छायार आच्छादने ।।
तोमार अरूप मूर्तिखानि
फाल्गुनेर आलोते बसाइ आनि।
बाँशरि बाजाइ ललित-वसन्ते, सुदूर दिगन्ते
सोनार आभाय काँपे तव उत्तरी
गानेर तानेर से उन्मादने ।।

१९३७-३९

डाक.....कि—बार-बार पुकार हुई है, तुम उसका प्रत्युत्तर देते हो क्या; **आजि.....ना**—आज झूलन के दिन हिंडोला पैंग भर रहा है, (क्या) तुम्हारे प्राण नहीं झूमते।

११७. **आमि......बाँधने**—तुम्हारे साथ अपने प्राणों को मैंने सुर के बन्धन में बाँधा है; **तुमि......साधने**—तुम नहीं जानते, मैंने तुम्हें अज्ञात साधन द्वारा पाया है; **से......गन्ध**—उस साधना में बकुल का गन्ध घुल जाता है; **मिलिया याय**—विलीन हो जाता है; **ढेके......आच्छादने**—तुम्हारे नाम को रंगीन छाया के आच्छादन से ढँक रखा है; **तोमार.....आनि**—तुम्हारी अरूप मूर्ति को फाल्गुन के प्रकाश में ला कर बिठाता हूँ; **बाँशरि......उन्मादने**—ललित-वसन्त (राग अथवा ऋतु) में बाँसुरी बजाता हूँ, गान की तान के उस उन्मादन से सुदूर दिगन्त में सुनहली आभा में तुम्हारा उत्तरीय काँपता है।

११८

एइ उदासि हाओयार पथे पथे मुकुलगुलि झरे;
आमि कुड़िये नियेछि, तोमार चरणे दियेछि—
लहो लहो करुण करे ।।
यखन याब चले ओरा फुटबे तोमार कोले,
तोमार माला गाँथार आङुलगुलि मधुर वेदनभरे
येन आमाय स्मरण करे ।।
बउकथाकओ तन्द्राहारा विफल व्यथाय डाक दिये हय सारा
आजि विभोर राते ।
दुजनेर कानाकानि कथा, दुजनेर मिलनविह्वलता,
ज्योत्स्नाधाराय याय भेसे याय दोलेर पूर्णिमाते ।
एइ आभासगुलि पड़बे मालाय गाँथा कालके दिनेर तरे
तोमार अलस द्विप्रहरे ।।

१९३७-३९

११९

ओगो किशोर, आजि तोमार द्वारे परान मम जागे ।
नवीन कबे करिबे तारे रङिन तव रागे ।।

११८. **एइ......झरे**—इस उदासीन हवा के रास्ते-रास्ते कलियाँ झरती हैं; **आमि.....नियेछि**—मैंने चुन ली हैं; **चरणे दियेछि**—(उन्हें) तुम्हारे चरणों में दिया (अर्पित किया) है; **लहो.....करे**—करुण हाथों से लो (ग्रहण करो); **यखन ......कोले**—(मैं) जब चला जाऊँगा, वे (कलियाँ) तुम्हारी गोद में खिलेंगी; **तोमार ......करे**—ऐसा हो कि माला गूँथने वाली तुम्हारी अंगुलियाँ मधुर वेदना से भर मुझे याद करें; **बउकथाकओ**—(कोकिल की जाति का एक पक्षी); **तन्द्राहारा**—तन्द्राविहीन; **विफल......राते**—आज विभोर (करने वाली) रात में विफल व्यथा से पुकार कर क्षान्त हो जाता है; **दुजनेर......पूर्णिमाते**—दोनों की कानों-कान बातें, दोनों की मिलन-विह्वलता फाल्गुन की पूर्णिमा को चाँदनी की धारा में बह जाती है; **एइ......गाँथा**—ये संकेत माला में गुँथ जाएँगे; **कालके.....तरे**—कल के लिये; **तोमार......प्रहरे**—तुम्हारी अलस दुपहरी में ।

११९. **ओगो**—अजी ओ; **आजि....जागे**—आज तुम्हारे द्वार पर मेरे प्राण जागते हैं; **नवीन......रागे**—अपने रंगीन राग (रंग, प्रेम) से उसे कब नवीन

भावनागुलि बाँधनखोला   रचिया दिबे तोमार दोला,
दाँड़ियो आसि हे भावे-भोला आमार आँखि-आगे ।।
दोलेर नाचे बुझि गो आछ अमरावतीपुरे—
बाजाओ वेणु बुकेर काछे, बाजाओ वेणु दूरे ।
शरम भय सकलि त्येजे   माधवी ताइ आसिल सेजे;
शुधाय शुधु, 'बाजाय के ये मधुर मधुसुरे ।'
गगने शुनि ए की ए कथा, कानने की ये देखि ।
एकि मिलन-चञ्चलता, विरहव्यथा एकि ।
आँचल काँपे धरार बुके,   की जानि ताहा सुखे ना दुखे—
धरिते यारे ना पारे तारे स्वपने देखिछे कि ।।
लागिल दोल जले स्थले,   जागिल दोल वने वने—
सोहागिनिर हृदयतले विरहिणीर मने मने ।
मधुर मोरे विधुर करे   सुदूर तार वेणुर स्वरे,
निखिल हिया किसेर तरे दुलिछे अकारणे ।।

कर दोगे; **भावना.......दोला**—बंधनहीन भावनाएँ तुम्हारे झूले की रचना कर देंगी; **दाँड़ियो.....आगे**—हे भाव में भूले हुए, मेरी आँखों के सामने आ कर खड़े होना; **दोलेर**—झूले के; **बुझि**—लगता है; **आछ**—हो; **बाजाओ...... दूरे**—हृदय के निकट वेणु बजाते, दूर वेणु बजाते हो; **शरम......सेजे**—इसीलिये लाज, भय सब कुछ त्याग कर माधवी सज कर आई है; **शुधाय......मधुसुरे**—बार-बार पूछती है 'मादक मधुर सुर में कौन (बाँसुरी) बजाता है'; **गगने.....देखि**—आकाश में यह कैसी बात सुनता हूँ, वन में क्या देखता हूँ; **एकि......एकि**—यह क्या मिलन की चञ्चलता (अथवा) विरह की व्यथा है; **आँचल......दुखे**—धरती की छाती पर आँचल काँपता है, क्या जाने वह सुख से या दुख से (काँपता है); **धरिते......कि**—जिसे पकड़ नहीं पाती उसे क्या स्वप्न में देख रही है; **लागिल......स्थले**—जल में, स्थल में झूलन लगा है (सभी दोलायमान हैं); **सोहागिनिर**—सुहागिन (सौभाग्यवती) के; **मधुर......स्वरे**—अपनी बाँसुरी के सुदूर सुर से 'मधुर' मुझे कातर कर रहा है; **विधुर**—कातर; **निखिल ......अकारणे**—समस्त विश्व-हृदय किस लिये अकारण दोलायमान है;

आनो गो आनो भरिया डालि करवीमाला लये,
आनो गो आनो साजाये थालि कोमल किशलये।
एसो गो पीत वसने साजि, कोलेते वीणा उठुक बाजि,
ध्यानेते आर गानेते आजि यामिनी याक बये ।।
एसो गो एसो दोलविलासी वाणीते मोर दोलो,
छन्दे मोर चकिते आसि मातिये तारे तोलो।
अनेक दिन बुकेर काछे रसेर स्रोत थमकि आछे
नाचिबे आजि तोमार नाचे समय तारि हल ।।

१९३७-३९

१२०

ओगो तुमि पञ्चदशी, पौँछिले पूर्णिमाते।
मृदुस्मित स्वप्नेर आभास तव विह्वल राते ।।
क्वचित् जागरित विहङ्गकाकली
तव नवयौवने उठिछे आकुलि क्षणे क्षणे।
प्रथम आषाढ़ेर केतकीसौरभ तव निद्राते ।।
येन अरण्यमर्मर
गुञ्जरि उठे तव वक्षे थरोथर।

आनो.....लये—करवी की (कनेर) माला ले कर डालिया भर लाओ; **साजाये..... किलशये**—कोमल किसलय से थाली सजा कर; **एसो......साजि**—पीले वस्त्र में (सज कर) आओ; **कोलेते.....बाजि**—गोद में वीणा बज उठे; **ध्यानेते......बये**—ध्यान और गान में आज रात्रि व्यतीत हो जाय; **एसो......दोलो**—अजी ओ दोल-विलासी (झूले के प्रेमी), आओ, मेरी वाणी में झूलो; **छन्दे.....तोलो**—मेरे छन्द में अचानक आ कर उसे मतवाला बना दो; **अनेक......आछे**—बहुत दिनों से हृदय के निकट रस का स्रोत थमा हुआ है; **नाचिबे......हल**—आज तुम्हारे नाच में वह नाचेगा, उसीका समय हो आया है।

१२०. **पौँछिले**—पहुँचीं, आईं; **पूर्णिमाते**—पूर्णिमा तक; **उठिछे...... क्षणे**—क्षण-क्षण आकुल हो उठती है; **येन**—जैसे; **थरोथर**—थर-थर;

अकारण वेदनार छाया घनाय मनेर दिगन्ते,
छलो छलो जल एने देय तव नयनपाते ।।

१९३७-३९

१२१

चिनिले ना आमारे कि ।
दीपहारा कोणे छिनु अन्यमने,
फिरे गेले कारेओ ना देखि ।।
द्वारे एसे गेले भुले— परशने द्वार येत खुले,
मोर भाग्यतरी एटुकु बाधाय गेल ठेकि ।।
झड़ेर राते छिनु प्रहर गनि ।
हाय, शुनि नाइ तव रथेर ध्वनि ।
गुरुगुरु गरजने काँपि वक्ष धरियाछिनु चापि,
आकाशे विद्युत्वह्नि अभिशाप गेल लेखि । ।

१९३७-३९

१२२

जीवने परम लगन कोरो ना हेला,
कोरो ना हेला हे गरबिनि ।

घनाय—घनीभूत हो उठती है; **एने देय**—ला देती है।

१२१. **चिनिले......कि**—मुझे पहचाना नहीं क्या; **दीपहारा......अन्यमने**—दीपविहीन कोने में अन्यमनस्क (बैठी) थी; **फिरे......देखि**—किसीको न देख लौट गए; **द्वारे.....भुले**—द्वार पर आ कर भूल गए; **परशने.....खुले**—(कि) छूते ही द्वार खुल जाता; **मोर......ठेकि**—मेरी भाग्यतरी (नौका) इतनी-सी बाधा पा कर ही रुक गई; **झड़ेर......गनि**—आँधी की रात में प्रहर गिन रही थी; **शुनि ....ध्वनि**—तुम्हारे रथ की आवाज़ नहीं सुनी; **गुरुगुरु......चापि**—(मेघ के) गुरु-गुरु गर्जन से कांपती वक्ष को दबाए हुए थी; **आकाशे......लेखि**—आकाश में विद्युतवह्नि (बिजली की आग) अभिशाप लिख गई।

१२२. **जीवने.......गरबिनि**—हे गर्विणी, जीवन में परम लग्न (भशु

वृथाइ काटिबे वेला, साङ्ग हबे ये खेला,
सुधार हाटे फुराबे बिकिकिनि हे गरबिनि ।।
मनेर मानुष लुकिये आसे, दाँड़ाय पाशे, हाय
हेसे चले याय जोयार-जले भासिये भेला—
दुर्लभ धने दुःखेर पणे लओ गो जिनि हे गरबिनि ।।
फागुन यखन याबे गो निये फुलेर डाला
की दिये तखन गाँथिबे तोमार वरणमाला
हे विरहिणी ।
बाजबे बाँशि दूरेर हाओयाय,
चोखेर जले शून्य चाओयाय काटबे प्रहर—
बाजबे बुके विदायपथेर चरणफेला दिन यामिनी
हे गरबिनि ।।

१९३७-३९

१२३

डेको ना आमारे, डेको ना, डेको ना ।
चले ये एसेछे मने तारे रेखो ना ।।

लग्न) की अवहेलना न करो; **वृथाइ.....वेला**—व्यर्थ ही घड़ी बीतेगी; **साङ्ग.....खेला**—खेल समाप्त जो हो जाएगा; **सुधार.....गरबिनि**—हे अभिमानिनी, अमृत की हाट में खरीद-बिक्री बन्द हो जाएगी; **मनेर......भेला**—मन का मानुष (मीत) छिप कर आता है, बगल में खड़ा होता है (और) हाय, हँस कर ज्वार के जल में भेला (बेड़ा) तिराए चला जाता है; **दुर्लभ......गरबिनि**—हे गर्विणी, दुर्लभ धन को दुःख का मूल्य दे कर जीत लो; **फागुन......वरणमाला**—फाल्गुन जब फूल की डाली ले कर चला जायगा, तब किस (चीज़) से तुम अपनी वरमाला गूँथोगी; **बाजबे......हाओयाय**—दूर हवा में बाँसुरी बजेगी; **चोखेर......प्रहर**—आँखों में जल भरे शून्य दृष्टि लिए प्रहर बीतेंगे (समय बीतेगा); **बाजबे......यामिनि**—विदाई के पथ का पद-निक्षेप छाती में रातदिन कसका करेगा।

१२३. **डेको......ना**—मुझे न पुकारो, न पुकारो; **चले.....ना**—जो चला

आमार वेदना आमि निये एसेछि,
मूल्य नाहि चाइ ये भालोबेसेछि,
कृपाकणा दिये आँखिकोणे फिरे देखो ना ।।
आमार दु:खजोयारेर जलस्रोते
निये याबे सब लाञ्छना हते ।
दूरे याब यबे सरे तखन चिनिबे मोरे—
आज अवहेला छलना दिये ढेको ना ।।

१९३७–३९

१२४

मने की द्विधा रेखे गेले चले से दिन भरा साँझे,
येते येते दुयार हते की भेबे फिराले मुखखानि—
की कथा छिल ये मने ।।
तुमि से कि हेसे गेले आँखिकोणे—
आमि बसे बसे भाबि निये कम्पित हृदयखानि,
तुमि आछ दूर भुवने ।।
आकाशे उड़िछे बकपाँति,
वेदना आमार तारि साथि ।

आया है उसे मन में न रखो; **आमार......एसेछि**—अपनी वेदना मैं ले कर आया हूँ; **मूल्य......भालोबेसेछि**—मूल्य नहीं चाहता, (मैंने) प्यार जो किया है; **कृपाकणा......ना**—आँखों के कोनों में दया का कण लिए फिर कर न देखो; **आमार......हते**—मेरे दु:ख के ज्वार का जलस्रोत मुझे सभी लांछनाओं से (दूर) ले जायगा; **दूरे......मोरे**—जब दूर हट जाऊँगा, तब मुझे पहचानोगी; **आज......ना**—आज (अपनी) अवहेलना को छलना द्वारा न ढँको।

१२४. **मने.....साँझे**—उस दिन भरी साँझ को मन में क्या दुविधा लिए चले गए; **येते......मुखखानि**—जाते-जाते द्वार से क्या सोच कर मुँह फिराया; **की......मने**—कौन सी बात मन में थी; **तुमि......कोणे**—तुम आँखों के कोनों में क्या-कुछ हँस कर चले गए; **आमि......भुवने**—मैं कम्पित हृदय लिए बैठी-बैठी चिन्ता करती रहती हूँ, (और) तुम (कहीं) दूर विश्व में हो; **आकाशे...... साथि**—आकाश में बगुलों की पंक्ति उड़ रही है, मेरी वेदना उसीकी संगिनी है;

बारेक तोमाय शुधाबारे चाइ विदायकाले की बलो नाइ,
से कि रये गेल गो सिक्त यूथीर गन्धवेदने ।।
१९३७–३९

१२५

ये छिल आमार स्वपनचारिणी
तारे बुझिते पारि नि।
दिन चले गेछे खुँजिते खुँजिते ।।
शुभखने काछे डाकिले,
लज्जा आमार ढाकिले गो,
तोमारे सहजे पेरेछि बुझिते ।।

के मोरे फिराबे अनादरे,
के मोरे डाकिबे काछे,
काहार प्रेमेर वेदनाय आमार मूल्य आछे,
ए निरन्तर संशये हाय पारि ने यूझिते—
आमि तोमारेइ शुधु पेरेछि बुझिते ।।
१९३७–३९

बारेक......चाइ—एक बार टुक तुमसे पूछना चाहती हूँ; **विदाय......नाइ**—विदाई के समय कौन-सी बात नहीं कह पाए; **से......वेदने**—वह (बात) क्या भीगी हुई जुही की गन्ध (रूपी) वेदना में (समाई) रह गई।

१२५. **ये......नि**—जो मेरे स्वप्नों में विचरण करने वाली थी, उसे समझ नहीं सका; **दिन......खुँजिते**—खोजते-खोजते दिन बीत गए; **शुभक्षणे......गो**—शुभक्षण में (तुमने अपने) निकट पुकारा (और) मेरी लज्जा ढँक दी; **तोमारे......बुझिते**—तुम्हें सहज ही में समझ पाया हूँ; **के......अनादरे**—कौन मुझे अनादर से लौटाएगा; **के......काछे**—कौन मुझे पास बुलाएगा; **काहार......आछे**—किसके प्रेम की वेदना में मेरा मूल्य है; **ए......युझिते**—इस बराबर बने रहने वाले संशय से, हाय, जूझ नहीं पाता; **आमि......बुझिते**—केवल तुम्हें ही में समझ पाया हूँ।

१२६

यदि हाय जीवन पूरण नाइ हल मम तव अकृपण करे
मन तबु जाने जाने—
चकित क्षणिक आलोछाया तव आलिपन आँकिया याय
भावनार प्राङ्गणे ।।
वैशाखेर शीर्ण नदी भरा स्रोतेर दान ना पाय यदि
तबु संकुचित तीरे तीरे
क्षीण धाराय पलातक परशखानि दिये याय,
पियासि लय ताहा भाग्य मानि ।।

मम भीरु वासनार अञ्जलिते
यतटुकु पाइ रय उच्छलिते ।
दिवसेर दैन्येर सञ्चय यत
यत्ने धरे राखि,
से ये रजनीर स्वप्नेर आयोजन ।।

१९३७–३९

१२६. **यदि.....करे**—हाय, यदि तुम्हारे अकृपण हाथों मेरा जीवनपूर्ण नहीं हुआ; **मन......जाने**—तौभी मन जानता है, जानता है; **चकित......प्राङ्गणे**—(कि) क्षण मात्र के विस्मित आलोक और छाया, चिन्तन के आंगन में तुम्हारा आलिम्पन (चौकपूरन) अंकित कर जाते हैं; **वैशाखेर......याय**—वैशाख की शीर्ण नदी अगर भरे हुए स्रोत का दान न पावे तौभी संकुचित तटों को (अपनी) क्षीण धारा से पलातक (जो भाग जानेवाला है) स्पर्श दे जाती है; **पियासि...... मानि**—प्यासा उसे अपना भाग्य मान कर लेता है; **अञ्जलिते**—अञ्जलि में; **यतटुकु......उच्छलिते**—जितना भी पाता हूँ, (वही) उच्छलित होता रहता है; **दिवसेर......राखि**—(समस्त) दिवस के दैन्य का जितना सञ्चय है, (उसे) यत्नपूर्वक रखता हूँ; **से......आयोजन**—वह रात्रि के स्वप्न का आयोजन जो है (रात्रि के सपने के लिये संग्रहीत है) ।

१२७

याक छिँड़े याक छिँड़े याक मिथ्यार जाल ।
दुःखेर प्रसादे एल आजि मुक्तिर काल ।।
एइ भालो ओगो एइ भालो विच्छेद-वह्निशिखार आलो,
निष्ठुर सत्य करुक वरदान—
घुचे याक छलनार अन्तराल ।।
याओ प्रिय, याओ तुमि याओ जयरथे—
बाधा दिब ना पथे ।
विदाय नेबार आगे मन तव स्वप्न हते येन जागे—
निर्मल होक होक सब जञ्जाल ।।

१९३७-३९

१२७. **याक......जाल**—मिथ्या का जाल छिन्न-भिन्न हो जाय, छिन्न-भिन्न हो जाय; **दुःखेर......काल**—दुःख के प्रसाद (कृपा) से आज मुक्ति का काल आया है; **एइ भालो**—यही अच्छा है; **विच्छेद......अन्तराल**—विच्छेद की अग्नि-शिखा का प्रकाश निष्ठुर सत्य का वरदान दे (और) छलना (प्रवञ्चना) का अन्तराल (व्यवधान) विनष्ट हो जाय; **याओ**—जाओ; **बाधा......पथे**—(तुम्हारे) पथ में बाधा नहीं दूंगी; **विदाय......जागे**—ऐसा हो कि बिदाई लेने के पहले तुम्हारा मन सपने से जाग उठे; **होक**—हो ।

प्रकृति

१

शाङनगगने घोर घनघटा, निशीथयामिनी रे।
कुञ्जपथे सखि, कैसे याओब अबला कामिनी रे।
उन्मद पवने यमुना तर्जित, घन घन गर्जित मेह।
दमकत विद्युत्, पथतरु लुण्ठित, थरहर कम्पित देह।
घन घन रिम्झिम् रिम्झिम् बरखत नीरदपुञ्ज।
शाल-पियाले ताल-तमाले निविड़तिमिरमय कुञ्ज।
कह रे सजनी, ए दुरुयोगे कुञ्जे निरदय कान
दारुण बाँशी काह बजायत सकरुण राधा नाम।
मोतिम हारे वेश बना दे सीँथि लगा दे भाले।
उरहि विलुण्ठित लोल चिकुर मम बाँधह चम्पकमाले।
गहन रयनमे न याओ बाला, नओलकिशोरक पाश।
गरजे घन घन, बहु डर पाओव, कहे भानु तव दास॥

१८७७

२

एस' एस' वसन्त, धरातले।
आन' मुहु मुहु नव तान, आन' नव प्राण नव गान।
आन' गन्धमदभरे अलस समीरण।

१. **शाङन**—सावन; **याओब**—जाऊँगी; **पियाले**—चिरौंजी (वृक्ष) में; **दुरुयोगे**—दुःसमय में; **कान**—कान्ह, कृष्ण; **बाँशी**—बाँसुरी; **काह बजायत**—क्यों बजाता है; **मोतिम**—मोती का बना हुआ; **सीँथि**—सीमन्त; **सीँथि...... भाले**—ललाट पर माँग काढ़ दे; **बाँधह चम्पकमाले**—चम्पक की माला से बाँध दो; **रयनमे**—रैन में; रात्रि में; **न याओ**—न जाओ; **नओलकिशोरक पाश**—नवलकिशोर (कृष्ण) के पास; **पाओब**—पाओगी; **भानु**—भानुसिंह (रवीन्द्रनाथ ने भानुसिंह के नाम से **'भानुसिंहेर पदावली'** की रचना की थी, जिससे यह गान लिया गया है)।

२. **एस'**—आओ; **धरातले**—पृथ्वी तल पर; **आन'**—लाओ; **मुहु**

आन' विश्वेर अन्तरे अन्तरे निविड़ चेतना।
आन' नवउल्लासहिल्लोल।
आन' आन' आनन्दछन्देर हिन्दोला धरातले।
भाङ' भाङ' बन्धनशृङ्खल।
आन' आन' उद्दीप्त प्राणेर वेदना धरातले।
एस' थरथर-कम्पित मर्मर-मुखरित नव-पल्लव-पुलकित
फुल- आकुल मालतीवल्लीविताने— सुखछाये, मधुबाये।
एस' विकशित उन्मुख, एस' चिरउत्सुक नन्दनपथ-चिरयात्री।
एस' स्पन्दित नन्दित चित्तनिलये गाने गाने, प्राणे प्राणे।
एस' अरुण-चरण कमल-वरण तरुण उषार कोले।
एस' ज्योत्स्नाविवश निशीथे, कलकल्लोल तटिनी-तीरे,
सुख- सुप्त सरसी-नीरे। एस' एस'।
एस' तड़ित्-शिखा-सम झञ्झाचरणे सिन्धुतरङ्ग-दोले।
एस' जागर-मुखर प्रभाते।
एस' नगरे प्रान्तरे वने।
एस' कर्मे वचने मने। एस' एस'।
एस' मञ्जीरगुञ्जर चरणे।
एस' गीतमुखर कलकण्ठे।
एस' मञ्जुल मल्लिकामाल्ये।
एस' कोमल किशलय-वसने।
एस' सुन्दर, यौवनवेगे।
एस' दृप्त वीर, नवतेजे।

मुहु—बार-बार; **हिन्दोला**—हिंडोला, झूला; **भाङ'**—तोड़ो; **सुखछाये**—सुखद छाया में; **मधुबाये**—मधुर वायु में; **वरण**—वर्ण, रंग; **कोले**—गोद में,; **एस'......निशीथे**—चाँदनी से विह्वल अर्द्ध रात्रि में आओ; **जागर**—जागरण; **प्रान्तरे**—वृक्ष-जल-जनविहीन फैले हुए मैदान में; **एस'......चरणे**—नुपुर-गुंजरित चरणों से आओ; **माल्य**—माला, हार; **एस'......माल्ये**—सुन्दर मल्लिका की माला पहन कर; **एस'......वसने**—कोमल किसलय का वस्त्र पहन कर; **सुन्दर**—(यहाँ वसन्त को संबोधित किया गया है);

ओहे दुर्मद, कर जययात्रा,
चल' जरापराभव-समरे
पवने केशररेणु छड़ाये, चञ्चल कुन्तल उड़ाये ।।

१८८८

३

एकि आकुलता भुवने। एकि चञ्चलता पवने।
एकि मधुर मदिर रसराशि आजि शून्यतले चले भासि,
झरे चन्द्रकरे एकि हासि, फुल- गन्ध लुटे गगने ।।
एकि प्राणभरा अनुरागे, आजि विश्वजगतजन जागे,
आजि निखिल नील गगने सुख- परश कोथा हते लागे।
सुखे शिहरे सकल वनराजि, उठे मोहन बाँशरि बाजि,
हेरो पूर्णविकशित आजि मम अन्तर सुन्दर स्वपने ।।

१८९६

४

झरझर बरिषे वारिधारा।
हाय पथवासी, हाय गतिहीन, हाय गृहहारा ।।
फिरे वायु हाहास्वरे, डाके कारे जनहीन असीम प्रान्तरे—
रजनी आँधारा ।।
अधीरा यमुना तरङ्ग-आकुला अकूला रे, तिमिरदुकूला रे।
निविड़ नीरद गगने गरगर गरजे सघने,
चञ्चल चपला चमके—नाहि शशितारा ।।

१८९६

दुर्मद—प्रमत्त, दुर्धर्ष; **कर**—करो; **चल'**—चलो; **जरा**—बुढ़ापा; **छड़ाये**—बिखेरते हुए।

३. **एकि**......यह कैसी; **चले भासि**—बह चली है; **लुटे**—लुटता है; **सुख......लागे**—सुखद स्पर्श कहाँ से आ कर लगता है; **उठे......बाजि**—मोहने वाली बाँसुरी बज उठती है; **हेरो......स्वपने**—आज सुन्दर सपनों से पूर्ण रूप से खिले हुए मेरे अन्तर को देखो।

४. **गृहहारा**—गृहहीन; **डाके कारे**—किसे पुकारती है; **नाहि**—नहीं हैं।

५

विश्ववीणारवे विश्वजन मोहिछे।
स्थले जले नभतले वने उपवने
नदीनदे गिरिगुहा-पारावारे
नित्य जागे सरस संगीतमधुरिमा,
नित्य नृत्यरस भङ्गिमा।—

नव वसन्ते नव आनन्द, उत्सव नव।
अति मञ्जुल, अति मञ्जुल, शुनि मञ्जुल गुञ्जन कुञ्जे,
शुनि रे शुनि मर्मर पल्लवपुञ्जे,
पिककूजन पुष्पवने विजने,
मृदु वायुहिलोलविलोल विभोल विशाल सरोवर-माझे
कलगीत सुलगीत सुललित बाजे।
श्यामल कान्तार-'परे अनिल सञ्चारे धीरे रे,
नदीतीरे शरवने उठे—ध्वनि सरसर मरमर।
कत दिके कत वाणी, नव नव कत भाषा, झरझर रसधारा।।

आषाढ़े नव आनन्द, उत्सव नव।
अति गम्भीर, अति गम्भीर नील अम्बरे डम्बरु बाजे,
येन रे प्रलयंकरी शङ्करी नाचे।
करे गर्जन निर्झरिणी सघने,
हेरो क्षुब्ध भयाल विशाल निराल पियाल-तमाल-विताने
उठे रव भैरवताने।
पवन मल्लारगीत गाहिछे आँधार राते;

५. **मोहिछे**—मोहित हो रहे हैं; **शुनि**—सुनता हूँ; **विभोल**—विभोर; **कान्तार-'परे**—सघन वन के ऊपर; **शर**—काँस; **कत दिके**—कितनी दिशाओंमें; **येन**—जैसे; **करे**—करती है; **हेरो**—देखो; **भयाल**—भयंकर; **गाहिछे**—गा

उन्मादिनी सौदामिनी रङ्गभरे नृत्य करे अम्बरतले।
दिके दिके कत वाणी, नव नव कत भाषा, झरझर रसधारा।।

आश्विने नव आनन्द, उत्सव नव।
अति निर्मल, अति निर्मल, अति निर्मल उज्ज्वल साजे
भुवने नव शरदलक्ष्मी विराजे।
नव इन्दुलेखा अलके झलके,
अति निर्मल हासविभासविकाश आकाशनीलाम्बुज-माझे
श्वेत भुजे श्वेत वीणा बाजे।
उठिछे आलाप मृदु मधुर बेहागताने,
चन्द्रकरे उल्लसित फुल्लवने झिल्लिरवे तन्द्रा आने रे।
दिके दिके कत वाणी, नव नव कत भाषा, झरझर रसधारा।।

१८९६

६

हेरिया श्यामल घन नील गगने,
सजल काजल आँखि पड़िल मने।
अधर करुणा-माखा, मिनतिवेदना-आँका
नीरवे चाहिया थाका विदायखने।।
झरझर झरे जल, बिजुलि हाने,
पवने मातिछे वने पागल गाने।
आमार परानपुटे कोन्खाने व्यथा फुटे,
कार कथा बेजे उठे हृदयकोणे।।

१९००

रहा है; **बेहाग**—विहाग (राग)।

६. **हेरिया**—देख कर; **पड़िल मने**—याद आ गई; **अधर......आँका**—कातरता से सिक्त, अनुनय-विनय की वेदना से अंकित अधर; **नीरवे......खने**—बिदाई के क्षण नीरव देखते रहना; **बिजुलि हाने**—विजली प्रहार करती है; **मातिछे**—मत्त कर रहा है; **परान पुटे**—प्राणों के कोष में; **कोन्खाने**—किस जगह; **फुटे**—बिंधती है; **कार......कोणे**—हृदय के कोने में किस की बातें कसकती हैं।

७

आजि झड़ेर राते तोमार अभिसार
परानसखा बन्धु हे आमार ।।
आकाश काँदे हताश-सम, नाइ ये घुम नयने मम—
दुयार खुलि हे प्रियतम, चाइ ये बारे बार ।।
बाहिरे किछु देखिते नाहि पाइ,
तोमार पथ कोथाय भाबि ताइ ।
सुदूर कोन् नदीर पारे गहन कोन् वनेर धारे
गभीर कोन् अन्धकारे हतेछ तुमि पार ।।

१९०८

८

आज वारि झरे झरझर भरा बादरे,
आकाश-भाङा आकुल धारा कोथाओ ना धरे ।।
शालेर वने थेके थेके झड़ दोला देय हेँके हेँके,
जल छुटे याय एँके बेँके माठेर 'परे ।
आज मेघेर जटा उड़िये दिये नृत्य के करे ।।

७. **झड़ेर राते**—आँधी वाली रात में; **परान सखा**—प्राण-सखा; **आकाश ......सम**—आकाश निराश-जैसा क्रन्दन कर रहा है; **नाइ......मम**—मेरी आँखों में नींद नहीं है; **दुयार......बार**—द्वार खोल कर, हे प्रियतम, बार-बार ताकती हूँ; **बाहिरे.....पाइ**—बाहर कुछ देख नहीं पाती; **तोमार.....ताइ**—यही सोचती हूँ कि तुम्हारा पथ कहाँ है; **कोन्**—किस; **धारे**—किनारे; **हतेछ...... पार**—तुम पार हो रहे हो।

८. **कोथाओ......धरे**—कहीं समाती नहीं; **शालेर......हेँके**—शाल वन को रह-रह कर आँधी हाँक देती (चीत्कार करती) हुई झकझोर रही है; **जल......'परे**—खुले विस्तृत मैदान में जल टेढ़ामेढ़ा दौड़ा जा रहा है; **आज...... करे**—आज मेघ (रूपी) जटा को उड़ाते हुए कौन नृत्य कर रहा है;

ओरे वृष्टिते मोर छुटेछे मन, लुटेछे एइ झड़े—
बुक छापिये तरङ्ग मोर काहार पाये पड़े।
अन्तरे आज की कलरोल, द्वारे द्वारे भाङ्ल आगल—
हृदय-माझे जागल पागल आजि भादरे।
आज एमन क'रे के मेतेछे बाहिरे घरे।।

१९०८

९

आजि श्रावणघन-गहन मोहे गोपन तव चरण फेले
निशार मतो नीरव ओहे, सबार दिठि एड़ाये एले।।
प्रभात आजि मुदेछे आँखि, वातास वृथा येतेछे डाकि,
निलाज नील आकाश ढाकि निविड़ मेघ के दिल मेले।।
कूजनहीन काननभूमि, दुयार देओया सकल घरे—
एकेला कोन् पथिक तुमि पथिकहीन पथेर 'परे।

ओरे......झड़े—अरे, वर्षा में मेरा मन भाग रहा है, इस आँधी में लुंठित हो रहा है; **बुक.....पड़े**—हृदय को छा कर मेरी तरंग किसके पैरों पड़ती है; **अन्तरे......कलरोल**—अन्तर में आज कैसा कोलाहल है; **द्वार......आगल**—द्वार-द्वार की अर्गला (खील) टूट गई है; **हृदय.......यादेर**—भाद्र मास में हृदय के भीतर आज पागल जाग उठा है; **आज......घरे**—आज कौन इस प्रकार घर-बाहर मत्त हो उठा है।

९. **आजि......मोहे**—आज सावन के बादलों की गभीर मुग्धता (के भीतर से); **गोपन......एले**—रात्रि के समान नीरव, अपने गोपन चरणों को निक्षेप करते हुए, सब की दृष्टि बचा कर (तुम) आए; **प्रभात......आँखि**—प्रभात ने आज आँखें मूंद ली हैं; **वातास......डाकि**—पवन व्यर्थ ही पुकारे जा रहा है; **निलाज.......मेले**—निर्लज्ज नील आकाश को ढँक कर (ढँकने के लिये) किस ने घने मेघों को फैला दिया है; **दुआर......घरे**—सभी घरों के द्वार बन्द हैं; **एकेला......'परे**—पथिकहीन पथ पर, पथिक, अकेले तुम कौन हो;

हे एका सखा, हे प्रियतम, रयेछे खोला ए घर मम—
समुख दिये स्वपन-सम येयो ना मोरे हेलाय ठेले ।।

१९०८

१०

मेघेर परे मेघ जमेछे, आँधार करे आसे ।
आमाय केन बसिये राख एका द्वारेर पाशे ।।
काजेर दिने नाना काजे थाकि नाना लोकेर माझे,
आज आमि ये बसे आछि तोमारि आश्वासे ।।
तुमि यदि ना देखा दाओ, कर आमाय हेला,
केमन करे काटे आमार एमन बादल-वेला ।
दूरेर पाने मेले आँखि केवल आमि चेये थाकि,
परान आमार केँदे बेड़ाय दुरन्त वातासे ।।

१९०८

११

अमल धवल पाले लेगेछे मन्द मधुर हाओया ।
देखि नाइ कभु देखि नाइ एमन तरणी-बाओया ।।

एका—एकाकी; **रयेछे......मम**—मेरा यह घर खुला हुआ है; **समुख...... ठेले**—मुझे अवहेला से ठेल कर—सपने के समान सामने से चले न जाना ।

१०. **मेघेर......आसे**—मेघ पर मेघ जमे हैं (और) अंधकार हुआ आ रहा है; **आमाय......पाशे**—द्वार के किनारे मुझे अकेला क्यों बैठा रखते हो; **काजेर......माझे**—काम-धंधे के दिनों में अनेक लोगों के बीच नाना कामों में (लगा) रहता हूँ; **आज......आश्वासे**—आज तो मैं तुम्हारे ही भरोसे बैठा हुआ हूँ; **तुमि......वेला**—तुम यदि दर्शन न दो (और) मेरी अवहेला करो (तो) मेरी ऐसी बादल-वेला (बादलों से घिरे रहने के कारण औत्सुक्य, उत्कंठा, सूना-पन आदि नाना भावों को पैदा करने वाला समय) क्योंकर कटे; **दूरेर...... थाकि**—सुदूर की ओर दृष्टि प्रसारित कर मैं केवल निर्निमेष ताकता रहता हूँ; **परान......वातासे**—मेरे प्राण अशान्त हवा में क्रन्दन करते फिरते हैं ।

११. **पाले**—पाल में; **लेगेछे**—लगी है; **हाओया**—हवा; **देखि......**

कोन् सागरेर पार हते आने कोन सुदूरेर धन—
भेसे येते चाय मन,
फेले येते चाय एइ किनाराय सब चाओया सब पाओया।
पिछने झरिछे झरो झरो जल, गुरु गुरु देया डाके,
मुखे एसे पड़े अरुणकिरण छिन्न मेघेर फाँके।
ओगो काण्डारी, के गो तुमि, कार हासिकान्नार धन
भेबे मरे मोर मन—
कोन् सुरे आज बाँधिबे यन्त्र, की मन्त्र हबे गाओया।।

१९०८

१२

आमार नयन-भुलानो एले,
आमि की हेरिलाम हृदय मेले।।
शिउलितलार पाशे पाशे झरा फुलेर राशे राशे
शिशिर-भेजा घासे घासे अरुणराङा चरण फेले
नयन-भुलानो एले।।

बाओया—इस प्रकार नाव खेना नहीं देखा, कभी नहीं देखा; **कोन्......धन**—(यह नाव) किस सागर के पार से किस सुदूर का धन लाती है; **भेसे......मन**—मन बह जाना चाहता है; **फेले......पाओया**—इसी किनारे सब चाहना, सब पाना फेंक जाना चाहता है; **पिछने......डाके**—पीछे झरझर जल झर रहा है और मेघ गुरुगुरु गर्जन कर रहे हैं; **मुखे......फाँके**—छिन्न मेघ के बीच से सूर्य की किरणें आ कर मुख पर पड़ रही हैं; **काण्डारी......मन**—अजी ओ कर्णधार, तुम कौन हो, किसके हास्य-क्रन्दन के (तुम) धन हो, (यही) सोचते मेरा मन मरता है; **कोन्......गाओया**—किस सुर में आज (वाद्य) यन्त्र बाँधोगे (मिलाओगे), किस मन्त्र का गान होगा।

१२. **आमार......एले**—मेरे नयनों को मुग्ध करने वाले, (तुम) आए; **आमि......मेले**—हृदय को खोल कर मैंने क्या देखा; **शिउलि......एले**—शेफाली (हरसिंगार) की बगल-बगल से, राशि-राशि झरे हुए फूलों और ओसकणों से भीगी हुई घास पर अरुण-रंजित चरण निक्षेप करते हुए, नयनों को मुग्ध करने

आलोछायार आँचलखानि लुटिये पड़े वने वने,
फुलगुलि ओइ मुखे चेये की कथा कय मने मने।
तोमाय मोरा करब वरण, मुखेर ढाका करो हरण,
ओइटुकु ओइ मेघावरण दु हात दिये फेलो ठेले।।
वनदेवीर द्वारे द्वारे शुनि गभीर शङ्खध्वनि,
आकाशवीणार तारे तारे जागे तोमार आगमनी।
कोथाय सोनार नूपुर बाजे, बुझि आमार हियार माझे
सकल भावे सकल काजे पाषाण-गाला सुधा ढेले—
नयन भुलानो एले।।

१९०८

१३

आज धानेर खेते रौद्र छायाय लुकोचुरि खेला—
नील आकाशे के भासाले सादा मेघेर भेला।।
आज भ्रमर भोले मधु खेते— उड़े बेड़ाय आलोय मेते,
आज किसेर तरे नदीर चरे चखा-चखीर मेला।।

वाले, तुम आए; **आलो.....वने**—प्रकाश और छाया (से निर्मित) आँचल वन-वन में लोट पड़ता है; **फुल......मने**—उस मुँह को देख कर (सभी) फूल मन ही मन जाने कौन-सी बात कहते हैं; **तोमाय......हरण**—हम लोग तुम्हें वरण करेंगे, मुख के आवरण को हटाओ; **ओइटुकु......ठेले**—(अपने मुख के ऊपर का) वह ज़रासा मेघ का आवरण दोनों हाथों से ठेल कर फेंक दो; **वनदेवीर.....ध्वनि**—वनदेवी के द्वार-द्वार गंभीर शङ्खध्वनि सुनता हूँ; **आकाश......आगमनी**—आकाश-वीणा के तार-तार में तुम्हारे आगमन (के उपलक्ष्य) में स्तवगान उठ रहा है; **कोथाय...... बाजे**—सोने का नूपुर कहाँ बजता है; **बुझि......माझे**—संभवतः मेरे हृदय के भीतर; **सकल......काजे**—सभी चिन्ताओं (और) सभी कर्मों में; **पाषाण..... ढेले**—पत्थर को गलाने वाली सुधा ढाल कर।

१३. **आज......खेला**—आज धान के खेत में धूप और छाया की लुका-छिपी का खेल (चल रहा है); **नील......भेला**—नीले आकाश में किसने उजले मेघों का बेड़ा बहा दिया है; **भोले**—भूले हुए है; **उड़े......मेते**—प्रकाश में मत्त हो कर उड़ते फिर रहे हैं; **आज......मेला**—आज किसलिये नदी के चर

ओरे याब ना आज घरे रे भाइ, याब ना आज घरे ।
ओरे आकाश भेङे बाहिरके आज नेब रे लुट क'रे ।
येन जोयार-जले फेनार राशि वातासे आज छुटछे हासि,
आज बिना काजे बाजिये बाँशि काटबे सकल वेला ।।

१९०८

१४

आमरा बेँधेछि काशेर गुच्छ, आमरा गेँथेछि शेफालिमाला—
नवीन धानेर मञ्जरी दिये साजिये एनेछि डाला ।।
एसो गो शारदलक्ष्मी, तोमार शुभ्र मेघेर रथे,
एसो निर्मल नील-पथे
एसो धौत-श्यामल आलो-झलमल वनगिरि-पर्वते—
एसो मुकुटे परिया श्वेत शतदल शीतल-शिशिर-ढाला ।।
झरा मालतीर फुले
आसन बिछानो निभृत कुञ्जे भरा गङ्गार कूले,
फिरिछे मराल डाना पातिबारे तोमार चरणमूले ।

में चकवा-चकवी का मिलन है; **याब......घरे**—आज घर नहीं जाऊँगा; **आकाश......क'रे**—आकाश को तोड़-फोड़ कर बाहर (बहिर्जगत्) को लूट लूँगा; **येन......हासि**—ज्वार के जल में फेन के समूह के समान हवा में जैसे हँसी दौड़ रही है; **आज......वेला**—आज बिना काम बाँसुरी बजाते सब समय बीत जाएगा ।

१४. **आमरा......डाला**—हम लोगों ने काँस के गुच्छे बाँधे हैं, हम लोगों ने शेफाली (हरसिंगार) की मालाएँ गूँथी हैं (और) नये धान की मञ्जरी से (हम) डाली सजा कर लाए हैं; **तोमार......रथे**—अपने शुभ्र मेघों के रथ पर; **एसो**—आओ; **आलो-झलमल**—प्रकाश से झलमल; **परिया**—धारण कर; **शिशिर**—ओसकण; **झरा......कूले**—भरी गंगा के किनारे एकान्त कुञ्ज में झरे हुए मालती-फूलों के बिछाए हुए आसन पर; **फिरिछे.....मूले**—तुम्हारे चरण-

गुञ्जरतान तुलियो तोमार सोनार वीणार तारे
मृदुमधु झंकारे,
हासि-ढाला सुर गलिया पड़िबे क्षणिक अश्रुधारे।
रहिया रहिया ये परशमणि झलके अलककोणे
पलकेर तरे सकरुण करे बुलायो बुलायो मने—
सोना हये याबे सकल भावना, आँधार हइबे आला ।।

१९०८

१५

मेघेर कोले रोद हेसेछे, बादल गेछे टुटि,
आज आदेर छुटि ओ भाइ, आज आमादेर छुटि।
की करि आज भेबे ना पाइ, पथ हारिये कोन् वने याइ,
कोन् माठे ये छुटे बेड़ाइ सकल छेले जुटि ।।
केया-पातार नौको गड़े साजिये देव फुले—
तालदिघिते भासिये देब, चलबे दुले दुले।

तले डैने बिछा देने के लिये मराल घूम रहा है; **तुलियो**—छेड़ना; **हासि-ढाला सुर**—वह सुर जिसमें हँसी उँड़ेली गई है; **गलिया......धारे**—क्षणिक अश्रु की धारा में गल जाएगा; **रहिया.....कोणे**—रह-रह कर अलक के कोने में जो पारस-मणि चमक उठता है; **पलकेर......मने**—क्षण भर के लिये करुण हाथों से (हम लोगों के) मन में (उसे) हौले-हौले स्पर्श कराना; **सोना......आला**—(हम लोगों की) सम्पूर्ण चिन्ताएँ सोना हो जाएँगी (और) अन्धकार, प्रकाश हो जायगा।

१५. **मेघेर.......छुटि**—मेघ की गोद में धूप हँस पड़ी है, बादल टूट गए (खण्ड-खण्ड हो गए) हैं, अरे भाई, आज हम लोगों की छुट्टी है, हम लोगों की छुट्टी है; **की......पाइ**—आज क्या करें समझ नहीं पाते; **पथ......याइ**—पथ भूल कर किस वन में जाँय; **कोन्......जुटि**—(हम) सभी लड़के जुड़ कर किस विस्तृत मैदान में दौड़ते फिरें; **केया......फुले**—केवड़े के पत्ते की नौका बना कर फूलों से सजा देंगे; **ताल......दुले**—ताड़ वाले तालाब में बहा देंगे, झूमती-झूमती चलेगी;

राखाल छेलेर सङ्गे धेनु   चराब आज बाजिये वेणु,
माखब गाये फुलेर रेणु चाँपार वने लुटि ।।

१९०८

१६

आबार एसेछे आषाढ़ आकाश छेये
आसे वृष्टिर सुवास वातास बेये ।।
एइ पुरातन हृदय आमार आजि   पुलके दुलिया उठिछे आबार बाजि
नूतन मेघेर घनिमार पाने चेये ।।
रहिया रहिया विपुल माठेर 'परे   नव तृणदले बादलेर छाया पड़े ।
'एसेछे एसेछे' एइ कथा बले प्राण, 'एसेछे एसेछे' उठितेछे एइ गान—
नयने एसेछे, हृदये एसेछे धेये ।।

१९१०

१७

आजि वसन्त जाग्रत द्वारे ।
तव अवगुण्ठित कुण्ठित जीवने
कोरो ना विड़म्बित तारे ।।

राखाल......वेणु—चरवाहे लड़कों के साथ बाँसुरी बजा कर गाय चराएँगे; **माखब......लुटि**—चम्पे के वन में लोट कर देह में फूल का पराग सानेंगे ।

१६. **आबार......छेये**—आकाश को छाता हुआ फिर आषाढ़ आया है; **आसे.......बेये**—हवा से हो कर वृष्टि की सुगन्धि आती है; **एइ.....बाजि**—यह मेरा पुराना हृदय आज पुलक से झूम फिर बज उठता है; **नूतन......चेये**—नवीन मेघों की सघनता की ओर देख; **रहिया रहिया**—रह-रह कर; **विपुल......पड़े**—बड़े विस्तृत मैदान में नव तृणदल के ऊपर बादलों की छाया पड़ती है; **'एसेछे......प्राण'**—'आया है, आया है' यही बात प्राण कहते हैं; **उठितेछे......गान**—यही गान उठ रहा है; **एसेछे धेये**—दौड़ कर आया है ।

१७. **कोरो......तारे**—उसे दुःखित न करो; **विड़म्बित**—वंचित;

आजि खुलियो हृदयदल खुलियो,
आजि भुलियो आपन पर भुलियो,
एइ संगीतमुखरित गगने
तव गन्ध तरङ्गिया तुलियो।
एइ बाहिर-भुवने दिशा हाराये
दियो छड़ाये माधुरी भारे भारे।।
एकि निविड़ वेदना वन-माझे
आजि पल्लवे पल्लवे बाजे—
दूरे गगने काहार पथ चाहिया
आजि व्याकुल वसुन्धरा साजे।
मोर पराने दखिनवायु लागिछे,
कारे द्वारे द्वारे कर हानि मागिछे—
एइ सौरभविह्वल रजनी
कार चरणे धरणीतले जागिछे।
ओहे सुन्दर, वल्लभ, कान्त,
तव गम्भीर आह्वान कारे।।

१९१०

आजि......खुलियो—आज हृदय-दल खोलना; **आजि......भुलियो**—आज अपना-पराया भूल जाना; **एइ**—इस; **तव......तुलियो**—अपने गंध को तरंगित करना; **एइ......भारे**—इस बाहर की दुनिया में दिशा भूल कर राशि-राशि माधुरी बिखेर देना; **एकि......बाजे**—वन में यह कैसी निविड़ वेदना है (जो) आज पल्लव-पल्लव में कसक रही है; **दूरे......साजे**—दूर आकाश में किसका पथ निहारती हुई आज व्याकुल वसुन्धरा सज रही है; **मोर......लागिछे**—मेरे प्राणों में दक्षिणवायु लग रही है; **कारे......मागिछे**—द्वार-द्वार पर हाथ से आघात कर किसकी याचना कर रही है; **एइ......जागिछे**—सुगन्धि से विह्वल यह रात्रि किसके चरणों में धरणी-तल पर जाग रही है; **तव......कारे**—किसके लिये तुम्हारा (यह) गम्भीर आह्वान है।

१८

आजि दखिन-दुयार खोला—
एसो हे, एसो हे, एसो हे आमार वसन्त, एसो।
दिब हृदय-दोलाय दोला,
एसो हे, एसो हे, एसो हे आमार वसन्त, एसो।।
नव श्यामल शोभन रथे एसो बकुल-बिछानो पथे,
एसो बाजाये व्याकुल वेणु मेखे पियालफुलेर रेणु।
एसो हे, एसो हे, एसो हे आमार वसन्त, एसो।।
एसो घन पल्लवपुञ्जे एसो हे, एसो हे, एसो हे।
एसो वनमल्लिकाकुञ्जे एसो हे, एसो हे, एसो हे।
मृदु मधुर मदिर हेसे एसो पागल हाओयार देशे,
तोमार उतला उत्तरीय तुमि आकाशे उड़ाये दियो—
एसो हे, एसो हे, एसो हे आमार वसन्त, एसो।।

१९१०

१९

वसन्ते कि शुधु केवल फोटा फुलेर मेला रे।
देखिस ने कि शुक्नो-पाता झरा-फुलेर खेला रे।।
ये ढेउ उठे तारि सुरे बाजे कि गान सागर जुड़े।

१८. **आजि......खोला**—आज दक्षिण-द्वार खुला हुआ है; **एसो...... वसन्त**—हे मेरे वसन्त आओ; **दिब......दोला**—हृदय के झूले पर झुलाऊँगा; **नव......पथे**—बकुल से बिछे हुए पथ पर नव श्यामल सुन्दर रथ पर आओ; **एसो......रेणु**—प्रियाल (चिरौंजी) फूल की धूल लिपटाए, व्याकुल बाँसुरी बजाते हुए आओ; **हेसे**—हँस कर; **पागल......देशे**—पागल हवा के देश में; **तोमार..... दियो**—अपने चंचल उत्तरीय (दुपट्टे-) को तुम आकाश में उड़ा देना।

१९. **वसन्ते......रे**—वसन्त में क्या खिले हुए फूलों की भीड़ मात्र होती है; **देखिस......रे**—क्या (तूने) सूखे पत्ते और झरे हुए फूलों का खेल नहीं देखा; **ये......जुड़े**—जो लहर उठती है, उसीके सुर में समस्त सागर में कैसा गान

ये ढेउ पड़े ताहारो सुर जागछे सारा वेला रे।
वसन्ते आज देख् रे तोरा झरा फुलेर खेला रे।।
आमार प्रभुर पायेर तले शुधुइ कि रे मानिक ज्वले।
चरणे ताँर लुटिये काँदे लक्ष माटिर ढेला रे।।
आमार गुरुर आसन-काछे सुबोध छेले क जन आछे।
अबोध जने कोल दियेछेन, ताइ आमि ताँर चेला रे।
उत्सवराज देखेन चेये झरा फुलेर खेला रे।।

१९१०

२०

एइ शरत्-आलोर कमलवने
बाहिर हये विहार करे ये छिल मोर मने मने।।
तारि सोनार काँकन बाजे आजि प्रभात-किरण माझे,
हाओयाय काँपे आँचलखानि— छड़ाय छाया क्षणे क्षणे।।
आकुल केशेर परिमले
शिउलिवनेर उदास वायु पड़े थाके तरुर तले।।

ध्वनित होता है; **ये.....रे**—जो लहर गिरती है, उसका भी सुर सब समय जाग रहा है; **वसन्ते......रे**—वसन्त में आज तुम सब झरे हुए फूलों का खेल देखो; **आमार......ज्वले**—मेरे प्रभु के चरण-तले क्या केवल माणिक्य ही प्रदीप्त हैं; **चरणे......रे**—उनके चरणों में लाखों मिट्टी के ढेले लोट-लोट कर क्रन्दन करते हैं; **आमार......आछे**—मेरे गुरु के आसन के निकट सुबोध लड़के (आखिर) कितने हैं; **अबोध......रे**—अबोध (बालकों) को भी (उन्होंने) गोद में स्थान दिया है, इसीलिये मैं उनका चेला हूँ; **उत्सवराज......रे**—उत्सवराज झरे हुए फूलों का खेल देखते हैं।

२०. **एइ.....मने**—जो मेरे मन के भीतर थी (वह) इसी शरत् के प्रकाश के कमल-वन में बाहर हो कर विहार करती है; **तारि......माझे**—उसी का सोने का कंकण आज प्रभात की किरणों में बजता है; **हाओयाय......क्षणे**—हवा में (उसका) आँचल काँपता है और क्षण-क्षण छाया फैलाता है; **आकुल...... तले**—चंचल केशों के परिमल में शेफाली के वन की उदासीन हवा पेड़ के

हृदय-माझे हृदय दुलाय, बाहिरे से भुवन भुलाय—
आजि से तार चोखेर चाओया छड़िये दिल नील गगने ।।

१९१०

२१

ओगो शेफालिवनेर मनेर कामना, केन सुदूर गगने गगने
आछ मिलाये पवने पवने ।
केन किरणे किरणे झलिया
याओ शिशिरे शिशिरे गलिया ।
केन चपल आलोते छायाते
आछ लुकाये आपन मायाते ।
तुमि मुरति धरिया चकिते नामो-ना,
ओगो शेफालिवनेर मनेर कामना ।।

आजि माठे माठे चलो विहरि,
तृण उठुक शिहरि शिहरि ।
नामो ताल पल्लव-वीजने,
नामो जले छायाछविसृजने ।

नीचे पड़ी रहती है; **हृदय......दुलाय**—हृदय के भीतर (वह) हृदय को आन्दोलित करती है; **बाहिरे......भुलाय**—बाहर वह जगत् को मुग्ध करती है; **आजि.....गगने**—आज उसने अपनी आँखों की चितवन को नील आकाश में प्रसारित कर दिया है।

२१. **ओगो......कामना**—अजी ओ शेफाली-वन के मन की कामना; **केन.....पवने**—क्यों सुदूर आकाश में हवा में घुली-मिली हो; **केन.....गलिया**—क्यों किरणों में झलमल कर ओसकणों में गल जाती हो; **केन.....मायाते**—क्यों चंचल प्रकाश और छाया में अपनी माया में छिपी हुई हो; **तुमि......ना**—तुम रूप धारण कर क्षण भर के लिये उतरो-ना।

माठे—मैदान में; **विहरि**—विहरती हुई; **उठुक......शिहरि**—सिहर

एसो सौरभ भरि आँचले,
आँखि आँकिया सुनील काजले।
मम चोखेर समुखे क्षणेक थामो-ना,
ओगो शेफालिवनेर मनेर कामना ।।

ओगो सोनार स्वपन, साधेर साधना,
कत आकुल हासि ओ रोदने
राते दिवसे स्वपने बोधने
ज्वालि जोनाकि-प्रदीप-मालिका,
भरि निशीथतिमिरथालिका,
प्राते कुसुमेर साजि साजाये,
साँजे झिल्लि-झाँझर बाजाये,
कत करेछे तोमार स्तुति-आराधना,
ओगो सोनार स्वपन, साधेर साधना ।।

ओइ बसेछ शुभ्र आसने
आजि निखिलेर सम्भाषणे।
आहा श्वेतचन्दनतिलके
आजि तोमारे साजाये दिल के।

सिहर उठे; **नामो**—उतरो; **बीजन**—पंखा; **एसो**—आओ; **भरि**—भर कर; **आँखि......काजले**—आँखों में सुनील काजल आँज कर; **मम......ना**—क्षण भर मेरी आँखों के सामने रुको-ना ।

कत—कितनी ; **ज्वालि**—जला कर ; **जोनाकि**—खद्योत, जुगनू ; **थालिका**—थाली; **साजि**—डाली; **साजाये**—सजा कर; **साँजे......बाजाये**—साँझ को झिल्ली की झाँझ बजा कर; **करेछे**—की है।

ओइ—वह; **बसेछ**—बैठी हो; **निखिलेर सम्भाषणे**—विश्व के साथ संभाषण (बातचीत) में; **श्वेत......के**—श्वेत-चंदन के तिलक से आज किसने

आहा वरिल तोमारे के आजि
तार दुःखशयन तेयाजि—
तुमि घुचाले काहार विरह–काँदना,
ओगो सोनार स्वपन, साधेर साधना ।।

१९१४

२२

तोमार मोहन रूपे के रय भुले ।
जानि ना कि मरण नाचे, नाचे गो ओइ चरणमूले ।।
शरत्-आलोर आँचल टुटे किसेर झलक नेचे उठे,
झड़ एनेछ एलोचुले ।।
काँपन धरे वातासेते—
पाका धानेर तरास लागे, शिउरे ओठे भरा खेते ।
जानि गो आज हाहारवे तोमार पूजा सारा हबे
निखिल-अश्रु-सागर-कूले ।।

१९१४

तुम्हें सजा दिया है; **वरिल......तेयाजि**—अपनी दुःख-शय्या को त्याग आज किसने तुम्हें वरण किया; **तुमि......काँदना**—किसके विरह-जनित क्रन्दन को तुमने चुप कराया; **ओगो......साधना**—ओ सोने के स्वप्न, साध की साधना ।

२२. **तोमार......भुले**—तुम्हारे मुग्ध करने वाले रूप से (भला) कौन भूला रहता है; **जानि......मूले**—क्या नहीं जानता कि मृत्यु नाचती है, अजी, उन चरणों में मृत्यु नाचती है; **शरत्......टुटे**—शरत्-आलोक का अंचल हटा कर; **किसेर......उठे**—किसकी अग्निशिखा नाच उठती है; **झड़**—आँधी; **एनेछ**—लाए हो; **एलोचुले**—आलुलायित केशों में; **काँपन......वातासेते**—हवा प्रकम्पित हो उठती है; **पाका......खेते**—पके धान को भय मालूम होता है, (वह) भरे खेत में सिहर उठता है; **जानि......कूले**—अजी, जानता हूँ, आज समस्त जगत् के अश्रुसागर के किनारे हाहाकार में तुम्हारी पूजा पूर्ण होगी ।

२३

शरत्, तोमार अरुण आलोर अञ्जलि
छड़िये गेल छापिये मोहन अङ्गुलि।
शरत्, तोमार शिशिर-धोओया कुन्तले
वनेर-पथे-लुटिये-पड़ा अञ्चले
आज प्रभातेर हृदय ओठे चञ्चलि॥
मानिक-गाँथा ओइ-ये तोमार कङ्कणे
झिलिक लागाय तोमार श्यामल अङ्गने।
कुञ्जछाया गुञ्जरणेर संगीते
ओड़ना ओड़ाय एकि नाचेर भङ्गीते,
शिउलिवनेर बुक ये ओठे आन्दोलि॥

१९१४

२४

एत दिन ये बसेछिलेम पथ चेये आर काल गुने
देखा पेलेम फाल्गुने॥
बालक वीरेर वेशे तुमि करले विश्वजय—
एकि गो विस्मय।
अवाक् आमि तरुण गलार गान शुने॥

२३. **शरत्......अङ्गुलि**—शरत्, तुम्हारे अरुण प्रकाश की अञ्जलि मुग्ध करने वाली (तुम्हारी) उँगलियों को अतिक्रम कर बिखर गई; **शरत्-चञ्चलि**—शरत्, तुम्हारे ओसकणों से धुले केशों से (तथा) वनपथ में लोट पड़े हुए अञ्चल से आज प्रभात का हृदय चञ्चल हो उठता है; **मानिक......अङ्गने**—माणिक्य-गूँथा तुम्हारा वह कंकण तुम्हारे श्यामल आँगन में चकाचौंध उत्पन्न करता है; **गुञ्जरणेर संगीते**—गुंजरण के संगीत से; **ओड़ना ओड़ाय**—ओढ़नी उड़ाती है; **एकि......भङ्गीते**—यह किस नाच की भंगी में; **शिउलि...... आन्दोलि**—शेफाली के वन का हृदय आन्दोलित हो उठता है।

२४. **एत......फाल्गुने**—तुम्हारा रास्ता देखते और दिन गिनते इतने दिनों से बैठा था, (अन्त में) फाल्गुन में (तुम) दीख पड़े; **वेशे**—वेश में; **तुमि करले**—तुमने किया; **एकि.....विस्मय**—अजी, यह कैसा आश्चर्य है; **शुने**—सुन कर;

गन्धे उदास हाओयार मतो उड़े तोमार उत्तरी,
कर्णे तोमार कृष्णचूड़ार मञ्जरी।
तरुण हासिर आड़ाले कोन् आगुन ढाका रय—
एकि गो विस्मय।
अस्त्र तोमार गोपन राखो कोन् तूणे ।।

१९१५

२५

ओगो दखिन हाओया, ओ पथिक हाओया, दोदुल दोलाय दाओ दुलिये।
नूतन-पातार-पुलक-छाओया परशखानि दाओ बुलिये ।।
आमि पथेर धारेर व्याकुल वेणु हठात् तोमार साड़ा पेनु गो—
आहा, एसो आमार शाखाय शाखाय प्राणेर गानेर ढेउ तुलिये ।।
ओगो दखिन हाओया, ओ पथिक हाओया, पथेर धारे आमार बासा।
जानि तोमार आसा-याओया, शुनि तोमार पायेर भाषा।
आमाय तोमार छोँओया लागले परे एकटुकुतेइ काँपन धरे गो—
आहा, काने काने एकटि कथाय सकल कथा नेय भुलिये ।।

१९१५

गन्धे......मञ्जरी—गन्ध से आकुल हवा के समान तुम्हारा उत्तरीय उड़ता है, तुम्हारे कानों में कृष्णचूड़ा की मञ्जरी है; **तरुण......रय**—तरुण हँसी की ओट कौन-सी आग ढकी रहती है; **कोन् तूणे**—किस तरकस में।

२५. **हाओया**—हवा; **दोदुल......दुलिये**—दोलायमान झूले पर झुला दो; **पातार**—पत्तियों का; **छाओया**—परिव्याप्त; **परशखानि**—स्पर्श; **दाओ बुलिये**—हल्के-हल्के फेर दो; **आमि.....वेणु**—मैं रास्ते के किनारे का व्याकुल बाँस; **तोमार**—तुम्हारी; **साड़ा**—आहट; **पेनु**—(मैंने) पाई; **एसो...... तुलिये**—मेरी शाखा-शाखा में प्राणों के गान की तरंगें उठाते हुए आओ; **पथेर......बासा**—पथ के किनारे मेरा वासस्थान है; **जानि......भाषा**—तुम्हारा आना-जाना जानता हूँ, तुम्हारे पैरों की भाषा सुनता हूँ; **आमार......गो**—तुम्हारा थोड़ा-सा भी स्पर्श लगते ही मुझ में कंपन होता है; **काने......भुलिये**—कानों-कान (कही हुई) एक बात से सभी बातें भुला देता है।

२६

ओरे भाइ, फागुन लेगेछे वने वने—
डाले डाले फुले फले पाताय पाताय रे,
आड़ाले आड़ाले कोणे कोणे ।।
रङे रङे रङिल आकाश, गाने गाने निखिल उदास—
येन चल चञ्चल नव पल्लवदल मर्मरे मोर मने मने ।।
हेरो हेरो अवनीर रङ्ग,
गगनेर करे तपोभङ्ग ।
हासिर आघाते तार मौन रहे ना आर,
केँपे केँपे ओठे खने खने ।
बातास छुटिछे वनमय रे, फुलेर ना जाने परिचय रे ।
ताइ बुझि बारे बारे कुञ्जेर द्वारे द्वारे
शुधाये फिरिछे जने जने ।।

१९१५

२७

वसन्ते फुल गाँथल आमार जयेर माला ।
बइल प्राणे दखिन-हाओया आगुन-ज्वाला ।।
पिछेर बाँशि कोणेर घरे मिछे रे ओइ केँदे मरे—
मरण एबार आनल आमार वरणडाला ।।

---

२६. **फागुन......पाताय**—वन-वन, डाल-डाल, फूल-फल, पत्ती-पत्ती में फाल्गुन (का स्पर्श) लगा है; **आड़ाले**—अन्तराल में; **कोणे-कोणे**—कोने-कोने में; **रङे......आकाश**—विभिन्न रंगों से आकाश रँग गया; **निखिल**—समस्त विश्व; **येन**—जैसे; **मर्मरे**—मर्मर करता है; **हेरो**—देखो; **करे**—करता है; **हासिर......खने**—उसकी हँसी के आघात से (आकाश) और चुप नहीं रह पाता, क्षण-क्षण काँप-काँप उठता है; **बातास......परिचय रे**—समस्त वन में पवन दौड़ लगा रहा है, फूलों का परिचय नहीं जानता; **ताइ......जने**—संभवत: इसीलिये बारबार कुञ्ज के द्वार-द्वार, जन-जन से पूछता फिर रहा है ।

२७. **वसन्ते......माला**—वसन्त ने मेरी जयमाला में फूल गूँथे; **बइल...... ज्वाला**—आग लगाने वाली दक्षिण हवा प्राणों में बही; **पिछेर......मरे**—पीछे (विगत) की बाँसुरी कोने वाले घर में व्यर्थ रोती-कलपती है; **मरण......डाला**—

यौवनेरइ झड़ उठेछे आकाश-पाताले।
नाचेर तालेर झंकारे तार आमाय माताले।
कुड़िये नेबार घुचल पेशा, उड़िये देबार लागल नेशा—
आराम बले 'एल आमार याबार पाला'॥

१९१५

२८

'आमि पथभोला एक पथिक एसेछि।
सन्ध्यावेलार चामेलि गो, सकाल-वेलार मल्लिका,
आमाय चेन कि।'
'चिनि तोमाय चिनि, नवीन पान्थ—
वने वने ओड़े तोमार रङिन वसन-प्रान्त।
फागुन प्रातेर उतला गो, चैत्रेर रातेर उदासी,
तोमार पथे आमरा भेसेछि।'
'घरछाड़ा एइ पागलटाके एमन क'रे के गो डाके
करुण गुञ्जरि
यखन बाजिये वीणा वनेर पथे बेड़ाइ सञ्चरि।'

इस बार मृत्यु मेरे वरण की डाली ले आई; **यौवनेरइ......पाताले**—आकाश-पाताल में यौवन की ही आँधी उठी है; **नाचेर......माताले**—अपने नृत्य के ताल की झंकार से मुझे मतवाला कर दिया; **कुड़िये.....पेशा**—संचय करने का पेशा ख़त्म हुआ; **उड़िये......नेशा**—उड़ा देने का नशा चढ़ा; **आराम......पाला**—आराम कहता है '(अब) मेरे जाने की बारी आई'।

२८. **आमि......एसेछि**—मैं पथ-भूला एक पथिक आया हूँ; **सन्ध्या...... चेन कि**—अजी, सन्ध्या समय की चमेली, प्रातःकाल की मल्लिका, मुझे पहचानती हो क्या; **चिनि.....चिनि**—(हम) पहचानती हैं, तुम्हें पहचानती हैं; **वने..... प्रान्त**—वन-वन में तुम्हारे रंगीन वस्त्र का छोर उड़ता है; **फागुन......भेसेछि**—अजी ओ, फाल्गुन के प्रभात के आकुल, चैत्र की रात्रि के उदासीन (पथिक), तुम्हारे रास्ते हमलोग बह आई हैं; **घरछाड़ा......गुञ्जरि**—गृहहीन इस पगले को करुण (स्वर) में गुंजार कर इस प्रकार कौन पुकारता है; **यखन......सञ्चरि**—जब

'आमि तोमाय डाक दियेछि ओगो उदासी,
आमि आमेर मञ्जरी।
तोमाय चोखे देखार आगे तोमार स्वपन चोखे लागे,
वेदन जागे गो—
ना चिनितेइ भालो बेसेछि।'
'यखन फुरिये वेला चुकिये खेला तप्त धुलार पथे
याब झरा फुलेर रथे—
तखन सङ्ग के ल'बि।
'लब आमि माधवी।'
'यखन विदाय-बाँशिर सुरे सुरे शुक्नो पाता याबे उड़े
सङ्गे के र'बि।'
'आमि रब, उदास हब ओगो उदासी।
आमि तरुण करवी।'
'वसन्तेर एइ ललित रागे विदाय-व्यथा लुकिये जागे—
फागुन दिने गो
काँदन-भरा हासि हेसेछि।'

१९१८

वीणा बजाते वन के रास्ते पर सञ्चरण करता घूमता हूँ; **आमि......मञ्जरी**—ओ उदासी, मैंने तुम्हें पुकारा है, मैं आम की मञ्जरी हूँ; **तोमाय......बेसेछि**—तुम्हें आँखों से देखने के पहले (ही) तुम्हारा स्वप्न आँखों में रम जाता है, वेदना जाग उठती है, बिना पहचाने ही तुम्हें प्यार किया है; **यखन......ल'बि**—जब समय चुका कर, खेल समाप्त करके जलती धूल के रास्ते झरे फूलों के रथ पर जाऊँगा, उस समय (तुम में से) कौन साथ होगा; **लब.....माधवी**—मैं माधवी साथ हूँगी; **यखन......र'बि**—जब बिदाई की बाँसुरी के हर स्वर के साथ सूखी पत्तियाँ उड़ जाएँगी, (उस समय) कौन साथ रहेगा; **आमि......करवी**—मैं तरुण करवी (कनेर), ओ उदासी, मैं रहूँगी, मैं (तुम्हारे साथ) उन्मना होऊँगी; **वसन्तेर......हेसेछि**—वसन्त के इस ललित राग में विदाई की व्यथा गोपन भाव से जागती है, अजी, (मैंने) फाल्गुन में क्रन्दन से भरी हँसी हँसी है।

२९

आमार दिन फुरालो व्याकुल बादलसाँझे
गहन मेघेर निविड़ धारार माझे।
वनेर छायाय जल छलछल सुरे
हृदय आमार कानाय कानाय पूरे।
खने खने ओइ गुरुगुरु ताले ताले
गगने गगने गभीर मृदङ बाजे॥
कोन् दूरेर मानुष येन एल आज काछे,
तिमिर-आड़ाले नीरवे दाँड़ाये आछे।
बुके दोले तार विरहव्यथार माला,
गोपन-मिलन-अमृतगन्ध-ढाला।
मने हय तार चरणेर ध्वनि जानि—
हार मानि तार अजाना जनेर साजे॥

१९१९

३०

मोर वीणा ओठे कोन् सुरे बाजि कोन् नव चञ्चल छन्दे।
मम अन्तर कम्पित आजि निखिलेर हृदय-स्पन्दे॥

२९. **आमार**—मेरा; **फुरालो**—समाप्त हुआ; **माझे**—मध्य, बीच; **वनेर......पूरे**—वन की छाया में जल छलछल स्वर से मेरे हृदय को लबालब भर रहा है; **कानाय-कानाय**—किनारा-पर्यन्त; **खने......बाजे**—क्षण-क्षण गुरु-गुरु ताल में आकाश भर में गभीर मृदङ्ग बज रहा है; **कोन्......काछे**—किस सुदूर का व्यक्ति जैसे आज निकट आया; **तिमिर......आछे**—अंधकार की ओट में चुपचाप खड़ा है; **बुके......माला**—उसकी छाती पर विरह-व्यथा की माला झूल रही है; **मने......जानि**—लगता है जैसे उसकी चरण-ध्वनि को जानता हूँ; **हार......साजे**—अपरिचित व्यक्ति (जैसी) उसकी सज्जा (के निकट) हार मानता हूँ।

३०. **मोर......छन्दे**—मेरी वीणा किस सुर में, किस अभिनव चञ्चल छन्द में बज उठती है; **मम......स्पन्दे**—मेरा अन्तर अखिल विश्व के हृदय के

आसे कोन् तरुण अशान्त, उड़े वसनाञ्चल-प्रान्त—
आलोकेर नृत्ये वनान्त मुखरित अधीर आनन्दे ।।
ओइ अम्बरप्राङ्गण-माझे निःस्वर मञ्जीर गुञ्जे ।
अश्रुत सेइ ताले बाजे करतालि पल्लवपुञ्जे ।
कार पद-परशन-आशा तृणे तृणे अर्पिल भाषा—
समीरण बन्धनहारा उन्मन कोन् वनगन्धे ।।

१९१९

३१

आमारे डाक दिल के भितर-पाने—
ओरा ये डाकते जाने ।
आश्विने ओइ शिउलिशाखे
मौमाछिरे येमन डाके
प्रभाते सौरभेर गाने ।।
घरछाड़ा आज घर पेल ये, आपन मने रइल म'जे ।
हाओयाय हाओयाय केमन क'रे खबर ये तार पौंछल रे
घर-छाड़ा ओइ मेघेर काने ।।

१९२१

स्पन्दन के साथ आज कम्पित है; **आसे......आनन्दे**—कौन अशान्त तरुण अपने अंचल के छोर को उड़ाते हुए आता है, वन प्रान्त आलोक के नृत्य में आकुल आनंद से मुखरित है; **अम्बर......गुञ्जे**—आकाश के प्रांगण में निःशब्द नूपुर बजता है; **अश्रुत.....पुञ्जे**—पल्लव समूह में उसी अश्रुत (अनसुनी) ताल में करताली बज रही है; **कार.....भाषा**—किसके पैरों के स्पर्श की आशा ने तृण-तृण को भाषा दी; **समीरण......वनगन्धे**—बंधनहीन समीर वन की किस सुगन्धि से उन्मन है।

३१. **आमारे......पाने**—भीतर (अन्तर) की ओर किसने मेरा आह्वान किया है; **ओरा......जाने**—वे पुकारना जानते हैं; **आश्विने......गाने**—आश्विन में शेफाली की शाखा पर सौरभ-संगीत जैसे प्रभात में मधुमक्खियों को पुकारता है; **घर......ये**—गृहहीन ने आज गृह पाया; **आपन......म'जे**—अपने आप में ही मगन रहा; **हाओयाय......काने**—हवा-हवा में कैसे उसकी ख़बर गृहहीन उस मेघ के कानों तक पहुँची।

३२

दारुण अग्निबाणे रे हृदय तृषाय हाने रे।
रजनी निद्राहीन, दीर्घ दग्ध दिन
आराम नाहि ये जाने रे।।
शुष्क काननशाखे क्लान्त कपोत डाके
करुण कातर गाने रे।।
भय नाहि, भय नाहि। गगने रयेछि चाहि।
जानि झञ्झार वेशे दिबे देखा तुमि एसे
एकदा तापित प्राणे रे।।

१९२२

३३

प्रखर तपनतापे आकाश तृषाय काँपे,
वायु करे हाहाकार।
दीर्घपथेर शेषे डाकि मन्दिरे एसे,
'खोलो खोलो खोलो द्वार।'
बाहिर हयेछि कबे कार आह्वानरवे,
एखनि मलिन हबे प्रभातेर फुलहार।।

३२. **हाने**—आघात करता है; **आराम......जाने**—आराम नहीं जानता; **नाहि**—नहीं; **गगने......चाहि**—आकाश की ओर (टकटकी लगाए) देख रहा हूँ; **जानि......प्राणे**—जानता हूँ, एक समय तप्त प्राणों में आँधी-पानी के वेश में आ कर दिखलाई पड़ोगे।

३३. **तपनतापे**—सूर्य की गर्मी से; **आकाश......काँपे**—आकाश तृष्णा से काँप रहा है; **शेषे**—अन्त में; **डाकि......एसे**—मन्दिर में आ कर पुकारता हूँ; **बाहिर......रवे**—किसके आह्वान पर कब-का बाहर हुआ हूँ; **एखनि...... फुलहार**—प्रभात के फूलों का हार अभी मलिन होगा; **बुके बाजे**—हृदय में बजती है; **जानि......तार**—नहीं जानता कोई है कि नहीं, उसकी तो कोई

बुके बाजे आशाहीना क्षीणमर्मर वीणा,
जानि ना के आछे किना, साड़ा तो ना पाइ तार
आजि सारा दिन ध'रे प्राणे सुर ओठे भरे,
एकेला केमन क'रे बहिब गानेर भार ।।

१९२२

३४

आजि हृदय आमार याय ये भेसे
यार पाय नि देखा तार उद्देशे ।।
बाँधन भोले, हाओयाय दोले, याय से बादल-मेघेर कोले रे
कोन्‌से असम्भवेर देशे ।।
सेथाय विजन सागरकूले
श्रावण घनाय शैलमूले ।
राजार पुरे तमालगाछे नूपुर शुने मयूर नाचे रे
सुदूर तेपान्तरेर शेषे ।।

१९२२

३५

एसो एसो हे तृष्णार जल, कलकल् छलछल्—
भेद करि कठिनेर क्रूर वक्षतल कलकल् छलछल् ।।

आहट नहीं पाता; **आजि......भार**—आज समस्त दिन प्राणों में सुर भर उठते हैं; गान का भार अकेला क्यों-कर वहन करूँगा ।

३४. **आजि......उद्देशे**—जिसे देख नहीं पाया, उसके निमित्त आज मेरा हृदय बहा जा रहा है ; **बाँधन......कोले**—बन्धन भूल जाता है, हवा में झूल जाता है, वह बरसाती बादलों की गोद में जाता है; **सेथाय**—वहाँ; **घनाय**—सघन हो आता है; **राजार......नाचे**—राजा की पुरी में तमालवृक्ष पर नूपुर (की आवाज़) सुन कर मयूर नाचता है; **तेपान्तरेर शेषे**—जनशून्य विस्तृत मैदान के अन्त में; **तेपान्तर**—(बँगला ग्राम-गीतों और दन्तकथाओं में जनशून्य विस्तृत मैदान के अर्थ में इस शब्द का प्रयोग होता है) ।

३५. **एसो......जल**—आओ, आओ हे तृष्णा के जल; **भेद......वक्षतल**—

एसो एसो उत्सस्रोते गूढ़अन्धकार हते
एसो निर्मल, कलकल् छलछल् ।।
रविकर रहे तव प्रतीक्षाय।
तुमि ये खेलार साथि, से तोमारे चाय।
ताहारि सोनार तान तोमाते जागाय गान,
एसो हे उज्ज्वल, कलकल् छलछल् ।।
हाँकिछे अशान्त बाय,
आय, आय, आय। से तोमाय खुँजे याय।
ताहार मृदङ्गरवे करतालि दिते हबे,
एसो हे चञ्चल, कलकल् छलछल् ।।
मरुदैत्य कोन् मायाबले
तोमारे करेछे बन्दी पाषाणशृङ्खले।
भेङे फेले दिये कारा एसो बन्धहीन धारा,
एसो हे प्रबल, कलकल् छलछल् ।।

१९२२

३६

ओगो आमार श्रावणमेघेर खेयातरीर माझि,
अश्रुभरा पुरब हाओयाय पाल तुले दाओ आजि ।।

कठिन के क्रूर वक्ष-स्थल का भेदन कर; **हते**—से; **रविकर**— सूर्य की किरण; **तव प्रतीक्षाय**—तुम्हारी प्रतीक्षा में; **तुमि......चाय**—तुम जो (उसके) खेल के साथी हो, वह तुम्हें चाहती है; **ताहारि......गान**—उसी की सुनहली तान तुम में तान जगाती है; **हाँकिछे......बाय**—अशान्त वायु (तुम्हें) हाँक दे कर बुलाती है; **आय**—आ; **से......याय**—वह तुम्हें खोज जाती है; **ताहार......हबे**—उसके मृदङ्ग की आवाज़ के साथ हाथ से ताल देनी पड़ेगी; **मरु......शृंखले**—मरुभूमि (रूपी) दैत्य किस मायाबल से तुम्हें पत्थर की शृंखला में बन्दी किए हुए है; **भेङे......कारा**—कारागार को तोड़ कर; **एसो**—आओ।

३६. **ओगो......माझि**—अजी ओ मेरे सावन के मेघ (रूपी) खेवे की नाव के माँझी; **अश्रुभरा......आजि**—आँसू से भरी पुरवैया हवा में आज पाल ऊपर

उदास हृदय ताकाय रय, बोझा ताहार नय भारि नय,
पुलक-लागा एइ कदम्बेर एकटि केवल साजि ।।
भोरवेला ये खेलार साथि छिल आमार काछे,
मने भावि, तार ठिकाना तोमार जाना आछे ।
ताइ तोमारि सारिगाने सेइ आँखि तार मने आने,
आकाश-भरा वेदनाते रोदन उठे बाजि ।।

१९२२

३७

तिमिर-अवगुण्ठने वदन तव ढाकि
के तुमि मम अङ्गने दाँड़ाले एकाकी ।।
आजि सघन शर्वरी, मेघमगन तारा,
नदीर जले झर्झरि झरिछे जलधारा,
तमालवन मर्मरि पवन चले हाँकि ।।
ये कथा मम अन्तरे आनिछ तुमि टानि
जानि ना कोन् मन्तरे ताहारे दिब वाणी ।

चढ़ा दो; **उदास......नय**—उदासीन हृदय देख रहा है (दृष्टि लगाए हुए है), उसका बोझ भारी नहीं है; **पुलक......साजि**—पुलक से भरी इस कदम्ब की केवल-मात्र एक फूलों की डालिया है; **भोरवला......काछे**–भोर के समय खेल का जो साथी मेरे पास था; **मने......आछे**—मन में सोचता हूँ, उसका पता तुम्हारा जाना हुआ है; **ताइ.....आने**—इसीलिये तुम्हारा माँझियों का गान ही उसकी उन्हीं आँखों को याद करा देता है; **सारिगान**—(मल्लाहों का गान); **आकाश...... बाजि**—समस्त आकाश को भरने वाली वेदना में रोदन बज उठता है।

३७. **ढाकि**—ढँक; **के......एकाकी**—कौन तुम मेरे आँगन में अकेले (आ) खड़े हुए; **शर्वरी**—रात्रि; **मेघमगन**—मेघ में छिपा; **झर्झरि**—झरझर शब्द करती; **मर्मरि**—मर्मर शब्द से गुंजित कर; **हाँकि**—उच्च स्वर से शब्द करता; **ये......वाणी**—जो बात मेरे अन्तर में तुम (बरबस) खींचे ला रहे हो,

रयेछि बाँधा बन्धने छिँड़िब, याब बाटे—
येन ए वृथा क्रन्दने निशि नाहि काटे।
कठिन बाधा-लङ्घने दिब ना आमि फाँकि।।

१९२२

३८

पूब-सागरेर पार हते कोन् एल परवासी—
शून्ये बाजाय घन घन हाओयाय हाओयाय सन सन
साप खेलाबार बाँशि।।
सहसा ताइ कोथा हते कुलु कुलु कलस्रोते
दिके दिके जलेर धारा छुटेछे उल्लासी।।
आज दिगन्ते घन घन गभीर गुरु गुरु डमरु-रव हयेछे ओइ शुरु।
ताइ शुने आज गगनतले पले पले दले दले
अग्निबरन नाग नागिनी छुटेछे उदासी।।

१९२२

नहीं जानता किस मन्त्र से उसे वाणी दूँगा; **रयेछि......काटे**—बन्धन में बँधा हुआ हूँ, (उसे) तोड़ूँगा, रास्ते में जाऊँगा, ऐसा हो कि इस वृथा क्रन्दन में यह रात्रि न कटे; **कठिन......फाँकि**—कठिन बाधा को पार करने से मैं बच निकलने की चेष्टा नहीं करूँगा।

३८. **पूब......परवासी**—पूर्व-सागर के पार से कौन प्रवासी आया; **शून्ये......बाँशि**—(वह) साँप खिलाने वाली बाँसुरी बार-बार शून्य में, हवा में सन-सन बजाता है; **ताइ**—इसीलिये; **कोथा हते**—कहाँ से; **कुलु कुलु**—कल-कल; **छुटेछे**—दौड़ पड़ी है; **घन घन**—बार-बार; **डमरु......शुरु**—डमरु की आवाज़ वह शुरू हुई है; **ताइ शुने**—उसी को सुन कर; **पले पले**—क्षण-क्षण; **अग्निबरन**—अग्नि के रंग की।

३९

बादल-बाउल बाजाय रे एकतारा—
सारा वेला ध'रे झरो झरो झरो धारा ।।
जामेर वने धानेर खेते आपन ताने आपनि मेते
नेचे नेचे हल सारा ।।
घन जटार घटा घनाय आँधार आकाश-माझे,
पाताय पाताय टुपुर टुपुर नूपुर मधुर बाजे ।
घर-छाड़ानो आकुल सुरे उदास हये बेड़ाय घुरे
पुबे हाओया गृहहारा ।।

१९२२

४०

बादल-मेघे मादल बाजे गुरुगुरु गगन-माझे ।।
तारि गभीर रोले आमार हृदय दोले,
आपन सुरे आपनि भोले ।।
कोथाय छिल गहन प्राणे गोपन व्यथा गोपन गाने—
आजि सकल बाये श्यामल वनेर छाये
छड़िये गेल सकलखाने गाने गाने ।।

१९२२

---

३९. **बादल-बाउल**—वर्षा रूपी बाउल; **बाउल**—(बंगाल का एक साधक सम्प्रदाय—इस सम्प्रदाय के साधक बंगाल में ही सीमित हैं । एकतारा ले कर बड़ी मस्ती से ये नाचते और गाते हैं। ये पैरों में नूपुर भी बाँध लेते हैं); **बाजाय**—बजा रहा है; **जामेर......सारा**—जामुन के वन में, धान के खेत में अपनी तान से आप ही मत्त हो कर नाचते-नाचते विह्वल हो गया है; **घन.....माझे**—घनी जटा का समूह आकाश में अन्धकार को घनीभूत करता है; **पाताय पाताय**—पत्ती-पत्ती में; **घर......गृहहारा**—घर से बाहर निकालने वाले व्याकुल सुर से उदासीन हो कर गृहहीन पुरवैया हवा घूमती फिरती है ।

४०. **मादल**—ढोल की तरह का एक वाद्य-यन्त्र; **तारि......दोले**—उसीकी गंभीर ध्वनि से मेरा हृदय झूमता है; **आपन......भोले**—अपने सुर पर आप ही मुग्ध होता है; **कोथाय छिल**—कहाँ थी; **गहन**—गभीर, दुर्बोध; **आजि......बाये**—आज समस्त वायु में; **वनेर छाये**—वन की छाया में; **छड़िये गेल**—फैल गई; **सकल खाने**—सब जगह ।

४१

बहु युगेर ओ पार हते आषाढ़ एल आमार मने,
कोन् से कविर छन्द बाजे झरो झरो बरिषने ।।
ये मिलनेर मालागुलि   धुलाय मिशे हल धूलि
गन्ध तारि भेसे आसे आजि सजल समीरणे ।।
से दिन एमनि मेघेर घटा रेवानदीर तीरे,
एमनि वारि झरेछिल श्यामल शैलशिरे ।
मालविका अनिमिखे   चेये छिल पथेर दिके,
सेइ चाहनि एल भेसे कालो मेघेर छायार सने ।।

१९२२

४२

भोर हल येइ श्रावणशर्वरी
तोमार बेड़ाय उठल फुटे हेनार मञ्जरी ।।
गन्ध तारि रहि रहि   बादल-बातास आने वहि,
आमार मनेर कोणे कोणे बेड़ाय सञ्चरि ।।

४१. **बहु......मने**—अनेक युगों के उस पार से आषाढ़ मुझे याद आया; **कोन्......बरिषने**—झरझर बरसने वाली वर्षा में किस कवि का छन्द ध्वनित हो रहा है; **ये......समीरणे**—मिलन की जो मालाएँ धूल में मिल कर धूल हो गईं, उन्हीं का गन्ध आज सजल हवा में बहता आ रहा है; **से.....तीरे**—उस दिन इसी प्रकार रेवा नदी के तट पर मेघों का समारोह था; **एमनि......शैलशिरे**—इसी प्रकार श्यामल शैल शिखर पर वर्षा की झड़ी लगी थी; **मालविका......दिके**—मालविका (कालिदास की मालविका) निर्निमेष दृष्टि से रास्ते की ओर टकटकी लगाए हुए थी; **सेइ......सने**—(उसकी) वही चितवन काले मेघों की छाया के साथ बह आई।

४२. **हल**—हुई; **येइ**—जैसे ही; **तोमार......मञ्जरी**—तुम्हारी बाड़ में हिना की मञ्जरी खिल उठी; **गन्ध.....वहि**—रह-रह कर उसी का गन्ध बरसाती हवा वहन कर के लाती है; **आमार......सञ्चरि**—मेरे मन के कोने-कोने

बेड़ा दिले कबे तुमि तोमार फुलबागाने,
आड़ाल क'रे रेखेछिले आमार वनेर पाने।
कखन गोपन अन्धकारे वर्षारातेर अश्रुधारे
तोमार आड़ाल मधुर हये डाके मर्मरि ।।

१९२२

४३

हृदय आमार, ओइ बुझि तोर वैशाखी झड़ आसे।
बेड़ा-भाङार मातन नामे उद्दाम उल्लासे ।।
तोमार मोहन एल भीषण वेशे, आकाश ढाका जटिलकेशे—
बुझि एल तोमार साधनधन चरम सर्वनाशे ।।
वातासे तोर सुर छिलना, छिल तापे भरा।
पिपासाते बुक-फाटा तोर शुष्क कठिन धरा
एबार जाग् रे हताश, आय रे छुटे अवसादेर बाँधन टुटे—
बुझि एल तोमार पथेर साथि विपुल अट्टहासे ।।

१९२२

में घूमती फिरती है; **बेड़ा...बागाने**—अपनी फूलों की बगिया में तुमने कब बाड़ दी; **आड़ाल.....पाने**—मेरे वन की ओर ओट कर रखा था; **कखन**—कब; **तोमार..... मर्मरि**—तुम्हारी (वही) ओट मधुर हो कर मर्मर (ध्वनि में) पुकारती है।

४३. **हृदय......आसे**—मेरे हृदय, लगता है वह तेरी वैशाख मास की आँधी आती है (चैत्र-वैशाख महीने में तीसरे पहर जो आँधी, वृष्टि आती है, उसे कालवैशाखी कहते हैं); **बेड़ा......उल्लासे**—उद्दाम उल्लास से बाड़ को चूर्ण-विचूर्ण करने वाली मत्तता अवतरित होती है; **तोमार......वेशे**—तुम्हारा मोहन भयंकर वेश में आया; **आकाश......केशे**—आकाश को ढकने वाले जटिल केशों को लिए हुए; **बुझि......सर्वनाशे**—चरम सर्वनाश में संम्भवतः तुम्हारी साधना का धन आया; **वातासे......भरा**—हवा में तेरा सुर नहीं था, वह ताप (गर्मी) से भरी थी; **पिपासाते......धरा**—धरती तेरी छाती को फाड़ने वाली प्यास से सूखी, कठिन हो रही थी; **एबार......अब**; **आय......छुटे**—दौड़ कर आ; **बाँधन टुटे**—बन्धन तोड़ कर; **बुझि......अट्टहासे**—लगता है, तुम्हारा पथ का साथी गभीर अट्टहास करता आया।

४४

ओ आमार चाँदेर आलो, आज फागुनेर सन्ध्याकाले
धरा दियेछ ये आमार पाताय पाताय डाले डाले ।।
ये गान तोमार सुरेर धाराय वन्या जागाय ताराय ताराय
मोर आङिनाय बाजल से सुर आमार प्राणेर ताले ताले ।।
सब कुड़ि मोर फुटे ओठे तोमार हासिर इशाराते ।
दखिन-हाओया दिशाहारा आमार फुलेर गन्धे माते ।
शुभ्र, तुमि करले विलोल आमार प्राणे रङेर हिलोल,
मर्मरित मर्म आमार जड़ाय तोमार हासिर जाले ।।

१९२२

४५

शीतेर हाओयार लागल नाचन आम्‌लकिर एइ डाले डाले ।
पातागुलि शिर्‌शिरिये झरिये दिल ताले ताले ।।
उड़िये देबार मातन एसे काङाल तारे करल शेषे,
तखन ताहार फलेर बाहार रइल ना आर अन्तराले ।।

४४. **ओ......डाल**—ओ मेरे चाँद के आलोक (चाँदनी), आज फाल्गुन की सन्ध्या के समय मेरी पत्ती-पत्ती तथा डाली-डाली में तुम पकड़ाई जो दे गए हो; **ये......ताराय**—जो गान तुम्हारे स्वर की धारा से तारागण में वन्या (बाढ़) जगाता है (ला देता है); **मोर......ताले**—मेरे आंगन में मेरे प्राणों के ताल-ताल पर वही स्वर बज उठा; **सब.....इशाराते**—तुम्हारी हँसी के इशारे से मेरी सभी कलियाँ खिल उठती हैं; **दखिन......माते**—दिग्भ्रान्त दक्षिण-पवन मेरे फूलों के गन्ध से मत्त हो उठता है; **तुमि......विलोल**—तुमने चंचल कर दिया; **मर्म**—हृदय; **जड़ाय**—विजड़ित हो जाता है।

४५. **शीतेर......डाले**—शीत कालीन हवा का नर्तन इस आँवले की डाल-डाल में लगा; **पातागुलि......ताले**—पत्तियों को सिहरा कर (सिहरन पैदा कर) ताल-ताल पर (उस नर्तन ने) झरा दिया; **उड़िये......शेषे**—उड़ा देने के मतवालेपन ने आ कर अन्त में उसे कंगाल बना दिया; **तखन......अन्तराले**—उस समय उसके फल की बहार और अन्तराल में (छिपी) नहीं रही;

शून्य करे भरे देओया याहार खेला तारि लागि रइनु बसे सकल वेला
शीतेर परश थेके थेके याय बुझि ओइ डेके डेके,
सब खोओयाबार समय आमार हबे कखन कोन् सकाले ।।

१९२२

४६

शिउलि-फोटा फुरोल येइ शीतेर वने
एले ये सेइ शून्यक्षणे ।
ताइ गोपने साजिये डाला दुखेर सुरे वरणमाला
गाँथि मने मने शून्यक्षणे ।।
दिनेर कोलाहले
ढाका से ये रइबे हृदयतले—
रातेर तारा उठबे यबे सुरेर माला बदल हबे
तखन तोमार सने मने मने ।।

१९२२

शून्य......बेला—शून्य (रिक्त) करके भर देना (ही) जिसका खेल है, उसी के लिये (उसीकी प्रतीक्षा में) में सब समय बैठा रहा; **शीतेर.....डेके**—शीत का स्पर्श रह-रह कर संभवतः पुकार-पुकार जाता है; **सब......सकाले**—सब कुछ खो देने का मेरा समय कब किस प्रभात में होगा।

४६. **शिउलि......शून्यक्षणे**—शेफाली (हरसिंगार) का खिलना जैसे ही शीतकालीन वन में समाप्त हुआ, उसी रीते क्षण में (तुम) जो आए; **ताइ...... शून्यक्षणे**—इसीलिए गोपन भाव से डाली सजा रीते क्षण में मन ही मन दुःख के सुर में वरमाला गूंथती हूँ; **दिनेर......तले**—दिन के कोलाहल में वह तो अन्तस्तल में ढँकी (छिपी) रहेगी; **रातेर......मने**—रात का तारा जब उदय होगा, तब तुम्हारे साथ मन ही मन सुर की माला की अदला-बदली होगी (विवाह के समय वर-कन्या में माल्य-विनिमय की प्रथा है)।

४७

आज दखिन-वातासे

नाम-ना-जाना कोन् वनफुल फुटल वनेर घासे ।
'ओ मोर पथेर साथि पथे पथे गोपने याय आसे ।'
कृष्णचूड़ा चूड़ाय साजे, बकुल तोमार मालार माझे,
शिरीष तोमार भरबे साजि फुटेछे सेइ आशे ।
'ए मोर पथेर बाँशिर सुरे सुरे लुकिये काँदे हासे ।'
ओरे देख वा नाइ देख, ओरे याओ वा ना याओ भुले ।
ओरे नाइ वा दिले दोला, ओरे नाइ वा निले तुले ।
सभाय तोमार ओ केह नय, ओर साथे नेइ घरेर प्रणय,
याओया-आसार आभास निये रयेछे एक पाशे ।
'ओगो ओर साथे मोर प्राणेर कथा निश्वासे निश्वासे ।'

१९२२

४८

एनेछ ओइ शिरीष बकुल आमेर मुकुल साजिखानि हाते करे ।
कबे ये सब फुरिये देबे, चले याबे दिगन्तरे ।।

४७. **दखिन-वातासे**—दक्षिण-पवन में; **नाम......घासे**—जंगल की घास में कोई वनफूल (जिसका) नाम नहीं जाना हुआ है, खिला; **ओ......आसे**—वह मेरे पथ का साथी रास्ते-रास्ते गुप-चुप आता-जाता है; **कृष्णचूड़ा......साजे**—कृष्णचूड़ा के फूल चूड़ा में सजते हैं; **बकुल......माझे**—बकुल तुम्हारी माला में (सजता) है; **शिरीष......आशे**—शिरीष तुम्हारी (फूलों की) डाली भरेगा, इसी आशा से खिला है; **ए......हासे**—यह मेरे पथ की बाँसुरी के प्रत्येक सुर में छिप कर रोता-हँसता है; **ओरे......भुले**—(भले ही) उसे देखो या न देखो, उसे भूल जाओ या न भूल जाओ; **ओरे......तुले**—उसे भले ही न झुलाया, उसे भले ही चुन नहीं लिया; **सभाय..... प्रणय**—सभा में वह तुम्हारा कोई नहीं, उसके साथ घर का भी कोई प्रणय नहीं; **याओया......पाशे**—जाने-आने के संकेत को लिए हुए वह तो एक किनारे विद्यमान है; **ओर......निश्वासे**—उसके साथ प्रत्येक साँस में मेरे प्राणों की बातचीत (चल रही) है।

४८. **एनेछ......करे**—डाली हाथ में ले कर शिरीष, बकुल, आमों की मंजरी लाए हो; **एनेछ**—लाए हो; **कबे......दिगन्तरे**—जाने कब सब को समाप्त

पथिक, तोमाय आछे जाना, करब ना गो तोमाय माना—
यावार वेलाय येयो येयो विजयमाला माथाय प'रे ।।
तबु तुमि आछ यत क्षण
असीम हये ओठे हियाय तोमारि मिलन ।
यखन याबे तखन प्राणे विरह मोर भरबे गाने—
दूरेर कथा सुरे बाजे सकल वेला व्यथाय भ'रे ।।
१९२२

४९

ओ मञ्जरी, ओ मञ्जरी, आमेर मञ्जरी,
आज हृदय तोमार उदास हये पड़छे कि झरि ।।
आमार गान ये तोमार गन्धे मिशे दिशे दिशे
फिरे फिरे फेरे गुञ्जरि ।।
पूर्णिमाचाँद तोमार शाखाय शाखाय
तोमार गन्ध-साथे आपन आलो माखाय ।
ओइ दखिन-वातास गन्धे पागल भाङल आगल,
घिरे घिरे फिरे सञ्चरि ।।
१९२२

कर अन्य दिशा में चले जाओगे; **पथिक......नामा**—पथिक, तुम्हें जानता हूँ, तुम्हें मना नहीं करूँगा; **याबार......प'रे**—जाने के समय सिर पर विजयमाला धारण करके जाना; **तबु......मिलन**—तोभी जितने क्षण तुम हो, हृदय में तुम्हारा ही मिलन असीम हो उठता है; **यखन......गाने**—जब जाओगे तब मेरा विरह प्राणों में, गानों में भर उठेगा; **दूरेर......भ'रे**—दूर की बात सब समय व्यथा से भर कर सुर में बजती है।

४९. **आज......झरि**—आज तुम्हारा हृदय क्या उदासीन हो कर झरा जा रहा है,; **आमार......गुञ्जरि**—मेरा गान तुम्हारे गन्ध में घुलमिल कर प्रत्येक दिशा में लौट-लौट कर गुञ्जरित होता फिरता है; **पूर्णिमाचाँद.......माखाय**—पूर्णिमा का चाँद तुम्हारी शाखा-शाखा में तुम्हारे गन्ध के साथ अपने प्रकाश को मिश्रित कर रहा है; **माखा**—सानना; **ओइ**—वह; **गन्धे पागल**—गन्ध से पागल; **भाङल आगल**—अर्गला को तोड़ दिया है।

५०

दखिन हाओया, जागो जागो, जागाओ आमार सुप्त ए प्राण।
आमि वेणु, आमार शाखाय नीरव ये हाय कत-ना गान। जागो जागो॥
पथेर धारे आमार कारा, ओगो पथिक बाँधन-हारा,
नृत्य तोमार चित्ते आमार मुक्ति दोला करे ये दान। जागो जागो॥
गानेर पाखा यखन खुलि बाधा-वेदन तखन भुलि।
यखन आमार बुकेर माझे तोमार पथेर बाँशि बाजे
बन्ध भाङार छन्दे आमार मौन-काँदन हय अवसान। जागो जागो॥
१९२२

५१

धीरे धीरे धीरे बओ ओगो उतल हाओया।
निशीथरातेर बाँशि बाजे, शान्त हओ गो शान्त हओ॥
आमि प्रदीपशिखा तोमार लागि भये भये एका जागि,
मनेर कथा काने काने मृदु मृदु कओ॥

५०. **हाओया**—हवा; **ए प्राण**—इस प्राण को; **आमि......गान**—मैं वेणु (बाँस) हूँ, मेरी शाखा पर हाय, कितने गान नीरव हैं; **पथेर......कारा**—पथ के किनारे मेरा कारागार है; **बाँधन-हारा**—बन्धनहीन; **नृत्य......दान**—तुम्हारा नृत्य मेरे चित्त में मुक्ति का दोला जो प्रदान करता है; **गानेर.....भुलि**—गान के पंख जब खोलता हूँ, बाधा-वेदना उस समय भूल जाता हूँ; **यखन......बाजे**—जब मेरे हृदय के भीतर तुम्हारे पथ की बाँसुरी बजती है; **बन्ध.......अवसान**—बन्धन को तोड़ने वाले मेरे छन्द में मौन-क्रन्दन का अवसान हो जाता है।

५१. **बओ**—बहो; **ओगो**—ओ; **उतल हाओया**—चंचल हवा; **निशीथ......बाजे**—आधी रात की बाँसुरी बज रही है; **हओ**—होओ; **आमि......जागि**—मैं प्रदीपशिखा (दीपक की लौ) तुम्हारे लिये अकेली भय पूर्वक जागती रहती हूँ; **मनेर......कओ**—मन की बात कानों-कान धीरे-धीरे कहो;

तोमार दूरेर गाथा तोमार वनेर वाणी
घरेर कोणे देहो आनि।
आमार किछु कथा आछे भोरेर वेलार तारार काछे,
सेइ कथाटि तोमार काने चुपिचुपि लओ ।।

१९२२

५२

वसन्त तार गान लिखे याय धूलिर 'परे की आदरे ।।
ताइ से धुला ओठे हेसे बारे बारे नवीन वेशे,
बारे बारे रूपेर साजि आपनि भरे की आदरे ।।
तेमनि परश लेगेछे मोर हृदयतले,
से ये ताइ धन्य हल मन्त्रबले।
ताइ प्राणे कोन् माया जागे, बारे बारे पुलक लागे,
बारे बारे गानेर मुकुल आपनि धरे की आदरे ।।

१९२२

५३

बाकि आमि राखब ना किछुइ—
तोमार चलार पथे पथे छेये देब भुँइ।

घरेर......आनि—घर के कोने में ला दो; **आमार......लओ**—भोर वेला के तारे से मुझे कुछ बात कहनी है, उस बात को अपने कान में गुपचुप ग्रहण करो।

५२. **वसन्त......आदरे**—वसन्त कितने आदर (स्नेहपूर्ण यत्न) से धूलि पर अपने गान लिख जाता है; **ताइ......वेशे**—इसीलिये वह धूलि बार-बार नवीन वेश में हँस उठती है; **बारे.....भरे**—बार-बार रूप की डाली अपने आप ही भर उठती है; **तेमनि......हृदयतले**—मेरे हृदयतल में वैसा ही स्पर्श लगा है; **से......बले**—इसीलिये तो वह मन्त्रबल से धन्य हुआ; **ताइ......लागे**—इसीलिये प्राणों में कौन-सी माया जागती है, वे बार-बार पुलक से भर उठते हैं; **बारे......धरे**—बार-बार गान की कलियाँ अपने आप ही लगती हैं।

५३. **बाकि......किछुइ**—मैं कुछ भी बाकी नहीं रखूँगी; **तोमार......भुँइ**

ओगो मोहन, तोमार उत्तरीय गन्धे आमार भरे नियो,
उजाड़ करे देब पाये बकुल बेला जुँइ ।।
दखिन-सागर पार हये ये एले पथिक तुमि,
आमार सकल देब अतिथिरे आमि वनभूमि ।
आमार कुलाय-भरा रयेछे गान, सब तोमारेइ करेछि दान—
देबार काङाल करे आमाय चरण यखन छुँइ ।

१९२२

५४

माधवी हठात् कोथा हते एल फागुन-दिनेर स्रोते ।
एसे हेसेइ बले 'या इ या इ या इ ।'
पातारा घिरे दले दले तारे काने काने बले,
'ना ना ना ।'
नाचे ता इ ता इ ता इ ।।
आकाशेर तारा बले तारे, 'तुमि एसो गगन-पारे,
तोमाय चा इ चा इ चा इ ।'

—तुम्हारे चलने के प्रति पथ की भूमि को आच्छादित कर दूँगी; **तोमार...... नियो**—अपना उत्तरीय मेरे गन्ध से भर लेना; **उजाड़.......जुँइ**—(तुम्हारे) पैरों में बकुल, बेला, जूही को निःशेष बिखेर दूँगी; **दखिन......तुमि**—तुम जो दक्षिण सागर से पार हो कर आए, पथिक; **आमार.....वनभूमि**—मैं वनभूमि, अपना सब (कुछ) अतिथि को दूँगी; **आमार......दान**—मेरे पास नीड़-भर गान हैं; सब तुम्हें ही अर्पित कर दिए हैं; **देबार......छुँइ**—जब अपने को निःस्व करके तुम्हारे चरण छुए।

५४. **माधवी......स्रोते**—फाल्गुन के दिनों के स्रोत में हठात् माधवी कहाँ से आई; **एसे......या इ**—आ कर हँसते हुए ही कहती है 'जा रही हूँ, जा रही हूँ'; **पातारा......ना**—दल के दल पत्ते उसे घेर कर कानों-कान कहते हैं 'नहीं', नहीं, नहीं'; **नाचे......ता इ**—(पत्ते) ता-ता-थेइ नाचते हैं; **आकाशेर.....चा इ**—आकाश का तारा उससे कहता है 'तुम आकाश के पार आओ, तुम्हें चाहता हूँ,

पातारा घिरे दले दले तारे काने काने बले,
'ना ना ना।'
नाचे ता इ ता इ ता इ।।
वातास दखिन हते आसे, फेरे तारि पाशे पाशे,
बले, 'आ य आ य आ य।'
बले, 'नील अतलेर कूले सुदूर अस्ताचलेर मूले
वेला या य या य या य।'
बले, 'पूर्णशशीर राति क्रमे हबे मलिन-भाति,
समय ना इ ना इ ना इ।'
पातारा घिरे दले दले तारे काने काने बले,
'ना ना ना'
नाचे ता इ ता इ ता इ।।

१९२२

५५

यदि तारे नाइ चिनि गो से कि आमाय नेबे चिने
एइ नव फाल्गुनेर दिने— जानि ने, जानि ने।।
से कि आमार कुँड़िर काने कबे कथा गाने गाने,
परान ताहार नेबे किने एइ नव फाल्गुनेर दिने—
जानि ने, जानि ने।।

चाहता हूँ;' **वातास......आ य**—दक्षिण से पवन आता है और उसकी अगल-बगल घूमता है, कहता है 'आ, आ'; **बले.....या य**—कहता है, 'नील अतल के किनारे, सुदूर अस्ताचल के नीचे वेला ढली जा रही है' (दिन समाप्त हो रहा है); **बले......ना इ**—कहता है, 'पूर्णिमा की रात्रि का प्रकाश क्रमशः मलिन होगा, समय नहीं है, समय नहीं है'।

५५. **यदि......चिने**—इस नव फाल्गुन के दिन यदि (मैं) उसे नहीं पहचानूँ (तो) क्या वह मुझे पहचान लेगा, नहीं जानती, नहीं जानती; **से.....गाने**—वहक्या मेरी कली के कानों में गान-गान में (अपनी) बात कहेगा; **परान......किने**—उसके

से कि आपन रङे फुल राङाबे
से कि मर्मे एसे घुम भाङाबे।
घोमटा आमार नतुन पातार हठात् दोला पाबे कि तार,
गोपन कथा नेबे जिने एइ नव फाल्गुनेर दिने—
जानि ने, जानि ने ।।

१९२२

५६

सहसा डालपाला तोर उतला ये ओ चाँपा, ओ करवी ।
कारे तुइ देखते पेलि आकाश-माझे जानि ना ये ।।
कोन् सुरेर मातन हाओयाय एसे बेड़ाय भेसे ओ चाँपा, ओ करवी ।
कार नाचनेर नूपुर बाजे जानि ना ये ।।
तोरे क्षणे क्षणे चमक लागे ।
कोन् अजानार धेयान तोमार मने जागे ।
कोन् रङेर मातन उठल दुले फुले फुले ओ चाँपा, ओ करवी ।
के साजाले रङिन साजे जानि ना ये ।।

१९२२

प्राणों को खरीद लेगा; **से कि......राङाबे**—वह क्या अपने रंग में फूलों को रँगेगा; **से कि......भाङाबे**—वह क्या अन्तर में आ कर निद्रा भंग करेगा; **घोमटा......तार**—नयी पत्तियों के मेरे घूंघट को क्या वह हठात् आन्दोलित कर जाएगा; **गोपन......जिने**—(मेरे अन्तर की) गोपन बात को क्या (वह) जय कर लेगा (बरबस जान लेगा)।

५६. **सहसा......करवी**—सहसा तुम्हारी शाखाएँ-प्रशाखाएँ चंचल जो हो उठीं, ओ चम्पा, ओ करवी (कनेर); **कारे......ये**—आकाश के बीच तूने किसे देख लिया, नहीं जानता; **कोन्......भेसे**—हवा में किस सुर की मस्ती आ कर घूमती फिरती है; **कार......बाजे**—किसके नर्तन का नूपुर बजता है; **तोरे......लागे**—तुझे क्षण-क्षण में विस्मय होता है; **कोन्......जागे**—किस अपरिचित का ध्यान तुम्हारे मन में जागता है; **कोन......दुले**—किस रंग की मस्ती झूम उठी; **फुले फुले**—फूल-फूल में; **के......ये**—रंगीन सज्जा में किसने सजाया, नहीं जानता।

५७

से दिन आमाय बलेछिले आमार समय हय नाइ—
फिरे फिरे चले गेले ताइ ।।
तखनो खेलार वेला— वने मल्लिकार मेला,
पल्लवे पल्लवे वायु उतला सदाइ ।।
आजि एल हेमन्तेर दिन
कुहेलिविलीन, भूषणविहीन ।
वेला आर नाइ बाकि, समय हयेछे नाकि—
दिनशेषे द्वारे बसे पथ-पाने चाइ ।।

१९२२

५८

पूर्णचाँदेर मायाय आजि भावना आमार पथ भोले,
येन सिन्धुपारेर पाखि तारा याय याय याय चले ।।
आलोछायार सुरे अनेक कालेर से कोन् दूरे
डाके आय आय आय ब'ले ।।
येथाय चले गेछे आमार हारा फागुनराति
सेथाय तारा फिरे फिरे खोँजे आपन साथि ।

---

५७. **से......नाइ**—उस दिन मुझसे (तुमने) कहा था, मेरा समय नहीं हुआ है; **फिरे......ताइ**—इसीलिये लौट-लौट कर चले गए; **तखनो......सदाइ**—उस समय भी खेल का समय (था), वन में मल्लिका का मेला (लगा था) और पत्ते-पत्ते में हवा निरन्तर चंचल थी; **आजि एल**—आज आ गया; **कुहेलि**—कुहरा; **वेला......नाकि**—वेला और बाकी नहीं रह गई है, समय हो गया है क्या: **दिन......चाइ**—दिन का अन्त होने पर द्वार पर बैठा रास्ते की ओर ताकता हूँ ।

५८. **पूर्णचाँदेर......भोले**—पूर्ण चाँद की माया से आज मेरी चिन्ताएँ रास्ता भूलती हैं; **तारा......चले**—वे चली जाती हैं, चली जाती हैं; **आलोछायार सुरे**—प्रकाश और छाया के सुर में; **डाके**—पुकारती हैं; **आय**—आ; **ब'ले**—कहती हुई; **येथाय......साथि**—जहाँ मेरी फाल्गुन की रातें चली गई हैं, वहाँ वे

आलोछायाय येथा अनेक दिनेर से कोन् व्यथा
काँदे हाय हाय हाय ब'ले ।।

१९२२

५९

कत ये तुमि मनोहर मनइ ताहा जाने,
हृदय मम थरोथरो काँपे तोमार गाने ।।
आजिके एइ प्रभातवेला मेघेर साथे रोदेर खेला,
जले नयन भरोभरो चाहि तोमार पाने ।।
आलोर अधीर झिलिमिलि नदीर ढेउये ओठे,
वनेर हासि खिलिखिलि पाताय पाताय छोटे ।।
आकाशे ओइ देखि की ये— तोमार चोखेर चाहनि ये
सुनील सुधा झरोझरो झरे आमार प्राणे ।।

१९२२

६०

कार येन एइ मनेर वेदन चैत्रमासेर उतल हाओयाय,
झुमकोलतार चिकन पाता काँपे रे कार चमके-चाओयाय ।।

(चिन्ताएँ) लौट-लौट कर अपना संगी खोजती फिर रही हैं; **येथा**—जहाँ; **काँदे**—क्रन्दन करती है।

५९. **कत......जाने**—तुम जो कितने मनोहर हो, सो मन ही जानता है; **थरोथरो......गाने**—तुम्हारे गान से थर-थर कांपता है; **एइ**—इस; **मेघेर......खेला**—मेघ के साथ धूप का खेल (चल रहा है); **जले**—आँसुओं से; **भरोभरो**—भरे, डबडबाए; **चाहि......पाने**—तुम्हारी ओर देखता हूँ; **आलोर......ओठे**—प्रकाश की अधीर झिलमिलाहट नदी की लहरों में उठती है; **वनेर......छोटे**—वन की खिलखिल हँसी पत्ती-पत्ती में दौड़ती है; **आकाशे......ये**—आकाश में वह क्या देखता हूँ; **तोमार......प्राणे**—तुम्हारी आँखों की चितवन सुनील सुधा मेरे प्राणों में झर-झर झराती है।

६०. **कार......हाओयाय**—जाने किस के मन की यह व्यथा चैत्रमास की अधीर हवा में है; **झुमके......याओयाय**—झुमकोलता (एक फूलविशेष) की

हारिये-याओया कार से वाणी कार सोहागेर स्मरणखानि
आमेर बोलेर गन्धे मिशे काननके आज कान्ना पाओयाय।
काँकन-दुटिर रिनिझिनि कार वा एखन मने आछे।
सेइ काँकनेर झिकिमिकि पियालवनेर शाखाय नाचे।
यार चोखेर ओइ आभास दोले नदी-ढेउयेर कोले कोले
तार साथे मोर देखा छिल सेइ से कालेर तरी-बाओयाय।

१९२२

६१

नाइ रस नाइ, दारुण दाहनवेला। खेलो खेलो तव नीरव भैरव खेला।
यदि झ'रे पड़े पड़क पाता, म्लान हये याक माला गाँथा,
थाक् जनहीन पथे पथे मरीचिकाजाल फेला।।
शुष्क धुलाय खसे-पड़ा फुलदले घूर्णी-आँचल उड़ाओ आकाश-तले।
प्राण यदि कर मरुसम तबे ताइ होक—हे निर्मम,
तुमि एका आर आमि एका, कठोर मिलनमेला।।

१९२५

चिकनी पत्तियाँ किसके हठात् दृष्टिपात से काँप रही हैं; **हारिये......पाओयाय**—वह किसकी खोई हुई वाणी, किसके प्रणय की स्मृति आम की मञ्जरी के गन्ध में घुल कर आज वन को रुला रही है; **काँकन......आछे**—दो कंगनों की रुनझुन इस समय किसे याद आ रही है; **सेइ......नाचे**—उन्हीं कंगनों की झलमल प्रियाल (चिरौंजी) वन की शाखाओं में नाचती है; **यार......बाओयाय**—जिसकी आँखों की वह झलक नदी की लहरों की गोद में झूमती है, उसके साथ मेरा परिचय हुआ था—वही उस समय के नौका-विहार में।

६१. **नाइ**—नहीं है; **यदि......गाँथा**—अगर पत्ते झर पड़ें (तो) पड़ें, माला गूँथना म्लान हो जाय; **थाक्**—(चलता) रहे; **फेला**—फेंकना; **धुलाय**—धूल में; **खसे-पड़ा**—टपके हुए; **घूर्णी-आँचल**—घूर्णीवात (बवंडर) रूपी आँचल; **कर**—करो; **तबे......होक**—तब वही हो; **तुमि......एका**—तुम एकाकी और मैं एकाकी; **मिलनमेला**—मिलन की प्राप्ति।

६२

अश्रुभरा वेदना दिके दिके जागे।
आजि श्यामल मेघेर माझे बाजे कार कामना॥
चलिछे छुटिया अशान्त बाय,
क्रन्दन कार तार गाने ध्वनिछे—
करे के से विरही विफल साधना॥

१९२५

६३

आज श्रावणेर पूर्णिमाते की एनेछिस बल्—
हासिर कानाय कानाय भरा नयनेर जल॥
बादल-हाओयार दीर्घश्वासे यूथीवनेर वेदन आसे—
फुल-फोटानोर खेलाय केन फुल-झरानोर छल।
ओ तुइ की एनेछिस बल्॥
ओगो, की आवेश हेरि चाँदेर चोखे,
फेरे से कोन् स्वपन-लोके।
मन बसे रय पथेर धारे, जाने ना से पाबे कारे—

---

६२. **मेघेर माझे**—मेघों के बीच; **बाजे......कामना**—किसकी कामना ध्वनित होती है; **चलिछे......बाय**—अशान्त वायु दौड़ी जा रही है; **कार**—किसका; **तार......ध्वनिछे**—उसके गान में ध्वनित हो रहा है; **करे......साधना**—वह कौन विरही विफल मनुहार कर रहा है।

६३. **आज......बल्**—आज श्रावण की पूर्णिमा को (तू) क्या लाया है, बता तो सही; **हासिर......जल**—हँसी में लबालब भरा नयनों का जल; **बादल......आसे**—बरसाती हवा के दीर्घश्वास में यूथीवन की वेदना आती है; **फुल......छल**—फूल खिलाने के खेल में फूल झराने का छल क्यों; **तुइ**—तू; **की......चोखे**—चाँद की आँखों में कैसी विह्वलता देखता हूँ; **फेरे......लोके**—वह किस स्वप्न-लोक में विचरण करता है; **मन......धारे**—रास्ते के किनारे मन बैठा रहता है; **जाने......कारे**—नहीं जानता वह किसे पाएगा; **आसा......चञ्चल**—चंचल हवा में आने-जाने का संकेत तिरता है।

आसा-याओयार आभास भासे वातासे चञ्चल।
ओ तुइ की एनेछिस वल्॥

१९२५

६४

एसो नीपवने छायावीथितले,
एसो करो स्नान नवधाराजले॥
दाओ आकुलिया घन कालो केश, परो देह घेरि मेघनील वेश—
काजल नयने, यूथीमाला गले, एसो नीपवने छायावीथितले॥
आजि क्षणे क्षणे हासिखानि सखी,
अधरे नयने उठुक चमकि।
मल्लारगाने तव मधुस्वरे दिक् वाणी आनि वनमर्मरे।
घनबरिषने जल-कलकले एसो नीपवने छायावीथितले॥

१९२५

६५

ओइ आसे ओइ अति भैरव हरषे
जलसिञ्चित क्षितिसौरभ-रभसे
घनगौरवे नवयौवना बरषा श्यामगम्भीर सरसा।

६४. **एसो**—आओ; **नीपवने**—कदम्ब के वन में; **वीथि**—दोनों ओर वृक्षों की कतार वाला पथ; **दाओ......केश**—घने काले केशों को आलुलायित कर दो; **परो......वेश**—शरीर को घेर मेघ (के समान) नील वस्त्र पहनो; **नयने**—आँखों में; **आजि.....चमकि**—सखी, आज क्षण-क्षण अधरों, नयनों में हँसी थिरक उठे; **मल्लार......कलकले**—मल्लारगान में तुम्हारा मधुर स्वर वन की मर्मरध्वनि को, सघन वर्षा को, जल के कलकल स्वर को वाणी प्रदान करे।

६५. **ओइ आसे**—वह आता है; **हरषे**—हर्ष के साथ; **रभसे**—प्राबल्य

गुरु गर्जने नील अरण्य शिहरे,
उतला कलापी केकाकलरवे विहरे—
निखिलचित्तहरषा
घनगौरवे आसिछे मत्त बरषा ।।

कोथा तोरा अयि तरुणी पथिकललना,
जनपदवधू तड़ित्-चकित-नयना,
मालतीमालिनी कोथा प्रियपरिचारिका,
कोथा तोरा अभिसारिका।
घनवनतले एसो घननीलवसना,
ललित नृत्ये बाजुक स्वर्णरसना,
आनो वीणा मनोहारिका।
कोथा विरहिणी, कोथा तोरा अभिसारिका ।।

आनो मृदङ्ग मुरज मुरली मधुरा,
बाजाओ शङ्ख, हुलुरव करो वधूरा—
एसेछे बरषा, ओगो नव-अनुरागिणी,
ओगो प्रियसुखभागिनी।
कुञ्जकुटिरे अयि भावाकुललोचना,
भूर्जपाताय नवगीत करो रचना
मेघमल्लाररागिणी।
एसेछे बरषा, ओगो नव-अनुरागिणी ।।

से; **गर्जने**—गर्जन से; **उतला**—भावावेग से आकुल; **कलापी**—मोर; **केका**—मोर की बोली; **विहरे**—विहार कर रहा है।

कोथा तोरा—कहाँ हो तुमलोग; **चकित**—दीप्त; **बाजुक**—बजे; **रसना**—स्त्रियों का कटि-भूषण, मेखला, करधनी।

आनो—लाओ; **हुलुरव**—(विवाहादि मंगल-अवसर पर स्त्रियाँ मुँह से एक प्रकार की आवाज़ करती हैं, इसे हुलुरव कहते हैं); **वधूरा**—वधुओ; **भुर्ज-पाताय**—भोज-पत्र पर।

केतकीकेशरे केशपाश करो सुरभि,
क्षीण कटितटे गाँथि लये परो करवी,
कदम्बरेणु बिछाइया दाओ शयने,
अञ्जन आँको नयने।
ताले ताले दुटि कङ्कण कनकनिया
भवनशिखीरे नाचाओ गनिया गनिया
स्मितविकशित बयने—
कदम्बरेणु बिछाइया फुलशयने।।

एसेछे बरषा, एसेछे नवीन बरषा,
गगन भरिया एसेछे भुवनभरसा।
दुलिछे पवने सन-सन वनवीथिका,
गीतमय तरुलतिका।
शतेक युगेर कविदले मिलि आकाशे
ध्वनिया तुलिछे मत्तमदिर वातासे
शतेक युगेर गीतिका।
शत शत गीत-मुखरित वनवीथिका।।

१९२५

सुरभि—सुगन्धित; **क्षीण.....करवी**—क्षीण कटि प्रदेश में करवी (कनेर) गूँथ कर पहनो; **कदम्ब......शयने**—सेज पर कदम्ब का पराग बिछा दो; **आँको**—अंकित करो; **ताले ताले**—ताल-ताल पर; **दुटि**—दो; **कनकनिया**—खनखना कर, ध्वनित कर; **गनिया**—(ताल) गिन-गिन कर; **बयने**—मुख से।

गगन......भरसा—आकाश को भर कर संसार की आशा (नव वर्षा) आई है; **दुलिछे**—झूम रही है; **पवने**—पवन में; **शतेक.....गीतिका**—सैकड़ों युगों के कवियों के दल आकाश में मिल कर मत्तमदिर हवा में सैकड़ों युगों के गीतों को ध्वनित कर रहे हैं; **शत......वीथिका**—सैकड़ों गीतों से वनवीथि गुञ्जित है।

६६

कदम्बेरइ कानन घेरि आषाढ़मेघेर छाया खेले,
पियालगुलि नाटेर ठाटे हाओयाय हेले ।।
बरषनेर परशने शिहर लागे वने वने,
विरही एइ मन ये आमार सुदूर-पाने पाखा मेले ।।
आकाशपथे बलाका धाय कोन् से अकारणेर वेगे,
पुब हाओयाते ढेउ खेले याय डानार गानेर तुफान लेगे ।
झिल्लिमुखर बादल-साँझे के देखा देय हृदय-माझे—
स्वपनरूपे चुपे चुपे व्यथाय आमार चरण फेले ।।

१९२५

६७

पुब-हाओयाते देय दोला आज मरि मरि ।
हृदयनदीर कूले कूले जागे लहरी ।।
पथ चेये ताइ एकला घाटे बिना काजे समय काटे,
पाल तुले ओइ आसे तोमार सुरेरइ तरी ।।

६६. **कदम्बरेइ......खेले**—कदम्ब ही के कानन को घेर आषाढ़ के मेघ की छाया खेलती है; **पियाल......हेले**—प्रियाल फूल के वृक्ष अभिनय की भंगी में हवा में झूमते हैं; **बरषनेर......वने**—वर्षण के स्पर्श से वन-वन सिहर उठता है; **विरही......मेले**—मेरा यह विरही मन सुदूर की ओर पंख पसारता है; **आकाश......वेगे**—आकाश मार्ग में बगुलों की पंक्ति किस अकारण वेग से दौड़ती है; **पुब......लेगे**—डैनों के संगीत का तूफ़ान लगने से पुरवैया हवा में लहर खेल जाती है; **झिल्लि......माँझे**—झिल्ली की झंकार से मुखर बरसाती साँझ में हृदय के भीतर कौन दिखाई दे रहा है; **स्वपन......फेले**—स्वप्न के रूप में चुपके-चुपके मेरी व्यथा में (अपने) चरण धरता हुआ ।

६७. **पुब......दोला**—पुरवैया हवा झूम रही है; **मरि मरि**—(सौन्दर्य आदि को देख विस्मयसूचक शब्द), बलिहारी है! **पथ.....काटे**—इसीलिये अकेली घाट पर रास्ता देखते बिना काम के समय बीतता है; **पाल......तरी**—तुम्हारे

व्यथा आमार कूल माने ना, बाधा माने ना।
परान आमार घुम जाने ना, जागा जाने ना।
मिलबे ये आज अकूल-पाने तोमार गाने आमार गाने,
भेसे याबे रसेर बाने आज विभावरी ।।

१९२५

६८

वज्रमानिक दिये गाँथा, आषाढ़, तोमार माला।
तोमार श्यामल शोभार बुके विद्युतेरइ ज्वाला ।।
तोमार मन्त्रबले पाषाण गले, फसल फले—
मरु बहे आने तोमार पाये फुलेर डाला ।।
मरो मरो पाताय पाताय झरो झरो वारिर रवे
गुरु गुरु मेघेर मादल बाजे तोमार की उत्सवे।
सबुज सुधार धाराय प्राण एने दाओ तप्त धराय,
वामे राख भयंकरी वन्या मरण-ढाला ।।

१९२५

ही सुर की नौका वह पाल ताने आती है; **व्यथा......ना**—मेरी व्यथा सीमा नहीं मानती, बाधा नहीं मानती; **घुम**—नींद; **जागा**—जागरण; **मिलबे...... गाने**—आज अकूल (अनन्त) की ओर तुम्हारे और मेरे गान मिलेंगे; **भेसे...... विभावरी**—रस की बाढ़ में आज रात्रि बह जायगी।

६८. **वज्र......माला**—आषाढ़, तुम्हारी माला वज्र (रूपी) माणिक्य से गुँथी हुई है; **तोमार......ज्वाला**—तुम्हारी श्यामल शोभा के वक्ष में विद्युत की ही ज्वाला है; **मन्त्र बले**—मन्त्र के बल से; **मरु......डाला**—मरुत तुम्हारे पैरों में फूल की डाली वहन कर लाता है; **मरो......रवे**—मर्मर करती पत्ती-पत्ती में, जल के झर-झर शब्द में; **गुरु......उत्सवे**—गुरु-गुरु मेघों का मर्दल तुम्हारे उत्सव में कैसा बजता है; **सबुज**—सब्ज, हरो; **सुधार धाराय**—अमृत की धारा में; **प्राण......धाराय**—तप्त पृथ्वी पर जीवन ला दो; **वामे......ढाला**—(अपने) वाम (पार्श्व) में मृत्यु ढालती हुई भयंकरी वन्या को रखो।

६९

बन्धु, रहो रहो साथे
आजि ए सघन श्रावणप्राते।
छिले कि मोर स्वपने साथिहारा राते।।
बन्धु, वेला वृथा याय रे,
आजि ए बादले आकुल हाओयाय रे—
कथा कओ मोर हृदये, हात राखो हाते।।

१९२५

७०

येते दाओ गेल यारा।
तुमि येयो ना, येयो ना,
आमार बादलेर गान हयनि सारा।।
कुटिरे कुटिरे बन्ध द्वार, निभृत रजनी अन्धकार,
वनेर अञ्चल काँपे चञ्चल— अधीर समीर तन्द्राहारा।।
दीप निबेछे निबुक नाको, आँधारे तव परश राखो।
बाजुक काँकन तोमार हाते आमार गानेर तालेर साथे,
येमन नदीर छलो छलो जले झरे झरो झरो श्रावणधारा।।

१९२५

६९. **छिले......राते**—संगीविहीन रात में क्या तुम मेरे सपनों में थे; **याय**—जाती है; ए—इस; **बादले**—वर्षा में; **हाओयाय**—हवा में; **कथा...... हाते**—मेरे हृदय में बोल बोलो, हाथों में हाथ रखो।

७०. **येते......यारा**—जो गए (उन्हें) जाने दो; **तुमि......ना**—तुम न जाना, न जाना; **आमार......सारा**—मेरा वर्षा का गान समाप्त नहीं हुआ; **बन्ध**—वन्द; **तन्द्राहारा**—तन्द्राहीन; **दीप......नाको**—दीप बुझ गया है (तो) बुझे-ना; **आँधारे.....राखो**—अन्धकार में अपना स्पर्श रख छोड़ो; **बाजुक......साथे**—मेरे गान के ताल के साथ तुम्हारे हाथ में कंकण बजे; **येमन......धारा**—जैसे नदी के छलछल जल में श्रावण की धारा झर-झर शब्द करती झरती है।

७१

आमार   रात पोहालो शारद प्राते।
बाँशि, तोमाय दिये याब काहार हाते।।
तोमार बुके बाजल ध्वनि   बिदायगाथा आगमनी कत ये—
फाल्गुने श्रावणे कत प्रभाते राते।।
ये कथा रय प्राणेर भितर अगोचरे
गाने गाने नियेछिले चुरि क'रे।
समय ये तार हल गत   निशिशेषेर तारार मतो,
तारे शेष करे दाओ शिउलिफुलेर मरण-साथे।।

१९२५

७२

एबार   अवगुण्ठन खोलो।
गहन मेघमायाय   विजन वनछायाय
तोमार   आलसे अवलुण्ठन सारा हल।।
शिउलि-सुरभि राते   विकशित ज्योत्स्नाते
मृदु मर्मरगाने तव   मर्मर वाणी बोलो।।

७१. **आमार.......प्राते**—शरद् के प्रातःकाल मेरी रात प्रभात हुई; **बाँशि......हाते**—बाँसुरी, तुम्हें किसके हाथों दे जाऊँगा; **तोमार बुके**—तुम्हारे हृदय में; **बाजल**—बज उठीं; **बिदाय......ये**—कितनी विदा-गाथाएँ, कितने स्वागत-गीत ('आगमनी'—उमा के पितृगृह में आगमन के गीत); **फाल्गुने......राते**—फाल्गुन और श्रावण में, कितने प्रभात और कितनी रात्रियों में; **ये......क'रे**—जो बात प्राणों के भीतर अगोचर रहती है, (उसे तुमने) गान-गान में चुरा लिया था; **समय.....मतो**—रात्रिशेष के तारा के समान उस (बात) का समय बीत जो गया; **तारे......साथे**—शेफाली (हरसिंगार) के फूलों के मरण के साथ उसे समाप्त कर दो।

७२. **एबार**—अब, इस बार; **अवलुण्ठन**—भूलुण्ठित होना; **सारा हल**—समाप्त हुआ; **शिउलि**—शेफाली; **ज्योत्स्नाते**—चाँदनी में;

विषाद-अश्रुजले मिलुक शरमहासि—
मालतीवितानतले बाजुक बँधुर बाँशि।
शिशिरसिक्त बाये विजड़ित आलोछाये
विरह-मिलने-गाँथा नव प्रणयदोलाय दोलो ।।

१९२५

७३

कार बाँशि निशिभोरे बाजिल मोर प्राणे।
फुटे दिगन्ते अरुणकिरणकलिका ।।
शरतेर आलोते सुन्दर आसे, धरणीर आँखि ये शिशिरे भासे
हृदयकुञ्जवने मुञ्जरिल मधुर शेफालिका ।।

१९२५

७४

आज कि ताहार बारता पेल रे किशलय।
ओरा कार कथा कय वनमय ।।
आकाशे आकाशे दूरे दूरे सुरे सुरे
कोन् पथिकेर गाहे जय ।।

मिलुक—विलीन हो जाए; **शरमहासि**—लाज की हँसी; **बाजुक—बाँशि**—मीत की बाँसुरी बजे; **शिशिर**—ओसकण; **बाये**—वायु में; **आलोछाये**—प्रकाश और छाया में; **गाँथा**—गुँथे हुए; **दोलाय**—झूलने पर; **दोलो**—झूलो।

७३. **कार......प्राणे**—रात्रि के (अवसान पर) भोर में मेरे प्राणों में किसकी बाँसुरी बजी; **फुटे......कलिका**—सूर्य की किरण रूपी कलिका दिगन्त में खिलती है; **शरतेर......आसे**—शरत् के प्रकाश में 'सुन्दर' आता है; **शिशिरे**—ओस कणों में; **भासे**—तिरती है; **मुञ्जरिल**—मञ्जरित हुई।

७४. **आज......किशलय**—आज किसलय ने उसका संदेश पाया है क्या; **ओर......वनमय**—वे समस्त वन में किसकी बातें करते हैं; **कोन्**—किस; **गाहे**

येथा चाँपा-कोरकेर शिखा ज्वले
झिल्लिमुखर घन वनतले,
एसो कवि, एसो, माला परो, बाँशि धरो—
होक गाने गाने विनिमय ।।

१९२५

७५

निशीथरातेर प्राण
कोन् सुधा ये चाँदेर आलोय आज करेछे पान ।
मनेर सुखे ताइ आज गोपन किछु नाइ,
आँधार-ढाका भेङे फेल सब करेछे दान ।।
दखिन-हाओयाय तार सब खुलेछे द्वार ।
तारि निमन्त्रणे आजि फिरि वने वने,
सङ्गे करे एनेछि एइ
रात-जागा मोर गान ।।

१९२५

७६

फागुनेर शुरु हतेइ शुकनो पाता झरल यत
तारा आज केँदे शुधाय, 'सेइ डाले फुल फुटल कि गो,
ओगो कओ फुटल कत ।'

—गाते हैं; **येथा......ज्वले**—जहाँ चम्पे की कलियों की शिखा जलती है; **एसो**—आओ; **परो**—पहनो; **होक**—हो।

७५. **निशीथ......पान**—अर्धरात्रि के प्राण ने चाँद के प्रकाश में आज किस सुधा का पान किया है; **मनेर......नाइ**—इसीलिये मन की मौज में आज (उसका) कुछ भी गोपन नहीं है; **आँधार......दान**—अंधकार के आवरण को चूर्ण-विचूर्ण कर सब (कुछ) अर्पित कर दिया है; **दक्षिण......द्वार**—दक्षिण-पवन ने अपने सभी द्वार खोल दिए हैं; **तारि......वने**—उसीके निमन्त्रण पर आज वन-वन घूमता हूँ; **सङ्गे......एनेछि**—साथ लाया हूँ।

७६. **फागुन......कत**—फाल्गुन के शुरू होते ही जितनी सूखी पत्तियाँ झर पड़ीं, वे आज क्रन्दन करती पूँछती हैं, 'उस डाल में फूल खिले क्या, अजी,

तारा कय, 'हठात् हाओयाय एल भासि मधुरेर सुदूर हासि, हाय,
ख्यापा हाओयाय आकुल हये झरे गेलेम शत शत ।'
तारा कय, 'आज कि तबे एसेछे से नवीन वेशे ।
आज कि तबे एत क्षणे जागल वने ये गान छिल मने मने ।
सेइ बारता काने निये
याइ चले एइ बारेर मतो ।'

१९२५

७७

धरणी, दूरे चेये केन आज आछिस जेगे
येन कार उत्तरीयेर परशेर हरष लेगे ।।
आजि कार मिलनगीति ध्वनिछे काननवीथि,
मुखे चाय कोन् अतिथि आकाशेर नवीन मेघे ।।
घिरेछिस माथाय वसन कदमेर कुसुम-डोरे,
सेजेछिस नयनपाते नीलिमार काजल प'रे ।
तोमार ओइ वक्षतले नवश्याम दूर्वादले
आलोकेर झलक झले परानेर पुलक-वेगे ।।

१९२६

कहो, कितने (फूल) खिले'; **तारा......हाय**—वे कहती हैं, हठात् हवा में 'मधुर' की दूर की हँसी, हाय, तिर आई; **ख्यापा......शत**—पागल हवा में व्याकुल हो कर (हम) सौ-सौ झर पड़ीं; **तारा......वेशे**—वे कहती हैं, तब क्या आज वह नवीन वेश में आया है; **आज......मने**—तो क्या आज इतने (दिनों) बाद—जो गान मन ही मन में थे—वन में जाग गए; **सेइ......मतो**—इसी संदेश को कानों में ले कर इस बार के लिये हम चली जायँ ।

७७. **दूरे......जेगे**—दूर की ओर देखती आज (तू) क्यों जाग रही है; **येन......लेगे**—जैसे किसीके उत्तरीय के स्पर्श का हर्ष अनुभव होने से; **आजि कार**—आज किसकी; **ध्वनिछे**—ध्वनित कर रही है; **मुखे चाय**—मुख की ओर देखता है; **घिरेछिस......डोरे**—कदम्ब के फूल की डोरी से सिर पर (तूने) वस्त्र को घेरा है; **सेजेछिस**—सजी है; **नयनपाते**—नयन-पल्लवों में; **प'रे**—आँज कर; **तोमार ओइ**—तुम्हारे उस; **आलोकेर.....झरे**—प्रकाश की लौ झलकती है; **परानेर**—प्राणों के ।

७८

एसो, एसो, एसो हे वैशाख।
तापसनिश्वासबाये मुमूर्षरे दाओ उड़ाये,
वत्सरेर आवर्जना दूर हये याक॥
याक पुरातन स्मृति, याक भुले-याओया गीति,
अश्रुवाष्प सुदूरे मिलाक॥
मुछे याक ग्लानि, घुचे याक जरा,
अग्निस्नाने शुचि होक धरा।
रसेर आवेशराशि शुष्क करे दाओ आसि,
आनो आनो आनो तव प्रलयेर शाँख।
मायार कुज्झटिजाल याक दूरे याक॥

१९२७

७९

केन पान्थ, ए चञ्चलता।
कोन् शून्य हते एल कार बारता॥
नयन किसेर प्रतीक्षा-रत विदायविषादे उदास-मतो—
घन-कुन्तलभार ललाटे नत, क्लान्त तड़ितवधू तन्द्रागता॥
केशरकीर्ण कदम्बवने मर्मरमुखरित मृदुपवने
वर्षणहर्ष-भरा धरणीर विरहविशङ्कित करुण कथा।
धैर्य मानो ओगो, धैर्य मानो, वरमाल्य गले तव हय नि म्लान—

७८. **एसो**—आओ; **बाये**—वायु से; **मुमूर्षरे**—मरणासन्न को; **दाओ उड़ाये**—उड़ा दो; **दूर......याक**—दूर हो जाय; **याक**—जाय; **भुले-याओया**—भूली हुई; **मिलाक**—विलीन हो जाय; **मुछे याक**—पुँछ कर मिट जाय; **घुचे याक**—दूर हो जाय, नष्ट हो जाय; **होक**—हो; **आसि**—आ कर; **आनो**—लाओ; **शाँख**—शंख; **कुज्झटि**—कुहेलिका, कुहरा।

७९. **केन**—क्यों; **चञ्चलता**—अधीरता; **कोन्......बारता**—किस शून्य-लोक से किसका संदेश आया; **किसेर**—किस की; **विदाय......मतो**—बिदाई के दुःख से विषण्ण-जैसे; **हय......म्लान**—म्लान नहीं हुआ है।

आजो हय नि म्लान—
फुलगन्ध-निवेदन-वेदन-सुन्दर मालती तव चरणे प्रणता ।।

१९२७

८०

गगने गगने आपनार मने की खेला तव ।
तुमि कत वेशे निमेषे निमेषे नितुइ नव ।।
जटार गभीरे लुकाले रविरे, छायापटे आँक ए कोन् छवि रे ।
मेघमल्लारे की बल आमारे केमने कब ।।
वैशाखी झड़े से दिनेर सेइ अट्टहासि
गुरुगुरु सुरे कोन् दूरे दूरे याय ये भासि ।
से सोनार आलो श्यामले मिशालो— श्वेत उत्तरी आज केन कालो ।
लुकाले छायाय मेघेर मायाय की वैभव ।।

१९२७

८१

आलोर अमल कमलखानि के फुटाले,
नील आकाशेर घुम छुटाले ।।
आमार मनेर भावनागुलि बाहिर हल पाखा तुलि,
ओइ कमलेर पथे तादेर सेइ जुटाले ।।

८०. **आपनार मने**—मन की मौज में; **तुमि......नव**—तुम कितने वेशों में क्षण-क्षण नित्य ही नवीन हो; **जटार......रविरे**—जटा की गहनता में सूर्य को छिपा लिया; **छायापटे......रे**—छायापट पर यह कैसी तस्वीर अंकित कर रहे हो; **मेघ......कब**—मेघमल्लार (राग) में मुझसे क्या कहते हो, कैसे बताऊँ; **वैशाखी......भासि**—वैशाख की आँधी में उस दिन का वह अट्टहास गुरु-गम्भीर स्वर में किस सुदूर में बह जाता है; **से......मिशालो**—वह सुनहला आलोक श्यामलता में घुल गया; **श्वेत......कालो**—श्वेत उत्तरीय आज काला क्यों है; **लुकाले**—छिपाया; **छायाय**—छाया में; **मेघेर मायाय**—मेघों की माया में।

८१. **आलोर......फुटाले**—प्रकाश के स्वच्छ कमल को किसने प्रस्फुटित किया; **नील......छुटाले**—नील आकाश की निद्रा दूर की; **आमार......तुलि**—मेरे मन की चिन्ताएँ पंख फैला कर बाहर निकलीं; **ओइ......जुटाले**—उस कमल

शरतवाणीर वीणा बाजे कमलदले।
ललित रागेर सुर झरे ताइ शिउलितले।
ताइ तो वातास बेड़ाय मेते कचि धानेर सबुज खेते,
वनेर प्राणे मर्मरानिर ढेउ उठाले ।।

१९२७

८२

हिमेर राते ओइ गगनेर दीपगुलिरे
हेमन्तिका करल गोपन आँचल घिरे ।।
घरे घरे डाक पाठालो— 'दीपालिकाय ज्वालाओ आलो,
ज्वालाओ आलो, आपन आलो, साजाओ आलोय धरित्रीरे ।'
शून्य एखन फुलेर बागान, दोयेल कोकिल गाहे ना गान,
काश झरे याय नदीर तीरे।
याक अवसाद विषाद कालो, दीपालिकाय ज्वालाओ आलो—
ज्वालाओ आलो, आपन आलो, शुनाओ आलोर जयवाणीरे ।।
देवतारा आज आछे चेये— जागो धरार छेले मेये,
आलोय जागाओ यामिनीरे।

के पथ पर उन्हें सम्मिलित किया; **ताइ**—इसीलिये; **शिउलितले**—शेफाली-तले; **ताइ......मेते**—इसीलिये हवा मतवाली हो कर घूमती है; **कचि......खेते**—कच्चे धान के हरे खेत में; **वनेर......उठाले**—वन के प्राणों में मर्मर-ध्वनि की लहरें उठाईं।

८२. **गगनेर दीपगुलिरे**—आकाश के दीपकों को; **हेमन्तिका......घिरे**—हेमन्तिका ने अंचल से घेर कर छिपा लिया; **घरे......आलो**—घर-घर संदेश भेजा, दीपावली में दीप जलाओ; **साजाओ**—सजाओ; **आलोय**—आलोक से; **धरित्रीरे**—पृथ्वी को; **शून्य.....बागान**—फूल का बाग इस समय रीता है; **दोयेल**—(एक पक्षी); **गाहे ना**—गाते नहीं; **याय**—जाता है; **याक**—जाय; **कालो**—काला; **शुनाओ**—सुनाओ; **देवतारा......मेये**—देवगण आज प्रतीक्षा कर रहे हैं—पृथ्वी के पुत्र-पुत्रियां, जागो; **आलोय......यामिनीरे**—रात्रि को आलोक से

एल आँधार, दिन फुरालो, दीपालिकाय ज्वालाओ आलो——
ज्वालाओ आलो, आपन आलो, जय करो एइ तामसीरे ।।

१९२७

८३

हाय हेमन्तलक्ष्मी, तोमार नयन केन ढाका——
हिमेर घन घोमटाखानि धूमल रङे आँका ।।
सन्ध्याप्रदीप तोमार हाते मलिन हेरि कुयाशाते,
कण्ठे तोमार वाणी येन करुण बाष्पे माखा ।।
धरार आँचल भरे दिले प्रचुर सोनार धाने ।
दिगङ्गनार अङ्गन आज पूर्ण तोमार दाने ।
आपन दानेर आड़ालेते रइले केन आसन पेते,
आपनाके एइ केमन तोमार गोपन क'रे राखा ।

१९२७

८४

चरणरेखा तव ये पथे दिले लेखि
चिह्न आजि तारि आपनि घुचाले कि ।।
अशोकरेणुगुलि राङालो यार धूलि
तारे ये तृणतले आजिके लीन देखि ।।

जगाओ; **एल.....फुरालो**—अन्धकार आया, दिन समाप्त हो गया; **तामसीरे**—अन्धकारमयी को ।

८३. **तोमार......ढाका**—तुम्हारी आँखें क्यों ढँकी हुई हैं; **हिमेर......आँका**—कुहासे का सघन घूँघट धूमिल रंग से अंकित है; **सन्ध्या.....कुयाशाते**—तुम्हारे हाथ के सान्ध्य-दीप को कुहरे से मलिन देखता हूँ; **माखा**—सिक्त; **भरे दिले**—भर दिया; **दिगङ्गनार......दाने**—दिग्वधुओं का आँगन आज तुम्हारे दान से पूर्ण है; **आपन......पेते**—अपने दान की ओट में आसन बिछा कर तुम क्यों (छिपी) रहीं; **आपनाके......राखा**—अपने को इस प्रकार कैसा तुम्हारा छिपा रखना है ।

८४. **चरण......कि**—जिस पथ पर तुमने अपनी चरण-रेखा अंकित कर दी, उसके चिह्न को क्या आज अपने-आप ही मिटा दिया; **अशोक....देखि**—अशोक

फुराय फुल-फोटा, पाखिओ गान भोले,
दखिन-वायु सेओ उदासी याय चले ।।
तबु कि भरि तारे अमृत छिल ना रे—
स्मरण तारो कि गो मरणे याबे ठेकि ।।

१९२७

८५

नील अञ्जनघन पुञ्जछायाय समवृत अम्बर हे गम्भीर।
वनलक्ष्मीर कम्पित काय, चञ्चल अन्तर—
झंकृत तार झिल्लिर मञ्जीर हे गम्भीर ।।
वर्षणगीत हल मुखरित मेघमन्द्रित छन्दे,
कदम्बवन गभीर मगन आनन्दघन गन्धे—
नन्दित तव उत्सवमन्दिर हे गम्भीर ।।
दहनशयने तप्त धरणी पड़ेछिल पिपासार्ता,
पाठाले ताहारे इन्द्रलोकेर अमृतवारिर वार्ता।
माटिर कठिन बाधा हल क्षीण, दिके दिके हल दीर्ण—
नव-अङ्कुर-जयपताकाय धरातल समाकीर्ण—
छिन्न हयेछे बन्धन बन्दीर हे गम्भीर ।।

१९२९

फूल के पराग ने जिस (पथ) की धूलि को रँगा, उसे आज घास के तले विलीन देखता हूँ; **फुराय.....भोले**—फूल का खिलना समाप्त होता है पक्षी भी गाना भूल जाते है; **दखिन......चले**—दक्षिण पवन, वह भी उदासीन चला जाता है; **तबु......रे**—तौभी क्या उन्हें पूर्ण कर अमृत नहीं था (क्या वे अमृत से पूर्ण नहीं थे); **स्मरण......ठेकि**—उसकी भी स्मृति क्या मृत्यु में जा कर रुक जायगी।

८५. **समवृत**—आच्छादित; **तार......मञ्जीर**—उसकी झिल्ली के नूपुर; **हल**—हुआ; **दहनशयने**—दहन-सेज पर; **पड़ेछिल**—पड़ी हुई थी; **पाठाले......वार्ता**—उसे इन्द्रलोक के अमृतजल का संदेश भेजा; **माटिर**—मिट्टी की; **हल**—हुई; **हयेछे**—हुआ है।

८६

श्यामल छाया, नाइ वा गेले
शेष बरषार धारा ढेले ।।
समय यदि फुरिये थाके हेसे विदाय करो ताके,
एबार नाहय काटुक वेला असमयेर खेला खेले ।।
मलिन, तोमार मिलाबे लाज—
शरत् एसे पराबे साज ।
नवीन रवि उठबे हासि, बाजाबे मेघ सोनार बाँशि—
कालोय आलोय युगलरूपे शून्ये देबे मिलन मेले ।।

१९२९

८७

यखन मल्लिकावने प्रथम धरेछे कलि
तोमार लागिया तखनि बन्धु, बेँधेछिनु अञ्जलि ।।
तखनो कुहेलिजाले
सखा, तरुणी उषार भाले
शिशिरे शिशिरे अरुणमालिका उठितेछे छलोछलि ।।
एखनो वनेर गान बन्धु, हय नि तो अवसान—
तबु एखनि याबे कि चलि ।

८६. **श्यामल......ढेले**—(काले बादलों की) श्यामल छाया, (तुम)भले ही शेष वर्षा की धारा ढाल कर नहीं गईं; **समय......ताके**—यदि समय चुक गया हो तो हँस कर उसे विदा करो; **एबार......खेले**—अब, न हो, असमय का खेल खेल कर ही समय बीते; **मलिन......साज**—मलिन, तुम्हारी लज्जा मिटेगी, शरत् आ कर तुम्हें सज्जित वेश पहनाएगा; **नवीन......बाँशि**—नवीन सूर्य हँस पड़ेगा, मेघ सोने की बाँसुरी बजाएँगे; **कालोय.....मेले**—कालिमा (छाया) और आलोक युगल रूप में शून्य में (अपना) मिलन व्याप्त करेंगे ।

८७. **यखन......अञ्जलि**—जब मल्लिका वन में पहले पहल कलियाँ लगी थीं, (तभी) हे सखा, तुम्हारे लिये मैंने अञ्जलि बाँधी थी; **तखनो**—उस समय भी; **कुहेलि**—कुहरा; **शिशिरे**—ओसकणों में; **उठितेछे छलोछलि**—छल-छल कर रही थी; **एखनो......चलि**—बन्धु, वन का गान तो अब भी समाप्त नहीं

ओ मोर करुण वल्लिका,
तोर श्रान्त मल्लिका
झरो-झरो हल, एइ वेला तोर शेष कथा दिस बलि ।।

१९३०

८८

एकटुकु छोँअया लागे, एकटुकु कथा शुनि—
ताइ दिये मने मने रचि मम फाल्गुनी ।।
किछु पलाशेर नेशा, किछु वा चाँपाय मेशा,
ताइ दिये सुरे सुरे रङे रसे जाल बुनि ।।
येटुकु काछेते आसे क्षणिकेर फाँके फाँके
चकित मनेर कोणे स्वपनेर छवि आँके ।
येटुकु याय रे दूरे भावना काँपाय सुरे,
ताइ निये याय वेला नूपुरेर ताल गुनि ।।

१९३०

८९

झरा पाता गो, आमि तोमारि दले ।
अनेक हासि अनेक अश्रुजले—
फागुन दिल विदायमन्त्र आमार हियातले ।।

हुआ, फिर भी क्या अभी ही चले जाओगे; **वल्लिका**—लतिका; **झरो-झरो हल**—झरने को उद्यत हुई है; **एइ......बलि**—(अब) इस समय अपनी अन्तिम बात तू कह देना।

८८. **एकटुकु......लागे**—तनिक-सा स्पर्श छू जाता है; **एकटुकु......शुनि**—तनिक-सी बात सुनता हूँ; **फाल्गुनी**—फागुन की पूर्णिमा; **ताइ......बुनि**—उसी को ले कर सुर-सुर में रंग और रस का जाल बुनता हूँ; **येटुकु......आँके**—क्षणिक के बीच-बीच से जितना भी निकट आता है, वह विस्मित मन के कोने में स्वप्न की तस्वीर अंकित कर देता है; **येटुकु.....सुरे**—जितना भी दूर जाता है, चिन्ताओं को सुर में कँपाता है; **ताइ......गुनि**—उसी को ले कर नूपुर का ताल गिनते समय बीत जाता है।

८९. **झरा......दले**—झरे पत्ते, मैं तुम्हारे ही दल में हूँ; **हासि**—हँसी; **दिल**—दिया; **आमार हियातले**—मेरे हृदय-तल में; **झरा......ए**—झरे पत्ते,

झरा पाता गो, वसन्ती रङ दिये
शेषेर वेशे सेजेछ तुमि कि ए।
खेलिले होलि धुलाय घासे घासे
वसन्तेर एइ चरम इतिहासे।
तोमारि मतो आमारो उत्तरी
आगुन-रङे दियो रङिन करि—
अस्तरवि लागाक परशमणि
प्राणेर मम शेषेर सम्बले॥

१९३०

९०

तुमि किछू दिये याओ मोर प्राणे गोपने गो—
फुलेर गन्धे, बाँशिर गाने, मर्मरमुखरित पवने॥
तुमि किछु निये याओ वेदना हते वेदने—
ये मोर अश्रु हासिते लीन, ये वाणी नीरव नयने॥

१९३०

वसन्ती रंग से 'अन्तिम' के वेश में तुमते यह कैसी सज्जा की है; **खेलिले होलि**—होली खेली; **धुलाय**—धूलि में; **घासे घासे**—तृण-तृण में; **एइ**—इस; **तोमारि......करि**—अपने ही जैसा मेरे उत्तरीय को भी आग के रंग में रँग देना; **लागाक**—छुए; **परशमणि**—पारस पत्थर; **प्राणेर......सम्बले**—मेरे प्राणों के अन्तिम सम्बल (आश्रय) में।

९०. **तुमि.....गो**—अजी, मेरे प्राणों में तुम गुपचुप कुछ देते जाओ; **फुलेर गन्धे**—फूलों के गन्ध में; **बाँशिर गाने**—बाँसुरी के गान में; **तुमि......याओ**—तुम कुछ लेते जाओ; **हते**—से; **ये**—जो; **हासिते**—हँसी में।

९१

निविड़ अमा-तिमिर हते   बाहिर हल जोयार-स्रोते
शुक्लराते चाँदेर तरणी ।
भरिल भरा अरूप फुले,   साजालो डाला अमराकूले
आलोर माला चामेलि-बरनी ।।
तिथिर परे तिथिर घाटे   आसिछे तरी दोलेर नाटे,
नीरवे हासे स्वपने धरणी ।
उत्सवेर पशरा निये   पूर्णिमार कूलेते कि ए
भिड़िल शेषे तन्द्राहरणी ।।

१९३०

९२

वसन्ते वसन्ते तोमार कविरे दाओ डाक—
याय यदि से याक् ।।
रइल ताहार वाणी   रइल भरा सुरे,   रइबे ना से दूरे—
हृदय ताहार कुञ्जे तोमार रइबे ना निर्वाक् ।।
छन्द ताहार रइबे बेँचे
किशलयेर नवीन नाचे नेचे नेचे ।।

---

९१. **अमा-तिमिर**—अमावस्या के अंधकार; **हते**—से; **बाहिर हल**—बाहर निकली; **जोयार-स्रोते**—ज्वार के स्रोत में; **भरा**—माल ढोने वाली नौका; **भरिल**—भरी; **फुले**—फूलों से; **साजालो डाला**—डाली सजाई; **अमरा-कूले**—अमरावती के कूल पर; **आलोर......बरनी**—चमेली के रंग के प्रदीपों की माला; **तिथिर.......नाटे**—तिथि के बाद तिथि के घाट पर झूमने की भंगी में नौका आती है; **हासे**—हँसती है; **उत्सवेर......हरणी**—उत्सव का सामान ले कर क्या यह तन्द्रा का हरण करने वाली (नौका) अन्त में पूर्णिमा के किनारे आ भिड़ी ।

९२. **वसन्ते......डाक**—प्रति वसन्त में अपने कवि को पुकारना; **याय......याय**—अगर वह जाता है तो जाय; **रइल**—रह गई; **ताहार**—उसकी; **सुरे**—सुर से; **रइबे......दूरे**—वह दूर नहीं रहेगा; **हृदय......निर्वाक्**—उसका हृदय तुम्हारे कुञ्ज में मूक नहीं रहेगा; **छन्द......बेंचे**—उसका छन्द किसलयों

तारे तोमार वीणा याय ना येन भुले,
तोमार फुले फुले
मधुकरेर गुञ्जरणे वेदना तार थाक् ।।

१९३०

९३

वेदना की भाषाय रे
मर्मे मर्मरि गुञ्जरि बाजे ।
से वेदना समीरे समीरे सञ्चारे,
चञ्चल वेगे विश्वे दिल दोला ।
दिवानिशा आछि निद्राहरा विरहे
तव नन्दनवन-अङ्गनद्वारे,
मनोमोहन बन्धु—
आकुल प्राणे
पारिजातमाला सुगन्ध हाने ।।

१९३०

९४

हे माधवी, द्विधा केन, आसिबे कि फिरिबे कि—
आङिनाते बाहिरिते मन केन गेल ठेकि ।।

के नवीन नाच में नाच-नाच बचा रहेगा; **तारे......भुले**—ऐसा हो कि तुम्हारी वीणा उसे भूल न जाय; **तोमार......थाक्**—तुम्हारे फूल-फूल में, भौंरे की गुंजार में उसकी वेदना बनी रहे।

९३. **वेदना......बाजे**—वेदना किस भाषा में मर्म में मर्मर करती, गुंजन करती हुई ध्वनित होती है; **से**—वह; **विश्वे**—विश्व को; **दिल दोला**—दोलायमान कर दिया; **आछि**—हूँ; **निद्राहरा**—निद्रा का हरण करने वाले; **विरहे**—विरह में; **हाने**—आघात करती है, दस्तक देती है।

९४. **द्विधा केन**—दुविधा क्यों; **आसिबे......कि**—आओगी या लौट जाओगी; **आङिनाते**—आँगन में; **बाहिरिते**—बाहर होते; **मन......ठेकि**—मन

वातासे लुकाये थेके के य तोरे गेछे डेके,
पाताय पाताय तोरे पत्र से ये गेछे लेखि ।।
कखन् दखिन हते के दिल दुयार ठेलि,
चमकि उठिल जागि चामेलि नयन मेलि ।
बकुल पेयेछे छाड़ा, करवी दियेछे साड़ा,
शिरीष शिहरि उठे दूर हते कारे देखि ।।

१९३०

९५

ओगो वधू सुन्दरी, तुमि मधुमञ्जरी,
पुलकित चम्पार लहो अभिनन्दन—
पर्णेर पात्रे फाल्गुनरात्रे
मुकुलित मल्लिका-माल्येर बन्धन ।
एनेछि वसन्तेर अञ्जलि गन्धेर,
पलाशेर कुङ्कुम चाँदिनिर चन्दन—
पारुलेर हिल्लोल, शिरिषेर हिन्दोल,
मञ्जुल वल्लीर वङ्किम कङ्कण—

क्यों ठिठक गया; **वातासे......डेके**—हवा में (अपने को) छिपाए हुए कौन तुझे पुकार गया है; **पाताय.......लेखि**—पत्तियों-पत्तियों में वह तुझे पत्र जो लिख गया है; **कखन्......ठेलि**—किस समय दक्षिण से किसने दरवाज़ा ठेल दिया; **चमकि......मेलि**—चमेली चौंक कर आँखें खोल जाग उठी; **बकुल......छाड़ा**—बकुल (मौलसिरी) ने मुक्ती पाई है; **करवी......साड़ा**—करवी (कनेर) ने प्रत्युत्तर दिया है; **शिरीष......देखि**—शिरीष दूर से किसे देख सिहर उठता है।

९५. **मधुमञ्जरी**—मधुपूर्ण मञ्जरी, 'मधुमञ्जरी' पुष्प-विशेष; **लहो**—ग्रहण करो; **पर्णेर पात्रे**—पर्ण (पत्तों) के पात्र में; **फाल्गुनरात्रे**—फाल्गुन की रात्रि में; **माल्येर**—माला का; **एनेछि**—लाया हूँ; **चाँदिनिर**—चाँदनी का; **पारुल**—गुलाबी रंग का एक सुगन्धित पुष्प, पाटली; **हिन्दोल**—झूलना; **वल्लीर**—लता

उल्लास-उतरोल वेणुवन-कल्लोल,
कम्पित किशलये मलयेर चुम्बन।
तव आँखिपल्लवे दियो आँकि वल्लभे
गगनेर नवनील स्वपनेर अञ्जन ।।

१९३२

९६

चक्षे आमार तृष्णा ओगो, तृष्णा आमार वक्ष जुड़े।
आमि वृष्टिविहीन वैशाखी दिन, सन्तापे प्राण याय ये पुड़े ।।
झड़ उठेछे तप्त हाओयाय, मनके सुदूर शून्ये धाओयाय--
अवगुण्ठन याय ये उड़े ।।
ये फुल कानन करत आलो
कालो हये से शुकालो।
झरनारे के दिल बाधा-- निष्ठुर पाषाणे बाँधा
दुःखेर शिखरचूड़े ।।

१९३३

९७

आमार वने वने धरल मुकुल,
बहे मने मने दक्षिणहाओया,

का; **उतरोल**---कोलाहल; **दियो**---देना, लगाना; **आँखिपल्लवे**---आँखों की पलकों में; **तव......अञ्जन**---हे वल्लभे, अपने नयन-पल्लवों में आकाश के नव-नील स्वप्नों का काजल आँज लेना।

९६. **चक्षे......जुड़े**---मेरी आँखों में तृष्णा है, तृष्णा मेरे हृदय को परिव्याप्त किए हुए है; **वैशाखी**---वैशाख का; **सन्तापे......पुड़े**---सन्ताप मे प्राण दग्ध हो रहे हैं; **झड़......उड़े**---गर्म हवा में आँधी उठी है, (वह) मन को सुदूर शून्य में प्रधावित करती है, अवगुण्ठन (घूँघट) उड़ जाता है; **ये......शुकालो**---जो फूल कानन को आलोकित करते थे, वे काले हो कर सूख गए; **झरनारे......बाधा**---झरने को किसने बाधा दी।

९७. **आमार......हाओयाय**---मेरे वन-वन में कलियाँ आ गईं, प्रति मन में

मौमाछिदेर डानाय डानाय
येन उड़े मोर उत्सुक चाओया ।।
गोपन स्वपनकुसुमे के एमन सुगभीर रङ दिल एँके—
नव किशलय-शिहरणे भावना आमार हल छाओया ।।
फाल्गुन पूर्णिमाते
एइ दिशाहारा राते
निद्राविहीन गाने कोन् निरुद्देशेर पाने
उद्वेल गन्धेर जोयारतरङ्गे हबे मोर तरणी बाओया ।।

१९३८

९८

आँधार अम्बरे प्रचण्ड डम्बरु बाजिल गम्भीर गरजने ।
अशत्थपल्लवे अशान्त हिल्लोल समीरचञ्चल दिगङ्गने ।
नदीर कल्लोल, वनेर मर्मर, बादल-उच्छल निर्झर-झर्झर,
ध्वनि तरङ्गिल निविड़ संगीते— श्रावणसंन्यासी रचिल रागिणी ।।
कदम्बकुञ्जेर सुगन्धमदिरा अजस्र लुटिछे दुरन्त झटिका ।

दक्षिण हवा बहती है; **मौमाछिदेर......चायोया**—मधुमक्खियों के डैनों में जैसे मेरी उत्सुक चितवन उड़ रही है; **कुसुमे**—फूलों में; **के......एँके**—किसने ऐसे चटकीले रंग अंकित कर दिए; **शिहरणे**—सिहरन में; **भावना......छाओया**—मेरी चिन्ता छा गई; **पूर्णिमाते**—पूर्णिमा में; **एइ......राते**—इस दिग्भ्रान्त रात में; **कोन्......पाने**—किस निरुद्देश्य की ओर; **उद्वेल......बाओया**—उद्वेलित गन्ध के ज्वार की तरङ्गों में मेरा तरणी-तिराना होगा।

९८. **आँधार......गरजने**—अँधेरे आकाश में गभीर गर्जन के साथ प्रचण्ड डमरू बज उठा; **अशत्थ**—अश्वत्थ, पीपल; **दिगङ्गने**—दिशाओं के आँगन में; **रचिल**—रची; **कदम्ब......झटिका**—कदम्ब-कुञ्ज की सुगन्ध-मदिरा को प्रबल

तड़ित्‌शिखा छुटे दिगन्त सन्धिया,   भयार्त यामिनी उठिछे क्रन्दिया--
नाचिछे येन कोन् प्रमत्त दानव   मेघेर दुर्गेर दुयार हानिया ।।
१९३६

९९

नील नवघने आषाढ़गगने तिल ठाँइ आर नाहि रे ।
ओगो आज तोरा यास ने घरेर बाहिरे ।।
बादलेर धारा झरे झरो झरो,   आउषेर खेत जले भरो भरो,
कालिमाखा मेघे ओ पारे आँधार घनियेछे देख् चाहि रे ।।

ओइ शोनो शोनो पारे यावे ब'ले के डाकिछे बुझि माझिरे ।
खेया-पारापार बन्ध हयेछे आजि रे ।
पुबे हाओया बय, कूले नेइ केउ,   दु कूल बाहिया उठे पड़े ढेउ—
दरो दरो वेगे जले पड़ि जल छलो छलो उठे बाजि रे ।
खेया पारापार वन्ध हयेछे आजि रे ।।

आँधी अपरिमित लूट रही है; **छुटे......सन्धिया**—क्षितिज को खोजती हुई भाग रही है; **भयार्त......क्रन्दिया**—भयार्त रात्रि क्रन्दन कर उठती है; **नाचिछे...... हानिया**—जैसे कोई प्रमत्त दानव मेघों के दुर्ग-द्वार पर आघात करता हुआ नाच रहा है।

९९. **तिल......रे**—तिल भर भी ठाँव नहीं है; **ओगो......बाहिरे**—अरे, आज तुम सब घर के बाहर न जाना; **झरे झरो झरो**—झर-झर कर झरती है; **आउषेर खेत**--आउष (वर्षाकाल में होने वाला धान) का खेत; **जले भरो भरो**—जल से परिपूर्ण है; **कालिमाखा......चाहि रे**—देखो, सियाही पुते हुए मेघों से उस पार अन्धकार सघन हो रहा है; **ओइ......माझिरे**—वह सुनो, सुनो, कोई पार जाना चाहता है, इसलिये शायद माँझी को पुकार रहा है; **खेया...... रे**--खेवे का आर-पार आना-जाना आज बन्द हो गया है; **पुबे......बय**—पुरवैया हवा बह रही है; **कूले......केउ**—किनारे पर कोई नहीं है; **दु......ढेउ**—दोनों किनारों को प्लावित कर तरंगें उठती-गिरती हैं; **दरो......रे**—अत्यधिक स्राव के वेग के साथ जल में जल गिर कर छल-छल शब्द कर रहा है;

ओइ डाके शोनो धेनु घन घन, धवलीरे आनो गोहाले—
एखनि आँधार हबे वेलाटुकु पोहाले।
दुयारे दाँड़ाये ओगो देखो देखि, माठे गेछे यारा तारा फिरिछे कि,
राखालबालक की जानि कोथाय सारा दिन आजि खोयाले।
एखनि आँधार हबे वेलाटुकु पोहाले।।

ओगो आज तोरा यास ने गो तोरा यास ने घरेर बाहिरे।
आकाश आँधार, वेला बेशि आर नाहि रे।
झरो झरो धारे भिजिबे निचोल, घाटे येते पथ हयेछे पिछल—
ओइ वेणुवन दोले घन घन पथपाशे देखो चाहि रे।।

१९३६

१००

एसो श्यामल सुन्दर,
आनो तव तापहरा तृषाहरा सङ्गसुधा।
विरहिणी चाहिया आछे आकाशे।।
से ये व्यथित हृदय आछे बिछाये

ओइ......गोहाले—वह सुनो, बार-बार गाय रँभा रही है, धवली (उजली गाय) को गोशाला में लाओ; **एखनि......पोहाले**—वेला ढलते ही अभी अन्धकार हो जायगा; **दुयारे......कि**—अजी, दरवाज़े पर खड़े हो कर देखो तो सही, जो मैदान में गए हैं, वे सभी लौट रहे हैं क्या; **राखाल......खोयाले**—चरवाहे बालकों ने न-जानें आज समस्त दिन कहाँ गँवाया; **वेला......रे**—और अधिक वेला नहीं है; **झरो......निचोल**—झर-झर वृष्टि में घाँघरा-ओढ़नी भीग जाएँगे; **घाटे......पिछल**—घाट पर जाने वाला पथ रपटीला हो गया है; **ओइ......रे**—वह देखो, रास्ते के किनारे बाँसों का झुरमुट बार-बार झूम रहा है।

१००. **एसो**—आओ; **आनो**—लाओ; **तापहरा**—ताप को हरने वाली; **सङ्गसुधा**—संग रूपी सुधा (संग जो सुधा के समान है); **विरहिणी......आकाशे**—विरहिणी आकाश की ओर टकटकी लगाए देख रही है; **से......छायाते**—तमाल कुञ्ज के रास्ते जलसिक्त छाया में वह (अपना) व्यथित हृदय बिछाए

तमालकुञ्जपथे सजल छायाते,
नयने जागिछे करुण रागिणी ।।
बकुलमुकुल रेखेछे गाँथिया,
बाजिछे अङ्गने मिलनबाँशरि ।
आनो साथे तोमार मन्दिरा,
चञ्चल नृत्येर बाजिबे छन्दे से—
बाजिबे कङ्कण, बाजिबे किङ्किणी,
झङ्कारिबे मञ्जीर रुणुरुणु ।।

१०१

मधु —गन्धे-भरा मृदु —स्निग्धछाया नीप —कुञ्जतले
श्याम —कान्तिमयी कोन् स्वपनमाया फिरे वृष्टिजले ।।
फिरे रक्त-अलक्तक-धौत पाये धारा —सिक्त बाये,
मेघ —मुक्त सहास्य शशाङ्ककला सिँथि —प्रान्ते ज्वले ।।
पिये उच्छल तरल प्रलयमदिरा उन्मुखर तरङ्गिणी धाय अधीरा,
कार निर्भीक मूर्ति तरङ्गदोले कल —मन्द्ररोले ।
एइ ताराहारा निःसीम अन्धकारे कार तरणी चले ।।
१९३७

हुए है; **नयने जागिछे**—नयनों में जाग रही है; **बकुल......गाँथिया**—बकुल (मौलश्री) की कलियों को (उसने) गूँथ रखा है; **बाजिछे......बाँशरि**—आँगन में मिलन की बाँसुरी बज रही है; **आनो......मन्दिरा**—साथ में अपना मजीरा लेने आओ; **चञ्चल......से**—चञ्चल नृत्य के छन्द में वह बजेगा; **बाजिबे**—बजेगा; **झंकारिबे**—झंकृत होंगे; **मञ्जीर**—नूपुर ।

१०१. **कोन्**—कौन; **फिरे**—विचरती है; **पाये**—पैरों से; **धारा...... बाये**—वृष्टि-सिक्त वायु में; **सिँथि**—माँग; **ज्वले**—दीप्त है; **उन्मुखर**—अत्यन्त मुखर; **कार**—किस की; **रोले**—ध्वनि में; **एइ**—इस; **ताराहारा**—ताराविहीन; **अन्धकारे**—अन्धकार में ।

१०२

किछु बलब ब'ले एसेछिलेम,
रइनु चेये ना ब'ले ।।
देखिलाम, खोला वातायने माला गाँथ आपन-मने,
गाओ गुन्-गुन् गुञ्जरिया यूथीकुँड़ि निये कोले ।।
सारा आकाश तोमार दिके
चेये छिल अनिमिखे ।
मेघ-छेँड़ा आलो एसे पड़ेछिल कालो केशे,
बादल-मेघे मृदुल हाओयाय अलक दोले ।।

१९३८

१०३

मन मोर मेघेर सङ्गी,
उड़े चले दिग्दिगन्तेर पाने
निःसीम शून्ये श्रावणवर्षणसंगीते
रिमिझिम रिमिझिम रिमिझिम ।।
मन मोर हंसबलाकार पाखाय याय उड़े
क्वचित क्वचित चकित तड़ित-आलोके ।
झञ्झन मञ्जीर बाजाय झञ्झा रुद्र आनन्दे ।
कलो कलो कलमन्द्रे निर्झरिणी
डाक देय प्रलय-आह्वाने ।।

---

१०२. **किछु......एसेछिलेम**—कुछ कहूँगा, इसलिये आया था (कुछ कहने के लिये आया था); **रइनु......ब'ले**—बिना कुछ कहे ताकता ही रहा; **देखिलाम**—देखा; **खोला......मने**—खुली खिड़की पर मन की मौज में माला गूँथ रही हो; **गाओ......कोले**—गोद में जूही की कलियों को लिए गुनगुनाती गा रही हो; **सारा......अनिमिखे**—समस्त आकाश तुम्हारी ओर अनिमेष दृष्टि से ताक रहा था; **मेघ......केश**—मेघों को चीरने वाला प्रकाश आ कर तुम्हारे काले केशों पर पड़ रहा था; **बादल-मेघे**—बरसाती बादलों में; **हाओयाय**—हवा से ।

१०३. **मोर**—मेरा; **पाने**—ओर; **पाखाय......उड़े**—पखों से उड़ जाता है; **बाजाय**—बजाती है; **कलो कलो**—कल-कल; **डाक देय**—पुकारना

वायु बहे पूर्वसमुद्र हते
उच्छल छलो छलो तटिनीतरङ्गे।
मन मोर धाय तारि मत्त प्रवाहे
ताल-तमाल-अरण्ये
क्षुब्ध शाखार आन्दोलने।।

१९३८

१०४

मोर भावनारे की हाओयाय मातालो,
दोले मन दोले अकारण हरषे।
हृदयगगने सजल घन नवीन मेघे
रसेर धारा बरषे।।
ताहारे देखि ना ये देखि ना,
शुधु मने मने क्षणे क्षणे ओइ शोना याय
बाजे अलखित तारि चरणे
रुनुरुनु रुनुरुनु नूपुरध्वनि।।
गोपन स्वपने छाइले
अपरश आँचलेर नव नीलिमा।
उड़े याय बादलेर एइ बातासे
तार छायामय एलो केश आकाशे।

है; **हते**—से; **छलो छलो**—छल-छल; **धाय**—दौड़ता है; **तारि......प्रवाहे**—उसीके मत्त प्रवाह में।

१०४. **मोर......मातालो**—मेरी भावना को जाने-किस हवा ने मत्त कर दिय है; **दोले**—झूमता है; **हरषे**—हर्ष से; **ताहारे......ना**—उसे देख नहीं पाता, देख जो नहीं पाता; **शुधु......याय**—केवल मन ही मन क्षण-क्षण वह सुनाई पड़ती है; **अलखित**—अलक्षित; **तारि**—उसी के; **चरणे**—चरणों में; **छाइल**—छा गई; **अपरश**—जिसका स्पर्श न किया जा सके; **उड़े.....आकाशे**—इस बरसाती हवा में उसके छायामय आललायित केश आकाश में उड़े जा रहे हैं;

से ये मन मोर दिल आकुलि
जल-भेजा केतकीर दूर सुवासे ।।

१९३८

१०५

आजि तोमाय आबार चाइ शुनाबारे
ये कथा शुनायेछि बारे बारे—
आमार पराने आजि ये वाणी उठिछे बाजि
अविराम वर्षणधारे ।।
कारण शुधायो ना, अर्थ नाहि तार,
सुरेर संकेत जागे पुञ्जित वेदनार।
स्वप्ने ये वाणी मने मने ध्वनिया उठे क्षणे क्षणे
काने काने गुञ्जरिब ताइ बादलेर अन्धकारे ।।

१९३९

१०६

एसो गो, ज्वेले दिये याओ प्रदीपखानि
विजन घरेर कोणे, एसो गो।
नामिल श्रावणसन्ध्या, कालो छाया घनाय वने वने ।।

से......सुवासे—जल-भीनी केतकी के दूर से आने वाले गन्ध से उसने मेरे मन को आकुल कर दिया।

१०५. **आजि.......बारे**—जो बात (मैंने) बार-बार सुनाई है, (उसे) आज फिर तुम्हें सुनाना चाहता हूँ; **आमार.....धारे**—अविराम वर्षा की धारा में मेरे प्राणों में जो वाणी ध्वनित हो रही है; **कारण......तार**—कारण न पूछना, उसका (कोई) अर्थ नहीं है; **सुरेर......वेदनार**—पुञ्जीभूत वेदना के स्वर का संकेत जागता है; **स्वप्ने.....अन्धकारे**—स्वप्न में जो वाणी क्षण-क्षण मन ही मन ध्वनित हो उठती है, उसे ही वर्षा के अन्धकार में (तुम्हारे) कानों कान गुंजरित करूँगा।

१०६. **एसो......कोणे**—अजी आओ, निर्जन गृह के कोने में प्रदीप जलाते जाओ; **नामिल**—उतरी; **कालो......वने**—काली छाया वन-वन में घनी हो

आनो विस्मय मम निभृत प्रतीक्षाय यूथीमालिकार मृदु गन्धे—
नीलवसन-अञ्चल-छाया
सुखरजनी-सम मेलुक मने ।।
हारिये गेछे मोर बाँशि,
आमि कोन् सुरे डाकि तोमारे ।
पथे-चेये-थाका मोर दृष्टिखानि
शुनिते पाओ कि ताहार वाणी—
कम्पित वक्षेर परश मेले कि सजल समीरणे ।।

१९३९

१०७

पागला हाओयार बादल-दिने
पागल आमार मन जेगे उठे ।।
चेनाशोनार कोन् बाइरे येखाने पथ नाइ नाइ रे
सेखाने अकारणे याय छुटे ।।
घरेर मुखे आर कि रे कोनो दिन से याबे फिरे ।
याबे ना, याबे ना—
देयाल यत सब गेल टुटे ।।

रही है; **आनो......गन्धे**—जूही की मालिका के मृदु गन्ध से मेरी एकान्त प्रतीक्षा में विस्मय का संचार करो; **सुख.......मने**—सुख की रात्रि के समान मन में फैल जाय; **हारिये....तोमारे**—मेरी बाँसुरी खो गई है, मैं किस सुर में तुम्हें पुकारूँ; **पथे ......दृष्टि खानि**—पथ निहारने वाली मेरी आँखें; **शुनिते......वाणी**—उन (आँखों) की वाणी क्या सुन पाते हो; **कम्पित......समीरणे**—सजल समीर में क्या (मेरे) कम्पित वक्ष का स्पर्श मिलता है।

१०७. **पागला......उठे**—पागल हवा के बरसाती दिन में मेरा पागल मन जाग उठता है; **चेना.....छुटे**—जाने-पहचाने (की सीमा के) किस बाहर की ओर, जहाँ पथ नहीं है, वहाँ अकारण (मेरा मन) क्यों दौड़ा जाता है; **घरेर......फिरे**—गृह की ओर क्या वह और किसी दिन लौट कर जाएगा; **याबे ना**—नहीं जाएगा; **देयाल.....टुटे**—जितनी दीवारें (थीं),

वृष्टि-नेशा-भरा सन्ध्यावेला कोन् बलरामेर आमि चेला,
आमार स्वप्न घिरे नाचे माताल जुटे— यत माताल जुटे।
या ना चाइबार ताइ आजि चाइ गो,
या ना पाइबार ताइ कोथा पाइ गो।
पाब ना पाब ना,
मरि असम्भवेर पाये माथा कुटे।।

१९३९

१०८

बादल-दिनेर प्रथम कदम फुल करेछ दान;
आमि दिते एसेछि श्रावणेर गान।।
मेघेर छायाय अन्धकारे रेखेछि ढेके तारे
एइ-ये आमार सुरेर खेतेर प्रथम सोनार धान।।
आज एने दिले, हयतो दिबे ना काल—
रिक्त हबे ये तोमार फुलेर डाल।
ए गान आमार श्रावणे श्रावणे तव विस्मृतिस्रोतेर प्लावने
फिरिया फिरिया आसिबे तरणी बहि तव सम्मान।।

१९३९

सब टूट गईं; **वृष्टि......बेला**—वृष्टि के नशे से भरी सन्ध्यावेला; **कोन्...... चेला**—किस बलराम का मैं चेला हूँ (कृष्ण के भाई बलराम मदिरा के प्रेमी थे); **आमार......जुटे**—मेरे स्वप्नों को घेर कर सब मतवाले जमा हो कर नाचते हैं; **या......गो**—जो चाहने का नहीं, उसे ही आज चाहता हूँ; **या...... पाइ गो**—जो पाने का नहीं, उसे कहाँ पाऊँ; **पाब ना**—नहीं पाऊँगा; **मरि...... कुटे**—असम्भव के चरणों पर सिर पटकता मरता हूँ।

१०८. **कदम फुल**—कदम्ब का फूल; **करेछ दान**—भेंट किया है; **दिते एसेछि**—देने आया हूँ; **मेघेर.....धान**—यह जो मेरे सुर के खेत का प्रथम सोने का धान है, उसे मेघों की छाया में, अन्धकार में ढँक रखा है; **आज.....काल**—आज ला दिया, हो सकता है कल न दोगे; **रिक्त.....डाल**—तुम्हारे फूल की डाल रीती जो होगी; **ए**—यह; **फिरिया......सम्मान**—नौका तुम्हारा सम्मान वहन कर लौट-लौट आएगी।

१०९

सघन गहन रात्रि, झरिछे श्रावणधारा—
अन्ध विभावरी सङ्गपरशहारा ।।
चेये थाकि ये शून्ये अन्यमने
सेथाय विरहिणीर अश्रु हरण करेछे ओइ तारा ।।
अश्वथपल्लवे वृष्टि झरिया मर्मरशब्दे
निशीथेर अनिद्रा देय ये भरिया ।
मायालोक हते छायातरणी
भासाय स्वप्नपारावारे—नाहि तार किनारा ।।

१९३९

१०९. **झरिछे**—झर रही है; **धारा**—वृष्टि; **परश**—स्पर्श; **हारा**—विहीन; **चेये......अन्यमने**—शन्य की ओर अन्यमनस्क ताकता रहता हूँ; **सेथाय......तारा**—वहाँ विरहिणी के अश्रु उस तारे ने हर लिए हैं; **अश्वथ**—अश्वत्थ, पीपल; **देय.....भरिया**—भर देती है; **हते**—से; **भासाय**—तिराती है; **नाहि**—नहीं है; **तार**—उसका ।

विचित्र

१

एसो गो नूतन जीवन।
एसो गो कठोर निठुर नीरव, एसो गो भीषण शोभन ।।
एसो अप्रिय विरस तिक्त, एसो गो अश्रुसलिलसिक्त,
एसो गो भूषणविहीन रिक्त, एसो गो चित्तपावन ।।
थाक् वीणा वेणु, मालतीमालिका, पूर्णिमानिशि, मायाकुहेलिका—
एसो गो प्रखर होमानलशिखा हृदयशोणितप्राशन।
एसो गो प्रखर होमानलशिखा हृदयशोणितप्राशन।
एसो गो परमदु:खनिलय, आशा-अङ्कुर करह विलय—
एसो संग्राम, एसो महाजय, एसो गो मरणसाधन ।।

१८९५

२

आमरा लक्ष्मीछाड़ार दल भवेर पद्मपत्रे जल
सदा करछि टलोमल।
मोदेर आसा-याओया शून्य हाओया, नाइको फलाफल ।।
नाहि जानि करण-कारण, नाहि जानि धरण-धारण,

१. **एसो**—आओ; **भीषण**—भयंकर; **शोभन**—सुन्दर; **थाक्**—रहने दी जाय; **मालती-मालिका**—मालती की माला; **प्राशन**—भोजन; **करह**—करो।

२. **आमरा......टलोमल**—हम अभागों के दल संसार रूपी कमल के पत्ते पर जल (के समान) सर्वदा ढुलमुल कर रहे हैं; **लक्ष्मीछाड़ा**—लक्ष्मी के द्वारा परित्यक्त, मस्त, बेपरवाह व्यक्ति जिसे सुख-सम्पत्ति की चिन्ता नहीं; **मोदेर ......फलाफल**—हम लोगों का आना-जाना शून्य हवा (के समान) है, (जिसका कोई) फलाफल नहीं; **नाहि जानि**—नहीं जानते; **करण-कारण**—शादी-व्याह का अनुष्ठान; **धरण-धारण**—हावभाव; **नाहि......गो**—शासन का निषेध (हम)

नाहि मानि शासन-वारण गो—
आमरा आपन रोखे मनेर झोँके छिँड़ेछि शिकल ।।

लक्ष्मी, तोमार वाहनगुलि धने पुत्रे उठुन फुलि,
लुठुन तोमार चरणधूलि गो—
आमरा स्कन्धे लये काँथा झुलि फिरब धरातल ।
तोमार बन्दरेते बाँधा घाटे बोझाइ-करा सोनार पाटे
अनेक रत्न अनेक हाटे गो—
आमरा नोङर-छेँड़ा भाङा तरी भेसेछि केवल ।।

आमरा एबार खुँजे देखि अकूलेते कूल मेले कि,
द्वीप आछे कि भवसागरे ।
यदि सुख ना जोटे देखब डुबे कोथाय रसातल ।
आमरा जुटे सारा वेला करब हतभागार मेला,
गाब गान खेलब खेला गो—
कण्ठे यदि गान ना आसे करब कोलाहल ।।

१८९६

नहीं मानने; **आमरा......शिकल**—हमलोगों ने अपनी झोंक में, मन की मौज में शृङ्खल को तोड़ दिया है; **तोमार......फुलि**—तुम्हारे वाहन सभी धन-पुत्र से फूलें-फलें; **लुठुन......गो**—(वे) तुम्हारी चरण धूलि लूटें; **आमरा......धरातल**—हम लोग कन्धे पर कन्था (गुदड़ी) और झोली ले कर पृथ्वीतल पर विचरेंगे; **तोमार.......घाटे**—तुम्हारे बन्दरगाह के बँधे घाट पर; **बोझाइ-करा**—लदा हुआ; **सोनार पाटे**—सोने का पाट; **हाटे**—हाट में, बाजार में; **आमरा..... केवल**—हमलोगों ने केवल टूटे हुए लंगर वाली नौका को ही बहाया है; **आमरा..... सागरे**—इस बार हमलोग खोज कर देखें, अकूल में कूल मिलता है क्या, भवसागर में द्वीप है क्या; **यदि.....रसातल**—अगर (भाग्य में) सुख न जुटे (तो) डूब कर देखेंगे, रसातल कहाँ है; **आमरा......गो**—अजी, हमलोग सब समय जुड़ कर अभागों की भीड़ करेंगे, गान गाएँगे, खेल खेलेंगे; **कण्ठे......कोलाहल**—अगर गले में गान नहीं आएगा तो शोर मचाएँगे ।

३

ओगो, तोमरा सबाइ भालो—
यार अदृष्टे येमनि जुटेछे सेइ आमादेर भालो।
आमादेर एइ आँधार घरे सन्ध्याप्रदीप ज्वालो।।
केउ वा अति ज्वलो-ज्वलो, केउ वा म्लान छलो-छलो,
केउ वा किछु दहन करे, केउ वा स्निग्ध आलो।।

नूतन प्रेमे नूतन वधू आगागोड़ा केवल मधु,
पुरातने अम्ल-मधुर एकटुकु झाँझालो।
वाक्य यखन बिदाय करे चक्षु एसे पाये धरे,
रागेर सङ्गे अनुरागे समान भागे ढालो।।

आमरा तृष्णा, तोमरा सुधा— तोमरा तृप्ति, आमरा क्षुधा—
तोमार कथा बलते कविर कथा फुरालो।
ये मूर्ति नयने जागे सबइ आमार भालो लागे—
केउ वा दिव्यि गौरबरन, केउ वा दिव्यि कालो।।

१८९६

३. **ओगो.....भालो**—अजी, तुम सभी अच्छी हो; **यार.....भालो**—जिसके भाग्य में जैसी जुट गई, वही हम लोगों के लिये अच्छी है; **आमादेर......ज्वाले**—हम लोगों के इस अँधेरे गृह में सन्ध्या-बाती जलाती हो; **केउ......ज्वलो**—कोई अत्यन्त (प्रखरता से) जल रही है; **छलो छलो**—छल-छल; **किछु**—कुछ; **दहन करे**—दग्ध करती है; **आलो**—आलोक; **प्रेमे**—प्रेम में; **आगागोड़ा**—सिर से पैर तक; **एकटुकु**—तनिक; **झाँझालो**—तीव्र, उग्र; **वाक्य......धरे**—वचन जब बिदा करते हैं, आँखें आ कर पैर पकड़ लेती हैं; **रागेर......ढाला**—राग (क्रोध) के साथ अनुराग समान अनुपात में ढालती हो; **आमरा**—हमलोग; **तोमरा**—तुमलोग; **तोमार......फुरालो**—तुम्हारी बातें कहते कवि की वाक्-चातुरी समाप्त हो गई; **ये......जागे**—आँखों में जो मूर्ति उदित होती है; **सबइ......लागे**—सभी मुझे भाती हैं; **केउ......कालो**—कोई तो खासी गौर वर्ण हैं, कोई खासी काले रंग की।

४

मधुर मधुर ध्वनि बाजे
हृदयकमलवन-माझे ।।
निभृतवासिनी वीणापाणि अमृतमुरतिमती वाणी
हिरणकिरण छविखानि— परानेर कोथा से विराजे ।।
मधुऋतु जागे दिवानिशि पिककुहरित दिशि दिशि।
मानसमधुप पदतले मुरछि पड़िछे परिमले।
एसो देवी, एसो ए आलोके, एकबार तोरे हेरि चोखे—
गोपने थेको ना मनोलोके छायामय मायामय साजे ।।

१८९६

५

शुधु याओया आसा, शुधु स्रोते भासा,
शुधु आलो-आँधारे काँदा-हासा ।।
शुधु देखा पाओया, शुधु छुँये याओया,
शुधु दूरे येते येते केँदे चाओया,
शुधु नव दुराशाय आगे च'ले याय—
पिछे फेले याय मिछे आशा ।।

४. **मुरति**—मूर्ति; **हिरण**—सोना; **छविखानि**—चित्र; **परानेर...... विराजे**—प्राणों में कहाँ विराजमान है; **मुरछि पड़िछे**—मूर्च्छित हो जाता है; **एसो**—आओ; **एकबार......चोखे**—एकबार तुझे आँखों से देखूँ; **गोपने.....ना**—छिपी हुई न रहो।

५. **शुधु......भासा**—केवल जाना आना, केवल स्रोत में बहना; **शुधु...... हासा**—केवल प्रकाश और छाया में रोना-हँसना; **देखा पाओया**—दर्शन पाना; **छुँये याओया**—छू जाना, स्पर्श करना; **शुधु......चाओया**—केवल दूर जाते-जाते रोते हुए ताकना (दृष्टिपात करना); **शुधु......आशा**—केवल नई दुराशा में आगे चला जाता है और मिथ्या आशा को पीछे छोड़ जाता है;

अशेष वासना लये भाङा बल,
प्राणपण काजे पाय भाङा फल,
भाङा तरी ध'रे भासे पारावारे,
भाव केँदे मरे— भाङा भाषा।
हृदये हृदये आधो परिचय,
आधखानि कथा साङ्ग नाहि हय,
लाजे भये त्रासे आधो-विश्वासे
शुधु आधखानि भालोबासा ।।

१८९६

६

मोरा सत्येर 'परे मन आजि करिब समर्पण,
जय जय सत्येर जय।
मोरा बुझिब सत्य, पूजिब सत्य, खुँजिब सत्यधन।
जय जय सत्येर जय ।।
यदि दुःखे दहिते हय तबु मिथ्याचिन्ता नय।
यदि दैन्य वहिते हय तबु मिथ्याकर्म नय।
यदि दण्ड सहिते हय तबु मिथ्यावाक्य नय।
जय जय सत्येर जय ।।

लये—ले कर; **भाङा**—टूटा हुआ; **पाय**—पाता है; **भाङा......पारावारे**—टूटी नौका को पकड़ कर समुद्र में बहता है; **भाव......मरे**—भाव क्रन्दन करते मरते हैं; **आधो**—आधा; **आधखानि......हय**—आधी-सी बात समाप्त नहीं होती; **भालोबासा**—प्यार।

६. **मोरा.....समर्पण**—हमलोग सत्य पर आज मन समर्पण करेंगे; **सत्येर जय**—सत्य की जय; **यदि......नय**—यदि दुःख से जलना पड़े तो भी व्यर्थ की चिन्ता नहीं होगी; **वहिते हय**—वहन करना पड़े, ढोना पड़े; **सहिते हय**—सहना पड़े।

मोरा मङ्गलकाजे प्राण, आजि करिब सकले दान।
जय जय मङ्गलमय।
मोरा लभिब पुण्य, शोभिब पुण्ये, गाहिब पुण्यगान।
जय जय मङ्गलमय।
यदि दुःखे दहिते हय तबु अशुभचिन्ता नय।
यदि दैन्य वहिते हय तबु अशुभकर्म नय।
यदि दण्ड सहिते हय तबु अशुभवाक्य नय।
जय जय मङ्गलमय॥

सेइ अभय ब्रह्मनाम आजि मोरा सबे लइलाम—
यिनि सकल भयेर भय।
मोरा करिब ना शोक या हबार होक, चलिब ब्रह्मधाम।
जय जय ब्रह्मेर जय।
यदि दुःखे दहिते हय तबु नाहि भय, नाहि भय।
यदि दैन्य वहिते हय तबु नाहि भय, नाहि भय।
यदि मृत्यु निकट हय तबु नाहि भय, नाहि भय।
जय जय ब्रह्मेर जय॥

मोरा आनन्द-माझे मन आजि करिब विसर्जन।
जय जय आनन्दमय।
सकल दृश्ये सकल विश्वे आनन्दनिकेतन। जय जय आनन्दमय,
आनन्द चित्त-माझे आनन्द सर्वकाजे,
आनन्द सर्वकाले, दुःखे विपदजाले,
आनन्द सर्वलोके मृत्युविरहे शोके— जय जय आनन्दमय॥
१९०३

लभिब—प्राप्त करेंगे; **शोभिब पुण्ये**—पुण्य में शोभा पाएँगे; **गाहिब**—गाएँगे; **दहिते हय**—दग्ध होना पड़े; **तबु**—तौ भी।

सेइ—वही; **आजि.....लइलाम**—आज हम सभी ने लिया; **यिनि......भय**—जो सभी भयों के भय हैं; **मोरा......धाम**—हम लोग शोक नहीं करेंगे, जो होना हो, हो, (हम लोग) ब्रह्मधाम चलेंगे।

७

आमार नाइ वा ह्ल पारे याओया ।
ये ह्लाओयाते चलत तरी अङ्गेते सेइ लागाइ ह्लाओया ।।
नेइ यदि वा जमल पाड़ि घाट आछे तो, वसते पारि ।
आमार आशार तरी डुबल यदि देखब तोदेर तरी-बाओया ।।
ह्लातेर काछे कोलेर काछे या आछे सेइ अनेक आछे ।
आमार सारा दिनेर एइ कि रे काज— ओपार-पाने केँदे चाओया ।।
कम किछु मोर थाके हेथा पुरिये नेब प्राण दिये ता ।
आमार सेइखानेतेइ कल्पलता येखाने मोर दाबि-दाओया ।।
१९०६

८

ग्रामछाड़ा ओइ राङा माटिर पथ आमार मन भुलाय रे ।
ओरे कार पाने मन ह्लात बाड़िये लुटिये याय धुलाय रे ।।
ओ ये आमाय घरेर बाहिर करे, पाये-पाये पाये धरे—
ओ ये केड़े आमाय निये याय रे याय रे कोन् चलाय रे ।।

७. **आमार......याओया**—भले ही मेरा पार जाना नहीं हुआ; **ये...... ह्लाओया**—जिस हवा से नाव चलती, शरीर में वही हवा लगाता हूँ; **नेइ...... पारि**—यदि दूसरे पार नहीं पहुँच सका तो घाट तो है, बैठ तो सकता हूँ; **आमार ......बाओया**—मेरी आशा की तरी यदि डूबी तो तुमलोगों का नाव तिराना (चलाना) तो देखूंगा; **ह्लातेर......आछे**—हाथ के निकट, गोद में जो है, वही बहुत है; **आमार......चाओया**—समस्त दिन क्या मेरा यही काम है, उसपार की ओर क्रन्दन करते ताकना; **कम......ता**—यहाँ मेरा (यदि) कुछ कम (अपूर्ण) रहे (तो) उसे (मैं) प्राणों से पूरा कर लूँगा; **आमार......दाओया**—जहाँ मेरा अभाव-अभियोग है, दावा है, वहीं मेरी कल्पलता है ।

८. **ग्राम......भुलाय रे**—ग्राम से हो कर जाने वाला वह लाल मिट्टी का पथ मेरे मन को मुग्ध करता है; **कार......रे**—किसकी ओर हाथ बढ़ा कर मन धूलि में लोट जाता है; **ओ ये......धरे**—वह पग-पग पर पैरों को पकड़ कर मुझे घर से बाहर जो करता (ले जाता) है; **ओ ये......चुलाय रे**—वह मुझे काढ़

ओ ये   कोन् बाँके की धन देखाबे,   कोन्खाने की दाय ठेकाबे—
कोथाय गिये शेष मेले ये   भेबेइ ना कुलाय रे ।।

१९०८

९

मम चित्ते निति नृत्ये के ये नाचे
ताता थैथै ताता थैथै ताता थैथै ।।
तारि सङ्गे की मृदङ्गे सदा बाजे
ताता थैथै ताता थैथै ताता थैथै ।।
हासिकान्ना हीरापान्ना दोले भाले,
काँपे छन्दे भालो मन्द ताले ताले ।।
नाचे जन्म, नाचे मृत्यु पाछे पाछे
ताता थैथै ताता थैथै ताता थैथै ।।
की आनन्द, की आनन्द, की आनन्द—
दिवारात्रि नाचे मुक्ति, नाचे बन्ध—
से तरङ्गे छुटि रङ्गे पाछे पाछे
ताता थैथै ताता थैथै ताता थैथै ।।

१९१०

(निकाल) कर लिए जा रहा है, (न-जाने) किस चुल्हे में (लिए) जा रहा है (विनाश की ओर लिए जा रहा है); **कोन्......देखाबे**—किस मोड़ पर कौन-सा धन दिखाएगा; **कोन्खान......ठेकाबे**—किस जगह किस संकट में डाल देगा; **कोथाय......रे**—कहाँ जा कर अन्त मिलेगा (यह) सोचे नहीं सोचा जाता।

९. **मम......नाचे**—मेरे चित्त में नित्य कौन नाचता रहता है; **तारि...... बाजे**—उसीके साथ किस मृदङ्ग में सर्वदा बजता है; **हासिकान्ना**—हँसी और क्रन्दन; **हीरापान्ना**—हीरा और पन्ना; **दोले**—झूलते हैं; **भाले**—ललाट पर; **भालो मन्द**—अच्छा, बुरा; **की**—कैसा, **बन्ध**—बन्धन; **पाछे पाछे**—पीछे-पीछे; **से तरङ्गे**—उस तरङ्ग में; **छुटि रङ्गे**—लीलायित हाव-भाव में दौड़ता हूँ।

१०

आमरा चाष करि आनन्दे ।
माठे माठे वेला काटे सकाल हते सन्धे ।।
रौद्र ओठे, वृष्टि पड़े, बाँशेर वने पाता नड़े,
वातास ओठे भरे भरे चषा माटिर गन्धे ।।
सबुज प्राणेर गानेर लेखा रेखाय रेखाय देय रे देखा,
माते रे कोन् तरुण कवि नृत्यदोदुल छन्दे ।
धानेर शिषे पुलक छोटे— सकल धरा हेसे ओठे
अघ्रानेरइ सोनार रोदे, पूर्णिमारइ चन्द्रे ।।

१९११

११

सव काजे हात लागाइ मोरा सब काजेइ ।
वाधा-बाँधन नेइ गो नेइ ।।
देखि खुँजि बुझि, केवल भाङि गड़ि युझि,
मोरा सब देशेतेइ बेड़ाइ घुरे सब साजेइ ।।

१०. **आमरा......आनन्दे**—हमलोग आनन्द में (मग्न) खेती करते हैं; **माठे......सन्धे**—सबेरे से शाम तक (हमलोगों का) समय खेत में बीतता है; **रौद्र......नड़े**—धूप निकलती है, वर्षा होती है, बाँस के वन में पत्तियाँ हिलती हैं; **वातास......गन्धे**—जोती हुई मिट्टी के गन्ध से हवा भर-भर उठती है; **सबुज......देखा**—सब्ज़ (हरे) प्राणों के गान की लिपि रेखाओं-रेखाओं में दिखलाई देती है; **माते......छन्दे**—नृत्य से झूम उठने वाले छन्द में कौन-सा युवक कवि मत्त हो उठता है; **धानेर......ओठे**—धान के शीर्ष (बालियों के अग्र भाग) में पुलक दौड़ रहा है, समस्त पृथ्वी हँस उठती है; **अघ्रानेरइ......चन्द्रे**—अगहन (मार्ग-शीर्ष) की ही सुनहली धूप में, पूर्णिमा के ही चाँद में।

११. **सब......काजेइ**—सब कामों में हमलोग हाथ लगाते हैं, सभी कामों में; **वाधा......नेइ**—(हमलोगों के लिये) बाधा-बंधन नहीं हैं; **देखि...... युझि**—(हमलोग) देखते हैं, खोजते हैं, समझते हैं, सदा तोड़ते हैं, गढ़ते हैं, जूझते रहते हैं; **मोरा......साजेइ**—हमलोग सभी देशों में, सभी वेशों में

पारि नाइवा पारि, नाहय जिति किम्वा हारि—
यदि अमनिते हाल छाड़ि मरि सेइ लाजेइ।
आपन हातेर जोरे आमरा तुलि सृजन क'रे,
आमरा प्राण दिये घर बाँधि, थाकि तार माझेइ।।

१९११

१२

आलो आमार, आलो ओगो, आलो भुवन-भरा,
आलो नयन-धोओया आमार, आलो हृदय-हरा।।
नाचे आलो नाचे ओ भाइ, आमार प्राणेर काछे,
बाजे आलो बाजे ओ भाइ, हृदयवीणार माझे—
जागे आकाश, छोटे वातास, हासे सकल धरा।।
आलोर स्रोते पाल तुलेछे हाजार प्रजापति।
आलोर ढेउये उठल नेचे मल्लिका मालती।
मेघे मेघे सोना ओ भाइ, याय ना मानिक गोना;
पाताय पाताय हासि ओ भाइ, पुलक राशि राशि—
सुरनदीर कूल डुबेछे सुधा-निझर-झरा।।

१९११

घूमते फिरते हैं; **पारि.....हारि**—कर सकें अथवा न कर सकें, भले ही जीतें अथवा हारें; **यदि......लाजेइ**—अगर वैसे ही पतवार छोड़ दें (हार मान लें) तो उसी लज्जा से मरते हैं; **आपन......क'रे**—अपने हाथों के बल हमलोग सृष्टि कर डालते हैं; **आमरा.......माझेइ**—हमलोग प्राणों के द्वारा गृह का निर्माण करते हैं और उसीके भीतर रहते हैं।

१२. **आलो**—आलोक; **आमार**—मेरा; **भुवन-भरा**—जगत् में भरा; **नयन-धोओया**—आँखों को धोने वाला; **हृदय-हरा**—हृदय हरण करने वाला; **प्राणेर काछे**—प्राणों के निकट; **छोटे वातास**—हवा दौड़ती है; **हासे**—हँसती है; **मेघे.....सोना**—हर मेघ में सोना है; **याय......गोना**—माणिक्य गिने नहीं जाते; **पाताय.......हासि**—पत्ते-पत्ते में हँसी (है); **डूबेछे**—डूब गया है; **सुधा......झरा**—अमृत का निर्झर झराने वाली।

१३

कमलवनेर मधुपराजि   एसो हे कमलभवने ।
की सुधागन्ध एसेछे आजि   नववसन्तपवने ।।
अमल चरण घेरिया पुलके शत शतदल फुटिल;
बारता ताहारि द्युलोके भूलोके छुटिल भुवने भुवने ।।
ग्रहे तारकाय किरणे किरणे बाजिया उठेछे रागिणी;
गीतगुञ्जन कूजनकाकलि आकुलि उठिछे श्रवणे ।
सागर गाहिछे कल्लोल गाथा, वायु बाजाइछे शङ्ख;
सामगान उठे वनपल्लवे, मङ्गलगीत जीवने ।।

१९१३

१४

आमि चञ्चल हे,
आमि सुदूरेर पियासि ।
दिन चले याय, आमि आनमने   तारि आशा चेये थाकि वातायने—
ओगो, प्राणे मने आमि ये ताहार परश पाबार प्रयासी ।।
ओगो सुदूर,   विपुल सुदूर, तुमि ये बाजाओ व्याकुल बाँशरि ।
मोर डाना नाइ,   आछि एक ठाँइ   से कथा ये याइ पाशरि ।।
आमि उन्मना हे,
हे सुदूर आमि उदासी ।

---

१३. **एसो**—आओ; **की**—कैसा; **एसेछे**—आया है; **आजि**—आज; **घेरिया**—घेर कर; **फुटिल**—प्रस्फुटित हुए; **बारता ताहारि**—उसी का समाचार; **छुटिल**—दौड़ा, फैल गया; **तारकाय**—तारिकाओं में; **बाजिया उठेछे**—बज उठी है; **गाहिछे**—गा रहा है; **बाजाइछे**—बजा रही है।

१४. **आमि**—मैं; **सुदूरेर पियासि**—सुदूर का पिपासु; **दिन......वातायने**—दिन बीत जाता है, मैं अनमना उसीकी आशा में टकटकी लगाए वातायन से ताकता रहता हूँ; **प्राणे......प्रयासी**—प्राण-मन में मैं उसका स्पर्श पाने का प्रयासी हूँ; **तुमि......बाँशरि**—तुम व्याकुल (करने वाली) बाँसुरी जो बजाते हो; **मोर......पाशरि**—मेरे डैने नहीं हैं, मैं एक जगह हूँ, यह बात भूल जो जाता

रौद्र-माखानो अलस वेलाय तरुमर्मरे छायार खेलाय
की मुरति तव नील आकाशे नयने उठे गो आभासि।
हे सुदूर, आमि उदासी।
ओगो सुदूर, विपुल सुदूर, तुमि ये बाजाओ व्याकुल बाँशरि।
कक्षे आमार रुद्ध दुयार, से कथा ये याइ पाशरि॥

१५

ना गो, एइ-ये धुला आमार ना ए।
तोमार धुलार धरार परे उड़िये याब सन्ध्याबाये॥
दिये माटि आगुन ज्वालि रचले देह पूजार थालि—
शेष आरति सारा क'रे भेङे याब तोमार पाये॥
फुल या छिल पूजार तरे
येते पथे डालि हते अनेक ये तार गेछे पड़े।
कत प्रदीप एइ थालाते साजियेछिले आपन हाते—
कत ये निबल हाओयाय, पौँछल ना चरणछाये॥

१९१४

हूँ; **रौद्र......आभासि**—धूप से सनी अलस वेला में, वृक्षों के मर्मर में, छाया के खेल में, नील आकाश में तुम्हारी कैसी मूर्ति (मेरी) आँखों में झलक जाती है; **कक्षे......पाशरि**—मेरे कक्ष का द्वार रुद्ध है, यह बात भूल जो जाता हूँ।

१५. **एइ......ए**—यह जो धूलि है, यह मेरी नहीं; **तोमार......बाये**—सन्धा की हवा में तुम्हारी धूल की धरती पर (इसे) उड़ा जाऊँगा; **दिये......थालि**—अग्नि जला, मिट्टी द्वारा देहरूपी पूजा की थाली (तुमने) रची; **शेष......पाये**—अन्तिम आरती समाप्त कर (इसे) तुम्हारे पैरों में तोड़ जाऊँगा; **फुल......तरे**—पूजा के लिये जो फूल थे; **येते......पड़े**—राह चलते डलिया से उसके बहुत-से फूल गिर चुके हैं; **कत......हाते**—अपने हाथों इस थाल में न जाने कितने दीप (तुमने) सजाए थे; **कत......छाये**—न जाने कितने (दीप) हव से बुझ गए, (तुम्हारे) चरणों की छाया तक नहीं पहुँचे।

१६

आमादेर भय काहारे।
बुड़ो बुड़ो चोर डाकाते की आमादेर करते पारे॥
आमादेर रास्ता सोजा, नाइको गलि— नाइको झुलि, नाइको थलि—
ओरा आर या काड़े काड़ुक, मोदेर पागलामि केउ काड़वे ना रे॥
आमरा चाइ ने आराम, चाइ ने विराम,
चाइ ने ये फल, चाइ ने रे नाम—
मोरा ओठाय पड़ाय समान नाचि,
समान खेलि जिते हारे॥

१९१५

१७

आमादेर पाकबे ना चुल गो— मोदेर पाकबे ना चुल।
आमादेर झरबे ना फुल गो— मोदेर झरबे ना फुल॥
आमरा ठेकब ना तो कोनो शेषे, फुरोय ना पथ कोनो देशे रे,
आमादेर घुचबे ना भुल गो— मोदेर घुचबे ना भुल॥

१६. **आमादेर......काहारे**—हमलोगों को किसका भय है; **बुड़ो...... पारे**—बूढ़े-बूढ़े चोर-डकैत हमलोगों का क्या कर सकते हैं; **आमादेर......थलि**— हमलोगों का रास्ता सीधा है, गली नहीं है, (हमलोगों के पास) न झोला है, न थैली; **ओरा......रे**—वे और जो काढ़ें (निकालें) काढ़ लें, (लेकिन) हमलोगों का पागलपन कोई नहीं काढ़ सकता; **आमरा......नाम**—हमलोग आराम नहीं चाहते, विराम (रुकना) नहीं चाहते, फल नहीं चाहते, नाम नहीं चाहते; **मोरा......हारे**—हमलोग चढ़ने-गिरने (उत्थान-पतन) में समान रूप से नाचते हैं, हार-जीत में समान (भाव से) खेलते हैं।

१७. **आमादेर......चुल**—हमलोगों के केश नहीं पकेंगे; **मोदेर**—हमलोगों के; **आमादेर......फुल**—हमलोगों के फूल नहीं झरेंगे; **आमरा......शेषे**— किसी भी अन्त पर हमलोग नहीं रुकेंगे; **फुरोय......रे**—किसी भी देश में (हमलोगों का) पथ समाप्त नहीं होता; **आमादेर......भुल**—हमलोगों की भूल दूर

आमरा नयन मुदे करब ना ध्यान   करब ना ध्यान।
निजेर   मनेर कोणे खुँजब ना ज्ञान   खुँजब ना ज्ञान।
आमरा   भेसे चलि स्रोते स्रोते   सागर-पाने शिखर हते रे,
आमादेर   मिलबे ना कूल गो—— मोदेर मिलबे ना कूल ।।

१९१५

१८

ओगो नदी,   आपन वेगे पागल-पारा,
आमि   स्तब्ध चाँपार तरु   गन्धभरे तन्द्राहारा ।।
आमि सदा अचल थाकि,   गभीर चला गोपन राखि,
आमार चला नवीन पाताय, आमार चला फुलेर धारा ।।
ओगो नदी,   चलार वेगे पागल-पारा,
पथे पथे बाहिर हये आपन-हारा——
आमार चला याय ना बला——   आलोर पाने प्राणेर चला——
आकाश बोझे आनन्द तार,   बोझे निशार नीरव तारा ।।

१९१५

नहीं होगी; **मुदे**—मूँद कर; **करब ना**—नहीं करेंगे; **कोणे**—कोने में; **खुँजब ना**—नहीं खोजेंगे; **आमरा....हते**—शिखर से सागर की ओर हमलोग हर प्रवाह में बह चलते हैं; **आमादेर......कूल**—हमलोगों को किनारा नहीं मिलेगा।

१८. **ओगो**—ओ; **आपन......पारा**—अपने वेग से पागल जैसी (बनी हुई); **चाँपार**—चम्पे का; **थाकि**—रहता हूँ; **गभीर......राखि**—(अपना) गभीर चलना (मैं) गोपन रखता हूँ; **आमार.....धारा**—मेरा चलना नवीन पत्तियों में है, फूलों की धारा मेरा चलना है; **बाहिर हये**—बाहर हो कर; **आपन-हारा**—आत्म-विस्मृत; **आमार......बला**—मेरा चलना कहा नहीं जा सकता; **आलोर......चला**—(यह) प्रकाश की ओर प्राणों का चलना है; **आकाश......तारा**—आकाश उसका आनन्द समझता है, रात्रि का नीरव तारा समझता है।

१९

मोदेर येमन खेला तेमनि ये काज जानिस ने कि, भाइ।
ताइ काजके कभु आमरा ना डराइ।।
खेला मोदेर लड़ाइ करा, खेला मोदेर बाँचा मरा,
खेला छाड़ा किछुइ कोथाओ नाइ।।
खेलते खेलते फुटेछे फुल, खेलते खेलते फल ये फले,
खेलारइ ढेउ जले स्थले।
भयेर भीषण रक्तरागे खेलार आगुन यखन लागे
भाङाचोरा ज्वले ये हय छाइ।।

१९१५

२०

आमारे बाँधबि तोरा सेइ बाँधन कि तोदेर आछे।
आमि ये बन्दी हते सन्धि करि सबार काछे।।
सन्ध्या-आकाश बिना डोरे बाँधल मोरे गो;
निशिदिन बन्धहारा नदीर धारा आमाय याचे।।
ये कुसुम आपनि फोटे, आपनि झरे, रय ना घरे गो—
तारा ये सङ्गी आमार, बन्धु आमार, चाय ना पाछे।।

---

१९. **मोदेर......भाइ**—भाई, क्या नहीं जानते, हमलोगों का जैसा खेल है, वैसा ही काम-काज है; **ताइ....डराइ**—इसीलिये हमलोग काम से कभी नहीं डरते; **खेला......मरा**—लड़ाई करना हमलोगों का खेल है, बचना-मरना हमलोगों का खेल है; **खेला......नाइ**—खेल छोड़कर कहीं भी कुछ भी नहीं है; **खेलते..... फुल**—खेलते-खेलते फूल खिले हैं; **फल ये फले**—फल जो फलते हैं; **खेलारइ..... स्थले**—जल में, स्थल में खेल की ही लहर है; **खेलार......लाग**—खेल की आग जब लगती है; **भाङाचोरा......छाइ**—टूटाफूटा जल कर राख हो जाता है।

२०. **आमारे......आछे**—तुमलोग मुझे बाँधोगे, वह बन्धन क्या तुमलोगों के पास है; **आमि......काछे**—मैं तो सबके निकट बन्दी होने की सन्धि जो करता हूँ; **डोरे**—डोरी; **बाँधल**—बाँधा; **मोरे**—मुझे; **बन्धहारा.....याचे**—बन्धनहीन नदी की धारा मेरी याचना करती है; **ये......घरे**—जो फूल अपने-आप खिलते हैं, अपने-आप झरते हैं, घर में नहीं रहते; **तारा......पाछे**—वे मेरे संगी हैं,

आमारे धरबि ब'ले मिथ्ये साधा।
आमि ये निजेर काछे निजेर गानेर सुरे बाँधा।
आपनि याहार प्राण दुलिल, मन भुलिल गो—
से मानुष आगुन-भरा, पड़ले धरा से कि बाँचे।
से ये भाइ, हाओयार सखा, ढेउयेर साथि, दिवाराति गो
केवलि एड़िये चलार छन्दे ताहार रक्त नाचे।।
१९१८

२१

आकाश हते आकाशपथे हाजार स्रोते
झरछे जगत् झरनाधारार मतो।।
आमार शरीर मनेर अधीर धारा साथे साथे बइछे अविरत।।
दुइ प्रवाहेर घाते घाते उठतेछे गान दिने राते
सेइ गाने गाने आमार प्राणे ढेउ लेगेछे कत।
आमार तटे चूर्ण से गान छड़ाय शत शत।
ओइ आकाश-डोबा धारार दोलाय दुलि अविरत।।
एइ नृत्य-पागल व्याकुलता विश्वपराने
नित्य आमाय जागिये राखे, शान्ति ना माने।

मेरे बन्धु हैं, (वे) पीछे (की ओर) नहीं देखते; **आमारे......साधा**—मुझे बाँधोगे, यह मिथ्या प्रयास है; **आमि......बाँधा**—मैं तो अपने निकट अपने ही गान के सुर में बँधा हूँ; **आपनि......बाँचे**—अपने-आप जिसके प्राण झूम उठे, मन मुग्ध हुआ, वह मनुष्य आग से भरा है, वह बँधने पर क्या बच सकता है; **से...... साथि**—वह तो भाई, हवा का सखा, लहरों का साथी है; **केवलि......नाचे**—केवल बच कर चलने के छन्द में ही उसका रक्त नाचता है।

२१. **हते**—से; **हाजार**—हज़ार; **झरछे**—झर रहा है; **मतो**—सदृश; **आमार**—मेरे; **साथे......अविरत**—साथ-साथ अविराम बह रही है; **दुइ**—दोनों; **गाने......कत**—गान-गान में मेरे प्राणों में कितनी लहरें उठी हैं; **आमार तटे**—मेरे तट पर; **सेइ**—वह; **छड़ाय**—बिखरता है; **ओइ**—उसी; **आकाश-डोबा**—आकाश को डुबाने वाली; **धारार दोलाय**—वृष्टि के झूले पर; **दुलि**—झूलता हूँ; **पराने**—प्राणों में; **नित्य......राखे**—नित्य मुझे जगाए रखती है;

चिरदिनेर कान्नाहासि उठछे भेसे राशि राशि--
ए-सब देखतेछे कोन् निद्राहारा नयन अवनत।
ओगो, सेइ नयने नयन आमार होक-ना निमेषहत--
ओइ आकाश-भरा देखार साथे देखब अविरत।।
१९१८

२२

एइ तो भालो लेगेछिल आलोर नाचन पाताय पाताय।
शालेर वने क्यापा हाओया, एइ तो आमार मनके माताय।
राङा माटिर रास्ता बेये हाटेर पथिक चले धेये,
छोटो मेये धुलाय बसे खेलार डालि एकला साजाय--
सामने चेये एइ या देखि चोखे आमार वीणा बाजाय।।

आमार ए ये बाँशेर बाँशि, माठेर सुरे आमार साधन।
आमार मनके बेँधेछे रे एइ धरणीर माटिर बाँधन।
नील आकाशेर आलोर धारा पान करेछे नतुन यारा

कान्नाहासि—क्रन्दन और हँसी; **उठछे भेसे**—तिरती फिरती हैं; **ए-सब**—यह सब; **देखतेछे......अवनत**—कौन निद्राविहीन झुकी आँखें देख रही हैं; **ओगो......हत**—अजी, उन आँखों में मेरी आँखें निष्पलक हो जायें ना; **आकाश-भरा**—आकाश को भरने वाले; **देखार साथे**—देखने (दर्शन) के साथ; **देखब**—देखूँगा।

२२. **एइ......पाताय**—पत्तियों-पत्तियों पर प्रकाश का नर्तन, यही तो अच्छा लगा था; **शालेर.....माताय**—शाल के वन में पगली हवा, यही तो मेरे मन को मत्त कर देती है; **राङा......धेये**—लाल मिट्टीवाले रास्ते से हो कर हाट जाने वाले पथिक दौड़े जाते हैं; **छोटो......साजाय**—छोटी बच्ची धूल में अकेली बैठी खेल की डाली सजा रही है; **सामने......बाजाय**—सामने की ओर ताक कर यह जो कुछ भी देखता हूँ (वही) मेरी आँखों में वीणा बजाता है।

आमार.....बाँशि—मेरी तो यह बाँस की बाँसुरी (है); **माठेर......साधन**—खेतों के सुर में मेरी (स्वर-) साधना है; **आमार......बाँधन**—इसी धरती की मिट्टी के बंधन ने मेरे मन को बाँध रखा है; **नील......यारा**—नील आकाश के

सेइ छेलेदेर चोखेर चाओया   नियेछि मोर दु चोख पूरे—
आमार वीणाय सुर बेँधेछि ओदेर कचि गलार सुरे ।।

दूरे याबार खेयाल हले सबाइ मोरे घिरे थामाय—
गाँयेर आकाश सजने फुलेर हातछानिते डाके आमाय ।
फुराय नि भाइ, काछेर सुधा,   नाइ ये रे ताइ दूरेर क्षुधा—
एइ-ये ए-सब छोटोखाटो   पाइ नि एदेर कूलकिनारा ।
तुच्छ दिनेर गानेर पाला आजो आमार हय नि सारा ।।

लागल भालो, मन भोलालो, एइ कथाटाइ गेये बेड़ाइ
दिने राते समय कोथा, काजेर कथा ताइ तो एड़ाइ ।
मजेछे मन, मजल आँखि— मिथ्ये आमाय डाकाडाकि—
ओदेर आछे अनेक आशा, ओरा करुक अनेक जड़ो ।
आमि केवल गेये बेड़ाइ, चाइ ने हते आरो बड़ो ।।

१९१८

प्रकाश की वर्षा का अभी-अभी जिन्होंने पान किया है; **सेइ......पूरे**—उन्हीं बच्चों की आँखों की चितवन से (मैंने) अपनी दोनों आँखें परिपूर्ण कर ली हैं; **आमार......सुरे**—उन्हीं (बच्चों) के कच्चे गले के सुर में अपनी वीणा के सुर को बाँधा है।

दूरे......थामाय—दूर जाने की धुन समाने पर सभी मुझे घेर कर रोकते हैं; **गाँये.....आमाय**—गाँव का आसमान सहिजन के फूल (रूपी) हाथ के इशारों से मुझे बुलाता है; **फुराय......क्षुधा**—भाई, निकट की सुधा समाप्त नहीं हुई, इसीलिये दूर की भूख नहीं है; **एइ......किनारा**—ये जो, यही सब छोटी-मोटी (वस्तुएँ) हैं, उनका कूल-किनारा नहीं पाया; **तुच्छ......सारा**—तुच्छ दिनों के गान का प्रकरण मेरा आज भी पूरा नहीं हुआ।

लागल......बेड़ाइ—भला लगा, मन मुग्ध हुआ, यही बात तो गाता फिरता हूँ; **दिने......एड़ाइ**—दिन-रात में समय कहाँ, इसीलिये तो काम की बात से बचता फिरता हूँ; **मजेछे......डाकाडाकि**—मन मगन हुआ, आँखें मगन हुईं, मुझे पुकारना व्यर्थ ही है; **ओदेर......बड़ो**—उनलोगों को बहुत-सी आशाएँ हैं, वे बहुत कुछ जोड़ा करें, मैं तो केवल गाता फिरता हूँ, और बड़ा नहीं होना चाहता।

२३

एमनि क'रेइ याय यदि दिन याक-ना।
मन उड़ेछे उड़ूक-ना रे मेले दिये गानेर पाख्ना ।।
आजके आमार प्राण-फोयारार सुर छुटेछे,
देहेर बाँध टुटेछे;
माथार परे खुले गेछे आकाशेर ओइ सुनील ढाक्ना ।।
धरणी आज मेलेछे तार हृदयखानि,
से येन रे केवल वाणी।
कठिन माटि मनके आजि देय ना बाधा,
से कोन् सुरे साधा;
विश्व बले मनेर कथा, काज प'ड़े आज थाके थाक् ना ।।
१९१८

२४

ओरे सावधानी पथिक, बारेक पथ भुले मरो फिरे।
खोला आँखि-दुटो अन्ध करे दे आकुल आँखिर नीरे ।।

---

२३. **एमनि......ना**—यदि इसी तरह दिन बीतें तो बीतें ना; **मन...... पाख्ना**—मन (अगर) उड़ा है गान के पंखों को खोल कर, तो उड़े ना; **आजके......टुटेछे**—आज मेरे प्राणों के फ़व्वारे का सुर वेग से निकला है, देह का बाँध टूट गया है; **माथार......ढाक्ना**—सिर के ऊपर आसमान का वह सुनील ढक्कन खुल गया है; **धरणी......हृदयखानि**—धरती ने आज अपना हृदय प्रसारित कर दिया है; **से......वाणी**—वह जैसे केवल वाणीमय हो उठी है; **कठिन......बाधा**—कठिन मिट्टी आज मन को बाधा नहीं देती; **से......साधा**—वह किस सुर में सधा हुआ है; **विश्व......ना**—विश्व आज मन की बात कहता है, काम-काज आज पड़ा रहे तो पड़ा रहे ना।

२४. **सावधानी**—अत्यधिक सतर्क (ईषत् निन्दा-सूचक); **बारेक...... फिरे**—एक बार रास्ता भूल कर भटकते फिरो; **खोला......नीरे**—व्याकुल आँखों के पानी से दो खुली आँखों को अन्धी कर दे; **रे...... कुञ्ज**—उस भूले हुए पथ के किनारे हृदय का खोया हुआ कुञ्ज है;

से भोला पथेर प्रान्ते रयेछे हारानो हियार कुञ्ज,
झरे पड़े आछे काँटा-तरुतले रक्तकुसुमपुञ्ज—
सेथा दुइ वेला भाङा-गड़ा-खेला अकूल-सिन्धु-तीरे ।।
अनेक दिनेर सञ्चय तोर आगुलि आछिस बसे,
झड़ेर रातेर फुलेर मतन झरुक पड़ुक खसे ।
आय रे एबार सब-हाराबार जयमाला परो शिरे ।।

१९१८

२५

कोन् सुदूर हते आमार मनोमाझे
वाणीर धार बहे— आमार प्राणे प्राणे ।
कखन शुनि, कखन शुनि ना ये,
कखन् की ये कहे— आमार काने काने ।।
आमार घुमे आमार कोलाहले
आमार आँखि-जले ताहारि सुर,
ताहारि सुर जीवनगुहातले
गोपन गाने रहे— आमार काने काने ।।
कोन् घन गहन विजन तीरे तीरे
ताहार भाङा गड़ा— छायार तले तले ।

झरे......आछे—झर कर गिरे पड़े हैं; **सेथा......तीरे**—तटहीन समुद्र के किनारे वहाँ दोनों वेला तोड़ने-गढ़ने का खेल (चल रहा) है; **आगुलि.....बसे**—रखवाली करते (तू) बैठा हुआ है; **झड़ेर......खसे**—तूफ़ान की रात्रि के फूल के समान झर कर गिर पड़े; **आय.....शिरे**—अरे आओ, इसबार सब कुछ गँवा देने की जयमाला सिर पर धारण कर लो ।

२५. **कोन्......बहे**—किस सुदूर से मेरे मन के भीतर वाणी की धारा बहती है; **आमार......प्राणे**—मेरे समस्त प्राणों में; **कखन......ये**—कभी सुनता हूँ, कभी सुनता जो नहीं; **कखन्......काने**—कब मेरे कानों-कान जाने-क्या कहती है; **आमार......सुर**—मेरी निद्रा में, मेरे कोलाहल में, मेरी आँखों के जल में उसी का सुर (है); **कोन्**—किस; **ताहार**—उसका; **भाङा गड़ा**—तोड़ना-

आमि जानि ना कोन् दक्षिणसमीरे
ताहार ओठा पड़ा— ढेउयेर छलोछले।
एइ धरणीरे गगनपारेर छाँदे से ये तारार साथे बाँधे,
सुखेर साथे दुख मिलाये काँदे
'ए नहे एइ नहे'— काँदे काने काने ।।

१९१८

२६

छिल ये परानेर अन्धकारे
एल से भुवनेर आलोक-पारे ।।
स्वपनबाधा टुटि बाहिरे एल छुटि,
अवाक् आँखि दुटि हेरिल तारे ।।
मालाटि गेँथेछिनु अश्रुधारे,
तारे ये बेंधेछिनु से मायाहारे।
नीरव वेदनाय पूजिनु यारे हाय
निखिल तारि गाय वन्दना रे ।।

१९१८

गढ़ना; **आमि......पड़ा**—मैं नहीं जानता किस दक्षिण-पवन में उसका उठना-गिरना (है); **ढेउयेर छलोछले**—लहरों की छलछल में; **एइ.....बाँधे**—इस धरती को आकाश-पार की भंगी में वह ताराओं के साथ बाँधता है; **सुखेर......काँदे**—सुख के साथ दुःख को मिला कर क्रन्दन करता है; **ए......काने**—कानों-कान क्रन्दन करता है, 'यह नहीं यह नहीं'।

२६. **छिल......पारे**—जो प्राणों के अन्धकार में था, वह विश्व के आलोक के पार आया; **स्वपन......छुटि**—स्वप्न की बाधा को तोड़ कर बाहर दौड़ा आया; **दुटि**—दो; **हेरिल तारे**—उसे निहारा; **मालाटि......धारे**—आँसुओं की धार से (मैं ने) माला गूँथी थी; **तारे......हारे**—उसे उस माया के हार से बाँधा था; **वेदनाय**—वेदना से; **पुजिनु यारे**—जिसे पूजा था; **निखिल......रे**—अरे, विश्व उसी की वन्दना गाता है।

२७

तोमार हल शुरु, आमार हल सारा—
तोमाय आमाय मिले एमनि बहे धारा ।।
तोमार ज्वले बाति, तोमार घरे साथि—
आमार तरे राति, आमार तरे तारा ।।
तोमार आछे डाङा, आमार आछे जल—
तोमार बसे थाका, आमार चलाचल।
तोमार हाते रय, आमार हाते क्षय—
तोमार मने भय, आमार भयहारा ।।

१९१८

२८

यखन पड़बे ना मोर पायेर चिह्न एइ बाटे,
बाइब ना मोर खेयातरी एइ घाटे,
चुकिये देब बेचा केना, मिटिये देब लेना देना,
बन्ध हबे आनागोना एइ हाटे—
तखन आमाय नाइवा मने राखले,
तारार पाने चेये चेये नाइवा आमाय डाकले ।।

२७. **तोमार......सारा**—तुम्हारा प्रारम्भ हुआ, मेरा समाप्त हुआ; **तोमाय......धारा**—तुम्हारे और मेरे मिलन से इसी तरह धारा बहती है; **तोमार......साथि**—तुम्हारी वर्तिका जलती है, तुम्हारे घर में संगी है; **आमार......तारा**—मेरे लिये रात है, मेरे लिये तारे हैं; **तोमार......जल**—तुम्हें निर्जल उच्च भूमि है, मुझे जल है; **तोमार......चलाचल**—तुम्हारे लिये बैठे रहना है मेरे लिये चलना-फिरना है; **हात**—हाथों में; **रय**—(सुरक्षित) रहता है; **भयहारा**—भयहीन।

२८. **यखन......बाटे**—जब इस बाट (पथ) पर मेरे पैरों के चिह्न नहीं पड़ेंगे; **बाइब......घाटे**—इस घाट पर अपनी खेवे की नौका नहीं तिराऊँगा; **चुकिये......देना**—बेचना-खरीदना समाप्त कर दूँगा, लेन-देन मिटा दूँगा; **बन्ध......हाटे**—इस हाट में आना-जाना बन्द हो जाएगा; **तखन......राखले**—उस समय (तुमने) भले ही मुझे याद न रखा; **तारार......डाकले**—ताराओं की ओर ताकते-ताकते भले ही मुझे नहीं पुकारा।

यखन जमबे धुला तानपुराटार तारगुलाय,
काँटालता उठबे घरेर-द्वारगुलाय,
फुलेर बागान घन घासेर परबे सज्जा वनवासेर,
श्याओला एसे घिरबे दिघिर धारगुलाय—
तखन आमाय नाइवा मने राखले,
तारार पाने चेये चेये नाइवा आमाय डाकले ।।

तखन एमनि करेइ बाजबे बाँशि एइ नाटे,
काटबे गो दिन आजो येमन दिन काटे,
घाटे घाटे खेयार तरी एमनि से दिन उठबे भरि—
चरबे गोरु, खेलबे राखाल ओइ माठे।
तखन आमाय नाइवा मने राखले,
तारार पाने चेये चेये नाइवा आमाय डाकले ।।

तखन के बले गो सेइ प्रभाते नेइ आमि।
सकल खेलाय करबे खेला एइ आमि—

यखन......तारगुलाय—जब तम्बूरे के तारों पर धूल जमेगी; **काँटा-लता......द्वारगुलाय**—घर के दरवाज़ों पर काँटालता (एक प्रकार की कँटीली वनस्पति) निकल आएगी; **फुलेर......वनवासेर**—फूलों का बाग़ (जब) सघन घास (से आच्छादित हो) वनवास की सज्जा धारण करेगा; **श्याओला**—सेवार, पानी का एक तृण-विशेष, शैवाल; **श्याओला......धारगुलाय**—सरोवर के तटों को (जब) शैवाल आ कर घेर लेगा।

तखन......नाटे—उस समय (संसार के) इस नाटक में इसी प्रकार बाँसुरी बजेगी; **काटबे......काटे**—अजी, (उस समय भी) दिन बीतेंगे जैसे आज दिन बीत रहे हैं; **घाटे......भेरि**—इसी तरह उस दिन भी घाट-घाट पर खेवे की नावें भर उठेंगी; **चरबे......माठे**—गायें चरेंगी, चरवाहे उस मैदान में खेलेंगे।

तखन......आमि—अजी, कौन कहता है कि उस समय उस प्रभात में मैं नहीं हूँगा; **सकल......आमि**—यह 'मैं', सभी खेलों में खेल करेगा (वर्तमान

नतुन नामे डाकबे मोरे, बाँधबे नतुन बाहु डोरे,
आसब याब चिरदिनेर सेइ आमि।
तखन आमाय नाइवा मने राखले,
तारार पाने चेये चेये नाइवा आमाय डाकले ॥

१९१८

२९

ये काँदने हिया काँदिछे से काँदने सेओ काँदिल।
ये बाँधने मोरे बाँधिछे से बाँधने तारे बाँधिल ॥
पथे पथे तारे खुँजिनु, मने मने तारे पूजिनु,
से पूजार माझे लुकाये आमारेओ से ये साधिल ॥
एसेछिल मन हरिते महापारावार पाराये।
फिरिल ना आर तरीते, आपनारे गेल हाराये।
तारि आपनारि माधुरी आपनारे करे चातुरी,
धरिबे कि धरा दिबे से की भाबिया फाँद फाँदिल ॥

१९१८

रहेगा); **नतुन......मोरे**—नये नाम से मुझे पुकारोगे; **बाँधबे.......डोरे**—नयी बाहों की डोरी में बाँधोगे; **आसब......आमि**—चिरदिन का वही 'मैं' आता-जाता रहूँगा।

२९. **ये......काँदिल**—जिस क्रन्दन से हृदय क्रन्दन कर रहा है, उसी क्रन्दन से उसने भी क्रन्दन किया; **ये......बाँधिल**—जो बन्धन मुझे बाँध रहा है, उसी बन्धन ने उसे बाँधा; **पथे......पूजिनु**—रास्ते-रास्ते उसे खोजा, मन-ही-मन उसकी पूजा की; **से... ..साधिल**—उस पूजा के भीतर छिप कर, उसने भी मेरी साधना की; **एसेछिल......पाराये**—महासागर को पार कर (वह) मन हरने आया था; **फिरिल......हाराये**—(वह) नौका में और नहीं लौटा, (उसने) अपने को ही खो दिया; **तारि......चातुरी**—उसकी अपनी ही माधुरी स्वयं अपने से (ही) चातुरी करती है; **धरिबे......फाँदिल**—वह पकड़ेगा या पकड़ाई देगा, क्या सोचकर (उसने) फन्दा लगाया।

३०

से कोन् वनेर हृरिण छिल आमार मने।
के तारे बाँधल अकारणे।।
गतिरागेर से छिल गान, आलोछायार से छिल प्राण,
आकाशके से चमके दित वने।।
मेघला दिनेर आकुलता बाजिये येत पाये
तमालछाये-छाये।
फाल्गुने से पियालतलाय के जानित कोथाय पलाय
दखिन-हाओयार चञ्चलतार सने।।

१९१८

३१

ए शुधु अलस माया, ए शुधु मेघेर खेला,
ए शुधु मनेर साध वातासेते विसर्जन।
ए शुधु आपन-मने माला गेँथे छिँड़े फेला,
निमेषेर हासिकान्ना गान गेये समापन।।

३०. **से......मने**—वह किस वन का हरिण मेरे मन में था; **के...... अकारणे**—किसने उसे अकारण बाँधा; **गति......प्राण**—गति (रूपी) राग का वह गान था, प्रकाश और छाया का वह प्राण था; **आकाशके......वने**—वन में वह आकाश को चौंका देता; **मेघला......छाये**—तमाल की छाया-छाया में मेघाच्छन्न दिन की व्याकुलता पैरों से ध्वनित कर जाता; **फाल्गुने......सने**—फाल्गुन में प्रियाल (वृक्ष) के तले दक्षिण-पवन की चञ्चलता के साथ कौन जानता, वह कहाँ भाग जाता।

३१. **ए**—यह; **शुधु**—केवल; **ए......विसर्जन**—यह केवल मन की साध को हवा में विसर्जित करना है; **ए......फेला**—यह केवल मन की मौज में माला गूंथना और तोड़ फेंकना है; **निमेषेर......समापन**—क्षण-भर की हँसी और क्रन्दन को गान गा कर समाप्त करना है।

श्यामल पल्लवपाते रविकरे सारा वेला
आपनारि छाया लये खेला करे फुलगुलि—
एओ सेइ छायाखेला वसन्तेर समीरणे ।।
कुहकेर देशे येन साध करे पथ भुलि
हेथा होथा घुरि फिरि सारा दिन आनमने ।
कारे येन देब' ब'ले कोथा येन फुल तुलि—
सन्ध्याय मलिन फुल उड़े याय वने वने ।
ए खेला खेलिबे हाय, खेलार साथि के आछे ।
भुले भुले गान गाइ— के शोने के नाइ शोने—
यदि किछु मने पड़े, यदि केह आसे काछे ।।

१९१९

३२

चोख ये ओदेर छुटे चले गो—
धनेर बाटे, मानेर बाटे, रूपेर हाटे, दले दले गो ।
देखबे ब'ले करेछे पण देखबे कारे जाने ना मन—
प्रेमेर देखा देखे यखन चोख भेसे याय चोखेर जले गो ।।

श्यामल......फुलगुलि—श्याम पल्लवों के झरने में सूर्य्य की किरणों से सब समय फूल अपनी ही छाया को ले कर खेल करते है; **एओ....... समीरणे**—वसन्त की हवा में यह भी वही छाया का खेल है ।

कुहकेर......भुलि—जादू के देश में जैसे जानबूझ कर राह भूलता हूँ; **हेथा ......आनमने**—समस्त दिन यहाँ-वहाँ अनमना घूमता फिरता हूँ; **कारे......वने**—जैसे किसी को फूल देना है, इसलिये कहीं जैसे फूल तोड़ता हूँ (और वे) फूल सन्ध्या के समय मलिन हो वन-वन में उड़ जाते हैं ।

ए......आछे—हाय, यह खेल खेलने वाला खेल का साथी कहाँ है; **भुले...... शोने**—खोया-खोया-सा गान गाता हूँ, कौन सुनता है, कौन नहीं सुनता; **यदि...... काछे**—यदि (किसी) को कुछ याद आ जाय, यदि कोई पास आ जाए ।

३२. **चोख......गो**—उन सबों की दृष्टि दौड़ी जाती है; **धनेर बाटे**—धन के रास्ते; **दले दले**—दल-की-दल; **देखबे......मन**—देखने का दृढ़ संकल्प किया है (लेकिन) किसे देखेगा, मन नहीं जानता; **प्रेमेर......गो**—प्रेम का देखना

आमाय तोरा डाकिस नारे—
आमि याब खेयार घाटे अरूप-रसेर पारावारे।
उदास हाओया लागे पाले, पारेर पाने याबार काले
चोखदुटोरे डुबिये याब अकूल सुधा-सागर-तले गो।।

१९१९

३३

माटिर प्रदीपखानि आछे माटिर घरेर कोले,
सन्ध्यातारा ताकाय तारि आलो देखबे ब'ले।
सेइ आलोटि निमेषहत प्रियार व्याकुल चाओयार मतो,
सेइ आलोटि मायेर प्राणेर भयेर मतो दोले।।
सेइ आलोटि नेबे ज्वले श्यामल धरार हृदयतले,
सेइ आलोटि चपल हाओयाय व्यथाय काँपे पले पले।
नामल सन्ध्यतारार वाणी आकाश हते आशिस आनि
अमरशिखा आकुल हल मर्तशिखाय उठते ज्व'ले।।

१९१९

देख कर जब आँखें आँखों के जल में बह जाती हैं; **आमाय......रे**—मुझे तुमलोग पुकारना नहीं; **आमि......घाटे**—मैं खेवे के घाट पर जाऊँगा; **उदास......काले**—पार की ओर जाने के समय पाल में उदासीन हवा लगती है; **चोख......याब**—दोनों आँखें डुबा जाऊँगा।

३३. **माटिर......कोले**—मिट्टी का दीपक मिट्टी के घर की गोद में है; **सन्ध्या......ब'ले**—सन्ध्यातारा उसीके प्रकाश को देखने के लिये ताक रहा है; **सेइ......मतो**—प्रिया की व्याकुल चितवन के समान वह दीपक निष्पलक है; **सेइ......दोले**—वह प्रदीप माँ के प्राणों के भय के समान स्पन्दित होता है; **नेबे ज्वले**—बुझता-जलता है; **चपल......पले**—चंचल हवा में क्षण-क्षण व्यथा से काँपता है; **नामल......वाणी**—सन्ध्यातारा की वाणी नीचे उतरी; **हते**—से; **आशिस**—आशीर्वाद; **आनि**—ला कर; **हल**—हुई; **मर्त......ज्वले**—मर्त्यशिखा में जल उठने को।

३४

दिनगुलि मोर सोनार खाँचाय रइल ना—
सेइ-ये आमार नाना रङे‍र दिनगुलि।
कान्नाहासिर बाँधन तारा सइल ना—
सेइ-ये आमार नाना रङे‍र दिनगुलि।।
आमार प्राणेर गानेर भाषा
शिखबे तारा छिल आशा—
उड़े गेल, सकल कथा कइल ना—
सेइ-ये आमार नाना रङे‍र दिनगुलि।।
स्वपन देखि, येन तारा कार आशे
फेरे आमार भाङा खाँचार चार पाशे—
सेइ-ये आमार नाना रङे‍र दिनगुलि।
एत वेदन हय कि फाँकि।
ओरा कि सब छायार पाखि।
आकाश-पारे किछुइ कि गो बइल ना—
सेइ-ये आमार नाना रङे‍र दिनगुलि।।

१९१९

३४. **दिनगुलि......ना**—मेरे दिन सोने के पिंजरे में नहीं रहे; **सेइ...... दिनगुलि**—वही मेरे नाना रंगों वाले दिन; **कान्ना......ना**—क्रन्दन और हँसी के बन्धन वे नहीं सह सके।

आमार......आशा—आशा थी, वे मेरे प्राणों के गानों की भाषा सीखेंगे; **उड़े......ना**—(लेकिन) वे उड़ गए, सभी बातें उन्होंने नहीं कहीं।

स्वपन......पाशे—स्वप्न देखता हूँ, जैसे किसीकी आशा में वे मेरे टूटे हुए पिंजरे के चारों ओर फिर रहे हैं।

एत......फाँकि—इतनी वेदना क्या (केवल) छलना है; **ओरा......पाखि**—वे सभी क्या छाया के पक्षी हैं; **आकाश......ना**—अजी, आकाश-पार क्या कुछ भी वहन नहीं हुआ।

३५

नमो यन्त्र, नमो— यन्त्र, नमो— यन्त्र, नमो— यन्त्र।
तुमि चक्रमुखरमन्द्रित, तुमि वज्रवह्निवन्दित,
तव वस्तुविश्ववक्षदंश ध्वंसविकट दन्त।
तव दीप्त-अग्नि-शत-शतघ्नी-विघ्नविजय पन्थ।
तव लौहगलन शैलदलन अचलचलन मन्त्र॥
कभु काष्ठलोष्ट्र-इष्टक-दृढ़ घनपिनद्ध काया,
कभु भूतल-जल-अन्तरीक्ष-लङ्घन लघु माया।
तव खनि-खनित्र-नख-विदीर्ण क्षिति विकीर्ण-अन्त्र,
तव पञ्चभूतबन्धनकर इन्द्रजालतन्त्र॥

१९२२

३६

हाय हाय हाय दिन चलि याय।
चा-स्पृह चञ्चल चातकदल चल' चल' चल' हे॥
टग'बग'-उच्छल काथलितल-जल कल'कल'हे।
एल चीन-गगन हते पूर्वपवनस्रोते श्यामलरसधरपुञ्ज॥
श्रावणबासरे रस झर' झर' झरे भुञ्ज हे भुञ्ज दलबल हे।
एस' पुँथिपरिचारक तद्धितकारक तारक तुमि काण्डारी।
एस' गणितधुरन्धर काव्यपुरन्दर भूविवरणभाण्डारी।
एस' विश्वभारनत शुष्करुटिनपथ-मरुपरिचारणक्लान्त।

३५. **चक्र**—पहिया; **कभु**—कभी; **खनित्र**—खन्ता, (मिट्टी खोदने का यंत्र); **अन्त्र**—अँतड़ी।

३६. **दिन......याय**—दिन टला जाता है; **चा**—चाय; **चा-स्पृह**—चाय के लोभी, चाय की आकांक्षा करने वाले; **काथलि**—केट्ली, चाय के लिये पानी गर्म करने का बर्तन; **एल**—आया; **हते**—से; **भुञ्ज**—उपभोग करो; **एस'**—आओ; **पुँथिपरिचारक**—हस्तलिखित ग्रंथों की देखभाल करने वाले; **काण्डारी**—मल्लाह, कर्णधार; **भूविवरण**—भूगोल; **रुटिन**—routine;

एस' हिसाबपत्तरत्रस्त तहबिल-मिल-भुल-ग्रस्त लोचन-प्रान्त छल'छल' हे
एस' गीतिवीथिचर तम्बुरकरधर तानतालतलमग्न।
एस' चित्री चट'पट' फेलि तुलिक-पट रेखावर्णविलग्न।
एस' कन्स्टिटियूशन-नियमविभूषण तर्के अपरिश्रान्त।
एस' कमिटिपलातक विधानघातक एस' दिगभ्रान्त टल'मल' हे ।।
१९२४

३७

आय रे मोरा फसल काटि।
माठ आमादेर मिता ओरे, आज तारि सओगाते
मोदेर घरेर आङन सारा बछर भरबे दिने राते ।।
मोरा नेब तारि दान, ताइ ये काटि धान,
ताइ ये गाहि गान, ताइ ये सुखे खाटि ।।
बादल एसे रचेछिल छायार मायाघर,
रोद एसेछे सोनार जादुकर।
श्यामे सोनाय मिलन हल मोदेर माठेर माझे,
मोदेर भालोबासार माटि ये ताइ साजल एमन साजे।

हिसाबपत्तरत्रस्त—हिसाब-किताब से भयभीत; **तहबिल.....ग्रस्त**—तहबील (कोष) के जोड़ की भूल को ठीक करने में लीन; **तम्बुरकरधर**—हाथ में तानपूरा धारण करने वाले; **चित्री**—चित्रकार; **चट'पट'**—जल्द; **फेलि**—फेंक कर; **तुलिक-पट**—तूलिका और फलक।

३७. **आय......काटि**—आ रे, हमलोग फ़सल काटें; **माठ......मिता**—खेत हमलोगों का मीत है; **आज......राते**—आज उसीकी सौगात से हमलोगों के घर का आँगन सम्पूर्ण वर्ष के लिये दिन-रात भरेगा; **मोरा......धान**—हमलोग उसी का दान लेंगे, इसीलिये धान काटते हैं; **ताइ......खाटि**—इसीलिये गान गाते हैं, इसीलिये आनन्द से परिश्रम करते हैं; **बादल......मायाघर**—बादल ने आ कर छाया के मायागृह की रचना की थी; **रोद......जादुकर**—सोने की जादूगरनी धूप आई है; **श्यामे.......माझे**—श्यामल और सुनहले का मिलन हमलोगों के खेत में हुआ; **मोदेर......साजे**—हमलोगों के प्यार की मिट्टी इसीलिये इस सज्जा में सज्जित हुई है।

मोरा नेब तारि दान, ताइ ये काटि धान,
ताइ ये गाहि गान, ताइ ये सुखे खाटि ।।

१९२५

३८

कालेर मन्दिरा ये सदाइ बाजे डाइने बाँये दुइ हाते,
सुप्ति छुटे नृत्य उठे नित्य नूतन संघाते ।।
बाजे फुले, बाजे काँटाय, आलोछायार जोयार-भाँटाय,
प्राणेर माझे ओइ-ये बाजे दुःखे सुखे शंकाते ।।
ताले ताले साँझ-सकाले रूप-सागरे ढेउ लागे ।
सादा-कालोर द्वन्द्वे ये ओइ छन्दे नानान रङ जागे ।
एइ ताले तोर गान बेंधे ने—कान्नाहासिर तान सेधे ने,
डाक दिल शोन् मरण बाँचन नाचन-सभार डङ्काते ।।

१९२५

३९

खेलाघर बाँधते लेगेछि आमार मनेर भितरे ।
कत रात ताइ तो जेगेछि बलब की तोरे ।।

३८. **कालेर.....हाते**—दाहिने, बाँये दोनों हाथों में काल का मजीरा सर्वदा बजता रहता है; **छुटे**—भागती है; **बाजे......भाँटाय**—फूलों में, काँटों में, प्रकाश और छाया के ज्वार-भाटे में (वह) बजता है; **प्राणेर......शंकाते**—दुःख-सुख-शंका में प्राणों के भीतर वह ध्वनित होता है; **ताले......लागे**—ताल-ताल पर साँझ-सबेरे रूप-सागर में लहरें उठती हैं; **सादा......जागे**—उजले-काले के द्वन्द्व में उसी छंद में नाना रंग जागरित होते हैं; **एइ.....ने**—इसी ताल पर अपना गान बाँध ले; **कान्ना......सेधे ने**—क्रन्दन और हँसी की तान को साध ले; **डाक.......डंकाते**—सुन, मृत्यु और जीवन ने नृत्यसभा के डंके पर (प्रहार कर) आह्वान किया है ।

३९. **खेलाघर......भितरे**—अपने मन के भीतर खेलघर (क्रीड़ागृह) बाँधने में लगा हूँ (बनाने में लगा हूँ); **कत......तोरे**—इसीलिये तो कितनी रातें

प्रभाते पथिक डेके याय, अवसर पाइ ने आमि हाय--
बाहिरेर खेलाय डाके ये, याब की क'रे ।।
या आमार सबार हेलाफेला याच्छे छड़ाछड़ि
पुरोनो भाङा दिनेर ढेला ताइ दिये घर गड़ि ।
ये आमार नतुन खेलार जन तारि एइ खेलार सिंहासन,
भाङारे जोड़ा देबे से किसेर मन्तरे ।।

१९२५

४०

पाखि बले, 'चाँपा, आमारे कओ,
केन तुमि हे नीरवे रओ ।
प्राण भरे आमि गाहि ये गान
सारा प्रभातेरइ सुरेर दान,
से कि तुमि तव हृदये लओ ।
केन तुमि तबे नीरवे रओ ।'
चाँपा शुने बले, 'हाय गो हाय,
ये आमारि गाओया शुनिते पाय
नह नह पाखि, से तुमि नओ ।'

जागा हूँ, तुमसे क्या कहूँ; **प्रभाते......याय**—प्रभात-काल पथिक पुकार जाता है; **अवसर.....हाय**—हाय, (मुझे) अवकाश नहीं मिलता; **बाहिरेर.....क'रे**—बाहर के खेल के लिये पुकारता है, क्योंकर जाऊँ; **या......गड़ि**—सब के लिये तुच्छ, असुन्दर और अवज्ञा से फेंके हुए जो मेरे पुराने नष्टभ्रष्ट दिनों के ढेले हैं, उन्हींसे गृह का निर्माण करता हूँ; **ये......सिंहासन**—जो मेरे नये खेल का साथी है उसीका यह खेल का सिंहासन है; **भाङारे......मन्तरे**—टूटे-फूटे नष्ट-भ्रष्ट को किसी मन्त्र से वह जोड़ेगा ।

४०. **पाखि......रओ**—पक्षी कहता है, 'चंपा, मुझ से कहो, तुम इस तरह नीरव क्यों रहती हो' (बँगला में चंपा स्त्रीलिंग है); **प्राण......दान**—प्राण ढाल कर मैं जो गान गाता हूँ (वह) समस्त प्रभात के ही सुर का दान है; **से......लओ**—उसे क्या तुम हृदय में ग्रहण करती हो; **तब**—तब; **चाँपा......बले**—सुन कर चंपा कहती है; **ये......नओ**—जो मेरा अपना गाया हुआ सुन पावे, वह पक्षी तुम नहीं हो, तुम नहीं हो ।

पाखि बले, 'चाँपा, आमारे कओ,
केन तुमि हेन गोपने रओ।
फागुनेर प्राते उतला बाय
उड़े येते से ये डाकिया याय,
से कि तुमि तव हृदये लओ।
केन तुमि तबे गोपने रओ।'
चाँपा शुने बले, 'हाय गो हाय,
ये आमारि ओड़ा देखिते पाय,
नह नह पाखि, से तुमि नओ।'

१९२५

४१

बाजो रे बाँशरि, बाजो।
सुन्दरी, चन्दनमाल्ये मङ्गलसन्ध्याय साजो।
बुझि मधु-फाल्गुन-मासे चञ्चल पान्थ से आसे—
मधुकर-पदभर-कम्पित चम्पक अङ्गने फोटे नि कि आजो।
रक्तिम अंशुक माथे, किंशुककङ्कण हाते,
मञ्जीरझंकृत पाये सौरभमन्थर बाये
वन्दनसंगीत-गुञ्जन-मुखरित नन्दनकुञ्जे विराजो॥

१९२५

फागुनेर......याय—फाल्गुन के प्रातःकाल में चंचल वायु उड़ती हुई पुकार जाती है; **ये......पाय**—जो मेरा अपना उड़ना देख पावे।

४१. **बाजो**—बजो; **बाँशरि**—बाँसुरी; **माल्ये**—माला से; **मङ्गल...... साजो**—शुभ सन्ध्या में सजो; **से**—वह; **आसे**—आता है; **अङ्गने......आजो**—आज भी क्या आँगन में नहीं खिला; **रक्तिम.....हाते**—सिर पर लाल वस्त्र, हाथों में पलाश के फूलों का कंकण; **मञ्जीर......पाये**—नूपुर से झंकृत पैरों से; **बाये**—वायु में।

४२

ये केवल पालिये बेड़ाय, दृष्टि एड़ाय, डाक दिये याय इङ्गिते,
से कि आज दिल धरा गन्धे भरा वसन्तेर एइ संगीते ।।
ओ कि तार उत्तरीय अशोकशाखाय उठल दुलि ।
आजि कि पलाशवने ओइ से बुलाय रङेर तूलि ।।
ओ कि तार चरण पड़े ताले ताले मल्लिकार ओइ भङ्गीते ।।
ना गो ना, देय कि धरा, हासिर भरा दीर्घश्वासे याय भेसे ।
मिछे एइ हेला-दोलाय मनके भोलाय, ढेउ दिये याय स्वप्ने से ।
से बुझि लुकिये आसे विच्छेदेरइ रिक्त राते,
नयनेर आड़ाले तार नित्य-जागार आसन पाते—
धेयानेर वर्णछटाय व्यथार रङे मनके से रय रङ्गिते ।।

१९२५

४३

दूरदेशी सेइ राखाल छेले
आमार बाटे वटेर छायाय सारा वेला गेल खेले ।।

४२. **ये......संगीते**—जो केवल भागता फिरता है, नज़रों से बचता है, इंगित से पुकार जाता है, गन्ध से भरे वसन्त के इस संगीत में वह क्या आज पकड़ाई दे गया है; **ओ......दुलि**—वह क्या उसका उत्तरीय है जो अशोक की शाखा में फहरा उठा; **आजि......तूलि**—आज क्या पलाश के वन में वही रंगों की तूलिका फेर रहा है; **ओ....भङ्गीते**—क्या मल्लिका की उस भंगी के साथ ताल-ताल पर उसीके चरण पड़ते हैं; **ना.....धरा**—नहीं जी, नहीं, (वह भला) पकड़ाई देता है; **हासिर......भेसे**—हँसी से लदी हुई नौका दीर्घश्वास में बह जाती है; **भरा**—बोझी हुई नौका; **मिछे.......से**—इस हिल-डुल से व्यर्थ ही (वह) मन को मुग्ध करता है, स्वप्न में लहरें उठा जाता है; **नयनेर......पाते**—नयनों की ओट में अपने नित्य-जागरण का (वह) आसन बिछाता है; **धेयानेर..... रङ्गिते**—ध्यान के रंगों की छटा में व्यथा के रंग से वह मन को रँगता रहता है।

४३. **दूर......छेले**—दूरदेश का वह चरवाहा-लड़का; **आमार......खेले**—मेरे रास्ते पर वट की छाया में समस्त वेला खेल कर चला गया; **गाइल.....**

गाइल की गान सेइ ता जाने, सुर बाजे तार आमार प्राणे—
बलो देखि तोमरा कि तार कथार किछु आभास पेले ।।
आमि तारे शुधाइ यबे, 'की तोमारे दिब आनि'—
से शुधु कय, 'आर किछु नय, तोमार गलार मालाखानि' ।
दिइ यदि तो की दाम देबे याय वेला सेइ भावना भेबे—
फिरे एसे देखि धुलाय बाँशिटि तार गेछे फेले ।।

१९२५

४४

आमाय क्षमो हे क्षमो, नमो हे नमो, तोमाय स्मरि हे निरुपम,
नृत्यरसे चित्त मम उछल हये बाजे ।
आमार सकल देहेर आकुलरवे मन्त्रहारा तोमार स्तवे
डाहिने वामे छन्द नामे नवजनमेर माझे ।
तोमार वन्दना मोर भङ्गीते आज संगीते विराजे ।।

जाने—कौन-सा गान गाया, इसे वही जानता है; **सुर......प्राणे**—उसका सुर मेरे प्राणों में ध्वनित होता है; **बलो.....पेले**—बताओ तो सही तुम सबों ने उसकी बात का (क्या) कुछ आभास पाया; **आमि......आनि**—मैं जब उससे पूछता हूँ, 'तुम्हें क्या ला कर दूँ'; **से......मालाखानि**—वह केवल कहता है, और कुछ नहीं, (मात्र) अपने गले की माला; **दिइ......भेबे**—अगर दूँ, तो (वह उसका) क्या दाम देगा, यही सोचते समय बीतता है; **फिरे......फेले**—लौट कर देखता हूँ, (वह) अपनी बाँसुरी धूल में फेंक गया है ।

४४. यह गान 'नटीर पूजा' (नटी की पूजा) नामक नाटक से लिया गया है । प्राणदण्ड का भय रहने पर भी नटी महाराज बिंबिसार की राजवाटिका में भग्न स्तूप के सामने, जहाँ कभी भगवान् बुद्ध ने उपदेश दिया था, अन्तिम बार नृत्य करने गई । महाराज के दण्ड-विधान के अनुसार महारानी के सामने नृत्य करती हुई नटी का वध कर दिया गया ।

आमाय—मुझे; **क्षमो**—क्षमा करो; **नमो......नमो**—(तुम्हें) नमस्कार है; **तोमाय**—तुम्हें; **स्मरि**—स्मरण करती हूँ; **नृत्य......बाजे**—नृत्यरस से उच्छलित हो कर मेरा चित्त ध्वनित हो रहा है; **मन्त्रहारा**—मन्त्रहीन; **डाहिने**—दाहिने; **नामे**—उतरता है; **आमार......माझे**—मेरी सारी देह के आकुल रव में, तुम्हारे मंत्रहीन स्तव से (मेरे) नवजन्म के मध्य दाहिने-बाँये छन्द झर रहे

एकि परम व्यथाय परान काँपाँय, काँपन वक्षे लागे ।
शान्तिसागरे ढेउ खेले याय, सुन्दर ताय जागे ।
आमार सब चेतना सब वेदना रचिल ए ये की आराधना—
तोमार पाये मोर साधना मरे ना येन लाजे ।
तोमार वन्दना मोर भङ्गीते आज संगीते विराजे ।।

आमि कानन हते तुलि नि फुल, मेले नि मोरे फल ।
कलस मम शून्यसम, भरि नि तीर्थजल ।
आमार तनु तनुते बाँधनहारा हृदय ढाले अधरा धारा—
तोमार चरणे होक ता सारा पूजार पुण्य काजे ।
तोमार वन्दना मोर भङ्गीते आज संगीते विराजे ।।

१९२६

४५

आधेक घुमे नयन चुमे स्वपन दिये याय ।
श्रान्त भाले यूथीर माले परशे मृदु बाय ।।
वनेर छाया मनेर साथि, वासना नाहि किछु—

हैं; **तोमार......विराजे**—आज मेरी भंगी में, (मेरे) संगीत में तुम्हारी वन्दना विराज रही है; **तोमार**—तुम्हारी; **मोर भङ्गीते**—मेरी भंगिमा में।

एकि......काँपाय—यह कैसी परम व्यथा प्राणों को कँपाती है; **काँपन**—कम्पन; **शान्तिसागरे......जागे**—शान्तिसागर में लहरें खेल जाती हैं (और) उसमें 'सुन्दर' प्रकट हो रहा है; **रचिल**—निर्मित की; **आमार......आराधना**—मेरी सारी चेतना और सारी वेदना ने यह कैसी आराधना का आयोजन किया है; **तोमार......लाजे**—ऐसा हो कि तुम्हारे चरणों में मेरी साधना लज्जा से न मरे।

आमि......फुल—मैंने कानन से फूल नहीं चुने; **मेले.......फल**—मुझे फल नहीं मिले; **भरि नि**—नहीं भरा; **आमार......धारा**—मेरे अंग-प्रत्यंग में (मेरा) बंधनहीन हृदय न पकड़ाई देने वाली धारा ढाल रहा है; **तोमार...... काजे**—पूजा के पुण्य कार्य में तुम्हारे चरणों में उसका अवसान हो जाय।

४५. **आधेक.......याय**—आधी नींद में आँखों को चूम स्वप्न दे जाती है; **परशे**—स्पर्श करती है; **बाय**—वायु; **वनेर......किछु**—वन की छाया मन

पथेर धारे आसन पाति, ना चाहि फिरे पिछु—
वेणुर पाता मिशाय गाथा नीरव भावनाय ।।
मेघेर खेला गगनतटे अलस लिपि-लिखा,
सुदूर कोन् स्मरणपटे जागिल मरीचिका ।
चैत्रदिने तप्त वेला तृण-आँचल पेते
शून्यतले गन्ध-भेला भासाय वातासेते—
कपोत डाके मधुकशाखे विजन वेदनाय ।।

१९२६

४६

की पाइ नि तारि हिसाब मिलाते मन मोर नहे राजि ।
आज हृदयेर छायाते आलोते बाँशरि उठेछे बाजि ।।
भालोबेसेछिनु एइ धरणीरे सेइ स्मृति मने आसे फिरे फिरे,
कत वसन्ते दखिनसमीरे भरेछे आमारि साजि ।।
नयनेर जल गभीर गहने आछे हृदयेर स्तरे,
वेदनार रसे गोपने गोपने साधना सफल करे ।

की संगिनी है, और कोई वासना नहीं; **पथेर......पाति**—रास्ते के किनारे आसन बिछाता हूँ; **ना......पिछु**—पीछे की ओर फिर कर नहीं देखता; **वेणुर...... भावनाय**—बाँसकी पत्तियाँ नीरव चिन्तन में काव्य-गीति का मिश्रण करती हैं; **लिपि-लिखा**—पत्र लिखना; **कोन्**—किस; **जागिल**—जागी; **पेते**—फैला कर; **शून्य......वातासेते**—शून्य (आकाश) के नीचे गन्ध के भेलक (बेड़े) को हवा में तिराती है; **डाके**—पुकारता है, बोलता है; **मधुकशाखे**—महुए की शाखा पर ।

४६. **की......राजि**—क्या नहीं पाया, इसका हिसाब मिलाने (लेखा-जोखा करने) को मेरा मन राजी नहीं; **आज......बाजि**—आज हृदय के छाया (और) प्रकाश में बाँसुरी बज उठी है; **भालो......फिरे**—इस धरती को प्यार किया था, यही स्मृति घूम-घूम कर मन में आती है; **कत......साजि**—कितने वसन्तों में मेरी डलिया दक्षिण समीर से भर उठी है; **नयनेर......स्तरे**—आँखों का जल गभीर अतल में हृदय के स्तर में है; **वेदनार......करे**—वेदना के रस से

माझे माझे बटे छिँड़ेछिल तार, ताइ निये केवा करे हाहाकार—
सुर तबु लेगेछिल बारे-बार मने पड़े ताइ आजि ।।

१९२६

४७

चाहिया देखो रसेर स्रोते रङ्गेर खेलाखानि ।
चेयो ना चेयो ना तारे निकटे निते टानि ।।
राखिते चाह, बाँधिते चाह यारे,
आँधारे ताहा मिलाय मिलाय बारे बारे—
बाजिल याहा प्राणेर वीणा-तारे
से तो केवलि गान, केवलि वाणी ।।
परश तार नाहि रे मेले, नाहि रे परिमाण—
देवसभाय ये सुधा करे पान ।
नदीर स्रोते फुलेर वने वने,
माधुरी-माखा हासिते आँखिकोणे,
से सुधाटुकु पियो आपन-मने—
मुक्तरूपे नियो ताहारे जानि ।।

१९२६

गोपन भाव से साधना को सफल करता है; **माझे......हाहाकार**—बीच-बीच में अवश्य ही तार टूटे थे (लेकिन) उसीको ले कर कौन हाहाकार करे; **सुर...... आजि**—तौभी सुर बार-बार लगा था, यही आज याद आता है ।

४७. **चाहिया......खेलाखानि**—रस के स्रोत में रंग के खेल को देखो; **चेयो......टानि**—उसे निकट खींचना मत चाहो, मत चाहो; **राखिते......मिलाय**—जिसे रखना चाहते हो, बाँधना चाहते हो, वह अंधकार में विलीन हो जाता है; **बाजिल.....वाणी**—जो प्राणों की वीणा के तार में बजा, वह तो केवल गान, केवल वाणी थी; **परश......परिमाण**—उस (अमृत) का न स्पर्श मिलता है और न परिमाण; **देव......पान**—देवसभा में जो अमृत पान किया जाता है; **नदीर...... मने**—नदी के स्रोत में, फूलों के वन में, आँखों के कोने की माधुर्य से सिक्त हँसी में उस अमृत को मनमाना पियो; **मुक्त......जानि**—मुक्त रूप में उसे जान लेना ।

४८

राङिये दिये याओ याओ याओ गो एबार याबार आगे—
तोमार आपन रागे, तोमार गोपन रागे,
तोमार तरुण हासिर अरुण रागे,
अश्रुजलेर करुण रागे ।।
रङ येन मोर मर्मे लागे, आमार सकल कर्मे लागे,
सन्ध्यादीपेर आगाय लागे, गभीर रातेर जागाय लागे ।।
याबार आगे याओ गो आमाय जागिये दिये,
रक्ते तोमार चरण-दोला लागिये दिये ।
आँधार निशार वक्षे येमन तारा जागे,
पाषाणगुहार कक्षे निझरधारा जागे,
मेघेर बुके येमन मेघेर मन्द्र जागे,
विश्व-नाचेर केन्द्रे येमन छन्द-जागे,
तेमनि आमाय दोल दिये याओ याबार पथे आगिये दिये,
काँदन-बाँधन भागिये दिये ।।

१९२६

४८. **राङिये......याओ**—रंजित कर जाओ; **एबार......आगे**—इस बार जाने से पहले; **तोमार.....रागे**—तुम्हारे अपने रंग में, अपने गोपन रंग में; **तोमार......रागे**—अपनी तरुण हँसी के अरुण रंग में; **रङ......लागे**—ऐसा हो कि रंग मेरे मर्म (अन्तर) में लगे, मेरे समस्त कर्म में लगे; **आगाय**—अग्र भाग में; **गभीर......लागे**—गभीर रात के जागरण में लगे; **आमाय......दिये**—मुझे जगा कर; **रक्ते......दिये**—रक्त में अपने चरणों का स्पन्दन लगा कर; **आँधार......जागे**—अँधेरी रात के वक्ष में जैसे तारा जागता है; **मेघेर......जागे**—मेघ के हृदय में जैसे मेघ की मंद्र-ध्वनि जागती है; **तेमनि.....याओ**—वैसे ही मुझे दोलायित कर जाओ; **याबार.....दिये**—जाने के पथ पर अग्रसर कर, **क्रन्दन-बंधन को दूर कर**।

४९

परवासी, चले एसो घरे
अनुकूल समीरण-भरे ।।
ओइ देखो कतबार हल खेया-पारापार,
सारिगान उठिल अम्बरे ।।
आकाशे आकाशे आयोजन,
वातासे वातासे आमन्त्रण ।।
मन ये दिल ना साड़ा, ताइ तुमि गृहछाड़ा
निर्वासित बाहिरे अन्तरे ।।

१९२८

५०

स्वपन-पारेर डाक शुनेछि, जेगे ताइ तो भाबि—
केउ कखनो खुँजे कि पाय स्वप्नलोकेर चाबि ।।
नय तो सेथाय याबार तरे, नय किछु तो पाबार तरे,
नाइ किछु तार दाबि—
विश्व हते हारिये गेछे स्वप्नलोकेर चाबि ।।

४९. **परवासी......भरे**—प्रवासी, अनुकूल समीर-वाही नाव से घर चले आओ; **ओइ......पारापार**—वह देखो, खेवे की नौका कितनी बार आर पार हुई; **सारि**—मल्लाहों आदि के गान; **उठिल**—उठे ; **वातासे**—हवा में; **मन......छाड़ा**—मन ने (कोई) उत्तर नहीं दिया (मन में कोई प्रतिक्रिया नहीं हुई) इसीलिये तुम गृहत्यागी हो; **निर्वासित......अन्तरे**—अन्तर-बाहर निर्वासित हो।

५०. **स्वपन.....भाबि**—स्वप्न-पार का आह्वान (मैंने) सुना है, इसीलिये तो जग कर सोचता हूँ; **केउ......चाबि**—क्या कभी कोई स्वप्नलोक की चाबी खोज पाता है; **नय......दाबि**—न तो वहाँ जानेके लिये, न कुछ पाने के लिये—उसका कोई दावा नहीं; **विश्व......चाबि**—संसार से स्वप्नलोक की चाबी खो गई है;

चाओया-पाओयार बुकेर भितर ना-पाओया फुल फोटे,
दिशाहारा गन्धे तारि आकाश भरे ओठे।
खुँजे यारे बेड़ाइ गाने, प्राणेर गभीर अतल-पाने
ये जन गेछे नाबि,
सेइ नियेछे चुरि करे स्वप्नलोकेर चाबि ॥

१९२८

५१

खरवायु बय वेगे, चारि दिक छाय मेघे,
ओगो नेये, नाओखानि बाइयो।
तुमि कषे धरो हाल, आमि तुले बाँधि पाल—
हाँइ मारो, मारो टान हाँइयो ॥
शृङ्खले बार बार झन्झन् झंकार नय ए तो तरणीर क्रन्दन शंकार;
बन्धन दुर्वार सह्य ना हय आर, टलोमलो करे आज ताइ ओ।
हाँइ मारो, मारो टान हाँइयो ॥
गनि गनि दिन खन चञ्चल करि मन
बोलो ना 'याइ कि नाइ याइ रे'।

चाओया......फोटे—चाहने-पाने के हृदय के भीतर न-पाने का फूल खिलता है; **दिशाहारा......ओठे**—उसी के दिशाहीन गन्ध से आकाश भर उठता है; **खुँजे......पाने**—जिसे गानों में खोजता फिरता हूँ; **प्राणेर......नाबि**—जो व्यक्ति प्राणों के गभीर अतल में उतर गया है; **सेइ.....चाबि**—उसी ने स्वप्नलोक की चाबी चुरा ली है।

५१. **खरवायु......मेघे**—तेज़ हवा वेग से बहती है, चारों ओर मेघ छाये हुए हैं; **नेये**—नाविक, मल्लाह; **नाओखानि**—नाव; **बाइयो**—चलाना; **तुमि......पाल**—तुम कस कर पतवार पकड़ो, मैं पाल चढ़ा कर बाँधूं; **नय......शंकार**—यह तो नाव का शंका का क्रन्दन नहीं है; **बन्धन......आर**—कठिन बन्धन और सह्य नहीं होता; **टलोमलो......ओ**—इसीलिये वह आज डगमग कर रही है; **गनि......याइ रे**—दिन-क्षण गिन-गिन मन को चंचल कर (यह)

संशयपारावार अन्तरे हबे पार ।
उद्‌वेगे ताकायो ना बाइरे ।
यदि माते महाकाल, उद्दाम जटाजाल झड़े हये लुण्ठित, ढेउ उठे उत्ताल,
होयो नाको कुण्ठित, ताले तार दियो ताल—जय-जय जयगान गाइयो ।
हाँइ मारो, मारो टान हाँइयो ।।

१९२९

५२

तोमार आसन शून्य आजि हे वीर, पूर्ण करो—
ओइ-ये देखि वसुन्धरा काँपल थरोथरो ।
बाजल तूर्य आकाशपथे— सूर्य आसेन अग्निरथे,
एइ प्रभाते दखिन हाते विजयखड़्ग धरो ।।
धर्म तोमार सहाय, तोमार सहाय विश्ववाणी ।
अमर वीर्य सहाय तोमार, सहाय वज्रपाणि ।
दुर्गम पथ सगौरवे तोमार चरणचिह्न लबे ।
चित्ते अभय वर्म, तोमार वक्षे ताहाइ परो ।।

१९२९

न कहो कि 'जायँ या नहीं जायँ'; **संशय......बाइरे**—संशय का सागर अन्तर में पार करोगे, उद्विग्न हो कर बाहर न देखना; **माते**—मत्त हो जाय; **झड़े......उत्ताल**—तूफ़ान में लुण्ठित हो, उत्ताल तरंगें उठें; **होयो......ताल**—कातर न होना, उसके ताल पर ताल देना; **गाइयो**—गाना ।

५२. **तोमार......करो**—हे वीर, आज अपना शून्य आसन पूर्ण करो; **ओइ ये**—वह जो; **देखि**—देखता हूँ; **काँपल**—काँपी; **थरोथरो**—थरथर; **बाजल**—बजी; **तूर्य**—तुरही; **आसेन**—आते हैं; **एइ**—इस; **दखिन हाते**—दाहिने हाथ में; **लबे**—लेगा, ग्रहण करेगा; **ताहाइ**—उसे ही; **परो**—पहनो ।

५३

प्रलयनाचन नाचले यखन आपन भुले
हे नटराज, जटार बाँधन पड़ल खुले ।।
जाह्नवी ताइ मुक्त धाराय उन्मादिनी दिशा हाराय,
संगीते तार तरङ्गदल उठल दुले ।।
रविर आलो साड़ा दिल आकाश-पारे,
शुनिये दिल अभयवाणी घर-छाड़ारे ।
आपन स्रोते आपनि माते, साथि हल आपन-साथे,
सब-हारा ये सब पेल तार कूले कूले ।।

१९२९

५४

मरुविजयेर केतन उड़ाओ शून्ये हे प्रबल प्राण ।
धूलिरे धन्य करो करुणार पुण्ये हे कोमल प्राण ।।
मौनी माटिर मर्मेर गान कबे उठिबे ध्वनिया मर्मर तव रवे,
माधुरी भरिबे फुले फले पल्लवे हे मोहन प्राण ।।

५३. **प्रलय......भुले**—अपने को भूल जब तुमने प्रलय-नाच नाचा; **जटार......खुले**—जटा का बंधन खुल पड़ा; **ताइ**—इसीलिये; **हाराय**—खोती है; **संगीते**—संगीत में; **तार**—उसके; **उठल दुले**—दोलायमान हो उठा; **रविर ......पारे**—आकाश के पार सूर्य के प्रकाश ने अपने अस्तित्व की सूचना दी; **शुनिये......छाड़ारे**—गृहत्याग करने वाली (जाह्नवी) को (उसने) अभयवाणी सुना दी; **आपन......पारे**—अपने स्रोत में आप ही मत्त होती है; **साथि......साथे** —अपना साथी आप ही हुई; **सब.....कूले**—सब कुछ गँवा देने वाली ने अपने किनारे-किनारे सब कुछ पाया ।

५४. **मरु.....प्राण**—हे शक्तिशाली प्राण, शून्य (आकाश) में मरु (भूमि)-विजय की ध्वजा उड़ाओ; **धूलिरे**—धूलि को; **मौनी......रवे**—मौन मिट्टी के मर्म (अन्तर) का गान कब तुम्हारी मर्मर ध्वनि में ध्वनित हो उठेगा; **माधुरी**

पथिकबन्धु, छायार आसन पाति एसो श्यामसुन्दर।
एसो वातासेर अधीर खेलार साथि, माताओ नीलाम्बर।
उषाय जागाओ शाखाय गानेर आशा, सन्ध्याय आनो विरामगभीर भाषा
रचि दाओ राते सुप्त गीतेर बासा हे उदार प्राण ।।

१९२९

५५

कृष्णकलि आमि तारेइ बलि, कालो तारे बले गाँयेर लोक।
मेघला दिने देखेछिलेम माठे कालो मेयेर कालो हरिण-चोख।
घोमटा माथाय छिल ना तार मोटे, मुक्तवेणी पिठेर 'परे लोटे।
कालो ? ता से यतइ कालो होक, देखेछि तार कालो हरिण-चोख ।।

घन मेघे आँधार हल देखे डाकतेछिल श्यामल दुटि गाइ,
श्यामा मेये व्यस्त व्याकुल पदे कुटिर हते त्रस्त एल ताइ।
आकाश-पाने हानि युगल भुरु शुनले बारेक मेघेर गुरुगुरु।
कालो ? ता से यतइ कालो होक, देखेछि तार कालो हरिण-चोख ।।

भरिबे—माधुर्य भरोगे; **छायार......पाति**—छाया का आसन बिछा कर; **एसो**—आओ; **वातासेर......साथि**—हवा के अधीर (चंचल) खेल के साथी; **माताओ**—मत्त कर दो; **उषाय......आशा**—भोरवेला शाखाओं में गान की आशा जागरित करो; **सन्ध्याय**—सन्ध्याकाल में; **आनो**—लाओ; **रचि......बासा**—रात में सुप्त गीतों के आवास की रचना कर दो।

५५. **कृष्णकलि......बलि**—कृष्णकली मैं उसे ही कहता हूँ; **कालो......लोक**—गाँव के लोग उसे काली कहते हैं; **मेघला......चोख**—बरसात के दिन मैदान में (उस) काली लड़की की हरिणी-जैसी काली आँखें (मैंने) देखी थीं; **घोमटा......लोटे**—उसके सिर पर घूंघट बिल्कुल ही नहीं था, (उसकी) खुली वेणी पीठ पर लोट रही थी; **कालो......चोख**—काली? चाहे वह जितनी ही काली (क्यों न) हो, मैंने उसकी हरिणी-जैसी काली आँखें देखी हैं।

घन......गाइ—सघन मेघों से अँधेरा हुआ देख दो श्यामल गायें रँभा रही थीं; **श्यामा......ताइ**—इसीलिये (वह) साँवली लड़की चंचल व्याकुल पैरों से त्रस्त हो कर झोपड़ी से बाहर आई; **आकाश......गुरु**—आकाश की ओर दोनों भौंहों से आघात कर मेघ की गुरुगुरु आवाज को उसने एक बार सुना।

पुबे वातास एल हठात् धेये, धानेर खेते खेलिये गेल ढेउ ।
आलेर धारे दाँड़ियेछिलेम एका, माठेर माझे आर छिल ना केउ ।
आमार पाने देखले किना चेये आमि जानि आर जाने सेइ मेये ।
कालो ? ता से यतइ कालो होक, देखेछि तार कालो हरिण-चोख ।।

एमनि करे कालो काजल मेघ ज्येष्ठ मासे आसे ईशान कोणे ।
एमनि करे कालो कोमल छाया आषाढ़ मासे नामे तमालवने ।
एमनि करे श्रावण-रजनीते हठात् खुशि घनिये आसे चिते ।।
कालो ? ता से यतइ कालो होक, देखेछि तार कालो हरिण-चोख ।।

कृष्णकलि आमि तारेइ बलि, आर या बले बलुक अन्य लोक ।
देखेछिलेम मयनापाड़ार माठे कालो मेयेर कालो हरिण-चोख ।
माथार 'परे देय नि तुले वास, लज्जा पाबार पाय नि अवकाश ।
कालो ? ता से यतइ कालो होक, देखेछि तार कालो हरिण-चोख ।।
१९३१

पुबे......ढेउ—पुरवैया हवा हठात् दौड़ी आई (और) धान के खेत में लहरें खिला गई; **आलेर......केउ**—मेंड़ के किनारे (मैं) अकेला खड़ा था, खेत में और कोई न था; **आमार......मेये**—मेरी ओर देखा या नहीं, (इसे) मैं जानता हूँ और जानती है वह लड़की ।

एमनि......कोणे—जेठ के महीने में ईशान कोण में काजल की तरह काले मेघ इसी तरह आते हैं; **एमनि......वने**—इसी तरह काली कोमल छाया आषाढ़ के महीने में तमाल वन में उतरती है; **एमनि......चिते**—इसी तरह सावन की रात में हठात् चित्त में खुशी सघन हो उठती है ।

आर......लोक—दूसरे लोग और जो चाहें, कहें; **देखेछिलेम**—देखा था; **मयनापाड़ार माठे**—मयनापाड़ा (एक काल्पनिक स्थान का नाम) के मैदान में; **माथार......अवकाश**—सिर पर (उसने) वस्त्र नहीं खींच लिया, (उसने) लज्जित होने का अवसर ही नहीं पाया ।

५६

तुमि कि केवलि छवि, शुधु पटे लिखा।
ओइ-ये सुदूर नीहारिका
यारा करे आछे भिड़ आकाशेर नीड़,
ओइ यारा दिनरात्रि
आलो हाते चलियाछे आँधारेर यात्री ग्रह तारा रवि,
तुमि कि तादेर मतो सत्य नओ।
हाय छवि, तुमि शुधु छवि?
नयन-समुखे तुमि नाइ,
नयनेर माझखाने नियेछ ये ठाँइ— आजि ताइ
श्यामले श्यामल तुमि, नीलिमाय नील।
आमार निखिल तोमाते पेयेछे तार अन्तरेर मिल।
नाहि जानि, केह नाहि जाने—
तव सुर बाजे मोर गाने,
कविर अन्तरे तुमि कवि—
नओ छवि, नओ छवि, नओ शुधु छवि।।

१९३१

५६. **तुमि......लिखा**—तुम क्या सिर्फ़ तस्वीर हो, केवल चित्रपट पर अंकित; **ओइ-ये**—वह जो; **नीहारिका**—छायापथ, आकाशगंगा; **यारा..... भिड़**—जिन्होंने भीड़ लगा रखी है; **ओइ**—वे; **यारा**—जो सब; **आलो...... यात्रा**—अंधकार के यात्री हाथ में दीप (लिए) चले जा रहे हैं; **तुमि...... नओ**—तुम क्या उनलोगों जैसी सत्य नहीं हो; **नयन......नाइ**—नयनों के सामने तुम नहीं हो; **नयनेर.....ठाँइ**—नयनों के भीतर तुमने घर जो कर लिया है; **आजि.....नील**—इसीलिये आज तुम श्यामलता में श्यामल और नीलिमा में नील हो; **आमार......मिल**—मेरे संसार ने तुममें अपने अन्तर का साम्य पाया है; **नाहि......जाने**—(मैं) नहीं जानता, कोई नहीं जानता; **बाजे**—ध्वनित होता है; **मोर**—मेरे; **गाने**—गान में; **कविर......कवि**—कवि के अन्तर में तुम कवि हो; **नओ**—नहीं हो।

५७

हे आकाशविहारी नीरदवाहन जल,
आछिल शैलशिखरे-शिखरे तोमार लीलास्थल ।।
तुमि बरने बरने किरणे किरणे प्राते सन्ध्याय अरुणे हिरणे
दियेछ भासाये पवने पवने स्वपनतरणीदल ।।
शेषे श्यामल माटिर प्रेमे तुमि भुले एसेछिले नेमे,
कबे बाँधा पड़े गेले येखाने धरार गभीर तिमिरतल ।
आज पाषाणदुयार दियेछि टुटिया, कत युग परे एसेछ छुटिया ।
नील आकाशेर हारानो स्वपन गानेते समुच्छल ।।

१९३२

५८

प्राङ्गणे मोर शिरीषशाखाय फागुन मासे
की उच्छ्वासे
क्लान्तिविहीन फुल-फुटानोर खेला ।
क्षान्तकूजन शान्तविजन सन्ध्यावेला
प्रत्यह सेइ फुल्ल शिरीष प्रश्न शुधाय आमाय देखि,
'एसेछे कि ।'

५७. **आछिल**—था; **बरने बरने**—रंग-रंग में; **हिरणे**—सुनहले रंग में; **दियेछ......दल**—सपने की नावों का दल पवन-पवन में तिरा दिया है; **शेषे......नेमे**—अन्त में श्यामल मिट्टी के प्रेम में भूल कर तुम उतर आए थे; **कबे.....तल**—जहाँ पृथ्वी का गभीर अंधकारतल है (वहाँ) जाने-कब बँध गए; **आज......टुटिया**—आज (मैंने) पाषाण के द्वार को तोड़ दिया है; **कत......छुटिया**—कितने युगों के बाद तुम दौड़े आए हो; **नील.....समुच्छल**—नील आकाश का खोया हुआ स्वप्न गान में उद्वेलित है।

५८. **प्राङ्गणे मोर**—मेरे आँगन में; **शिरीषशाखाय**—शिरीष की शाखाओं पर; **फुल....खेला**—फूल खिलाने का खेल; **क्षान्त**—विरत; **प्रत्यह.....कि**—प्रति दिन वही खिला हुआ शिरीष मुझे देख कर प्रश्न पूछता है (वह) 'आया है क्या';

आर बछरेइ एमनि दिनेइ फागुन मासे
की उच्छ्वासे
नाचेर मातन लागल शिरीष-डाले
स्वर्गपुरेर कोन् नूपुरेर ताले ।
प्रत्यह सेइ चञ्चल प्राण शुधियेछिल, 'शुनाओ देखि,
आसे नि कि ।'

आबार कखन एमनि दिनेइ फागुन मासे
की आश्वासे
डालगुलि तार रइबे श्रवण पेते
अलख जनेर चरण-शब्दे मेते ।
प्रत्यह तार मर्मरस्वर बलबे आमाय की विश्वासे,
'से कि आसे ।'

प्रश्न जानाइ पुष्पविभोर फागुन मासे
की आश्वासे,
'हाय गो, आमार भाग्य-रातेर तारा,
निमेष-गणन हय नि कि मोर सारा ।'

आर......ताले—गत वर्ष ऐसे ही दिन फाल्गुन मास में स्वर्गपुरी के किस नूपुर के ताल पर कितने उच्छ्वास से शिरीष की डालों में नाच का नशा लगा; **सेइ**—उसी; **शुधियेछिल**—पूछा था; **शुनाओ......कि**—कहो तो सही, क्या (वह) नहीं आया; **आबार कखन**—फिर कब; **डालगुलि तार**—उसकी डालियाँ; **रइबे......पेते**—कान लगाए रहेंगी; **शब्दे मेते**—शब्द से मत्त हो कर; **बलबे**—कहेगा; **आमाय**—मुझसे; **से.....आसे**—भला वह क्या आता है; **प्रश्न......मासे**—पुष्पों से विह्वल फाल्गुन मास में किस भरोसे प्रश्न पूछता हूँ; **आमार......तारा**—मेरी भाग्य-रात्रि के तारा; **निमेष......सारा**—मेरा क्षणों का

प्रत्यह बय प्राङ्गणमय वनेर वातास
एलोमेलो—
'से कि एल।'

१९३३

५९

तोमाय साजाब यतने कुसुमरतने
केयूरे कंकणे कुङ्कुमे चन्दने।
कुन्तले वेष्टिब स्वर्णजालिका, कण्ठे दोलाइब मुक्तामालिका,
सीमन्ते सिन्दूर अरुण विन्दुर— चरण रञ्जिब अलक्त-अङ्कने।
सखीरे साजाब सखार प्रेमे अलक्ष्य प्राणेर अमूल्य हेमे।
साजाब सकरुण विरहवेदनाय, साजाब अक्षय मिलनसाधनाय—
मधुर लज्जा रचिब सज्जा युगल प्राणेर वाणीर बन्धने।।
१९३४

६०

ओ भाइ कानाइ, कारे जानाइ दुःसह मोर दुःख।
तिनटे-चारटे पाश करेछि, नइ नितान्त मुक्ख।।

गिनना क्या समाप्त नहीं हुआ; **प्रत्यह......एलोमेलो**—प्रति दिन समस्त प्राङ्गण में वन की अस्तव्यस्त हवा बहती है; **से......एल**—वह क्या आ गया।

५९. **तोमाय......कुसुम रतने**—कुसुम-रत्नों से यत्न पूर्वक तुम्हें सजाऊँगा (तुम्हारा शृंगार करूँगा); **केयूरे**—बाजूबन्द से; **कुन्तले......जालिका**—सोने की जाली से कुन्तल (केशों) को वेष्टित करूँगा; **कण्ठे......मालिका**—मोतियों की माला कण्ठ में झुलाऊँगा; **रञ्जिब**—रँगूंगा; **अलक्त**—अलक्तक, महावर; **अंकने**—चित्रण से; **सखीरे......प्रेमे**—सखा के प्रेम से सखी का शृंगार करूँगा; **अलक्ष्य**—अगोचर; **हेमे**—सोने से; **विरहवेदनाय**—विरह की वेदना से; **रचिब**—रचूंगा।

६०. **ओ......दुःख**—ओ भाई कन्हाई, अपना दुःसह दुःख किसे जताऊँ; **तिनटे......मुक्ख**—तीन-चार (परीक्षाएँ) पास की हैं, एकदम मूर्ख नहीं हूँ;

तुच्छ सा-रे-गा-मा'य आमाय गलद्घर्म घामाय।
बुद्धि आमार येमनि होक कान दुटो नय सूक्ष्म—
एइ बड़ो मोर दुःख कानाइ रे,
एइ बड़ो मोर दुःख ।।
बान्धवीके गान शोनाते डाकते हय सतीशके,
हृदयखाना घुरे मरे ग्रचामोफोनेर डिस्के।
कण्ठखानार जोर आछे ताइ लुकिये गाइते भरसा ना पाइ—
स्वयं प्रिया बलेन, तोमार गला बड़ोइ रुक्ष—
एइ बड़ो मोर दुःख कानाइ रे,
एइ बड़ो मोर दुःख ।।

१९३५

६१

पाये पड़ि शोनो भाइ गाइये,
मोदेर पाड़ार थोड़ा दूर दिये याइये ।।
हेथा सा रे गा मा-गुलि सदाइ करे चुलोचुलि
कड़ि कोमल कोथा गेछे तलाइये ।।

आमाय—मुझे; **गलद्......घामाय**—पसीने-पसीने कर देता है; **बुद्धि......सूक्ष्म**—बुद्धि मेरी जैसी भी हो, दोनों कान (बेशक) सूक्ष्म नहीं हैं; **एइ.....रे**—कन्हाई, मुझे यही बड़ा दुःख है; **बान्धवीके......सतीशके**—बान्धवी को गान सुनाने के लिये सतीश को बुलाना पड़ता है; **हृदयखाना......डिस्के**—ग्रामोफोन के डिस्क पर (मेरा) हृदय चक्कर खाता मरता है; **कण्ठखानार......पाइ**—गले में ज़ोर है, इसीलिये छिप कर गाने का साहस नहीं होता; **बलेन**—कहती हैं; **तोमार......रुक्ष**—तुम्हारा गला बड़ा ही रूखा है।

६१. **पाये......गाइये**—भाई गायक, सुनो, (तुम्हारे) पैरों पड़ता हूँ; **मोदेर......याइये**—हमलोगों के मुहल्ले से थोड़ा दूर हट कर जाइए; **हेथा......चुलोचुलि**—यहाँ सा-रे-ग-म आदि बराबर ही तुमुल झगड़ा करते हैं; **कड़ि......तलाइये**— तीव्र-कोमल कहाँ नीचे चले गए हैं (दब गए हैं);

हेथा आछे ताल-काटा बाजिये—
बाधाबे से काजिये।
चौताले धामारे
के कोथाय घा मारे—
तेरे-केटे मेरे-केटे धाँ-धाँ-धाँइये ।।

१९३५

६२

बँधु कोन् आलो लागल चोखे !
बुझि दीप्तिरूपे छिले सूर्यलोके !
छिल मन तोमारि प्रतीक्षा करि
युगे युगे दिन रात्रि धरि,
छिल मर्मवेदनाघन अन्धकारे—
जन्म-जनम गेल विरहशोके।
अस्फुटमञ्जरी कुञ्जवने
संगीतशून्य विषण्ण मने
सङ्गीरिक्त चिरदु:खराति
पोहाबे कि निर्जने शयन पाति !
सुन्दर हे, सुन्दर हे,
वरमाल्यखानि तव आनी बहे।

हेथा—यहाँ; **आछे**—है; **ताल-काटा**—ताल भंग करने वाला; **बाजिये**—बजाने वाला; **बाधाबे......काजिये**—वह विवाद आरंभ कर देगा; **धामारे**—धमार (एक तालविशेष) में; **के......मारे**—कौन कहाँ प्रहार कर बैठेगा।

६२. **बँधु**—बन्धु; **कोन्**—कौन-सा; **आलो**—प्रकाश; **लागल**—लगा; **चोखे**—आँखों में; **बुझि**—संभवत:; **छिले**—थे; **छिल**—था; **तोमारि...... करि**—तुम्हारी ही प्रतीक्षा करता; **गेल**—बीत गये; **पोहाबे......पाति**—क्या सूने में सेज बिछाए (रात्रि) बीतेगी; **वरमाल्य......बहे**—अपनी

अवगुण्ठनछाया घुचाये दिये
हेरो लज्जित स्मित मुख शुभ आलोके ।।

१९३६

६३

मायावनविहारिणी हरिणी
गहनस्वपनसञ्चारिणी,
केन तारे धरिबारे करि पण
अकारण ।
थाक् थाक् निज-मने दूरेते,
आमि शुधु बाँशरिर सुरेते
परश करिब ओर प्राणमन
अकारण ।

१९३६

६४

ओगो डेको ना मोरे डेको ना ।
आमार काजभोला मन, आछे दूरे कोन्—
करे स्वपनेर साधना ।
धरा देबे ना अधरा छाया,
रचि गेछे मने मोहिनी माया—

वरमाला वहन कर लाओ; **घुचाये दिये**—दूर कर; **हेरो**—निहारो, देखो।

६३. **केन......अकारण**—अकारण क्यों उसे पकड़ने का संकल्प करता हूँ; **थाक्......दूरेते**—अपने में (लीन) दूर-दूर ही रहे; **आमि......मन**—मैं केवल बाँसुरी के सुर में उसके प्राणमन का स्पर्श करूँगा।

६४. **डेको......मोरे**—मुझे पुकारो मत; **आमार**—मेरा; **काजभोला**—काम-काज को भूला हुआ; **आछे.....कोन्**—किस दूर पर है; **करे.....साधना**—सपनों की मनुहार करता है; **धरा.....छाया**—न पकड़ाई देने वाली छाया पकड़ाई नहीं देगी; **रचि......मने**—मन में सृष्टि कर गया है;

जानि ना ए की देवतारि दया,
जानि ना ए की छलना।
आँधार अङ्गने प्रदीप ज्वालि नि,
दग्ध काननेर आमि ये मालिनी,
शून्य हाते आमि काङालिनी
करि निशिदिनयापना॥
यदि से आसे तार चरणछाये
वेदना आमार दिब बिछाये,
जानाब ताहारे अश्रुसिक्त
रिक्त जीवनेर कामना॥

१९३७

६५

भाङो बाँध भेङे दाओ, बाँध भेङे दाओ, बाँध भेङे दाओ।
बन्दी प्राण मन होक उधाओ॥
शुकनो गाङे आसुक
जीवनेर वन्यार उद्दाम कौतुक—
भाङनेर जयगान गाओ॥

जानि......दया—नहीं जानती, यह क्या देवता की ही दया है; **जानि.....छलना**—नहीं जानती, यह क्या छलना (प्रवञ्चना) है; **आँधार.......नि**—अँधेरे आँगन में (मैंने) दीपक नहीं जलाया; **दग्ध......मालिनी**—जले हुए उपवन की मैं मालिनी जो हूँ; **शून्य.....यापना**—मैं रिक्ता शून्य हाथों रात-दिन यापन कर रही हूँ; **यदि......बिछाये**—अगर वह आए तो उसके चरणों की छाया में अपनी व्यथा बिछा दूँगी; **जानाब......कामना**—आँसुओं से गीले (अपने) रीते जीवन की कामना उसे जताऊँगी।

६५. **भाङो**—तोड़ो; **बाँध......दाओ**—बाँध तोड़ दो; **होक**—हो; **उधाओ**—प्रधावित; **शुकनो......कौतुक**—सूखे नद में जीवन की वन्या का उद्दाम

जीर्ण पुरातन याक भेसे याक,
याक भेसे याक, याक भेसे याक।
आमरा शुनेछि ओइ मा भैः मा भैः मा भैः
कोन् नूतनेरइ डाक।
भय करि ना अजानारे,
रुद्ध ताहारि द्वारे दुर्दाड़ वेगे धाओ।।

१९३८

६६

आमरा नूतन यौवनेरइ दूत।
आमरा चञ्चल, आमरा अद्भुत।
आमरा बेड़ा भाङि,
आमरा अशोकवनेर राङा नेशाय राङि।
झञ्झार बन्धन छिन्न करे दिइ— आमरा विद्युत्।।
आमरा करि भुल—
अगाध जले झाँप दिये युझिये पाइ कूल।
येखाने डाक पड़े जीवन-मरण-झड़े
आमरा प्रस्तुत।

१९३८

कौतुक आवे; **भाङनेर**—तोड़ने का (विनाश का); **भेसे याक**—बह जाय; **आमरा......मा भैः**—हम लोगों ने किसी नवीन की ही वह 'मा भैः मा भैः मा भैः' पुकार सुनी है; **भय......अजानारे**—अज्ञात से भय नहीं करते; **रुद्ध.......द्वारे**—उसीके रुद्ध (बन्द) दरवाज़े की ओर; **दुर्दाड़......धाओ**—दुर्दान्त वेग से दौड़ो।

६६. **आमरा......दूत**—हम लोग नवीन यौवन के ही दूत हैं; **आमरा...... भाङि**—हम लोग बाड़ को तोड़ते हैं; **आमरा......राङि**—हम लोग अशोकवन के लाल नशे में रंजित होते हैं; **झञ्झार......दिइ**—तूफ़ान के बन्धन को (हम लोग) छिन्न-भिन्न कर देते हैं; **आमरा......भुल**—हम लोग भूल करते हैं; **अगाध...... कूल**—अगाध जल में कूद जूझते हुए किनारा पाते हैं; **येखाने......प्रस्तुत**—जीवन-मरण की आँधी में, जहाँ (भी हमारी) पुकार होती है, हम लोग प्रस्तुत रहते हैं।

६७

समुखे शान्तिपारावार—
भासाओ तरणी, हे कर्णधार।
तुमि हबे चिरसाथि, लओ लओ हे क्रोड़ पाति—
असीमेर पथे ज्वलिबे ज्योति ध्रुवतारकार।
मुक्तिदाता तोमार क्षमा, तोमार दया,
हबे चिरपाथेय चिरयात्रार।
हय येन मर्तेर बन्धन क्षय, विराट विश्व बाहु मेलि लय—
पाय अन्तरे निर्भय परिचय महा-अजानार॥

१९३९

६८

ओइ महामानव आसे।
दिके दिके रोमाञ्च लागे मर्तधूलिर घासे घासे।
सुरलोके बेजे ओठे शङ्ख, नरलोके बाजे जयडङ्क—
एल महाजन्मेर लग्न।
आजि अमारात्रिर दुर्गतोरण यत धूलितले हये गेल भग्न।

६७. **समुखे**......**पारावार**—सामने शान्ति का सागर है; **भासाओ**—तिराओ; **तुमि**.....**पाति**—तुम चिरसाथी होगे, गोद फैला कर (मुझे) ग्रहण करो; **असीमेर**.......**ध्रुवतारकार**—ध्रुवतारा की ज्योति असीम के पथ में जलेगी; **तोमार**—तुम्हारी; **हबे**.......**यात्रार**—चिर-यात्रा का चिर-पाथेय (रास्ते का संबल) होगी; **हय**......**क्षय**—ऐसा हो कि मृत्युलोक के बन्धन विनष्ट हो जायँ; **मेलि लय**—पसार कर ले; **पाय**—पावे; **अजानार**—अज्ञात का।

६८. **ओइ**......**आसे**—वह (देखो) महामानव आता है; **दिके**......**लागे**—दिशा-दिशा में रोमाञ्च का संचार होता है; **मर्त**—पृथ्वी; **बेजे**......**शङ्ख**—शंख बज उठता है; **बाजे**—बजता है; **जयडङ्क**—विजयडंका; **एल**.......**लग्न**—महाजन्म का लग्न आया है; **आजि**.......**भग्न**—आज अमावस्या की रात्रि के दुर्ग के सभी तोरण धूलि-तले टूक-टूक हो गए;

उदयशिखरे जागे 'माभैः माभैः' नवजीवनेर आश्वासे ।
'जय जय जय रे मानव-अभ्युदय' मन्द्रि उठिल महाकाशे ।।

१९४०

६९

हे नूतन,
देखा दिक आर-बार जन्मेर प्रथम शुभक्षण ।
तोमार प्रकाश होक कुहेलिका करि उद्घाटन
सूर्येर मतन ।
रिक्ततार वक्ष भेदि आपनारे करो उन्मोचन ।
व्यक्त होक जीवनेर जय,
व्यक्त होक तोमा-माझे असीमेर चिरविस्मय ।
उदयदिगन्ते शङ्ख बाजे, मोर चित्त-माझे
चिरनूतनेरे दिल डाक
पँचिशे वैशाख ।।

१९४१

उदयशिखरे—उदयशिखर पर, उदयाचल के शिखर पर; **जागे**—जाग उठता है; **मा भैः**—'भय मत करो'; **मन्द्रि उठिल**—मन्द्रित हो उठा।

६९. **देखा......क्षण**—जन्म का प्रथम शुभक्षण फिर से दर्शन दे; **तोमार ......मतन**—कुहेलिका (कुहासे) को उद्घाटित कर सूर्य के समान तुम प्रकट होओ; **रिक्ततार.....उन्मोचन**—रिक्तता की छाती को भेद कर अपने को उन्मुक्त करो; **होक**—हो; **तोमा-माझे**—तुम्हारे भीतर; **मोर**—मेरे; **चिर...... वैशाख**—पच्चीसवें वैशाख (रवीन्द्रनाथ की जन्म-तिथि) ने चिरनवीन का आह्वान किया है।

स्वदेश

१

एक सूत्रे बाँधियाछि सहस्रटि मन,
एक कार्ये सँपियाछि सहस्र जीवन—
वन्दे मातरम् ।।
आसुक सहस्र बाधा, बाधुक प्रलय,
आमरा सहस्र प्राण रहिब निर्भय—
वन्दे मातरम् ।।

आमरा डराइब ना झटिका-झञ्झाय,
अयुत तरङ्ग वक्षे सहिब हेलाय ।
टुटे तो टुटुक एइ नश्वर जीवन,
तबु ना छिँड़िबे कभु ए दृढ़ बन्धन—
वन्दे मातरम् ।।

१८७७

२

तोमारि तरे मा, सँपिनु देह। तोमारि तरे मा, सँपिनु प्राण ।
तोमारि शोके ए आँखि बरषिबे, ए वीणा तोमारि गाहिबे गान ।

१. **एक......मन**—एक सूत्र में (हमने) सहस्रों मन बाँधे हैं; **एक...... जीवन**—एक कार्य में (हमने) सहस्रों जीवन सौंपे हैं; **आसुक**—आवें; **बाधुक प्रलय**—प्रलय मच जाय; **रहिब**—रहेंगे; **आमरा......झञ्झाय**—हमलोग आँधी-तूफान से नहीं डरेंगे; **अयुत......हेलाय**—हजारों तरंगों को अवहेला के साथ छाती पर सहेंगे; **अयुत**—दस सहस्र; **टुटे......जीवन**—यह नश्वर जीवन टूटे तो टूटे; **तबु......बन्धन**—तोभी यह दृढ़ बन्धन कभी नहीं टूटेगा ।

२. **तोमारि.....देह**—तुम्हारे ही लिये, माँ, (मैंने) देह सौंपी है; **तोमारि..... बरषिबे**—तुम्हारे ही शोक में ये आँखें बरसेंगी; **ए**—यह; **गाहिबे**—गाएगी;

यदिओ ए बाहु अक्षम दुर्बल, तोमारि कार्य साधिबे।
यदिओ ए असि कलङ्के मलिन, तोमारि पाश नाशिबे।
यदिओ हे देवी, शोणिते आमार किछुइ तोमार हबे ना,
तबु ओगो माता, पारि ता ढालिते एकतिल तव कलङ्क क्षालिते,
निभाते तोमार यातना।
यदिओ जननी, यदिओ आमार ए वीणाय किछु नाहिक बल,
की जानि यदि मा, एकटि सन्तान जागि उठे शुनि ए वीणा-तान ।।

१८७७

३

आगे चल्, आगे चल्, भाइ।
पड़े थाका पिछे, मरे थाका मिछे,
बेँचे मरे किवा फल, भाइ।
आगे चल्, आगे चल्, भाइ ।।
प्रति निमेषेइ येतेछे समय,
दिन क्षण चेये थाका किछु नय—
'समय समय' क'रे पाँजि पुँथि ध'रे
समय कोथा पाबि, बल् भाइ।
आगे चल्, आगे चल्, भाइ ।।

यदिओ—यद्यपि; **तोमारि......साधिबे**—तुम्हारा ही कार्य साधन करेंगे; **पाश**—बन्धन; **नाशिबे**—नष्ट करेंगे; **शोणिते......ना**—मेरे रक्त से तुम्हारा कुछ भी न होगा (तुम्हारा कोई भी काम पूरा न होगा); **तबु**—तौभी; **पारि.......ढालिते**—उसे उँड़ेल सकता हूँ; **एकतिल......क्षालिते**—तुम्हारा तिल-भर कलंक धोने के लिये; **निभाते**—(यातनारूपी आग) बुझाने के लिये; **यदिओ......बल**—यद्यपि, हे जननी, मेरी इस वीणा में कुछ भी बल नहीं; **की......तान**—क्या जानें, माँ, कहीं एक भी सन्तान इस वीणा की तान को सुन कर जाग उठे।

३. **आगे चल्**—आगे बढ़ चल; **भाइ**—भाई; **पड़े......मिछे**—पीछे पड़े रहना व्यर्थ मरते रहना है; **बेँचे....भाइ**—भाई, बचने-मरने का क्या फल है; **प्रति......समय**—प्रति क्षण समय जा ही रहा है; **दिन......नय**—दिन-पल देखते रहना (भली-बुरी साइत गिनते रहना) कुछ नहीं बेमतलब है; **समय....ध'रे**—पंजिका-पोथी लिए 'समय समय' करते; **समय.....भाइ**—बोलो भाई, समय कहाँ पाओगे।

पिछाये ये आछे तारे डेके नाओ
    निये याओ साथे करे—
केह नाहि आसे, एका चले याओ
    महत्त्वेर पथ धरे।
पिछु हते डाके मायार काँदन,
छिँड़े चले याओ मोहेर बाँधन
साधिते हइबे प्राणेर साधन,
    मिछे नयनेर जल, भाइ।
    आगे चल्, आगे चल्, भाइ॥

चिरदिन आछि भिखारिर मतो
    जगतेर पथपाशे—
यारा चले याय कृपाचक्षे चाय,
    पदधुला उड़े आसे।
धूलिशय्या छाड़ि उठो सबे,
मानवेर साथे योग दिते हबे—
ता यदि ना पार चेये देखो तबे,
    ओइ आछे रसातल, भाइ
    आगे चल्, आगे चल् भाइ॥

१८८७

पिछाये......नाओ—जो पिछड़ गया है, उसे पुकार लो; **निये......करे**—साथ लेते जाओ; **केह.....धरे**—(अगर) कोई नहीं आवे, महत्त्व का रास्ता पकड़ अकेले चले जाओ; **पिछे......काँदन**—पीछे से माया-ममता का क्रन्दन पुकारता है; **छिँड़े......बाँधन**—मोह के बंधन छिन्न कर चले जाओ; **साधिते.....साधन**—प्राणों की साधना साधनी होगी; **मिछे......जल**—आँखों के आँसू व्यर्थ हैं।

चिरदिन......पथपाशे—संसार के रास्ते के किनारे (हम) चिरदिन भिखारी के समान हैं; **यारा.....चाय**—जो निकल जाता है (वह) दया की दृष्टि से ही देखता है; **पदधुला......आसे**—पैरों की धूलि ही उड़ कर आती है; **छाड़ि**—छोड़ कर; **मानवेर......हबे**—मानव के साथ योग देना होगा; **ता......तबे**—अगर वैसा न कर सको, तब देखो; **ओइ......रसातल**—वह रहा रसातल।

४

आमरा मिलेछि आज मायेर डाके।
घरेर हये परेर मतन भाइ छेड़े भाइ कदिन थाके ।।
प्राणेर माझे थेके थेके आय ब'ले ओइ डेकेछे के,
सेइ गभीर स्वरे उदास करे— आर के कारे धरे राखे ।।
येथाय थाकि येखाने बाँधन आछे प्राणे प्राणे,
प्राणेर टाने टेने आने— सेइ प्राणेर वेदन जाने ना के ।।
मान अपमान गेछे घुचे, नयनेर जल गेछे मुछे—
नवीन आशे हृदय भासे भाइयेर पाशे भाइके देखे ।।
कत दिनेर साधनफले मिलेछि आज दले दले—
आज घरेर छेले सबाइ मिले देखा दिये आय रे माके ।।

१८८८

५

आमाय बोलो ना गाहिते बोलो ना ।
ए कि शुधु हासि खेला, प्रमोदेर मेला, शुधु मिछेकथा छलना ।।

४. **आमरा......डाके**—हम लोग आज माँ की पुकार पर मिले हैं (एकत्र हुए हैं); **घरेर......थाके**—घर का हो कर पराये की तरह भाई को छोड़ भाई भला कितने दिन रह सकता है; **प्राणेर......के**—प्राणों के भीतर रह-रह कर 'आ' कह कर वह किसने पुकारा है; **सेइ......राखे**—वह गभीर स्वर उदासीन कर देता है, अब और कौन किसे पकड़कर रखे; **येथाय......प्राणे**—(हम) जहाँ रहते हैं, जहाँ प्राण-प्राण में बन्धन है; **प्राणेर......के**—प्राणों का आकर्षण (वहीं) खींच लाता है—प्राणों (के आकर्षण) की उस वेदना (व्याकुलता) को भला कौन नहीं जानता; **गेछे घुचे**—लुप्त हो गए हैं; **नयनेर......मुछे**—आँखों का पानी सूख गया है; **नवीन......देखे**—भाई की बग़ल में भाई को देख कर नवीन आशा में हृदय बहा जाता है; **कत......दले**—कितने दिनों की साधना के फल से आज दल के दल (हम लोग) मिले हैं (एकत्र हुए हैं); **आज......माके**—आज घर के सभी लड़के मिल कर माँ से मिल आओ।

५. **आमाय......गाहिते**—मुझसे मत कहो गाने के लिये; **एकि......छलना**—यह क्या केवल हँसी-खुशी का खेल है, आमोद-प्रमोद का मेला है, केवल मिथ्या,

ए ये नयनेर जल, हताशेर श्वास, कलङ्केर कथा, दरिद्रेर आश,
ए ये बुक-फाटा दुखे गुमरिछे बुके गभीर मरमवेदना।
ए कि शुधु हासि खेला, प्रमोदेर मेला, शुधु मिछेकथा छलना।।
एसेछि कि हेथा यशेर काङालि कथा गेँथे गेँथे निते करतालि—
मिछे कथा कये, मिछे यश लये, मिछे काजे निशियापना।
के जागिबे आज, के करिबे काज, के घुचाते चाहे जननीर लाज—
कातरे काँदिबे, मायेर पाये दिबे सकल प्राणेर कामना।
ए कि शुधु हासि खेला, प्रमोदेर मेला, शुधु मिछेकथा छलना।।
१८९२

६

आनन्दध्वनि जागाओ गगने।
के आछ जागिया पुरबे चाहिया,
बलो 'उठ उठ' सघने गभीरनिद्रामगने।।
हेरो तिमिररजनी याय ओइ, हासे उषा नव ज्योतिर्मयी—
नव आनन्दे, नव जीवने,
फुल्ल कुसुमे, मधुर पवने, विहगकलकूजने।।
हेरो आशार आलोके जागे शुकतारा उदय-अचलपथे,
किरणकिरीटे तरुण तपन उठिछे अरुणरथे।

(केवल) छलना है; **ए......आश**—यह तो आँखों के आँसू, निराश की श्वास, कलंक की बात और दरिद्र की आशा है; **बुक......वेदना**—छाती फाड़ने वाले दुःख से गभीर मर्म वेदना छाती में उफन रही है; **एसेछि......काङालि**—यहाँ क्या यश का भिखारी बन कर आया हूँ; **कथा......करतालि**—बातें गूँथ-गूँथ वाहवाही लेने; **मिछे......कये**—मिथ्या बातें बना कर; **मिछे......लये**—मिथ्या यश ले कर; **मिछे काजे**—व्यर्थ कामों में; **के......काज**—आज कौन जागेगा, कौन कार्य करेगा; **के......लाज**—कौन दूर करना चाहता है जननी की लज्जा; **कातरे.....कामना**—(कौन) कातर हो कर क्रन्दन करेगा, माँ के पैरों में प्राणों की सभी कामनाएँ (न्योछावर कर) देगा।

६. **जागाओ**—जगाओ; **के......चाहिया**—पूर्व की ओर ताकते हुए (तुम) कौन जाग रहे हो; **बलो**—बोलो; **उठ**—उठो; **हेरो**—देखो; **याय**—जा रही है; **ओइ**—वह; **हासे**—हँसती है; **तपन**—सूर्य; **उठिछे**—उठ रहा है;

चलो याइ काजे मानवसमाजे, चलो बाहिरिया जगतेर माझे—
थेको ना मगन शयने, थेको ना मगन स्वपने ।।
याय लाज त्रास, आलस विलास कुहक मोह याय।
ओइ दूर हय शोक संशय दुःख स्वपनप्राय।
फेलो जीर्ण चीर, पर नव साज, आरम्भ करो जीवनेर काज—
सरल सबल आनन्दमने, अमल अटल जीवने ।।
१८९२

७

अयि भुवनमनोमोहिनी,
अयि निर्मलसूर्यकरोज्ज्वल धरणी जनकजननीजननी ।।
नील-सिन्धुजल-धौत-चरणतल, अनिल-विकम्पित-श्यामल-अञ्चल,
अम्बर-चुम्बित-भाल-हिमाचल, शुभ्र-तुषार-किरीटिनी ।।
प्रथम प्रभात उदय तव गगने, प्रथम सामरव तव तपोवने,
प्रथम प्रचारित तव वनभवने ज्ञानधर्म कत काव्यकाहिनी।
चिरकल्याणमयी तुमि धन्य, देशविदेशे वितरिछ अन्न—
जाह्नवीयमुना विगलित करुणा पुण्यपीयूषस्तन्यवाहिनी ।।
१८९६

८

के एसे याय फिरे फिरे आकुल नयननीरे।
के वृथा आशाभरे चाहिछे मुख-'परे।
से ये आमार जननी रे ।।

याइ—(हम) जायँ; **बाहिरिया**—बाहर होकर; **थेको......शयने**—निद्रा में मग्न न रहो; **स्वपने**—स्वप्न में; **याय**—जा रहे हैं; **हय**—हो रहे हैं; **स्वपनप्राय**—स्वप्न के समान; **फेलो**—फेंको; **पर**—पहनो।

७. **कत**—कितने; **वितरिछ**—वितरण कर रही हो।

८. **के.....फिरे**—कौन आकर लौट-लौट जाती है; **चाहिछे**—निहार रही है; **मुख'परे**—मुख पर; **से......रे**—वह तो मेरी जननी है।

काहार सुधामयी वाणी मिलाय अनादर मानि।
काहार भाषा हाय भुलिते सबे चाय।
से ये आमार जननी रे।।
क्षणेक स्नेह-कोल छाड़ि चिनिते आर नाहि पारि।
आपन सन्तान करिछे अपमान—
से ये आमार जननी रे।।
पुण्य कुटिरे विषण्ण के बसि साजाइया अन्न।
से स्नेह-उपहार रुचे ना मुखे आर—
से ये आमार जननी रे।।

१९००

९

जननीर द्वारे आजि ओइ शुन गो शङ्ख बाजे।
थेको ना थेको ना ओरे भाइ, मगन मिथ्या काजे।।
अर्घ्य भरिया आनि धरो गो पूजार थालि,
रतनप्रदीपखानि यतने आनो गो ज्वालि,
भरि लये पाणि बहि आनो फुलडालि,
मार आह्वानवाणी रटाओ भुवन-माझे।।

काहार—किसकी; **मिलाय......मानि**—अपमान बोध कर विलीन हो जाती है; **भुलिते......चाय**—सभी भूलना चाहते हैं।

कोल—गोद; **छाड़ि**—छोड़ने पर; **चिनिते......पारि**—और नहीं पहचान पाते; **आपन.....अपमान**—अपनी ही सन्तान (जिसका) अपमान कर रही है।

कुटिरे—झोपड़ी में; **के......अन्न**—कौन अन्न सँजो कर बैठी है; **से**—वह; **रुचे......आर**—मुंह में और नहीं रुचता (अच्छा लगता)।

९. **जननीर......बाजे**—जननी के द्वार पर आज, वह सुनो, शंख बज रहा है; **थेको ना**—मत रहो; **मगन**—मग्न; **भरिया**—भर कर; **आनि धरो**—ला कर रखो; **थालि**—थाली; **यतने**—यत्न पूर्वक; **ज्वालि**—जला कर; **भरि......डालि**—दोनों हाथ भर कर फूल की डाली ले आओ; **मार**—माँ की;

आजि प्रसन्न पवने नवीन जीवन छुटिछे।
आजि प्रफुल्ल कुसुमे नव सुगन्ध उठिछे।
आजि उज्ज्वल भाले तोलो उन्नत माथा,
नव संगीतताले गाओ गम्भीर गाथा।
परो माल्य कपाले नवपल्लव-गाँथा,
शुभ सुन्दर काले साजो साजो नव साजे।।

१९०३

१०

हे भारत, आजि तोमारि सभाय शुन ए कविर गान।
तोमार चरणे नवीन हरषे एनेछि पूजार दान।
एनेछि मोदेर देहेर शकति, एनेछि मोदेर मनेर भकति,
एनेछि मोदेर धर्मेर मति, एनेछि मोदेर प्राण।
एनेछि मोदेर श्रेष्ठ अर्घ्य तोमारे करिते दान।।

काञ्चन-थालि नाहि आमादेर, अन्न नाहिको जुटे।
या आछे मोदेर एनेछि साजाये नवीन पर्णपुटे।
समारोहे आज नाइ प्रयोजन— दीनेर ए पूजा, दीन आयोजन—
चिरदारिद्र्य करिब मोचन चरणेर धुला लुटे।
सुरदुर्लभ तोमार प्रसाद लइब पर्णपुटे।।

रटाओ भुवन-माझे—संसार में प्रचारित कर दो; **छुटिछे**—दौड़ रहा है; **परो**—पहनो; **काले**—समय में।

१०. **आजि......गान**—आज अपनी सभा में इस कवि का गान सुनो; **एनेछि**—लाया हूँ; **मोदेर**—अपनी; **देहेर शकति**—देह की शक्ति; **भकति**—भक्ति; **तोमारे......दान**—तुम्हें अर्पित करने के लिये।

नाहि—नहीं है; **आमादेर**—हम लोगों के पास; **अन्न......जुटे**—अन्न नहीं जुटता; **या......साजाये**—जो हमलोगों के पास है, सँजो कर ले आए हैं; **समारोहे**—समारोह (धूमधाम) का; **नाइ**—नहीं है; **ए**—यह; **करिब**—करेंगे; **चरणेर......लुटे**—चरणों की धूलि को लूट कर; **लइब**—लेंगे।

राजा तुमि नह, हे महातापस, तुमिइ प्राणेर प्रिय।
भिक्षाभूषण फेलिया परिब तोमारि उत्तरीय।
दैन्येर माझे आछे तव धन, मौनेर माझे रयेछे गोपन
तोमार मन्त्र अग्निवचन— ताइ आमादेर दियो।
परेर सज्जा फेलिया परिब तोमारि उत्तरीय।।

दाओ आमादेर अभयमन्त्र, अशोकमन्त्र तव।
दाओ आमादेर अमृतमन्त्र, दाओ गो जीवन नव।
ये जीवन छिल तव तपोवने, ये जीवन छिल तव राजासने,
मुक्त दीप्त से महाजीवने चित्त भरिया लब।
मृत्युतरण शङ्काहरण दाओ से मन्त्र तव।।

१९०३

११

आमार सोनार बांला, आमि तोमाय भालोबासि।
चिरदिन तोमार आकाश, तोमार वातास, आमार प्राणे बाजाय बाँशि।।
ओ मा, फागुने तोर आमेर वने घ्राणे पागल करे,
मरि हाय, हाय रे—
ओ मा, अघ्राने तोर भरा खेते की देखेछि मधुर हासि।।

नइ—नहीं हो; **तुमिइ**—तुम्हीं; **फेलिया**—फेंक कर; **परिब**—पहनेंगे; **तोमारि**—तुम्हारा ही; **आछे**—है; **ताइ......दियो**—वही हम लोगों को देना; **परेर**—दूसरे की।

दाओ—दो; **ये**—जो; **छिल**—था; **से**—उस; **भरिया लब**—भर लूँगा।

११. **आमार**—मेरी; **सोनार बांला**—सोने की वंगभूमि, ('बांला' को 'बांग्ला' पढ़ा जाता है); **आमि......भालोबासि**—मैं तुम्हें प्यार करता हूँ; **तोमार**—तुम्हारा; **वातास**—हवा; **आमार......बाँशि**—मेरे प्राणों में बाँसुरी बजाते हैं; **मा**—मां; **फागुने......करे**—फाल्गुन में तेरे आम के वन की गंध पागल करती है; **मरि**—(सौन्दर्य आदि के दर्शन से विस्मय आदि का सूचक अव्यय) बलिहारी है! **अघ्राने**—अगहन में, मार्गशीर्ष में; **तोर......हासि**—तेरे भरे हुए खेतों में (मैंने) कैसी मधुर हँसी देखी है।

की शोभा, की छाया गो, की स्नेह, की माया गो—
की आँचल बिछायेछ वटेर मूले, नदीर कूले कूले।
मा, तोर मुखेर वाणी आमार काने लागे सुधार मतो,
मरि हाय, हाय रे—
मा, तोर वदनखानि मलिन हले आमि नयनजले भासि।
तोमार एइ खेलाघरे शिशुकाल काटिल रे,
तोमारि धुलामाटि अङ्गे माखि धन्य जीवन मानि।
तुइ दिन फुराले सन्ध्याकाले की दीप ज्वालिस घरे,
मरि हाय, हाय रे—
तखन खेलाधुला सकल फेले तोमार कोले छुटे आसि।।
धेनु-चरा तोमार माठे, पारे याबार खेयाघाटे,
सारादिन पाखि-डाका छायाय-ढाका तोमार पल्लीबाटे,
तोमार धाने-भरा आङिनाते जीवनेर दिन काटे,
मरि हाय, हाय रे—
ओ मा, आमार ये भाइ तारा सबाइ तोमार राखाल तोमार चाषि।।

बिछायेछ—बिछाया है; **तोर......मतो**—तेरे मुख की वाणी मेरे कानों को अमृत के समान लगती है। **तोर......भासि**—तेरा चेहरा उदास होने पर मैं आँखों के जल में बह जाता हूँ; **तोमार......रे**—तुम्हारे इस क्रीड़ागृह में बचपन बीता; **तोमारि......मानि**—तुम्हारी ही धूल-मिट्टी शरीर में मल (अपने) जीवन को धन्य मानता हूँ; **तुइ......घरे**—दिन बीतने पर सन्ध्या के समय घर में तू कैसा दीप जलाती है!

तखन......आसि—उस समय सब खेल-कूद छोड़ कर तुम्हारी गोद में दौड़ आता हूँ; **धेनु......माठे**—तुम्हारे मैदान में गायें चरती हैं; **पारे......घाटे**—पार जाने के खेवा-घाट पर; **सारा......बाटे**—समस्त दिन पक्षियों से कूजित, छाया से ढके तुम्हारे गाँवों के रास्ते पर; **तोमार......काटे**—तुम्हारे धान से भरे आँगन में जीवन के दिन कटते हैं; **आमार......चाषि**—तुम्हारे चरवाहे, तुम्हारे किसान—वे सभी मेरे भाई जो हैं।

ओ मा, तोर चरणेते दिलेम एइ माथा पेते—
दे गो तोर पायेर धूला, से ये आमार माथार मानिक हबे
ओ मा, गरिबेर धन या आछे ताइ दिब चरणतले,
मरि हाय, हाय रे—
आमि परेर घरे किनब ना आर भूषण ब'ले गलार फाँसि ।।

१९०५

१२

एबार तोर मरा गाङे बान एसेछे, 'जय मा' ब'ले भासा तरी ।।
ओरे रे ओरे माझि, कोथाय माझि, प्राणपणे भाइ, डाक दे आजि—
तोरा सबाइ मिले बैठा ने रे, खुले फेल् सब दड़ादड़ि ।।
दिने दिने बाड़ल देना, ओ भाइ, करलि ने केउ बेचा केना—
हाते नाइ रे कड़ा कड़ि ।
घाटे बाँधा दिन गेल रे, मुख देखाबि केमन क'रे—
ओरे दे खुले दे, पाल तुले दे, या हय हबे बाँचि मरि ।।

१९०५

तोर......पेते—तुम्हारे चरणों में (मैंने) यह सिर झुका दिया है; **दे......धुला**—अपने पैरों की धूल दे; **से......हबे**—वह मेरे सिर का माणिक्य होगी; **गरिबेर......तले**—गरीब का जो धन है वही (तुम्हारे) चरणों में दूंगा; **आमि......फाँसि**—मैं दूसरे के घर गले की फाँसी को आभूषण मान कर नहीं खरीदूंगा।

१२. **एबार......तरी**—इस बार तुम्हारे मरे हुए नद में वन्या (बाढ़) आई है, 'जय माँ' कह कर नौका तिरा दे; **माझि**—माँझी, मल्लाह; **कोथाय**—कहाँ है; **डाक......आजि**—आज हांक लगा; **तोरा......रे**—तुम सभी मिल कर डाँड़ सँभालो; **खुले......दड़ि**—सब रस्सा-रस्सी खोल डालो; **दिने......देना**—दिन-दिन देना (ऋण) बढ़ा; **करलि......केना**—किसीने बेंचना-खरीदना नहीं किया; **हाते......कड़ि**—हाथ में एक कौड़ी भी नहीं है; **घाटे......रे**—घाट पर बँधे-बँधे दिन चला गया; **मुख......क'रे**—मुख कैसे दिखाओगे; **पाल.....दे**—पाल चढ़ा दे; **या......मरि**—जो होना है हो, बचें या मरें।

१३

ओ आमार देशेर माटि, तोमार 'परे ठेकाइ माथा।
तोमाते विश्वमयीर, तोमाते विश्वमायेर आँचल पाता।।
तुमि मिशेछ मोर देहेर सने,
तुमि मिलेछ मोर प्राणे मने,
तोमार ओइ श्यामलबरन कोमल मूर्ति मर्मे गाँथा।।
तोमार कोले जनम आमार, मरण तोमार बुके।
तोमार 'परेइ खेला आमार दुःखे सुखे।
तुमि अन्न मुखे तुले दिले,
तुमि शीतल जले जुड़ाइले,
तुमि ये सकल-सहा सकल-वहा मातार माता।।
अनेक तोमार खेयेछि गो, अनेक नियेछि मा—
तबु जानि ना-ये की वा तोमाय दियेछि मा।
आमार जनम गेल मिछे काजे,
आमि काटानु दिन घरेर माझे—
तुमि वृथा आमाय शक्ति दिले शक्तिदाता।।

१९०५

---

१३. **ओ......माथा**—ओ मेरे देश की मिट्टी, तुम पर मस्तक टिकाता हूँ; **तोमाते**—तुम में; **पाता**—फैला हुआ है; **तुमि......सने**—तुम मेरी देह में घुली-मिली हो; **तुमि......मने**—तुम मेरे मन-प्राण में समाई हो; **तोमार...... गाँथा**—तुम्हारी वही श्यामवर्ण कोमल मूर्ति अन्तरतम में गुँथी हुई है; **तोमार......बुके**—तुम्हारी गोद में मेरा जन्म हुआ है, तुम्हारी छाती पर मेरी मृत्यु होगी; **तोमार......सुखे**—सुख, दुःख में तुम्हारे ऊपर ही मेरी क्रीड़ा होगी; **तुमि......दिले**—तुमने मुँह में अन्न दिया; **तुमि......जुड़ाइले**—तुमने शीतल जल से जुड़ा दिया (शीतल किया); **तुमि......माता**—तुम सब सहने वाली, सब वहन करने वाली, माता की माता जो हो; **अनेक......मा**—माँ, बहुत तुम्हारा खाया है, बहुत (तुम्हारा) लिया है; **तबु......दियेछि**—इतना होने पर भी यह नहीं जानता कि भला तुम्हें क्या दिया है; **आमार......काजे**—व्यर्थ के कामों में मेरा जन्म गया; **आमि......माझे**—मैंने घर (ही) के भीतर दिन काट दिया; **आमाय**—मुझे; **शक्ति दिले**—शक्ति दी।

१४

ओदेर बाँधन यतइ शक्त ह्बे ततइ बाँधन टुटबे,

मोदेर ततइ बाँधन टुटबे।

ओदेर यतइ आँखि रक्त ह्बे मोदेर आँखि फुटबे,

ततइ मोदेर आँखि फुटबे॥

आजके ये तोर काज करा चाइ, स्वप्न देखार समय तो नाइ—

एखन ओरा यतइ गर्जाबे भाइ, तन्द्रा ततइ छुटबे,

मोदेर तन्द्रा ततइ छुटबे॥

ओरा भाङ्ते यतइ चाबे जोरे गड़बे ततइ द्विगुण करे,

ओरा यतइ रागे मारबे रे घा ततइ ये ढेउ उठबे॥

तोरा भरसा ना छाड़िस कभु, जेगे आछेन जगत्प्रभु—

ओरा धर्म यतइ दलबे ततइ धुलाय ध्वजा लुटबे,

ओदेर धुलाय ध्वजा लुटबे॥

१९०५

१५

तोर आपन जने छाड़बे तोरे,

ता ब'ले भावना करा चलबे ना।

१४. **ओदेर......टुटबे**—उन लोगों का बन्धन जितना ही सख्त होगा, बन्धन उतना ही टूटेंगे; **मोदेर**—हम लोगों के; **ओदेरे.......फुटबे**—उन लोगों की आँखें जितनी ही लाल होंगी, उतनी ही (हम लोगों की) आँखें खुलेंगी; **आजके......नाइ**—आज तो तुम्हें काम करना चाहिए, स्वप्न देखने का तो समय नहीं है; **एखन......छुटबे**—भाई, इस समय वे जितना ही गरजेंगे, उतनी ही (हम लोगों की) तन्द्रा छूटेगी; **ओरा......करे**—वे जितना ही ज़ोर से तोड़ना (विनष्ट करना) चाहेंगे, उतना ही दुगुना हो कर निर्माण होगा; **ओरा......उठबे**—क्रोध कर वे जितना ही प्रहार करेंगे, उतने ही हिलोरे उठेंगे; **तोरा......प्रभु**—तुम लोग कभी भरोसा न छोड़ना, संसार के मालिक जाग रहे हैं; **ओरा.....लुटबे**—वे जितना ही धर्म को दलेंगे, उतना ही (उनकी) ध्वजा धूल में लोटेगी।

१५. **तोर......ना**—तेरे स्वजन तुझे छोड़ देंगे, इस कारण चिन्ता करने

ओ तोर आशालता पड़बे छिँड़े,
हयतो रे फल फलबे ना ।।
आसबे पथे आँधार नेमे, ताइ ब'लेइ कि रइबि थेमे—
ओ तुइ बारे बारे ज्वालबि बाति,
हयतो बाति ज्वलबे ना ।।
शुने तोमार मुखेर वाणी आसबे घिरे वनेर प्राणी—
हयतो तोमार आपन घरे
पाषाण हिया गलबे ना ।।
बद्ध दुयार देखलि ब'ले अमनि कि तुइ आसबि चले—
तोरे बारे बारे ठेलते हबे,
हयतो दुयार टलबे ना ।।

१९०५

१६

विधिर बाँधन काटबे तुमि एमन शक्तिमान—
तुमि कि एमनि शक्तिमान।
आमादेर भाङागड़ा तोमार हाते एमन अभिमान—
तोमादेर एमनि अभिमान ।।

से तो नहीं चलेगा; **तोर......ना**—तेरी आशालता टूट कर गिर जाएगी, हो सकता है कि (उस में) फल न फले; **आसबे......थेमे**—रास्ते में अन्धकार उतर आएगा, तो क्या इसीलिये (तू) रुक रहेगा; **ओ......ना**—ओ, तू बार-बार बत्ती जलाएगा, हो सकता है, बत्ती न जले; **शुने......प्राणी**—तुहारे मुख की वाणी सुन कर वन के प्राणी (तुम्हें) आ घेरेंगे; **हयतो......ना**—हो सकता है, तुम्हारे अपने घर में पत्थर के हृदय न गलें; **बद्ध......चले**—दरवाज़ा बन्द देखा, इसीलिये क्या तू वैसे ही चला आएगा; **तोरे......ना**—तुझे बार-बार ठेलना होगा, (फिर भी) हो सकता है दरवाज़ा न टले।

१६. **विधिर.....शक्तिमान**—विधि के बन्धन को काटोगे, (क्या) तुम ऐसे शक्तिमान हो; **कि**—क्या; **एमनि**—ऐसे ही; **आमादेर......अभिमान**—हम लोगों का विनाश और निर्माण तुम्हारे हाथों में है, ऐसा (तुम्हें) अभिमान है;

चिरदिन टानबे पिछे, चिरदिन राखबे नीचे—
एत बल नाइ रे तोमार, सबे ना सेइ टान।।
शासने यतइ घेर' आछे बल दुर्बलेरओ,
हओ-ना यतइ बड़ो आछेन भगवान।
आमादेर शक्ति मेरे तोराओ बाँचबि ने रे,
बोझा तोर भारी हलेइ डुबबे तरीखान।।

१९०५

१७

बुक बेँधे तुइ दाँड़ा देखि, बारे बारे हेलिस ने भाइ।
शुधु तुइ भेबे भेबेइ हातेर लक्ष्मी ठेलिस ने भाइ।।
एकटा किछु करे ने ठिक, भेसे फेरा मरार अधिक—
बारेक ए दिक बारेक ओ दिक, ए खेला आर खेलिस ने भाइ।
मेले कि ना मेले रतन करते तबु हबे यतन—
ना यदि हय मनेर मतन चोखेर जलटा फेलिस ने भाइ।

तोमादेर—तुम लोगों को; **टानबे पिछे**—पीछे खींचोगे; **राखबे नीचे**—नीचे रखोगे; **एत......तोमार**—इतना बल तुममें नहीं है; **सबे......टान**—वह खिंचाव सहा नहीं जाएगा; **शासने......दुर्बलेरओ**—शासन से चाहे जितना ही घेरो, दुर्बल के भी बल है; **हओ......भगवान्**—(तुम) चाहे जितने बड़े क्यों न होओ, भगवान् विद्यमान हैं; **आमादेर......ने**—हम लोगों की शक्ति को मार (विनष्ट) कर तुम सब भी नहीं बचोगे; **बोझा.......तरीखान**—बोझ तेरा भारी होते ही (तेरी) नौका डूब जाएगी।

१७. **बुक.....भाइ**—छाती तान कर तू खड़ा तो हो, देखें; बार-बार झुक मत, भाई; **शुधु......भाइ**—केवल सोच-सोच कर ही हाथ की लक्ष्मी को न ठेल, भाई; **एकटा......अधिक**—कुछ-न-कुछ तय कर ले, बहते फिरना मरने से भी अधिक है; **बारेक......भाइ**—एक बार इस ओर, एक बार उस ओर, यह खेल और न खेल, भाई; **मेले......यतन**—रत्न मिले या न मिले, तौ भी यत्न तो करना ही होगा; **ना......भाइ**—यदि मन के अनुरूप न हो तो आँखों से जल

भासाते हय भासा भेला,   करिस ने आर हेलाफेला—
पेरिये यखन याबे वेला   तखन आँखि मेलिस ने भाइ ।।

१९०५

१८

यदि तोर   डाक शुने केउ ना आसे   तबे   एकला चलो रे ।
एकला चलो, एकला चलो, एकला चलो रे ।।
यदि   केउ कथा ना कय,   ओरे ओरे   ओ   अभागा,
यदि   सबाइ थाके मुख फिराये,   सबाइ करे भय—
तबे   परान खुले
ओ तुइ   मुख फुटे तोर मनेर कथा   एकला बलो रे ।।
यदि   सबाइ फिरे याय,   ओरे ओरे ओ अभागा,
यदि   गहन पथे याबार काले केउ फिरे ना चाय—
तबे   पथेर काँटा
ओ तुइ   रक्तमाखा चरणतले   एकला दलो रे ।।
यदि   आलो ना धरे,   ओरे ओरे ओ अभागा,
यदि   झड़बादले आँधार राते   दुयार देय घरे—

न बहाना, भाई; **भासाते......हेलाफेला**—अगर तिराना ही हो तो तिरा (अपना) बेड़ा, (अब) और अवहेला न कर; **पेरिये......भाइ**—जब वेला पार हो जाएगी (बीत जाएगी) तब आँखें न खोलना, भाई।

१८. **यदि.....रे**—यदि तेरी पुकार सुन कोई न आवे तो अकेले चलो; **एकला**—अकेले; **यदि.......कय**—यदि कोई बात न बोले; **यदि......भय**—यदि सभी मुख फिराए रहें, सभी भय करें; **तबे......रे**—तब प्राण खोल कर, (साहस से) मुँह खोल अपने मन की बात अकेला ही कह; **यदि.....याय**—यदि सभी लौट जायें; **यदि.....चाय**—यदि दुर्गम पथ पर जाते समय कोई फिर कर न ताके; **तबे.....रे**—तब पथ के काँटों को लहूलुहान पैरों तले तुम अकेले रौंदो; **आलो.....धरे**—दीप (जलाए) न जले; **यदि.....घरे**—यदि आँधी-पानी में, अँधेरी रात में घर

तबे वज्रानले
आपन बुकेर पाँजर ज्वालिये निये एकला ज्वलो रे ।।
१९०५

१९

सार्थक जनम आमार जन्मेछि एइ देशे ।
सार्थक जनम मा गो, तोमाय भालोबेसे ।।
जानि ने तोर धन-रतन आछे कि ना रानीर मतन,
शुधु जानि आमार अङ्ग जुड़ाय तोमार छायाय एसे ।।
कोन् वनेते जानि ने फुल गन्धे एमन करे आकुल,
कोन् गगने ओठे रे चाँद एमन हासि हेसे ।
आँखि मेले तोमार आलो प्रथम आमार चोख जुड़ालो,
ओइ आलोतेइ नयन रेखे मुदब नयन शेषे ।।
१९०५

२०

आमरा सबाइ राजा आमादेर एइ राजार राजत्वे—
नइले मोदेर राजार सने मिलब की स्वत्वे ।

के दरवाज़े बन्द हो जायँ (सब लोग दरवाजा बन्द कर लें); **तबे.......रे**—तब वज्राग्नि से अपनी छाती के पंजर को प्रज्वलित कर अकेले ही जलते रहो ।

१९. **सार्थक.......देशे**—सार्थक है मेरा जन्म कि इस देश में जन्मा हूँ; **तोमाय भालोबेसे**—तुम्हें प्यार कर; **जानि......मतन**—नहीं जानता कि रानी के समान तुम्हारे धन-रत्न हैं या नहीं; **शुधु......एसे**—केवल (इतना ही) जानता हूँ, तुम्हारी छाया में आ कर मेरे अंग जुड़ा जाते हैं; **कोन्......आकुल**—नहीं जानता, किस वन में फूल गन्ध से इतना आकुल करते हैं; **कोन्......हेसे**—किस आकाश में ऐसी हँसी हँसता चाँद उदित होता है; **आँखि......जुड़ालो**—(मेरे) आँखें खोलते ही तुम्हारे प्रकाश ने पहले-पहल मेरी आँखों को शीतल किया; **ओइ......शेषे**—उसी प्रकाश में नयनों को निबद्ध कर अन्त में नयन मूँदूँगा ।

२०. **आमरा.....राजत्वे**—अपने इस राजा के राज में हम सभी राजा हैं; **नइले......स्वत्वे**—नहीं तो अपने राजा के सँग किस अधिकार से मिलेंगे; **आमरा**

आमरा   या खुशि ताइ करि,
तबु   ताँर खुशितेइ चरि,
आमरा नइ बाँधा नइ दासेर राजार त्रासेर दासत्वे—
नइले मोदेर राजार सने मिलब की स्वत्वे ।।
राजा   सबारे देन मान,
से मान   आपनि फिरे पान,
मोदेर खाटो क'रे राखे नि केउ कोनो असत्ये—
नइले मोदेर राजार सने मिलब की स्वत्वे ।।
आमरा   चलब आपन मते,
शेषे   मिलब ताँरि पथे,
मोरा मरब ना केउ विफलतार विषम आवर्ते—
नइले मोदेर राजार सने मिलब की स्वत्वे ।।

१९१०

२१

हे मोर चित्त, पुण्य तीर्थे जागो रे धीरे
एइ भारतेर महामानवेर सागरतीरे।
हेथाय दाँड़ाये दु बाहु बाड़ाये नमि नरदेवतारे,
उदार छन्दे परमानन्दे वन्दन करि ताँरे।

......**चरि**—हम लोग जो ख़ुशी वही करते हैं, फिर भी उनकी ख़ुशी के अनुसार ही विचरण करते हैं; **आमरा......बाँधा**—हम लोग बँधे नहीं हैं; **सबारे.....मान**—सब को सम्मान देते हैं; **से......पान**—वह सम्मान वे आप ही वापस पाते हैं; **मोदेर......असत्ये**—हम लोगों को किसी ने किसी असत्य से छोटा बना कर नहीं रखा; **आमरा......शेषे**—हम लोग अपने ही ढँग से चलेंगे; **मते......पथे**—अन्त में उन्हीं के पथ में मिलेंगे; **मोरा......आवर्ते**—विफलता के विषम आवर्त (भँवर) में हम लोग कोई नहीं मरेंगे।

२१. **मोर**—मेरे; **एइ......तीरे**—इस भारत के महामानव-सागर के तीर पर; **हेथाय......नर देवतारे**—यहाँ खड़े हो, दोनों बाँहें बढ़ा कर नर-देवता को नमस्कार करता हूँ; **उदार......ताँरे**—उदार छन्दों में, परम आनन्द से उन्हीं

ध्यानगम्भीर एइ ये भूधर, नदी-जपमाला-धृत-प्रान्तर,
हेथाय नित्य हेरो पवित्र धरित्रीरे—
एइ भारतेर महामानवेर सागरतीरे ।।
केह नाहि जाने कार आह्वाने कत मानुषेर धारा
दुर्वार स्रोते एल कोथा हते, समुद्रे हल हारा ।
हेथाय आर्य, हेथा अनार्य, हेथाय द्राविड़ चीन—
शक-हूण-दल पाठान-मोगल एक देहे हल लीन ।।
पश्चिमे आजि खुलियाछे द्वार, सेथा हते सबे आने उपहार,
दिबे आर निबे, मिलाबे मिलिबे याबे ना फिरे—
एइ भारतेर महामानवेर सागरतीरे ।।
एसो हे आर्य, एसो अनार्य, हिन्दु-मुसलमान ।
एसो एसो आज तुमि इंराज, एसो एसो खृस्टान ।
एसो ब्राह्मण, शुचि करि मन धरो हात सबाकार ।
एसो हे पतित, होक अपनीत सब अपमानभार ।
मार अभिषेके एसो एसो त्वरा, मङ्गलघट हय नि ये भरा
सबार-परशे-पवित्र-करा तीर्थनीरे—
आजि भारतेर महामानवेर सागरतीरे ।।

१९१०

की वन्दना करता हूँ; **एइ ये**—यह जो; **धृत**—धारण किए हुए; **प्रान्तर**—तरुशून्य सुदूर पथ या मैदान; **हेथाय**—यहाँ; **हेरो**—दर्शन करो; **केह.....धारा**—कोई नहीं जानता, किसके आह्वान पर कितने मनुष्यों की धारा; **दुर्वार......हारा**—दुर्दमनीय स्रोत में कहाँ से आई (और इस) समुद्र में खो गई; **हेथा**—यहाँ; **पाठान**—पठान; **एक......लीन**—एक देह में लीन हो गए; **पश्चिमे......उपहार**—आज पश्चिम ने द्वार खोला है, वहाँ से सभी उपहार लाते हैं; **दिबे.....फिरे**—देंगे और लेंगे, विलीन करेंगे और विलीन हो जाएँगे, लौट कर नहीं जाएँगे; **एसो**—आओ; **इंराज** (इसका उच्चारण इंग्राज है)—अंग्रेज़; **खृस्टान**—ईसाई; **एसो.....सबाकार**—आओ ब्राह्मण, मन को पवित्र कर सब का हाथ पकड़ो; **होक......भार**—अपमान का सब भार दूर हो; **मार......त्वरा**—माँ के अभिषेक में शीघ्र आओ, आओ; **मङ्गल......भरा**—मंगलघट भरना जो नहीं हुआ; **सबार......नीरे**—सबके स्पर्श से पवित्र किए हुए तीर्थ-जल से ।

२२

जनगणमन-अधिनायक जय हे भारतभाग्यविधाता ।
पञ्जाब सिन्धु गुजराट मराठा द्राविड़ उत्कल वङ्ग
विन्ध्य हिमाचल यमुना गङ्गा उच्छल जलधितरङ्ग
तव शुभ नामे जागे, तव शुभ आशिस मागे,
गाहे तव जयगाथा ।
जनगणमङ्गलदायक जय हे भारतभाग्यविधाता ।
जय हे, जय हे, जय हे, जय जय जय, जय हे ॥
अहरह तव आह्वान प्रचारित, शुनि तव उदार वाणी
हिन्दु बौद्ध शिख जैन पारसिक मुसलमान खृस्टानी
पूरब पश्चिम आसे तव सिंहासन-पाशे,
प्रेमहार हय गाँथा ।
जनगण-ऐक्यविधायक जय हे भारतभाग्यविधाता ।
जय हे, जय हे, जय हे, जय जय जय, जय हे ॥
पतन-अभ्युदय-बन्धुर पन्था, युग-युग-धावित यात्री—
हे चिरसारथि, तव रथचक्रे मुखरित पथ दिनरात्रि ।
दारुण विप्लव-माझे तव शङ्खध्वनि बाजे
संकटदुःखत्राता ।
जनगणपथपरिचायक जय हे भारतभाग्यविधाता ।
जय हे, जय हे, जय हे, जय जय जय, जय हे ॥
घोर तिमिरघन निविड़ निशीथे पीड़ित मूर्छित देशे ।
जाग्रत छिल तव अविचल मङ्गल नतनयने अनिमेषे ।
दुःस्वप्ने आतङ्के रक्षा करिले अङ्के
स्नेहमयी तुमि माता ।

---

२२. **गुजराट**—गुजरात; **मागे**—माँगते हैं; **गाहे**—गाते हैं; **शुनि**—सुन कर; **शिख**–सिख; **पारसिक**—पारसी; **खृस्टानी**—ईसाई; **आसे**—आते हैं; **पाशे**—पार्श्व में; बगल में; **प्रेम......गाँथा**—प्रेमहार गूँथा जाता है; **पतन......पन्था**—पतन-उत्थान से ऊँचानीचा रास्ता; **छिल**—था; **रक्षा.....अंके**—अंक

जनगणदुःखत्रायक जय हे, भारतभाग्यविधाता।
जय हे, जय हे, जय हे, जय जय जय, जय हे ।।
रात्रि प्रभातिल, उदिल रविच्छवि पूर्व-उदयगिरिभाले,
गाहे विहङ्गम, पुण्य समीरण नवजीवनरस ढाले।
तव करुणारुणरागे निद्रित भारत जागे
तव चरणे नत माथा।
जय जय जय हे, जय राजेश्वर भारतभाग्यविधाता।
जय हे, जय हे, जय हे, जय जय जय, जय हे ।।

१९११

२३

आमादेर यात्रा हल शुरु, एखन ओगो कर्णधार,
तोमारे करि नमस्कार ।।
एखन वातास छुटुक, तुफान उठुक, फिरब ना गो आर—
तोमारे करि नमस्कार ।।
आमरा दिये तोमार जयध्वनि विपद बाधा नाहि गणि,
ओगो कर्णधार।
एखन मा भैः बलि भासाइ तरी, दाओ गो करि पार—
तोमारे करि नमस्कार ।।
एखन रइल यारा आपन घरे चाब ना पथ तादेर तरे,
ओगो कर्णधार।

में (तुमने) रक्षा की; **प्रभातिल**—प्रभात हुई; **उदिल**—उदित हुई; **गाहे**—गाते हैं।

२३. **आमादेर......शुरु**—हम लोगों की यात्रा शुरू हुई; **एखन**—अब, इस क्षण; **तोमारे......नमस्कार**—(हम) तुम्हें नमस्कार करते हैं; **एखन...... आर**—अब हवा वेग से बहे, तूफ़ान उठे, (हम) और नहीं लौटेंगे; **आमरा...... गणि**—तुम्हारी जयध्वनि कर हम लोग विपद-बाधा नहीं गिनते; **एखन.......पार** —इस समय 'मा भैः' (भय मत करो) कहते हुए नौका तिराएँ, अजी, (तुम) पार कर दो; **एखन......तरे**—इस समय जो अपने घर में रह गए हैं, उनके लिये (हम

यखन तोमार समय एल काछे तखन के वा कार—
तोमारे करि नमस्कार ।।
आमार के वा आपन, के वा अपर, कोथाय बाहिर, कोथा वा घर
ओगो कर्णधार ।
चेये तोमार मुखे मनेर सुखे नेब सकल भार—
तोमारे करि नमस्कार ।।
आमरा नियेछि दाँड़, तुलेछि पाल, तुमि एखन धरो गो हाल,
ओगो कर्णधार ।
मोदेर मरण बाँचन ढेउयेर नाचन, भावना की वा तार—
तोमारे करि नमस्कार ।।
आमरा सहाय खुँजे द्वारे द्वारे फिरब ना आर बारे बारे,
ओगो कर्णधार ।
केवल तुमिइ आछ आमरा आछि, एइ जेनेछि सार—
तोमारे करि नमस्कार ।।

१९१३

२४

मातृमन्दिर-पुण्य-अङ्गन कर' महोज्ज्वल आज हे,
वर —पुत्रसङ्घ विराज' हे ।
शुभ शङ्ख बाजह बाज' हे ।

लोग) रास्ता नहीं देखेंगे; **यखन......कार**—जब तुम्हारा मुहूर्त निकट आ गया, तब भला कौन किसका है; **आमार......घर**—मेरा ही कौन अपना है, कौन पराया है, कहाँ बाहर है, कहाँ घर है; **चेये......भार**—तुम्हारे मुख को देखता, मन की मौज में सब भार ले लूँगा; **आमरा......हाल**—हम लोगों ने डाँड़ सँभाल लिया है, पाल चढ़ा दिया है, अब तुम पतवार धरो; **मोदेर......तार**—हम लोगों का मरना-बचना, लहरों का नाचना है, भला उसकी क्या चिन्ता; **आमरा......बारे**—हम लोग अब बार-बार द्वार-द्वार सहारा खोजते नहीं फिरेंगे; **केवल......सार**—तुम हो, हम लोग हैं, केवल यही सार (मर्म) जाना है।

२४. **पुण्य**—पवित्र; **अङ्गन**—आँगन; **कर'**—करो; **बाजह**—बजाओ;

घन तिमिररात्रिर चिर प्रतीक्षा
पूर्ण कर', लह' ज्योतिदीक्षा,
यात्रिदल सब साज' हे।
शुभ शङ्ख बाजह बाज' हे।
बल' जय नरोत्तम, पुरुषसत्तम,
जय तपस्वीराज हे।
जय हे, जय हे, जय हे ।।
एस' वज्रमहासने मातृ-आशीर्भाषिणे,
सकल साधक एस' हे, धन्य कर' ए देश हे।
सकल योगी, सकल त्यागी, एस' दुःसहदुःखभागी—
एस' दुर्जयशक्तिसम्पद मुक्तबन्ध समाज हे।
एस' ज्ञानी, एस' कर्मी, नाश' भारत-लाज हे।
एस' मङ्गल, एस' गौरव,
एस' अक्षय-पुण्य-सौरभ,
एस' तेजःसूर्य उज्ज्वल कीर्ति-अम्बर-माझ हे।
वीरधर्मे पुण्यकर्मे विश्वहृदये राज' हे।
शुभ शङ्ख बाजह बाज' हे।
जय जय नरोत्तम, पुरुषसत्तम,
जय तपस्वीराज हे।
जय हे, जय हे, जय हे ।।

१९२१

२५

नाइ नाइ भय, हबे हबे जय, खुले याबे एइ द्वार—
जानि जानि तोर बन्धनडोर छिँड़े याबे बारे-बार ।।

बल'—बोलो; **एस'**—आओ; **नाश'**—नष्ट करो; **माझ**—में; **राज'**—विराजो।

२५. **नाइ......द्वार**—भय नहीं, भय नहीं, जय होगी, जय होगी, यह द्वार खुल जाएगा; **जानि......बार**—जानता हूँ, तेरे बन्धन की डोर बार-बार छिन्न

खने खने तुइ हाराये आपना सुप्तिनिशीथ करिस यापना—
बारे बारे तोरे फिरे पेते हबे विश्वेर अधिकार ।।
स्थले जले तोर आछे आह्वान, आह्वान लोकालये—
चिरदिन तुइ गाहिबि ये गान सुखे दुखे लाजे भये।
फुल पल्लव नदी निर्झर सुरे सुरे तोर मिलाइबे स्वर—
छन्दे ये तोर स्पन्दित हबे आलोक अन्धकार ।।

१९२५

२६

संकोचेर विह्वलता निजेरे अपमान,
संकटेर कल्पनाते होयो ना म्रियमाण।
मुक्त करो भय,
आपना-माझे शक्ति धरो, निजेरे करो जय ।।
दुर्बलेरे रक्षा करो, दुर्जनेरे हानो,
निजेरे दीन निःसहाय येन कभु ना जानो।
मुक्त करो भय,
निजेर 'परे करिते भर ना रेखो संशय ।।

होगी; **खने....यापना**—क्षण-क्षण अपने को खो कर तू नींद की रात्रि यापन कर रहा है; **बारे.....अधिकार**—बार-बार तुझे विश्व का अधिकार वापस पाना होगा; **स्थले.....लोकालये**—स्थल में, जल में तेरा आह्वान है, लोकालय (नगर, ग्राम आदि) में आह्वान है; **तुइ**—तू; **गाहिबि......गान**—गान गाएगा; **सुरे......स्वर**—तेरे प्रत्येक सुर में स्वर मिलाएँगे; **छन्दे**—छन्द में; **तोर**—तेरे; **हबे**—होंगे।

२६. **संकोचेर......अपमान**—संकोच की कातरता अपने को ही अपमानित करना है; **संकटेर......म्रियमाण**—संकट की कल्पना से मरणापन्न न होना; **मुक्त......भय**—भय से मुक्त हो; **आपना-माझे**—अपने भीतर; **दुर्बलेरे**—दुर्बल की; **हानो**—विनष्ट करो; **निजेरे......जानो**—ऐसा हो कि अपने को दीन और निःसहाय कभी न मानो; **निजेर......संशय**—अपने ऊपर निर्भर रहने में संदेह

धर्म यबे शङ्खरवे करिबे आह्वान
नीरव हये, नम्र हये, पण करियो प्राण।
मुक्त करो भय,
दुरूह काजे निजेरइ दियो कठिन परिचय।।

१९२९

२७

व्यर्थ प्राणेर आवर्जना पुड़िये फेले आगुन ज्वालो।
एकला रातेर अन्धकारे आमि चाइ पथेर आलो।।
दुन्दुभिते हल रे कार आघात शुरु,
बुकेर मध्ये उठल बेजे गुरुगुरु-
पालाय छुटे सुप्तिरातेर स्वप्ने-देखा मन्द भालो।।
निरुद्देशेर पथिक आमाय डाक दिले कि—
देखते तोमाय ना यदि पाइ नाइ वा देखि।
भितर थेके घुचिये दिले चाओया पाओया,
भावनाते मोर लागिये दिले झड़ेर हाओया,
वज्रशिखाय एक पलके मिलिये दिले सादा कालो।।

१९३३

न रखो; **यबे**—जब; **करिबे**—करेगा; **हये**—हो कर; **पण.....प्राण**—प्राणों की बाज़ी लगाना; **दुरूह.....परिचय**—कठिन काम में अपना ही कठिन परिचय देना।

२७. **व्यर्थ.......ज्वालो**—व्यर्थ-प्राणों की आवर्जना को दग्ध कर अग्नि जलाओ; **एकला......आलो**—एकाकिनी रात्रि के अन्धकार में मैं पथ का आलोक चाहता हूँ; **दुन्दुभिते......शुरू**—दुन्दुभी पर किसकी चोट शुरू हुई; **बुकेर...... गुरुगुरु**—हृदय के भीतर मेघ-मन्द्र ध्वनि बज उठी; **पालाय......भालो**—सुप्ति की रात्रि का स्वप्न में देखा हुआ बुरा-भला दौड़ कर भागता है; **निरुद्देशेर...... कि**—निरुद्देश्य के पथिक, क्या तुमने मुझे पुकारा; **देखते......देखि**—तुम्हें यदि न देख पाऊँ तो न सही; **भितर......पाओया**—भीतर से (तुमने) चाहना-पाना मिटा दिया; **भावनाते......हाओया**—मेरी चिन्ता में (तुमने) तूफ़ान की हवा लगा दी; **वज्रशिखाय**—वज्रशिखा में; **एक पलके**—पल-भर में, क्षण-भर में; **मिलिये......कालो**—उजले-काले को विलीन कर दिया।

२८

शुभ कर्मपथे धर' निर्भय गान।
सब दुर्बल संशय होक अवसान।।
चिर– शक्तिर निर्झर नित्य झरे
लह' से अभिषेक ललाट- 'परे।
तव जाग्रत निर्मल नूतन प्राण—
त्यागव्रते निक दीक्षा,
विघ्न हते निक शिक्षा—
निष्ठुर संकट दिक सम्मान।
दुःखइ होक तव वित्त महान।
चल' यात्री, चल' दिनरात्रि—
कर' अमृतलोक-पथ अनुसन्धान।
जड़तातामस हओ उत्तीर्ण,
क्लान्तिजाल कर' दीर्ण विदीर्ण—
दिन-अन्ते अपराजित चित्ते
मृत्युतरण तीर्थे कर' स्नान।।

१९३६

२९

ओरे, नूतन युगेर भोरे
दिस ने समय काटिये वृथा समय विचार करे।।
की रबे आर की रबे ना, की हबे आर की हबे ना,

२८. **धर'......गान**—निर्भय गान प्रारंभ करो; **होक**—हो; **लह'......'परे**—उस अभिषेक को ललाट पर लो(ग्रहण करो); **निक**—(तुम्हारे प्राण) लें (ग्रहण करें); **हते**—से; **निष्ठुर.......सम्मान**—कठिन संकट (तुम्हें) सम्मान दे; **दुःखइ**—दुःख ही; **चल'**—चलो; **कर'**—करो; **हओ**—होओ।

२९. **दिस......करे**—समय का विचार करते-करते व्यर्थ समय न काट दे (बिता दे); **की......हबे ना**—क्या रहेगा (और) क्या नहीं रहेगा, क्या

ओरे हिसाबि,
ए संशयेर माझे कि तोर भावना मिशाबि ।।
येमन करे झर्ना नामे दुर्गम पर्वते
निर्भावनाय झाँप दिये पड़् अजानितेर पथे ।
जागबे ततइ शक्ति यतइ हानबे तोरे माना,
अजानाके वश करे तुइ करवि आपन जाना ।
चलाय चलाय बाजबे जयेर भेरी—
पायेर वेगेइ पथ केटे याय, करिस ने आर देरि ।।

१९३८

होगा (और) क्या नहीं होगा; **हिसाबि**—हिसाबी; **ए......मिशाबि**—इस संशय के भीतर क्या अपनी दुश्चिन्ता को मिलाएगा; **येमन......पर्वते**—जैसे दुर्गम पर्वत से झरना उतरता है; **निर्भावनाय......पथे**—(वैसे ही) निश्चिन्त हो कर अज्ञात-पथ पर कूद जा; **जागबे......माना**—जितनी ही तुझे बाधा मिलेगी, उतनी ही (तेरी) शक्ति जागेगी; **अजानाके......जाना**—अज्ञात को वश में कर तू अपना ज्ञात (परिचित) बना लेगा; **चलाय......भेरी**—(तेरे) हर चलने में (पद-पद पर) जय-भेरी बजेगी; **पायेर......देरि**—पैरों के वेग से ही रास्ता कट जाता है, (अब) और देर न कर।

आनुष्ठानिक गान

१

एसो हे गृहदेवता।
ए भवन पुण्यप्रभावे करो पवित्र।।
विराजो जननी, सबार जीवन भरि—
देखाओ आदर्श महान चरित्र।।
शिखाओ करिते क्षमा, करो हे क्षमा,
जागाये राखो मने तव उपमा,
देहो धैर्य हृदये—
सुखे दुखे संकटे अटल चित्त।।
देखाओ रजनी-दिवा विमल विभा,
वितरो पुरजने शुभ्र प्रतिभा—
नव शोभाकिरणे
करो गृह सुन्दर रम्य विचित्र।।
सबे करो प्रेमदान पूरिया प्राण—
भुलाये राखो सखा, आत्माभिमान।
सब वैर हबे दूर
तोमारे वरण करि जीवनमित्र।।

१८९६

१. **एसो**—आओ; ('देवता' यहाँ संस्कृत के अनुसार स्त्रीलिंगवाचक भी है); **ए भवन**—इस गृह को; **सबार**—सब का; **भरि**—भर कर; **शिखाओ**—सिखाओ; **करिते क्षमा**—क्षमा करना; **जागाये......मने**—मन में जगा रखो; **उपमा**—दृष्टान्त; **देहो**—दो; **वितरो**—वितरण करो; **पूरिया**—पूर्ण कर; **हबे**—होगा; **तोमारे......करि**—तुम्हें वरण करके।

२

ये तरणीखानि भासाले दुजने आजि हे नवीन संसारी,
काण्डारी कोरो ताँहारे ताहार यिनि ए भवेर काण्डारी ।।
कालपारावार यिनि चिरदिन करिछेन पार विरामविहीन
शुभयात्राय आजि तिनि दिन प्रसादपवन सञ्चारि ।।
नियो नियो चिरजीवनपाथेय, भरि नियो तरी कल्याणे ।
सुखे दुखे शोके, आँधारे आलोके, येयो अमृतेर सन्धाने ।
बाँधा नाहि थेको आलसे आवेशे, झड़े झञ्झाय चले येयो हेसे,
तोमादेर प्रेम दियो देशे देशे विश्वेर माझे विस्तारि ।।

१९०८

३

फिरे चल् माटिर टाने—
ये माटि आँचल पेते चेये आछे मुखेर पाने ।
यार बुक फेटे एइ प्राण उठेछे, हासिते यार फुल फुटेछे रे,
डाक दिल ये गाने गाने ।।

२. **ये......संसारी**—हे नवीन गृहस्थ, आज (तुम) दोनों ने जिस नौका को तिराया है; **काण्डारी......काण्डारी**—उन्हीं को उस (नौका) का कर्णधार बनाओ जो इस संसार (सागर) के कर्णधार हैं; **यिनि**—जो; **करिछेन**—कर रहे हैं; **शुभ......सञ्चारि**—शुभ यात्रा में आज वे (अपने) प्रसाद (कृपा रूपी) पवन का संचार कर दें; **नियो**—लेना; **भरि......कल्याणे**—नौका को कल्याण से पूर्ण कर लेना; **येयो**—जाना; **सन्धाने**—खोज में; **बाँधा......थेको**—बँधे नहीं रहना; **झड़े......हेसे**—आँधी-तूफ़ान में हँसते-हँसते चले जाना; **तोमादेर...... विस्तारि**—संसार में देश-देश में अपने प्रेम को प्रसारित कर देना ।

३. **फिरे......टाने**—मिट्टी के आकर्षण से लौट चल; **ये.....पाने**—जो-मिट्टी आँचल पसारे (तेरे) मुख की ओर दृष्टि लगाए है; **यार......उठेछे**—जिसके वक्ष को विदीर्ण कर यह प्राण अंकुरित हुआ है; **हासिते......रे**—जिसकी हँसी से फूल खिले हैं; **डाक......गाने**—जिसने हर गीत में (तुझे) पुकारा है;

दिक् हते ओइ दिगन्तरे कोल रयेछे पाता,
जन्ममरण तारि हातेर अलख सुतोय गाँथा।
ओर हृदय-गला जलेर धारा सागर-पाने आत्महारा रे
प्राणेर वाणी बये आने ।।

१९२२

४

अग्निशिखा, एसो एसो, आनो आनो आलो।
दुःखे सुखे घरे घरे गृहदीप ज्वालो ।।
आनो शक्ति, आनो दीप्ति, आनो शान्ति, आनो तृप्ति,
आनो स्निग्ध भालोबासा, आनो नित्य भालो ।।
एसो पुण्यपथ बेये एसो हे कल्याणी।
शुभ सुप्ति, शुभ जागरण देहो आनि।
दुःखराते मातृवेशे जेगे थाको निर्निमेषे,
आनन्द-उत्सवे तव शुभ्र हासि ढालो ।।

१९२५

५

आय आमादेर अङ्गने अतिथि बालक तरुदल—
मानवेर स्नेहसङ्ग ने, चल् आमादेर घरे चल् ।।

दिक्......पाता—एक दिशा से दूसरी दिशा तक (उसकी) गोद फैली हुई है; **जन्म......गाँथा**—जन्म-मरण उसी के हाथ के अलक्ष्य सूत्र (डोर) में गुँथे हुए हैं; **ओर......रे**—सागर के प्रति उसके विगलित हृदय की आत्मविस्मृत जलधारा; **प्राणेर......आने**—प्राणों की वाणी वहन कर लाती है।

४. **एसो**—आओ; **आनो**—लाओ; **आलो**—आलोक; **भालोबासा**—प्रेम; **भालो**—भला, शुभ; **पुण्यपथ बेये**—पवित्र-पथ से हो कर; **देहो आनि**—ला दो; **जेगे थाको**—जागती रहो; **हासि**—हँसी।

५. यह गान शान्तिनिकेतन में 'वृक्षरोपण' उत्सव के अवसर पर लगाए जाने वाले पौधों को संबोधन कर गाया जाता है। अब यह उत्सव रवीन्द्रनाथ की

श्याम वङ्किम भङ्गिते चञ्चल कलसंगीते
द्वारे निये आय शाखाय शाखाय प्राण-आनन्द-कोलाहल ।।
तोदेर नवीन पल्लवे नाचुक आलोक सवितार,
दे पवने वनवल्लभे मर्मरगीत-उपहार ।
आजि श्रावणेर वर्षणे आशीर्वादेर स्पर्श ने,
पडुक माथाय पाताय पाताय अमरावतीर धाराजल ।।
१९२९

६

ओरे गृहवासी, खोल् द्वार खोल्, लागल ये दोल ।
स्थले जले वनतले लागल ये दोल ।
खोल् द्वार खोल् ।।
राङा हासि राशि राशि अशोके पलाशे,
राङा नेशा मेघे मेशा प्रभात-आकाशे,
नवीन पाताय लागे राङा हिल्लोल ।।
वेणुवन मर्मरे दखिन-वातासे,
प्रजापति दोले घासे घासे ।

निधन-तिथि को मनाया जाता है । **आय......अङ्गने**—हम लोगों के आँगन में आओ; **भङ्गिते**—भंगिमा से; **द्वारे......आय**—द्वार पर ले आ; **शाखाय शाखाय**—शाखा-शाखा में; **तोदेर**—तुम लोगों के; **नाचुक**—नाचे; **सवितार**—सूर्य का; **आजि......ने**—आज श्रावण की वर्षा में आशीर्वाद का स्पर्श लो; **पडुक**—पड़े; **माथाय**—माथे पर; **पाताय पाताय**—पत्ती-पत्ती पर ।

६. **लागल......दोल**—दोल (आन्दोलन, होली का स्पर्श) जो लगा है; **राङा......पलाशे**—अशोक, पलाश में राशि-राशि लाल हँसी (छाई) है; **राङा**—लाल, रंगीन; **नेशा**—नशा; **मेशा**—घुला-मिला; **नवीन......हिल्लोल**—नवीन कोंपलों को अरुण हिलोरा छू रहा है; **वेणुवन......वातासे**—दक्षिण-पवन में बाँस का वन मर्मर करता है; **प्रजापति.....घासे**—तृण-तृण पर तितलियाँ

मउमाछि फिरे याचि फुलेर दखिना,
पाखाय बाजाय तार भिखारिर वीणा,
माधवीविताने वायु गन्धे विभोल ।।

१९३०

७

प्रेमेर मिलन-दिने सत्य साक्षी यिनि अन्तर्यामी
नमि ताँरे आमि— नमि नमि ।
विपदे सम्पदे सुखे दुखे साथि यिनि दिनराति अन्तर्यामी
नमि ताँरे आमि— नमि नमि ।
तिमिररात्रे याँर दृष्टि ताराय ताराय,
याँर दृष्टि जीवनेर मरणेर सीमा पाराय,
याँर दृष्टि दीप्त सूर्य-आलोके अग्निशिखाय, जीव-आत्माय अन्तर्यामी
नमि ताँरे आमि— नमि नमि ।
जीवनेर सब कर्म संसार धर्म करो निवेदन ताँर चरणे
यिनि निखिलेर साक्षी, अन्तर्यामी
नमि ताँरे आमि— नमि नमि ।।

१९३९

थिरक रही हैं; **मउमाछि......वीणा**—मधुमक्खियाँ फूलों से दक्षिणा (दान) की याचना करती फिरती हैं, अपने परों से भिखारी की बीन बजाती हैं; **गन्धे**—गन्ध से; **विभोल**—विभोर।

७. **यिनि**—जो; **नमि......आमि**—मैं उन्हें नमस्कार करता हूँ; **साथि**—साथी; **याँर**—जिनकी; **ताराय ताराय**—तारे-तारे में; **सीमा पाराय**—सीमा पार करती है; **करो......चरणे**—उनके चरणों में अर्पित करो।

८

एकदिन यारा मेरेछिल ताँरे गिये
राजार दोहाइ दिये
ए युगे ताराइ जन्म नियेछे आजि,
मन्दिरे तारा एसेछे भक्त साजि—
घातक सैन्ये डाकि
'मारो मारो' उठे हाँकि।
गर्जने मिशे स्तवमन्त्रेर स्वर—
मानवपुत्र तीव्र व्यथाय कहेन, 'हे ईश्वर,
ए पानपात्र निदारुण विषे भरा
दूरे फेले दाओ, दूरे फेले दाओ त्वरा।'

१९३९

९

सबारे करि आह्वान—
एसो उत्सुकचित्त, एसो आनन्दित प्राण।
हृदय देहो पाति, हेथाकार दिवा राति
करुक नवजीवनदान॥

८. **एकदिन......दिये**—एक दिन जिन्होंने राजा की दुहाई दे कर उन्हें जा कर मारा था; **ए......आजि**—इस युग में आज उन्हीं (घातकों) ने जन्म लिया है; **मन्दिरे......साजि**—मन्दिर में वे भक्त का वेश बना कर आए हैं; **सैन्ये**—सैनिकों को; **डाकि**—पुकार कर; **उठे हाँकि**—हाँक लगाते हैं; **मिशे**—मिल जाता है; **व्यथाय**—व्यथा से; **कहेन**—कहते हैं; **विषे भरा**—विष से भरा; **दूरे......दाओ**—दूर फेंक दो।

९. **सबारे......आह्वान**—सब का आह्वान करता हूँ; **एसो**—आओ; **हृदय......पाति**—हृदय बिछा दो; **हेथाकार**—यहाँ के; **करुक**—करें;

आकाशे आकाशे वने वने तोमादेर मने मने
बिछाये बिछाये दिबे गान।
सुन्दरेर पादपीठतले येखाने कल्याणदीप ज्वले
सेथा पाबे स्थान ।।

१९३९

तोमादेर—अपने; **बिछाये......गान**—गीत-गान बिछा देना; **सुन्दरेर...... स्थान**—'सुन्दर' के चरणपीठ-तले जहाँ कल्याण-दीप जलता है, वहाँ स्थान पाओगे।

बँगला शब्दों के उच्चारण की कुछ विशेषताएँ

विश्वकवि रवीन्द्रनाथ के ५०० गीतों का यह संग्रह नागराक्षरों में प्रकाशित हो रहा है। बँगला गीतों में आए हुए शब्द हू-ब-हू वैसे ही हिन्दी में लिखे गए हैं। लेकिन बँगला उच्चारण की अपनी विशेषताएँ हैं। हिन्दी उच्चारण से उसमें अन्तर है। बँगला शब्दों के ठीक-ठीक उच्चारण के लिये उन विशेषताओं की जानकारी प्राप्त कर लेना आवश्यक है। पाठकों के सुभीते के लिये बँगला उच्चारण की कुछ विशेषताओं पर नीचे प्रकाश डालने की चेष्टा की जा रही है :

(१) बँगला में 'अ' का उच्चारण हिन्दी के 'अ' जैसा नहीं होता। वह 'अ' और 'ओ' के बीच में होता है, जैसे अंग्रेज़ी के 'not' में 'o'। बँगला में लिखते हैं 'खाब', लेकिन पढ़ते हैं 'खाबो'-जैसा।

(२) ह्रस्व और दीर्घ इ, उ के उच्चारण में बँगला में काफ़ी स्वतन्त्रता है। यह लचीलापन हिन्दी में नहीं है। दीर्घ ई और ऊ अगर पद के आदि में हों तो उनका उच्चारण प्रायः ह्रस्व-जैसा होता है, जैसे, 'ईश्वर' का उच्चारण 'इश्वर' और 'पूजा' का 'पुजा' होगा।

(३) एकार का उच्चारण 'ए' और 'ऐ' के बीच-जैसा होता है, जैसे बँगला 'एक' में 'ए' का उच्चारण हिन्दी के 'ऐसा' में 'ऐ' के समान होता है।

(४) ऐकार का उच्चारण 'ओइ' जैसा होता है। जैसे, 'ऐकतान'—ओइकतान।

(५) अनुस्वार के उच्चारण में 'ग' का अंश निहित रहता है, जैसे, हिमांशु—हिमांग्शु, बांला—बांग्ला।

(६) हिन्दी के समान, पद का अन्त्य वर्ण प्रायः हलन्त उच्चरित होता है, जैसे, आमार—आमार्, आँधार—आँधार्। लेकिन कविता में छन्दानुरोध से 'अ' के उच्चारण का भी अनुसरण होता है, जैसे, 'बकुल-बागान' में 'बकुल' का उच्चारण बकुल (ो) जैसा भी हो सकता है।

(७) बँगला में 'क्ष' का उच्चारण पद के आदि में बराबर 'ख' होगा, जैसे, क्षिति—खिति; क्षमा—खमा। लेकिन अन्यत्र 'क्ष' का उच्चारण 'क्ख' होगा, जैसे, लक्षण—लक्खण।

(८) बँगला में 'ण' और 'न' दोनों का उच्चारण सदा 'न' ही होता है।

(९) बँगला में 'ब' और 'व' का अन्तर नहीं है। ये दोनों ही 'ब' पढ़े जाते हैं। तत्सम शब्दों के लिखने में भले ही 'व' को 'व' ही लिखा जाय लेकिन उसका उच्चारण 'ब' होता है। जसे लिखा तो 'विवश' जाता है लेकिन पढ़ा 'बिबश' जाएगा।

(१०) अगर किसी दूसरी भाषा का कोई शब्द अपनाना पड़े और उसमें 'व' का उच्चारण रहे तो उसके लिये बँगला में 'ओय' लिखते हैं, जैसे, 'तिवारी' का 'तिओयारी'; 'हवा' का 'हाओया'। यहाँ 'ओया' का उच्चारण 'वा' ही होगा।

(११) 'य' के उच्चारण में एक विशेषता है। जब 'य' पद के आदि में हो तो उसका उच्चारण 'ज' होता है, जैसे, यात्रा—जात्रा; योग—जोग। लेकिन 'य' अगर पद के मध्य या अन्त में हो तो उसे 'य' ही पढ़ेंगे। जैसे, नियम—नियम; नयन—नयन; समय—समय।

(१२) बँगला में तीनों सकारों का उच्चारण तालव्य 'श' की तरह होता है। लेकिन दन्त्य 'स' के साथ अगर किसी व्यञ्जन वर्ण का योग हो तो उसका उच्चारण 'स' ही होता है, जैसे, स्तब्ध—स्तब्ध; स्निग्ध—स्निग्ध।

(१३) अगर मकार के साथ किसी वर्ण का योग हो तो वह वर्ण सानुनासिक द्वित्व हो कर मकार का लोप कर देता है, जैसे, छद्म—छद्दँ; पद्म—पद्दँ। लेकिन पद के आदि में ऐसा होने पर द्वित्व नहीं होता, जैसे, स्मरण—सँरण; स्मृति—सृँति।

(१४) अगर यकार अथवा वकार के साथ किसी वर्ण का योग हो तो वह द्वित्व हो कर यकार-वकार का लोप कर देगा, जैसे, भृत्य—भृत्त; नित्य—नित्त; वाद्य—बाद्द। लेकिन पद के आदि में केवल वकार का लोप हो जाता है, जैसे, द्वार—दार; ज्वाला—जाला।

(१५) अगर यकार में रेफ हो तो पद के मध्य अथवा अन्त में रहने पर भी जकार हो जाता है, जैसे, सूर्य्य—सूर्ज्ज; धैर्य्य—धैर्ज्ज।

(१६) प्रस्तुत संग्रह में 'व' के बदले 'ओय' ही लिखा हुआ है, अतएव जहाँ पर 'ओय' हो वहाँ 'व' ही पढ़ना चाहिए, जैसे, पाओया—पावा; खाओया—खावा; याओया—जावा।

बँगला व्याकरण संबंधी कुछ ज्ञातव्य बातें

ऊपर बँगला शब्दों की उच्चारण-संबंधी मुख्य विशेषताओं पर हम प्रकाश डाल चुके। अब बँगला व्याकरण की चर्चा करने जा रहे हैं। व्याकरण की थोड़ी-सी जानकारी प्राप्त कर लेना पाठकों के लिये अत्यन्त उपादेय सिद्ध होगा।

(क) क्रियारूप

बँगला में क्रिया के विभिन्न रूप हैं। क्रिया के इन विविध रूपों में जो अपरिवर्तित अंश है वही धातु है। धातु-निर्णय का सहज उपाय यह है कि उत्तम पुरुष के

वर्त्तमान काल के धातुरूप के अन्तिम 'इ' को हटा देने से जो रूप रह जाता है वही धातु है, जैसे, आमि याइ (मैं जाता हूँ)। इसमें 'याइ' का 'इ' हटाने पर 'या' रह जाता है। 'या' धातु है। इसी प्रकार 'आमि कराइ' में 'करा' धातु है।

बँगला भाषा के दो रूप हैं : (१) साधु और (२) चलित। 'लिखा', 'शुना' साधु रूप है और 'लेखा' 'शोना' चलित रूप। क्रियापद 'कहियाछे' साधु रूप है और 'कयेछे' चलित रूप है। सर्वनामों के विषय में भी यही बात है। अर्थ की दृष्टि से इन दोनों में कोई भेद नहीं है। बोलने में चलित रूप का प्रयोग होता है और लिखने में साधु रूप का। वैसे आजकल के लेखक लिखने में भी चलित रूप का ही प्रयोग करते हैं।

सकर्मक और अकर्मक के अलावा बँगला में क्रिया के दो भेद और हैं: समापिका और असमापिका।

धातु में जिस विभक्ति के योग से समापिका क्रियापद बनता है उसे 'तिङ' कहते हैं और उस क्रियापद को 'तिङन्त' पद कहते हैं। जैसे, कर् धातु से तिंङन्त पद करे, करेन, करिस, करि आदि। इसी प्रकार जिस प्रत्यय के योग से असमापिका क्रियापद अथवा विशेष्य-विशेषण बने, उसे 'कृत' कहते हैं और उस पद को 'कृदन्त' पद कहते हैं। जैसे, कर् धातु से कृदन्त पद (असमापिका क्रिया) करिते (करते), करिया (करके), करते, क'रे आदि।

प्रेरणार्थक धातु (णिजन्त धातु) बनाने के लिये बँगला के धातुरूप में 'आ' प्रत्यय लगाते हैं, जैसे, कर् से णिजन्त धातु 'करा' होगा।

बँगला में कर्ता के लिङ्ग के अनुसार क्रिया नहीं बदलती, जैसे, मेयेरा याच्छे (लड़कियाँ जा रही हैं); छेलेरा याच्छे (लड़के जा रहे हैं)।

क्रिया के तीन काल हैं : भूत, भविष्यत् और वर्तमान। लेकिन बँगला की क्रिया का काल-विभाग हिन्दी की तरह नहीं होता।

बँगला के क्रियापद में वचन-भेद नहीं होता। जैसे, से याइतेछे (वह जा रहा है), ताहारा याइतेछे (वे लोग जा रहे हैं)।

पुरुष तीन प्रकार के हैं : प्रथम, मध्यम और उत्तम। प्रथम पुरुष के गौरवार्थक और सामान्य दो रूप हैं, जैसे, तिनि करेन (वे करते हैं), से करे (वह करता है)। मध्यम पुरुष के गौरवार्थक, सामान्य और तुच्छ तीन रूप हैं, जैसे, आपनि करेन (आप करते हैं), तुमि कर (तुम करते हो) तथा तुइ करिस (तू करता है)। उत्तम पुरुष का केवल एक रूप है, जैसे, आमि करि (मैं करता हूँ)।

बँगला के काल-भेद तथा उनके नामों की जानकारी भी उपयोगी होगी। बँगला व्याकरणों में दो प्रकार से उनके नाम दिए हुए हैं। नित्यप्रवृत्त, विशुद्ध,

अद्यतन, अनद्यतन, परोक्ष, भूत-सामीप्य, वर्तमान-सामीप्य आदि नाम संस्कृत व्याकरण के अनुकरण पर रखे गए हैं। सहज तरीक़े से समझने के लिये उनका नामकरण निम्नलिखित ढँग से किया जाता है:

नाम		उदाहरण (साधु)
नित्यवृत्त वर्तमान		करे (करता है)।
घटमान	,,	करितेछे (कर रहा है)।
पुराघटित	,,	करियाछे (किया है)।
अनुज्ञा	,,	कर (करो)।
साधारण अतीत		करिल (किया)।
नित्यवृत्त	,,	करित (करता)।
घटमान	,,	करितेछिल (कर रहा था)।
पुराघटित	,,	करियाछिल (किया था)।
साधारण भविष्यत्		करिबे (करेगा)।
अनुज्ञा	,,	करिओ (करना)।

क्रिया की विभक्तियाँ

(चलित)

काल का नाम		प्रथम पुरुष सामान्य	प्रथम और मध्यम गौरवार्थक	मध्यम सामान्य	मध्यम तुच्छ	उत्तम पुरुष
नित्यवृत्त वर्तमान		ए	एन	अ	इस	इ
घटमान	,,	छे	छेन	छ	छिस	छि
पुराघटित	,,	एछे	एछेन	एछ	एछिस	एछि
अनुज्ञा	,,	उक	उन	अ	—	—
साधारण अतीत		ले	लेन	ले	लि	लाम
नित्यवृत्त	,,	त	तेन	ते	तिस	ताम
घटमान	,,	छिल	छिलेन	छिले	छिलि	छिलाम
पुराघटित	,,	एछिल	एछिलेन	एछिले	एछिलि	एछिलाम
साधारण भविष्यत्		बे	बेन	बे	बि	ब (बो)
अनुज्ञा	,,	बे	बेन	ओ	इस	—

(साधु)

काल का नाम	प्रथम पुरुष सामान्य	प्रथम और मध्यम गौरवार्थक	मध्यम सामान्य	मध्यम तुच्छ	उत्तम पुरुष
नित्यवृत्त वर्तमान	ए	एन	अ	इस	इ
घटमान ,,	इतेछे	इतेछेन	इतेछ	इतेछिस	इतेछि
पुराघटित ,,	इयाछे	इयाछेन	इयाछ	इयाछिस	इयाछि
अनुज्ञा ,,	उक	उन	अ	—	—
साधारण अतीत	इल	इलेन	इले	इलि	इलाम
नित्यवृत्त ,,	इत	इतेन	इते	इतिस	इताम
घटमान ,,	इतेछिल	इतेछिलेन	इतेछिले	इतेछिलि	इते-छिलाम
पुराघटित	इयाछिल	इयाछिलेन	इयाछिले	इयाछिलि	इया-छिलाम
साधारण भविष्यत्	इबे	इबेन	इबे	इबि	इब
अनुज्ञा ,,	इबे	इबेन	इओ (इयो)	इस	—

क्रिया की इन विभक्तियों के प्रयोग को निम्नलिखित उदाहरणों से समझा जा सकता है :

'काट्' (काटना) धातु के नित्यवृत्त वर्तमान का चलित और साधु रूप इस प्रकार होगा:

चलित	साधु
काटे, काटेन, काट, काटिस, काटि	चलित-जैसा ही होगा

घटमान अतीत का रूप निम्नलिखित होगा :

चलित रूप—काटछिल, काटछिलेन, काटछिले, काटछिलि तथा काटछिलाम।

साधु रूप—काटितेछिल, काटितेछिलेन, काटितेछिले, काटितेछिलि तथा काटितेछिलाम।

साधारण भविष्यत् का रूप इस प्रकार होगा :

चलित रूप—काटबे, काटबेन, काटबे, काटबि, काटबो।

साधु रूप—काटिबे, काटिबेन, काटिबे, काटिबि, काटिबो। इसी प्रकार अन्य रूप भी समझे जा सकते हैं।

बहुत लोग 'लाम' के स्थान पर 'लुम' अथवा 'लेम' का प्रयोग करते हैं, जैसे, 'काटलाम' (काटा) के बदले 'काटलुम' अथवा 'काटलेम' लिखते हैं।

इसी प्रकार 'ताम' के बदले 'तुम' अथवा 'तेम' का प्रयोग करते हैं, जैसे, 'काटताम' (काटता) के स्थान पर 'काटतुम' अथवा 'काटतेम' लिखते हैं।

साधारण अतीत में सकर्मक क्रिया में 'ले' तथा अकर्मक क्रिया में 'ल' लगाते हैं। यह चलित रूप में होता है, जैसे, करले (किया), खेले (खाया), दिले (दिया) तथा गेल (गया), शुल (सोया), दौड़ल (दौड़ा)। वैसे इसका व्यतिक्रम भी देखा जाता है। बहुत लोग 'करल' (किया), 'बलल' (बोला) आदि लिखते हैं।

(ख) कारक

बँगला में कारक सात हैं: कर्ता, कर्म, करण, सम्प्रदान, अपादान, सम्बन्ध तथा अधिकरण।

कारक की कई विभक्तियों को मूल विभक्ति कहा जा सकता है। वैसे प्रयोग में आने वाली कई विभक्तियाँ मुख्यत: कर्ता, कर्म, सम्बन्ध और अधिकरण सूचक हैं, जैसे, के, र, ते क्रमश: कर्म, सम्बन्ध और अधिकरण कारक की विभक्तियाँ हैं। प्रत्येक कारक की अलग विभक्तियाँ नहीं हैं। निम्नलिखित कई विभक्तियाँ भिन्न-भिन्न कारकों में प्रयुक्त होती हैं:

विभक्ति	कारकों के नाम
ए, य, ते, ये	कर्ता, करण, सम्प्रदान, अधिकरण
रा, एरा	कर्ता (बहुवचन)
दिगके, दिके, देर	कर्म, सम्प्रदान (बहुवचन)
के, रे	कर्म, सम्प्रदान (एकवचन)
एर (येर), र, कार	सम्बन्ध (एकवचन)
दिगेर, देर	सम्बन्ध (बहुवचन)
देर	कर्म (बहुवचन)
एते	अधिकरण (एकवचन)

बहुत स्थानों पर पद योग करने से कारक निष्पन्न होता है, जैसे, बाड़ी थेके (घर से), पेन्सिल दिये (पेन्सिल से), मानुषेर द्वारा (मनुष्य से) आदि। द्वारा, दिये आदि करणकारक-सूचक हैं तथा थेके, अपादानकारक-सूचक। लेकिन द्वारा, दिया आदि को अव्यय मानना उचित है। इनका प्रयोग विभक्ति के बाद भी मिलता है, जैसे, मन्त्रेर द्वारा (मन्त्र से)। इसमें 'एर' सम्बन्ध कारक की विभक्ति है और उसके बाद 'द्वारा' का प्रयोग हुआ है।

टा और टि का प्रयोग, जन्तु अथवा पदार्थवाचक शब्दों के साथ होता है, जैसे, छेलेटा (लड़का), कविताटि (कविता)। इसमें अर्थ ज्यों का त्यों है। टा का प्रयोग प्राय: अनादरसूचक है और 'टि' का प्रयोग बहुत-कुछ आदरसूचक।

गुला, गुलो, गुलि का प्रयोग व्यक्ति, जन्तु अथवा पदार्थवाचक शब्दों के साथ होता है। इनसे बहुवचन सूचित होता है। 'गुला' 'गुलो' अनादरसूचक हैं और 'गुलि' आदरसूचक। लोकगुला (लोग), जिनिसगुलो (वस्तुएँ), मेयेगुलि (लड़कियाँ)।

'खाना', 'खानि' का प्रयोग केवल पदार्थवाचक शब्दों के साथ होता है। 'खाना' अनादरसूचक है और 'खानि' आदरसूचक, जैसे, मुखखानि (मुख), कागजखाना (काग़ज़)।

'गण', 'रा', 'एरा' (येरा) का प्रयोग साधारणत: व्यक्ति, जन्तु अथवा बड़ी वस्तुओं के लिये होता है, जैसे, देवगण, छेलेरा (लड़के)।

'ए', 'ये', 'ते', 'ये' के प्रयोग की विधि इस प्रकार है : अकारान्त अथवा व्यञ्जनान्त शब्द हो तो 'ए' का प्रयोग होता है, जैसे, मानुषे, विद्युते। आकारान्त अथवा एकारान्त शब्द हो तो 'य' और 'ते' का व्यवहार होता है, जैसे, छेलेय, सेवाय। अगर इनसे भिन्न स्वरान्त शब्द हो तो 'ते' का व्यवहार होता है, जैसे, छुरिते। एकाक्षर शब्द अथवा अन्त में दो स्वर आएँ तो 'ये' का प्रयोग होता है, जैसे, गाये (शरीर में), दइये (दही में)।

विभिन्न कारकों में विभक्ति के प्रयोग

कर्ता कारक :

साधारणत: कर्ता, एकवचन में कोई विभक्ति नहीं होती, जैसे, राम खाच्छे (राम खा रहा है)।

कर्तृवाच्य के प्रयोग से कभी-कभी कर्ता में 'ए' विभक्ति लगती है, जैसे, लोके बले (लोग कहते हैं)।

कर्ता अनिर्दिष्ट होने पर अथवा कर्ता में करण या अधिकरण का भाव रहने पर ए, य, ते, ये, योग करते हैं, जैसे, पोकाय केटेछे (कीड़े ने काटा है), वेदे बले (वेद में कहा गया है), वृष्टिते भासिये दिले (वर्षा से बहा दिया)।

एकजातीय कर्ता का भाव बताते समय 'ए' का प्रयोग होता है, जैसे, पण्डिते पण्डिते तर्क चलेछे (पण्डितों में तर्क हो रहा है)।

बहुवचन में गण, रा, एरा (येरा) का प्रयोग होता है, जैसे, पण्डितेरा बलेन (पण्डित लोग कहते हैं)। आदरसूचक या समूहबोधक कर्ता होने पर रा के बदले एरा का प्रयोग होता है, जैसे, बउएरा (बहुएँ)। गुलो, गुला, गुलि का प्रयोग बहुवचन में होता है, जिस पर पहले ही प्रकाश डाला जा चुका है।

कर्म कारक :

एकवचन में साधारणतः कोई विभक्ति नहीं होती, जैसे, डाक्तार डाक (डॉक्टर को बुलाओ)। वैसे इसका कोई निर्दिष्ट नियम नहीं है; कभी विभक्ति का लोप होता है, कभी नहीं होता, जैसे, भगवानके डाक (भगवान को पुकारो)।

कर्मपद प्राणिवाचक अथवा व्यक्ति का नाम हो तो 'के' विभक्ति का प्रयोग होता है और अप्राणिवाचक या क्षुद्र प्राणिवाचक शब्दों में 'के' का प्रयोग नहीं होता। पद्य में रे, ए, य का प्रयोग होता है, जैसे, गुरुरे डाकिया (गुरु को पुकार कर), गुरुजने कर नति (गुरुजन को प्रणाम करो)। बहुवचन होने पर गणके, दिगके, दिके, देर का प्रयोग होता है, जैसे, देवगणके, ताहादिगके आदि।

द्विकर्मक क्रिया के गौण कर्म में के, दिगके, दिके, देर का प्रयोग होता है। मुख्य कर्म में विभक्ति नहीं लगाते, जैसे, छेलेके दुध दाओ (लड़के को दूध दो)।

कर्मवाच्य के प्रयोग में कर्म में कभी-कभी 'के' विभक्ति लगती है, जैसे, रामके बला हय नाइ (राम से कहा नहीं गया है)।

कर्म-कर्तृवाच्य के प्रयोग में भी कर्म में कभी-कभी 'के' विभक्ति होती है, जैसे, तोमाके कृश देखाइतेछे (तुम दुबले दीखते हो)।

करण कारक :

करण कारक में साधारणतः द्वारा, दिया विभक्ति होती है और कभी-कभी इन दोनों के बदले 'हइते' विभक्ति प्रयुक्त होती है। कभी-कभी 'ए' विभक्ति भी होती है।

'द्वारा' और 'दिया' अथवा 'दिये' का प्रयोग व्यक्ति, जन्तु अथवा पदार्थवाचक शब्दों में होता है। सम्बन्ध-विभक्ति के बाद भी 'द्वारा' का प्रयोग होता है। व्यक्ति-वाचक शब्दों के बहुवचन में 'दिया' अथवा 'दिये' का प्रयोग नहीं होता, जैसे, भृत्येर द्वारा, अश्वेर द्वारा, किन्तु साबान दिया (साबुन से)।

केवल व्यक्तिवाचक शब्दों में कर्म-विभक्ति के बाद 'दिया' अथवा 'दिये' का व्यवहार होता है, जैसे, चाकरदिगके दिये (नौकरों से), चाकरके दिये (नौकर से)।

केवल जन्तु अथवा पदार्थवाचक शब्दों के बाद ए, य, ते, ये, जोड़ा जाता है, जैसे, सेवाय तुष्ट (सेवा से तुष्ट), एइ गाड़ि गरुते चले (यह गाड़ी बैल से चलती है)।

सम्प्रदान कारक:

सम्प्रदान कारक की विभक्ति प्रायः कर्म कारक के समान है, जैसे, दरिद्रके धन दाओ [दरिद्र को (के लिये) धन दो]।

कभी-कभी ए, य, ते, का भी व्यवहार होता है, जैसे, सत्पात्रे, देवसेवाय आदि।

अपादान कारक

इस कारक की विभक्तियाँ हइते, (ह'ते) थेके, अपेक्षा आदि हैं, जैसे, गृह हइते (गृह से), तिन दिन थेके (तीन दिनों से)।

कभी-कभी 'दिया' का भी व्यवहार होता है, जैसे, ताहार मुख दिया एमन कथा बाहिर हइबे ना (उसके मुँह से ऐसी बात नहीं निकलेगी)।

'निकट' आदि शब्दों में अपादान कारक की विभक्ति विकल्प से लोप होती है, जैसे, आमि ताहार निकट ए कथा शुनियाछि (मैंने उससे ऐसी बात सुनी है)।

तुलना करते समय सम्बन्ध कारक की विभक्ति के बाद अपेक्षा, चेये, चाइते आदि लगाते हैं, जैसे, तोमार चेये वृद्ध (तुमसे अधिक वृद्ध)।

कभी-कभी सप्तमी की 'ए' विभक्ति भी अपादान में प्रयुक्त होती है, जैसे, मेघे वृष्टि हय (मेघ से वृष्टि होती है)।

सम्बन्ध कारक :

र, एर, इस कारक की विभक्तियाँ हैं। साधारणतः शब्दों के अन्त में 'र' का योग करने से सम्बन्ध कारक सूचित होता है। 'एर' का योग शब्दों में उस समय होता है जब उनका रूप एकवचन का हो तथा वे अकारान्त, व्यञ्जनान्त, एकाक्षर शब्द हों अथवा उनके अन्त में दो स्वर हों, जैसे, मायेर (माँ का), जामाइयेर (दामाद का); 'र' विभक्ति का उदाहरण—दयार (दया का), चुरिर (चोरी का)।

'र' विभक्ति का प्रयोग उस हालत में भी होता है जब मनुष्य के नाम का उच्चारण अकारान्त हो, जैसे, अमूल्यर (अमूल्य का); लेकिन शिव का शिवेर होगा क्योंकि शिव के उच्चारण में व हलन्त की तरह उच्चरित होता है।

विशेषण-पदों में केवल 'र' का योग करते हैं, जैसे, भालर जन्य (अच्छे के लिये)।

समय अथवा अवस्थान-वाचक शब्दों में 'कार' योग करते हैं, जैसे, आजिकार (आज का), उपरकार (ऊपर का)।

व्यक्ति, जन्तु अथवा बड़ी वस्तु के सूचक बहुवचन शब्दों में देर, दिगेर, गणेर का योग करते हैं, जैसे, छेलेदेर (लड़कों का), जन्तुदिगेर (जन्तुओं का)। व्यक्ति, जन्तु तथा पदार्थवाचक बहुवचन में गुलार, गुलोर, गुलिर, सकलेर, समूहेर आदि का प्रयोग होता है, जैसे, मेयेगुलिर (लड़कियों का), जिनिसगुलोर (वस्तुओं का), प्राणि सकलेर (प्राणियों का), इत्यादि।

अधिकरण कारक :

ए, य, ते, ये, अधिकरण कारक की विभक्तियाँ हैं।

अधिकरण दो प्रकार के हैं : कालबोधक और आधारसूचक। क्रिया जब किसी काल में समाप्त होती है तब उसे कालवाचक अधिकरण कहते हैं और जब

25

किसी स्थान पर समाप्त होती है तब वहाँ आधार-अधिकरण का भाव आ जाता है। 'प्रभाते आमरा बेड़ाइया थाकि' (सबेरे हमलोग टहला करते हैं)—यह कालवाचक अधिकरण का उदाहरण है।

आधार-अधिकरण तीन तरह के हैं—ऐकदेशिक, वैषयिक और अभिव्यापक। उदाहरणार्थः

ऐकदेशिक—ऋषि वने थाकितेन (ऋषि वन में रहते थे)।

वैषयिक—आमि विद्याय आपनार निकट बालक (विद्या में मैं आपके निकट बालक हूँ)।

अभिव्यापक—तिले तैल आछे (तिल में तेल है)।

कालवाचक शब्द के बाद कभी-कभी विभक्ति योग नहीं करते, जैसे, एक समय आमि बिश क्रोश हाँटिते पारिताम (एक समय था जब मैं बीस कोस पैदल चल सकता था); ए समय से कोथाय (इस समय वह कहाँ है)। लेकिन अगर विशेषण पद कालवाचक शब्द के पहले न हो तो विभक्ति अवश्य प्रयुक्त होती है, जैसे, दिने घुमाइओ ना (दिन में न सोना)।

क्रिया गमनार्थक होने पर कभी-कभी अधिकरण की विभक्ति नहीं लगती, जैसे, काशी पाठाओ (काशी भेजो), कलिकाता याइब (कलकत्ते जाऊँगा)।

बहुवचन में गण, गुला, गुलो, गुलि, सकल आदि के बाद विभक्ति का योग होता है। जैसे, कथागुलिते (बातों में), जीवगणे (जीवों में)।

(ग) सर्वनाम

बँगला में सर्वनाम के मुख्य भेद निम्नलिखित हैं :

पुरुषवाचक सर्वनाम—आमि (मैं), तुमि (तुम), से (वह) इत्यादि।

निर्देशक या निर्णयसूचक सर्वनाम—ताहा (तद्); इहा (यह); उहा (वह) इत्यादि।

प्रश्नवाचक सर्वनाम—कि (क्या), के (कौन) आदि।

सापेक्ष या समुच्चयी सर्वनाम—ये

अनिर्देश या अनिश्चयसूचक सर्वनाम—केह, केउ (कोई) आदि।

आत्मवाचक सर्वनाम—निजे, आपनि, स्वयं आदि।

साकल्यवाचक सर्वनाम—उभय, सकल, सब आदि।

पुरुषवाचक सर्वनाम तीन प्रकार के हैं:, उत्तम पुरुष, मध्यम पुरुष, प्रथम पुरुष, जिसे हिन्दी में अन्य-पुरुष कहते हैं।

कर्ताकारक के एकवचन में इन पुरुषों के निम्नलिखित रूप हैं :

	सामान्य	तुच्छ	गौरवार्थ
उत्तम पुरुष	आमि (मैं)		
मध्यम पुरुष	तुमि (तुम)	तुइ (तू)	आपनि (आप)
प्रथम पुरुष	से, ताहा, ता (वह)		तिनि (वे)
	ये, याहा, या (जो)		यिनि (जो)
	के (कौन), कि (क्या)		के, किनि (कौन)
	ए, इहा (यह)		इनि (ये)
	ओ, उहा (वह)		उनि (वे)

व्यक्तिबोधक—तिनि, यिनि, के (किनि), इनि, आपनि, तुमि, तुइ, आमि।

व्यक्ति अथवा जन्तुवाचक—से, ये, के।

व्यक्ति, जन्तु अथवा पदार्थवाचक—ए, ओ।

पदार्थ अथवा क्षुद्र जन्तुवाचक—ताहा (ता), याहा (या), कि, इहा, उहा।

वचन और कारक-भेद से सर्वनाम के रूप में परिवर्तन होता है, लेकिन स्त्रीलिंग और पुंलिग-भेद से सर्वनाम के रूप में परिवर्तन नहीं होता।

याहाते, ताहाते आदि का प्रयोग क्रिया-विशेषण की तरह होता है।

से, ये, कि, ए, ओ का प्रयोग विशेषण की तरह भी होता है, जैसे, से दिन (उस दिन)।

कारकों की विभक्ति-सहित सर्वनामों के रूप

उत्तम पुरुषः

आमि (मैं)

(पुंलिग और स्त्रीलिंग में)

	एकवचन	बहुवचन
कर्ता	आमि, मुइ	आमरा, मोरा
कर्म	आमाके, आमारे, आमाय, मोरे	आमादिगके, आमादेर, आमादेरके, मोदिगके, मोदिगेरे, मोदेर
करण	आमाद्वारा, आमार द्वारा, आमाके दिया, आमा-हइते (ह'ते), आमा-कर्तृक	आमादिग (-दिगेर) द्वारा, दिया, कर्तृक; आमादेर दिया, द्वारा

	एकवचन	बहुवचन
सम्प्रदान	आमाके, आमारे, आमाय, मोरे	आमादिगके, आमादेर, आमादेरे मोदेर, मोदेरे, मोदिगके
अपादान	आमा हइते, आमा ह'ते	आमादेर (आमादिग) हइते
सम्बन्ध	आमार, मोर (मझु), मम	आमादिगेर, आमादेर मोदेर
अधिकरण	आमाय, आमाते, मोते	आमादिगेते, आमादिगेर सकले, मोदिगे

तुमि (तुम)

मध्यम पुरुषः

(स्त्रीलिंग और पुंलिंग में)

	एकवचन	बहुवचन
कर्ता	तुमि, तुइ	तोमरा, तोरा
कर्म	तोमाके, तोमार, तोके, तोरे तोर	तोमादिगके, तोदेर, तोदिगके
करण	तोमाद्वारा, तोमाकर्तृक, तोर द्वारा	तोमादिगेर द्वारा, तोदेर द्वारा
सम्प्रदान	(कर्म कारक के समान रूप होता है)	
अपादान	तोमा हइते, तोर हइते	तोमादेर हइते, तोदेर हइते
सम्बन्ध	तोमार, तोर, तव	तोमादिगेर, तोमादेर, तोदेर
अधिकरण	तोमाते, तोमाय, तोके, तोय	तोमादिगते, तोमादेर सकले, तोमादिगते

तुइ (तू) शब्द का व्यवहार तीन अर्थों में होता है :

(१) तुच्छार्थ में—निर्लज्ज तुइ क्षत्रिय समाजे (क्षत्रिय समाज में तू निर्लज्ज है)।

(२) स्नेह-वात्सल्य में—तुइ आमार नयनमणि (तू मेरे नयनों की मणि है)।

(३) देवतादि के संबोधन में—तुइ कि बुझिबि श्यामा मरमेर वेदना [श्यामा (माँ काली), तू मर्म-वेदना को क्या समझेगी]।

करण और अपादान का अलग रूप नहीं है। कर्म अथवा संबंध कारक के रूपों में दिया, द्वारा, हइते योग करने से इन दोनों कारकों का रूप प्राप्त हो जाता है

आपनि (आप)

चलित		साधु	
एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
आपनि	आपनारा	आपनि	आपनारा
आपनाके	आपनादिके, -देर	आपनाके	आपनादिगके
आपनार	आपनादेर	आपनार	आपनादिगेर, -देर
आपनाते	—	आपनाते	—

प्रथम पुरुष :

तिनि (वे)

	चलित रूप		साधु रूप	
	एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
कर्ता	तिनि	ताँरा	तिनि	ताँहारा
कर्म, सम्प्रदान	ताँके	ताँदिके, ताँदेर	ताँहाके	ताँहादिगके
सम्बन्ध	ताँर	ताँदेर	ताँहार	ताँहादिगेर ताँहादेर
अधिकरण	ताँते	—	ताँहाते	—

यिनि (जो) का रूप तिनि की तरह ही होता है।

उपर्युक्त क्रम से अर्थात् पहली पंक्ति में कर्ता, द्वितीय में कर्म-सम्प्रदान, तृतीय में सम्बन्ध और चतुर्थ में अधिकरण कारक के अन्य सर्वनामों के रूप नीचे दिए जा रहे हैं।

इनि (ये)

चलित		साधु	
एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
इनि	एँरा	इनि	इँहारा
एँके	एँदिके, एँदेर	इँहाके	इँहादिगके
एँर	एँदेर	इँहार	इँहादिगेर, इँहादेर
एँते	—	इँहाते	—

उनि (वे)

चलित		साधु	
एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
उनि	ओँर	उनि	उँहारा
ओँके	ओँदिके, ओँदेर	उँहाके	उँहादिगके
ओँर	ओँदेर	उँहार	उँहादिगेर, उँहादेर
ओँते	—	उँहाते	—

से (वह)

चलित		साधु	
एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
से, ता	तारा	से, ताहा	ताहारा
ताके	तादिके, तादेर	ताहाके	ताहादिगके
तार	तादेर	ताहार	ताहादिगेर, ताहादेर
ताते (ताय)	—	ताहाते (ताय)	—

ये, याहा (जो) का रूप से, ताहा (ताहा)-जैसा होगा।

के (कौन)

चलित		साधु	
एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
के, किनि	काँरा	के, किनि	काँहारा
काके	कादिके, कादेर	काहाके	काहादिगके
कार	कादेर	काहार	काहादिगेर, काहादेर
काते, किसे	—	काहाते	—

ए, इहा (यह)

चलित		साधु	
एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
ए	एरा	ए, इहा	इहारा
एके	एदिके, एदेर	इहाके	इहादिगके
एर	एदेर	इहार	इहादिगेर, इहादेर
एते	—	इहाते	—

ओ, उहा (वह)

चलित		साधु	
एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
ओ	ओरा	ओ, उहा	उहारा
ओके	ओदिके, ओदेर	उहाके	उहादिगके
ओर	ओदेर	उहार	उहादिगेर, उहादेर
ओते	—	उहाते	—

ए, इहा, इनि से निकटस्थ वस्तु या व्यक्ति का निर्देश होता है और ओ, उहा, उनि से दूरस्थ वस्तु या व्यक्ति का निर्देश होता है।

'ताय' (उसको, उसमें) का प्रयोग प्राय: पद्य में होता है।

'किसे' केवल पदार्थवाचक है।

'किनि' का प्रयोग साधु और चलित दोनों रूपों में प्राय: अप्रचलित हो गया है।

प्रथम पंक्ति की सूची

पृष्ठ-संख्या

पृष्ठ-संख्या

पृष्ठ-संख्या

पृष्ठ-संख्या

पृष्ठ-संख्या

पृष्ठ-संख्या

पृष्ठ-संख्या

पृष्ठ-संख्या

पृष्ठ-संख्या